प्रकाशक
देवेन्द्रराज मेहता,
सचिव,
प्राकृत भारती अकादमी,
३८२६, यति श्यामलाल जी का उपाश्रय
मोतीसिंह भोमियो का रास्ता
जयपुर—३०२००३ (राज)

नरेन्द्रसिंह वैद,
मन्त्री
श्री जैन श्वेताम्बर पचायती मन्दिर,
बडा बाजार,
कलकत्ता—७०००७

प्रथम सस्करण, जून १९९०
मल्य रु० ५०,

मुद्रक :
अजन्ता प्रिन्टर्स जयपुर
अमर कम्पोजिंग एजेन्सी दिल्ली—५३

प्रकाशकीय

प्राकृत भारती के पुष्प ६७ को प्राकृत भारती अकादमी और श्री जैन श्वेताम्वर पंचायती मदिर, कलकत्ता के सयुक्त प्रकाशन के रूप मे "खरतर-गच्छ दीक्षा नन्दी सूची" पुस्तक प्रकाशित करते हुए हमे हार्दिक प्रसन्नता है।

यह पुस्तक वस्तुत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज है। इसके आधार पर खरतर-गच्छ के तत् तत्कालीन मुनियो/यतियो, साहित्यकारो का समय-निर्धारण सहजभाव से किया जा सकता है। न केवल काल निर्धारण ही अपितु उनका जन्म नाम, दीक्षा नाम, गुरु का नाम, दीक्षा सवत्, दीक्षा प्रदाता का नाम और किस शाखा या उपशाखा मे हुए है आदि का निर्णय भी स्वत हो जाता है। जैसे क्षमाकल्याणोपाध्याय के सम्वन्ध मे हमे जानकारी प्राप्त करनी हो तो देखिये पृष्ठ ५८ :—

इनका जन्म नाम खुस्यालो था, इनका दीक्षा नाम क्षमाकल्याण रखा गया। इनके गुरु का नाम त० अमृतधर्म मुनि था और वे जिनभक्ति-सूरि की शाखा मे हुए तथा इनको स० १८१५ आषाढ वदि २ को जैसलमेर मे श्री जिनलाभसूरि ने दीक्षा प्रदान की, जानकारी उपलब्ध हो जाती है।

वस्तुत यह सूची भी अपूर्ण है। जो दी गई है वह भी स० १७०७ से तथा खरतर-गच्छ की मात्र दो शाखाओ का ही प्रतिनिधित्व करती है। सम्पादको के निरन्तर शोध और अथक प्रयास करने पर भी खरतरगच्छ के प्रारभ से लेकर १७०६ तक और इसी गच्छ की अन्य १० शाखाओ की भी नन्दी सूची उपलब्ध न हो सकी। साथ ही इसी प्रकार जैन श्वेताबर परपरा के अन्य गच्छो की भी दीक्षा नन्दी सूचिया प्राप्त न हो सकी। अत जो प्राप्त है, उसी को विज्ञो के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस सूची से एक तथ्य और स्पष्ट होता है कि एक-एक आचार्य ने अपने कार्यकाल मे कितनी दीक्षाये प्रदान की। उदाहरण के तौर पर जिनचन्द्रसूरि का देखिये। इनका आचार्य काल १७११ से १७६२ है। इस काल मे उन्होने ३९ नन्दिया स्थापित की और ६१९ व्यक्तियो को दीक्षा

प्रदान की। यह तथ्य वास्तव मे आश्चर्यजनक है। इसके साथ ही इस तथ्य की भी पुष्टि होती है कि दीक्षा आचार्य/गच्छनायक ही प्रदान करता था और गुरु का नाम शिष्य को अभिलाषानुसार उसके गुरु की अनुमति से रखा जाता था।

सपादको ने इस पुस्तक को तीन खंडो मे विभक्त किया है। प्रारम्भ मे योजनानुसार इसका केवल द्वितीय खड ही प्रकाशित किया जा रहा था, जो कि प्रामाणिक होते हुए भी आद्यन्त के विना अपूर्ण-सा प्रतीत हो रहा था। फलत इसकी पूर्ति के रूप मे सपादको ने प्रथम खड मे गुर्वावलियो, अभिलेखो और प्रशस्तियो के आधार से वि० स० १७०७ से पूर्व का इतिहास लिखकर एव तृतीय खड मे वर्तमान सविग्न पक्षीय तीनो समुदायो के साधु-साध्वियो की दीक्षा सूची सलग्न कर इसको पूर्णता प्रदान करने का यथा-साध्य प्रयत्न किया है।

इस पुस्तक के सम्पादक हैं श्री भँवरलालजी नाहटा एव महोपाध्याय विनयसागरजी। श्री भँवरलालजी नाहटा जैन साहित्य, राजस्थानी साहित्य एव प्राचीन लिपियो के विशिष्ट विद्वान् हैं और साहित्य जगत मे वे सुपरिचित हैं। ८० साल के लगभग अवस्था होने पर भी साहित्य-सेवा मे सक्रिय हैं। महोपाध्याय विनयसागरजी जैन साहित्य के प्रमुख विद्वान् हैं और वर्तमान मे प्राकृत भारती अकादमी के निदेशक एव भोगीलाल लहरचद शोध सस्थान, दिल्ली के कार्यवाहक निदेशक पद पर कार्यरत है। अत हम दोनो के प्रति कृतज्ञ है और हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

यह लिखते हुए अत्यन्त आह्लाद हो रहा है कि इसी वर्ष श्वेताम्बर पचायती मन्दिर, कलकत्ता का "अर्जुन हेम हीरक जयन्ति" के रूप मे १७५ वा वर्ष मनाया जा रहा है और इसी पावन स्मृति को अक्षुण्ण रखने हेतु यह पुस्तक सयुक्त प्रकाशन के रूप मे प्रकाशित की जा रही है।

देवेन्द्रराज मेहता	नरेन्द्रसिह वेद
सचिव	मन्त्री
प्राकृत भारती अकादमी	जैन श्वेताम्बर पचायती मदिर
जयपुर	कलकत्ता

अनुक्रमणिका

जिनलाभसूरि—(१८०४-१८३३), धर्म (४६), शील (५१), दत्त (५२), विनय, रुचि (५३) राज (५४), शेखर, कमल (५५), सुन्दर (५६), कल्याण (५७), कुमार (५८), धीर (५६), उदय (६०), हेम (६१), सार, प्रिय (६२), कीर्ति (६३), प्रभ (६४), मूर्ति, सोम (६५), जय (६७)

जिनचन्द्रसूरि—(१८३५-१८५४), चन्द्र, विजय (६७), प्रमोद (६६), निधान, सिन्धुर (७०), रग (७१), कुशल (७३), मेरु (७४), समुद्र (७५), नन्दन (७६), रत्न, हस (७७), वर्द्धन (७८), भद्र (७६), हर्ष (८०), वल्लभ (८१)

जिनहर्षसूरि—(१८५६-१८६०), आनन्द (८१), सौभाग्य, सागर (८२), कल्लोल (८४), भक्ति (८५), विलास (८६), विमल (८८), मन्दिर (८६), कलश (६२), धर्म (६३), लाभ (६४), सिंह, तिलक (६५), विनय (६७), शेखर (१००), शेन, रुचि (१०१), शील (१०२), माणिक्य (१०३), राज, प्रिय (१०४),

जिनमहेन्द्रसूरि—(१८६२-१६०७), पुरन्दर (१०५), उदय (१०६), सुन्दर (१०८), कीर्ति (११०), कल्याण (१११)

जिनमुक्तिसूरि—(१६१५-१६५५) सुख ((११३), प्रधान (११४), रत्न (११६), आनन्द (११८), राज (११६)

जिनचन्द्रसूरि—(१६५७-) विमल (१२०), रत्न (१२१).

जिनधरणेन्द्रसूरि—(२००३-) सुन्दर (१२२)

भाव चारित्र धारक-सूची—(१२२).

साध्वी दीक्षा नन्दी सूची—(१७८३-१६२८) १२३-१२७

• • •

बीकानेर शाखा—

जिनसौभाग्यसूरि—(१८६२-१६१६) कीर्ति, धीर (१२८), सुन्दर, प्रधान (१२६), सोम (१३०), निधान (१३१), लब्धि (१३२), वल्लभ (१३३), मण्डन, जय (१३४), रग (१३५)

जिनहससूरि—(१६१७-१६३४) कमल (१३५), अमृत (१३६), सार (१३७), उदय (१३८), वर्द्धन (१३६)

जिनचन्द्रसूरि—(१६३५-१६५४). पद्म, दत्त (१४०), भद्र (१४१), कुशल (१४२)

जिनकीर्तिसूरि—(१९५६-१९६३) सौभाग्य (१४२), रुचि, सुन्दर (१४३)

जिनचारित्रसूरि—(१९६७-१९९०). चारित्र, लाभ (१४४), जय, सागर (१४५), पाल (१४६).

जिनविजयेन्द्रसूरि—(१९९८-) निधि, निधान, सुन्दर (१४७), सुन्दर (१४८)

जिनचन्द्रसूरि—

० ० ०

आचार्य शाखा—

विलास, विमल, सिन्धुर (१४९), सोम, सुन्दर, हर्ष, रत्न, शील, (१५०), सिंह (१५१)

जिनकीर्तिसूरि—(१७९७-१८१८) कीर्ति माला, राज, वल्लभ, भक्ति (१५१), सुन्दर, समुद्र, निधान, सार (१५२), नन्दन (१५३),

जिनयुक्तिसूरि—(१८२२-) माणिक्य (१५३)

जिनचन्द्रसूरि—(१८२४-१८७२) चन्द्र, मूर्ति (१५३), सागर, सौभाग्य, वर्द्धन, नन्दी, सोम, विलास (१५४), कुशल, कुमार, धीर (१५५), हंस, हीर, विमल, तिलक (१५६), रत्न, शील, राज (१५७), कलश, मन्दिर रंग (१५८)

जिनोदयसूरि—(१८७७-१८९१) उदय, शील, समुद्र, रुचि (१५९)

जिनहेमसूरि—(१८९७-१९४२), हेम, सागर, धीर, तिलक, रत्न (१६०), सुन्दर, धर्म, हर्ष, सार, सागर (१६१), तिलक, शेखर, वर्द्धन (१६२), विमल, सौभाग्य, कुमार, सुन्दर (१६३), रंग, सागर (१६४)

जिनसिद्धिसूरि—(१९४३-१९८४) कमल, विशाल, कल्लोल, दत्त (१६४), हंस, राज, सिंह, सार, भंडार, निधान (१६५)

जिनचन्द्रसूरि—(१९८६-) सकल (१६६)

जिनसोमप्रभसूरि—(२०१०) धर (१६६)

० ० ०

जिनरंगसूरि शाखा—

जिनविमलसूरि—(१७८९-) विमल (१६७)

जिनाक्षयसूरि—(१८१७-) कुमार (१६८).

० ० ०

० ० ०

भूमिका

अनन्त चतुष्टय विराजित आत्मा अपने विशुद्ध रूप से अरूपी और अनामी है, परन्तु देहधारी होने से उसकी पहचान के लिए नाम-स्थापन अनिवार्य है। चार प्रकार के निक्षेपो मे नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव है। ये अकाट्य सत्य माने गये हैं। अनादि काल से नाम रखने की परिपाटी चली आ रही है। भगवान ऋषभदेव की माता ने उनके गर्भ मे आने पर वृषभ स्वप्न के अनुसार उनका नामकरण किया, क्योकि चतुर्दश महास्वप्नो मे प्रथम वृषभ का स्वप्न ही मरुदेवी माता ने देखा था। तीर्थकरो के नाम भी घटनाओ के परिवेशो मे रखे गये थे, जैसे महामारी शात होने से शान्तिनाथ, ऋद्धि-सम्पदा मे वृद्धि होने से वर्द्धमान इत्यादि। कुछ नाम प्रकृति से, कुछ सस्कृति से, कुछ घटना विशेष से एव कुछ परम्परागत देशप्रथा आदि से सम्बन्धित होते थे। जन्म समय के ग्रह-नक्षत्रो की अवस्थिति भी इसमे प्राधान्य रखती थी। पाणिनी ने अष्टाध्यायी मे नाम व पद आदि के सम्बन्ध मे विशद विवेचन किया है। अपने-अपने देश की भाषा, धर्म और जातिगत प्रथा, कालानुरूप सघ-प्रणाली देखते हुए आर्य, मुनि, स्थविर, गणि आदि उपाधि-सम्बोधन होता था। पहले जो प्राकृत भाषा के नामरूप थे वे उनके सस्कृत रूपो मे प्रयुक्त होने लगे। फिर जब अपभ्रश काल आया तो शब्दो मे तदनुरूप परिवर्तन आ गया। व्यक्तियो के नामो मे नागभट्ट को बोलचाल की भाषा मे नाहड, देवभट्ट को देहड, वाग्भट्ट–बाहड, त्यागभट–चाहड, क्षेमधर–खीवड, पृथ्वीधर–पेथड, जसहड आदि मे उत्तरार्थ लुप्त होकर 'ड' और 'ण' प्रत्यय लग गये, जैसे—जाल्हण, कर्मण, आह्लादन का आल्हण, प्रह्लादन का पाल्हण आदि सख्यावद्ध उदाहरण दिये जा सकते है। आचार्यों के नाम भी वक्कसूरि, नन्नसूरि, जज्जिगसूरि आदि भी अपभ्रश काल की देन है।

आज के परिवेश मे नाम के आदि पद उपर्युक्त प्रथा के साथ-साथ नामान्त मे जैसे राजस्थान मे लाल, चन्द, राज, मल्ल, दान, सिंह, करण,

कुमार आदि प्रचलित है उसी प्रकार गूजर देश का भी समझना चाहिए क्योंकि प्राचीन काल मे दोनो भाषाए एक ही थी। अव तो अनेक नाम प्रान्तीय सीमाओ का उल्लघन कर सर्वत्र प्रचलित हो गए हैं। पूर्वकाल मे वेश-भूषा और नामो से देश व जाति की पहचान हो जाती थी किन्तु वह भेद आजकल गौण होता जा रहा है, अस्तु।

तीर्थंकर महावीर के काल मे प्रव्रजित हो जाने पर नाम-परिवर्तन की अनिवार्यता नही देखी जाती। इतिहास साक्षी है कि सभी श्रमणादि अपने गृहस्थ नाम से ही पहचाने जाते थे। तव प्रश्न होता है कि गृहस्थावस्था त्यागकर मुनि होने पर उनका नाम परिवर्तन कर नवीन नामकरण कव से और क्यो किया जाने लगा? इस पर विचार करने से लगता है कि चैत्यवास के युग से यह प्रथा आरम्भ हुई होगी, पर इसका कारण यही लगता है कि गृहत्याग के पश्चात् मुनिजीवन एक तरह से नया जन्म हो जाता है। गृह-सम्बन्ध विच्छेद के लिए वेश-परिवर्तन की भाति गृहस्थ सम्बन्धी रिश्ते, स्मृतिजन्य भावनाओं का त्याग, मोह-परिहार और वैराग्य-वृद्धि के लिए इस प्रथा की उपयोगिता को अस्वीकार नही किया जा सकता। श्री आत्मारामजी म० ने 'सम्यक्त्व-शल्योद्धार' के पृष्ठ १३ मे वतलाया है कि 'पचवस्तु' नामक ग्रन्थ मे इस प्रथा का उल्लेख पाया जाता है।

नाम परिवर्तन की प्रथा श्वेताम्बर और दिगम्बर सम्प्रदाय मे प्रचलित है जो स्थानकवासी, तेरापथी, लोका, कडुआमती के अतिरिक्त मूर्तिपूजक सम्प्रदाय मे तो है ही, परन्तु वे लोग स्वामी, ऋषि, मुनि आदि विशेषण मात्र लगा देते है। आजकल तो तेरापथी समाज मे भी नाम परिवर्तन करने की प्रथा कथचित् प्रचलित हो गई है। दिगम्बर सम्प्रदाय मे सागर भूषण, कीर्ति आदि नामान्त पद प्रचलित हैं। यत.—शातिसागर, देशभूषण, महावीर कीर्ति तथा आनन्द नन्दी भी विद्यानन्द, सहजानन्द आदि के साथ-साथ चन्द्र और सेन भी गण-सघ की परिपाटी मे प्रचलित है। वर्तमान काल मे श्वेताम्बर मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के तपागच्छ मे सागर, विजय विमल और मुनि एव खरतरगच्छ मे भी सागर व मुनि नाम प्रचलित हैं। पायचन्दगच्छ मे चन्द्र और अचलगच्छ मे सागर नामान्त

पद पाये जाते हैं। जबकि प्राचीन इतिहास मे इनके अतिरिक्त बहुसख्यक नामान्त पद व्यवहृत देखने मे आते है। हमे इस निवन्ध मे इन नामान्त पद जिन्हे नन्दी कहा जाता है उस पर विस्तार से विचार करना है।

इस प्रकार के नाम परिवर्तन की प्रथा भारत और यूरोप आदि देशो के राज्यतन्त्र मे भी पायी जाती है, पर दीक्षान्तर नाम परिवतन की प्रथा वैदिक सम्प्रदाय मे भी प्राप्त है। 'दर्शनप्रकाश' नामक ग्रन्थ मे सन्यासियो के दस प्रकार के नामो का उल्लेख सप्राप्त है। यत —

१. गिरि–सदाशिव, २ पर्वत–पुरुष, ३ सागर–शक्ति,
४. वन–रुद्र, ५ अरिण–ॐकार ६ तीर्थ–ब्रह्म
७ आगम–विष्णु, ८ मठ–शिव, ९ पुरी–अक्षर,
१०. भारती–परब्रह्म।

'भारत का धार्मिक इतिहास' ग्रन्थ के पृष्ठ १८० मे दस नामान्त पद इस प्रकार बतलाये हैं—

१ गिरि २. पुरी ३ भारती ४ सागर
५ आश्रम ६ पर्वत ७ तीर्थ ८ सरस्वती
९ व्रत १० आचार्य।

श्वेताम्बर जैन ग्रन्थो मे नामकरण विधि का सबसे प्राचीन विशद और स्पष्ट उल्लेख खरतरगच्छ की रुद्रपल्लीय शाखा के आचार्य श्री वर्धमानसूरिजी रचित 'आचारदिनकर' नामक ग्रन्थ मे विस्तार के साथ मिलता है जो वि० स० १४६८ कार्तिक शुक्ल १५ को जालधर देश (पजाब) के नन्दवनपुर (नादौन) मे विरचित है। इस नाम परिवर्तन का कारण बतलाते हुए लिखा है कि—

पूर्वं हि जैन साधुत्वे सूरित्वेऽपि समागते।
न नाम्ना परिवर्तोभून्मुनीना मोक्षगामिनाम् ॥६॥
साम्प्रत गच्छ सयोग. क्रियते वृद्धिहेतवे।
महास्नेहायायुषे च लाभाय गुरुशिष्ययोः ॥ ७ ॥
ततस्तेन कारणेन नाम राश्यनुसारितः।
गुरु' प्रधानता नीत्वा विनयेनानुकीर्तयेत् ॥ ८ ॥

नन्दी नाम के पूर्व पद के सम्वन्ध मे पृष्ठ ३८६ मे लिखा है कि—

"तथा योनि १, वर्ग २, लभ्यालभ्य ३, गण ४, राशि भेद ५, शुद्ध नाम दद्यात्—

नाम स्यात्पूर्वतः साधो. शुभो देवगुणागमै. ।
जिन–कीर्ति–रमा–चन्द्र–शीलोदय–धनैरपि ॥ २० ॥

विद्या–विनय–कल्याणैर्जीव–मेघ–दिवाकरै. ।
मुनि–त्रिभुवना–भोजै सुधा–तेजो–महानृपै. ॥२१ ॥

दया–भाव–क्षमा–सूरै सुवर्ण–मणि–कर्मभिः ।
आनन्दानन्त–धर्मैश्च जय–देवेन्द्र–सागरै. ॥ २२ ॥

सिद्धि–शान्ति–लब्धि–वुद्धि–सहज–ज्ञान–दर्शनै. ।
चारित्र–वीर–विजय–चारु–राम–मृगाधिपै ॥ २३ ॥

मही–विशाल–विवुध–विनयैर्नय–सयुतै. ।
सर्व–प्रवोध–रूपैश्च गण–मेरु–वरैरपि ॥ २४ ॥

जयन्त–योग–ताराभि कला–पृथ्वी–हरि–प्रियै. ।
एतत्–प्रभृतिभि पूर्व–पदै स्यादभिधा पुन ॥ २५ ॥

मुनि नामान्द पद

शशाङ्क–कुम्भ–शैलाब्धि–कुमार–प्रभ–वल्लभै. ।
सिंह–कुञ्जर–देवैश्च–दत्त–कीर्ति–प्रियैरपि ॥ २६ ॥

प्रवरानन्द–निधिभी राज–सुन्दर–शेखरै. ।
वर्धनाकर–हसैश्च रत्न–मेरु–समूर्त्तिभि. ॥ २७ ॥

सार–भूषण–धर्मैश्च–केतु–पुङ्गव–पुण्ड्रकैः ।
ज्ञान–दर्शन–वीरैश्च पदैरेभिस्तथोत्तरै ॥ २८ ॥

जायन्ते साधुनामानि स्थितै. पूर्व पदात्परै. ।
अन्यानि यानि सहज नामानि विदितानि च ॥ २९ ॥

नृणा तान्युत्तमपदैर्भूषा यद्व्रतदानत ।
एव विदध्य त्सुगुरु. साधूना नामकीर्तनम् ॥ ३० ॥

एतेष्वेव परं सूरिपद स्यात्तत्पदागमे ।
गच्छस्वभाव–सज्ञासु न विभेदोऽभिधानत. ॥ ३१ ॥

उपाध्याय-वाचनार्यं नामानि खलु साधुवत् ।
व्रतिनीना तु नामानि यतिव्रत्पूर्वगे पदे ॥ ३२ ॥

साध्वी नामान्त पद

स्युरुत्तरपदेरेभिरनन्तरममीरितै ।
मतिश्चूला-प्रभा-देवी-लब्धि-सिद्धिवतीमुखै ॥ ३३ ॥
प्रवर्तिनीनामप्येव नामानि परिकीर्तयेत ।
महत्तराणा तै पूर्वं सर्वं पूर्वपदैरपि ॥ ३४ ॥
श्रीरुत्तरपदे कार्या नान्यासु व्रतिनीषु च ।
मुनिनामानि सर्वाणि स्त्रियामादादियोजनात् ॥३५॥
जायन्ते व्रतिनी मज्ञा श्रान्तै. कैश्चिन्महत्तरा ।
विशेषान्नन्दि-सेनान्ता मज्ञास्युर्जिनकल्पिनाम् ॥ ३६ ॥
शेषनामानि तुल्यान्युभयोरपि सर्वदा ।
विप्राणामपि नामानि वुद्धार्हद्विष्णुवेधसाम् ॥ ३७ ॥
गणेश-कार्त्तिकेयार्कश्चन्द्रशङ्करधीमताम् ।
विद्याधर-समुद्रादि-कल्पद्रु-जययोगिनाम् ॥ ३८ ॥
ममानान्युत्तमाना च नामानि परिकल्पयेत् ।
ब्रह्मचारि-क्षुल्लकयोर्न नाम्ना परिवर्तनम् ॥ ३९ ॥

(इसके बाद क्षत्रिय वैश्यादि के नामकरण का उल्लेख सर्व गा० ४९ तक है ।)

सारांश—प्राचीन काल मे साधु एव सूरिपद के समय नाम परिवर्तन नही होते थे, पर वर्तमान मे गच्छसयोग वृद्धि के हेतु ऐसा किया जाता है । १ योनि, २ वर्ग, ३. लभ्यालभ्य, ४ गण और ५ राशि-भेद को ध्यान मे रखते हुए शुद्ध नाम देना चाहिए । नाम मे पूर्व-पद एव उत्तर-पद इस प्रकार दो पद होते है । उनमे मुनियो के नामो मे पूर्वपद निम्नोक्त रक्खे जा सकते हैं—

१ शुभ, २ देव, ३ गुण, ४ आगम,
५. जिन, ६ कीर्ति, ७. रमा (लक्ष्मी), ८ चन्द्र,

९ शील,	१० उदय,	११ घन,	१२ विद्या,
१३ विमल,	१४ कल्याण,	१५. जीव,	१६. मेघ,
१७ दिवाकर,	१८ मुनि,	१९ त्रिभुवन,	२० अभोज(कमल),
२१ सुधा,	२२. तेज,	२३ महा,	२४ नृप,
२५ दया,	२६ भाव,	२७ क्षमा,	२८. सूर,
२९ सुवर्ण,	३० मणि,	३१ कर्म,	३२ आनन्द,
३३ अनन्त,	३४ धर्म,	३५ जय,	३६ देवेन्द्र,
३७ सागर,	३८ सिद्धि,	३९ शान्ति,	४० लब्धि,
४१ बुद्धि,	४२ सहज	४३ ज्ञान,	४४ दर्शन,
४५ चारित्र,	४६ वीर,	४७ विजय,	४८. चारु,
४९ राम,	५०. सिह(मृगाधिप)	५१ मही,	५२. विशाल,
५३ विबुध,	५४ विनय,	५५ नय,	५६. सर्व,
५७ प्रवोध,	५८. रूप,	५९ गण,	६० मेरु,
६१ वर,	६२. जयन्त,	६३ योग,	६४ तारा
६५. कला,	६६. पृथ्वी,	६७. हरि,	६८. प्रिय।

मुनियो के नाम के अन्त्य पद ये हैं—

१ शशाक (चन्द्र),	२ कुम्भ,	३. शैल,	४ लब्धि,
५ कुमार,	६ प्रभ,	७ वल्लभ,	८ सिंह,
९ कुजर	१० देव,	११ दत्त,	१२ कीर्ति,
१३ प्रिय,	१४ प्रवर,	१५ आनन्द,	१६ निधि,
१७ राज,	१८ सुन्दर,	१९ शेखर,	२० वर्द्धन,
२१ आकर,	२२ हस,	२३ रत्न,	२४ मेरु,
२५ मूर्ति,	२६ सार,	२७ भूषण,	२८ धर्म,
२९ केतु (ध्वज),	३० पुण्डूक(कमल),	३१ पुड्गव,	३२ ज्ञान,
३३ दर्शन,	३४ वीर इत्यादि।		

सूरि, उपाध्याय, वाचनाचार्यों के नाम भी साधुवत् समझें। साध्वियो के नाम मे पूर्व पद तो मुनियो के समान ही समझें। उत्तर पद इस प्रकार हैं—

१ मती, २. चूला, ३ प्रभा, ४. देवी, ५ लब्धि, ६ सिद्धि ७ वती।

प्रवर्तिनी के नाम भी इसी प्रकार हैं। महत्तरा के नामो मे उत्तर-पद "श्री" रखना चाहिए।

जिनकल्पी का नामान्त पद 'सेन' इतना विशेष समझना चाहिए। आगे ब्राह्मण एव क्षत्रियो के नामो के पद भी बतलाये है। विशेष जानने के लिए मूल ग्रन्थ का ८० वा उदय (पृ० ३८६–३८९) दृष्टव्य है।

खरतरगच्छ मे इन नामान्त पदो को वर्तमान मे 'नादि' या 'नदी' कहते है और इनकी सख्या ८४ (चौरासी) बतलायी है जबकि ऊपर नाम ६८ ही दिये हैं। विशेष खोज करने पर हमे बीकानेर मे खरतर-गच्छीय श्रीपूज्य श्री जिनचारित्रसूरिजी के दफ्तर एव अनेक फुटकर पत्रो मे ऐसी ८४ नामान्त पद सूची उपलब्ध हुई, पर उन सब मे पुनरुक्ति रूप मे पाये नामो को बाद देने पर जब ७८ रह गये तो खरतरगच्छ गुर्वावली आदि मे प्रयुक्त नामो का अन्वेषण करने पर जो नये नाम उपलब्ध हुए उन सब को अक्षरानुक्रम सूची यहा प्रस्तुत की जा रही है—

१ अमृत	२ आकर	३ आनन्द	४ इन्द्र
५ उदय	६ कमल	७ कल्याण	८. कलश
९ कल्लोल	१० कीर्ति	११ कुमार	१२ कुशल
१३ कुजर	१४ गणि	१५ चन्द्र	१६ चारित्र
१७. चित्र	१८ जय	१९ णाग	२० तिलक
२१ दर्शन	२२ दत्त	२३. देव	२४ धर्म
२५ ध्वज	२६ धीर	२७ निधि	२८. निधान
२९ निवास	३० नदन	३१ नन्दि	३२ पद्म
३३ पति	३४ प ल	३५ प्रिय	३६ प्रबोध
३७ प्रमोद	३८ प्रधान	३९ प्रभ	४० भद्र
४१ भक्त	४२ भक्ति	४३ भूषण	४४ भण्डार
४५ माणिक्य	४६ मुनि	४७ मूर्ति	४८ मेरु

४९ मण्डण	५०. मन्दिर	५१ युक्ति	५२ रथ
५३. रत्न	५४ रक्षित	५५ राज	५६ रुचि
५७. रग	५८ लब्धि	५९ लाभ	६० वर्द्धन
६१ वल्लभ	६२ विजय	६३ विनय	६४ विमल
६५ विलास	६६ विशाल	६७ शील	६८ शेखर
६९ समुद्र	७० सत्य	७१ सागर	७२ सार
७३ सिन्धुर	७४ सिंह	७५ सुख	७६ सुन्दर
७७ सेन	७८ सोम	७९. सौभाग्य	८० सयम
८१ हर्ष	८२ हित	८३ हेम	८४ हस

निम्नोक्त नामान्त पदो का भी उल्लेख मात्र मिलता है, पर व्यवहृत होते नही देखे गये—

कनक, पर्वत, चरित्र, ललित, प्राज्ञ, मुक्ति, दास, गिरि, नद, मान, प्रीति, छत्र, फण, प्रभद्र, तिय, हिंस, गज, लक्ष्य, वर, धर, सूर, सुकाल, मोह, क्षेम, वीर (खरतरगच्छ मे नही), तुग (अचलगच्छ)। इनमे से कोई पद नाम के पूर्व पद रूप मे अवश्य व्यवहृत हैं।

इसी प्रकार साध्वियो की नदिया (नामान्त पद) भी ८४ ही कही जाती है, पर उनकी सूची अद्यावधि कही भी हमारे अवलोकन मे नही आई। हमने प्राचीन ग्रन्थो, पत्रो, टिप्पणको आदि से जो कुछ नामान्त पद प्राप्त किये वे ये हैं—

१ श्री	२ माला	३ चूला	४ वती
५ मती	६ प्रभा	७ लक्ष्मी	८. सुन्दरी
९ सिद्धि	१०. निधि	११ वृद्धि	१२ समृद्धि
१३ वृष्टि	१४ दर्शना	१५ धर्मा	१६ मजरी
१७ देवी	१८ श्रिया	१९ शोभा	२०. वल्ली
२१ ऋद्धि	२२ सेना	२३ शिक्षा	२४ रुचि
२५ शीला	२६. विजया	२७ महिमा	२८ चन्द्रिका

अब दिगम्बर सम्प्रदाय एव खरतरगच्छ के अतिरिक्त श्वेताम्बरीय गच्छो मे भी जितने मुनि–नामान्त पदो का उल्लेख देखने मे आया है उनका विवरण भी यहा प्रस्तुत किया जा रहा है।

दिगम्बर—नन्दि, चन्द्र, कीर्ति, भूषण—ये प्राय नन्दि सघ के मुनियो के नामान्त पद है। सेन, भद्र, राज, वीर्य—ये प्राय. सेन सघ के मुनि–नामान्त पद हैं। ('विद्वद् रत्नमाला' पृष्ठ १८)

उपकेश गच्छ की २२ शाखाएँ

१	सुन्दर	२.	प्रभ	३	कनक	४	मेरु
५	सार	६	चन्द्र	७	सागर	८	हस
९	तिलक	१०	कलश	११	रत्न	१२	समुद्र
१३	कल्लोल	१४.	रग	१५	शेखर	१६	विशाल
१७	राज	१८	कुमार	१९	देव	२०	आनन्द
२१	आदित्य	२२	कुभ				

('उपकेशगच्छ पट्टावली', जन साहित्य सशोधक)

उपर्युक्त नन्दी सूचियो से स्पष्ट है कि कही-कही दिगम्बर विद्वान् यह समझने की भूल कर बैठते है कि भूषण, सेन, कीर्ति आदि नामान्त पद दिगम्बर मुनियो के ही हैं वह ठीक नही है। इन सभी नामान्त पदो का व्यवहार श्वेताम्बर सम्प्रदाय मे भी होता रहा है।

नाम परिवर्तन मे प्राय यथाशक्य यह ध्यान भी रखा जाता है कि मुनि की राशि उसके पूर्व नाम की रहे। बहुत स्थानो मे प्रथमाक्षर भी वही रक्खा जाता है। जैसे सुखलाल का दीक्षित नाम सुखलाभ, राजमल का राजसुन्दर, रत्नसुन्दर आदि।

तपागच्छ

श्री लक्ष्मीसागरसूरि (स० १५०८—१७) के मुनियों के नामान्त पद सोमचारित्र कृत 'गुरुगुणरत्नाकर' काव्य के द्वितीय सर्ग मे इस प्रकार लिखे हैं—

१. तिलक	२ विवेक	३. रुचि	४. राज
५ सहज	६. भूषण	७ कल्याण	८ श्रुत
९ नीति	१०. प्रीति	११ मूर्ति	१२. प्रमोद
१३ आनन्द	१४. नन्दि	१५. साधु	१६ रत्न
१७ मण्डण	१८. नन्दन	१९. वर्द्धन	२० ज्ञान
२१. दर्शन	२२. प्रभ	२३. लाभ	२४. धर्म
२५ सोम	२६. संयम	२७. हेम	२८. क्षेम
२९. प्रिय	३० उदय	३१. माणिक्य	३२. सत्य
३३ जय	३४. विजय	३५. सुन्दर	३६. सार
३७ वीर	३८. धीर	३९. चारित्र	४०. चन्द्र
४१. भद्र	४२ समुद्र	४३. शेखर	४४. सागर
४५ सूर	४६ मंगल	४७ शील	४८ कुशल
४९ विमल	५०. कमल	५१. विशाल	५२. देव
५३ शिव	५४. यश	५५ कलश	५६ हर्ष

५७ हंस इत्यादि पदान्ता सहस्रश. ।

श्री हीरविजयसूरिजी के समुदाय की १८ शाखाएँ :

१ विजय	२. विमल	३. सागर	४ चन्द्र
५ हर्ष	६. सौभाग्य	७. सुन्दर	८. रत्न
९ धर्म	१०. हंस	११. आनन्द	१२. वर्द्धन
१३. सोम	१४. रुचि	१५ सार	१६. राज
१७ कुशल	१८. उदय		

(ऐतिहासिक सज्झाय माला पृ० ९७)

खरतरगच्छ की विशेष परिपाटिया :

खरतरगच्छ में नन्दी नामान्त पद के सम्बन्ध की कतिपय विशेष परिपाटियां देखने-जानने मे आई हैं, जिनसे अनेक महत्वपूर्ण बातों का पता चलता है। अत. उनका विवरण यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

१ खरतरगच्छ के आदि पुरुष श्री वर्द्धमानसूरिजी के शिष्य श्री जिनेश्वरसूरिजी के पट्टधर आचार्यों के नाम का पूर्वपद 'जिन' रूढ हो गया है। इसी प्रकार इनके शिष्य सुप्रसिद्ध सवेगरगशाला-निर्माता श्री जिनचन्द्रसूरिजी से चतुर्थ पट्टधर का यही नाम रखे जाने की प्रणाली रूढ हो गई है।

२ युगप्रधानाचार्य गुर्वावली मे स्पष्ट है कि उस समय सामान्य आचार्यपद के समय, इसी प्रकार उपाध्याय, वाचनाचार्य पदो के एव साध्वियो के महत्तरा पद प्रदान के समय भी कभी-कभी नाम परिवर्तन अर्थात् नवीन नामकरण होता था।

३ तपागच्छादि मे गुरु-शिष्य का नामान्त पद एक ही देखा जाता है, परन्तु खरतरगच्छ मे यह परिपाटी नही है। गुरु का जो नामान्त पद होगा, वही पद शिष्य के लिए नही रखे जाने की एक विशेष परिपाटी है। इसमे क्वचित् शातिहर्ष के शिष्य जिनहर्ष गणि का नाम अपवाद रूप मे कहा जा सकता है। भिन्न नन्दि प्रथा अर्थात् गुरु के नामान्त पद से भिन्न होने वाले मुनि ने अपने ग्रन्थादि मे यदि गच्छ का उल्लेख नही किया हो तो उसके खरतरगच्छीय होने की विशेष सम्भावना की जा सकती है।

४ साध्वियो के नामान्त पद के लिए न० ३ वाली बात न होकर गुरु-शिष्या का नामान्त पद एक ही देखा गया है।

५ सब मुनियो की दीक्षा पट्टधर गच्छनायक आचार्य के हाथ से ही होती थी। क्वचित् दूरदेश आदि मे स्थित होने आदि विशेष कारण से अन्य आचार्य महाराज, उपाध्यायो आदि विशिष्ट पद-स्थित गीतार्थों को आज्ञा देते या वासक्षेप प्रेषण करते, तब अन्य भी दीक्षा दे सकते थे। नव दीक्षित मुनियो का नामकरण गच्छनायक आचार्य द्वारा स्थापित नन्दि (नामान्त पद) के अनुसार ही होता था।

उपरिवर्णित खरतरगच्छ की ८४ नन्दियो मे सर्वाधिक नन्दियो की स्थापना अकबर प्रतिबोधक युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी महाराज ने की थी। उनके द्वारा स्थापित ४४ नन्दियो की सूची हमने अपने

'युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरि' ग्रन्थ के पृष्ठ २५९-६१ मे प्रकाशित की है। यह सूची हमे उनके दो विहार-पत्रो मे जिसमे सवतानुक्रम मे चातुर्मास और विशिष्ट घटनाओ के सक्षिप्त उल्लेख सहित उपलब्ध हुई थी। दीक्षा समय एक साथ जितने भी मुनियो की दीक्षा हो, उन सब का नामान्त पद एक साथ ही रक्खा जाय, यह परिपाटी बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस पूर्व यह अनिवार्य नही हो रहा होगा। इस महत्वपूर्ण प्रथा से उस समय के अधिकाश मुनियो की दीक्षा का अनुक्रम नन्दी अनुक्रम से प्राप्त हो जाने से हमे तत्कालीन विद्वानो व शिष्यो का इस वैज्ञानिक पद्धति से सम्पादन करने मे बडी सुविधा हो गई थी। जैसे गुणविनय और समयसुन्दर दोनो समकालीन मूर्धन्य विद्वान् थे, पर दीक्षा पर्याय मे कौन छोटा-बडा था ? यह जानने के लिए नन्दी अनुक्रम का सहारा परम उपयोगी सिद्ध हुआ। इसके अनुसार हम कह सकते हैं कि गुणविनय की दीक्षा प्रथम हुई थी क्योकि उनकी विनय नन्दी का क्रमाक ८ वा है और सुन्दर नन्दो का क्रमाक २० वा है।

उपर्युक्त नन्दी प्रथा से आकृष्ट होकर हमने विकीर्ण पत्रो मे, पृष्ठे-टिप्पणिका, हर्ष-टिप्पणिका आदि मे इसकी विशेष शोध की। श्रीपूज्यो के दफ्तर तो इसके विशेप आकर हैं। पीछे के दफ्तरो को देखने से पता चलता है कि एक नन्दि (नामान्त-पद) एक साथ दीक्षत मुनियो के लिए एक ही वार व्यवहृत न होकर कई बार दीक्षाएँ दिये जाने पर भी चलती रहती थी अर्थात् 'चन्द्र नन्दी चालु की और उसमे अधिक दीक्षाएँ नही हुई तो एक दो वर्ष चल सकती है अथवा निधन जैसी दुर्घटना या दीक्षा नाम स्थापन मे गुरु-शिष्य के नाम, मुहूर्त-राशि आदि प्रतिकूल बैठ जाने से नन्दि बदली जाती थी, अन्यथा गच्छनायक की इच्छा और लाभालाभ के हिसाब से लम्बे समय तक भी चल सकती थी।

६ युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी से अब तक तो खरतरगच्छ मे एक और विशेप प्रणाली देखी जाती है कि पट्टधर आचार्य का नामान्त पद जो होगा, सर्वप्रथम वही नन्दी स्थापन की जायगी। जैसे जिनचन्द्रसूरि जी जब पहले-पहल मुनियो को दीक्षा देंगे तो उनका नामान्त पद भी अपने नामान्त पदानुसार 'चन्द्र' ही रखेंगे। उनके प्रथम शिष्य सकलचन्द्र-

मणि थे। इसी प्रकार जिनसुखसूरि पहले 'सुख' नन्दि, जिनलाभसूरिजी 'लाभ' नन्दि, जिनभक्तिसूरिजी 'भक्ति' नन्दि ही सर्वप्रथम रखेगे। अर्थात् नव दीक्षित मुनियो का नामान्त पद सर्व प्रथम अनिवार्य रूप से वही रखा जायगा।

७ खरतरगच्छ मे समाचारी मर्यादा प्रवर्तक आचार्य श्री जिनपतिसूरिजी ने दप्तर-इतिहास या डायरी रखने की बहुत ही सुन्दर और उपयोगी परिपाटी प्रचलित की थी। ऐसी दफ्तर वही मे जिस सवत् मिती मे जिन्हे दीक्षित किया एव सूरिपद, उपाध्यायपदादि दिये उसकी पूरी नामावली लिख लेते थे। जहा-जहा विचरते थे वहा की प्रतिष्ठा, सघ-यात्रा आदि महत्त्पूण कार्यों एव घटनाओ का उल्लेख उसमे अवश्य किया जाता एव विशिष्ट श्रावको के नाम, परिचय, भक्तिकार्यादि का विवरण लिखा जाता रहा। जैसलमेर भण्डार की प्राचीन सूची मे एक ऐसी ३५० पत्रो की प्रति होने का उल्लेख देखा था पर वह अनुपलब्ध है। खरतरगच्छ अनेक शाखाओ मे विभक्त हो गया और वे शाखाएँ नाम शेष हो गई एव जो सामग्री थी, नष्ट हो गई। यदि वह सामग्री उपलब्ध होती तो खरतरगच्छ का ऐसा सर्वांगपूर्ण व्यवस्थित इतिहास तैयार होता, जैसा शायद ही किसी गच्छ का हो। भारतीय इतिहास मे ये दफ्तर-इतिहास, गुर्वावली, ख्यात आदि अत्यन्त मूल्यवान सामग्री है। हमे सर्व प्रथम दफ्तर जिसका नाम 'युगप्रधानाचार्य गुर्वावली' है,स० १३९३ तक का उसमे विवरण उपलब्ध है। इसके बाद स० १७०७ से वर्तमान तक का परवर्ती दफ्तर सप्राप्त है। मध्यकालीन जिनभद्रसूरिजी और यु० श्री जिनचन्द्रसूरिजी के समय के ३०० वर्षों का दफ्तर मिल जाता तो सर्वांगपूर्ण इतिहास तैयार करने मे हम सक्षम होते। यदि किसी ज्ञान भण्डार मे, बिना सूची के अटाले मे सौभाग्यवश मिल जाय तो उसकी पूर्णतया शोध होना आवश्यक है।

स० १७०७ से वर्तमान तक का एक दफ्तर जयपुर गद्दी के श्री पूज्य श्री जिनधरणेंद्रसूरिजी तक का उपलब्ध है जिसमे अनेकश पुराने दफ्तर से उद्धृत करने का जिक्र है। यद्यपि वह इतना व्यवस्थित नही है फिर भी उसमे राजस्थान, गुजरात के सैकडो गावो और वहा के श्रावको का उल्लेख है जो मूल्यवान सामग्री है। इसी प्रकार खरतर-

गच्छ की अन्यान्य शाखाओं के दफ्तर मिल जाए तो कितना उत्तम हो। बीकानेर श्रीपूज्यो की गद्दी का दफ्तर देखा है एव आचार्य शाखा की कुछ दीक्षानन्दी सूचिया मिली हैं। अन्य सभी शाखाओ की सामग्री खो गई, नष्ट हो गई है। परन्तु, प्राप्त दफ्तर मे जो यति/मुनियो को नामावली दी है वह मूल पुस्तक के अग्र भाग मे दी गई है। इस नामावली मे दी गई दीक्षाए केवल एक वर्ष मे और एक ही नन्दी मे हुई हैं। श्री जिनरत्नसूरिजी श्रीपूज्य आचार्य थे जो त्यागी, पच व्रतधारी थे। उस जमाने मे सभी गच्छो मे गच्छनायक श्रीपूज्य कहलाते और उन्हे यति कहा जाता था। साधु, यति, ऋषि, मुनि, श्रमण, निर्ग्रन्थ, भिक्षु, मुण्ड आदि १० पर्यायवाची शब्द हैं। स० १७०७ से पूर्व श्री जिनरत्नसूरिजी या उनके पूर्ववर्ती आचार्यों ने दीक्षाएँ दी, उनकी सूची अप्राप्त है। इस सूची से वे कहा-कहा विचरे, कहा किसे और किस सवत् मिती, स्थान मे दीक्षा दी, गुरु का नाम, गृहस्थावस्था का नाम, दीक्षानाम, शाखा आदि अनेक बातो का पता चल जाता है। एक-एक नन्दी मे, बीस, पचास, सत्तर तक दीक्षाएँ हुई जिनका प्रामाणिक विवरण ऐसे दफ्तरो मे मिलता है। यदि इतिहासकारो के पास ऐसे दुर्मूल्य दस्तावेज हो तो उनकी अनेक समस्याए हल हो सकती हैं। प्रामाणिक विवरण प्राप्त करने का परिश्रम और समय की बचत हो सकती है। रास, चौपाई, तीर्थमाला, शिलालेख, प्रशस्तियो आदि सन्दर्भ समर्थित प्रामाणिक इतिहास लिखा जा सकता है।

नन्दी या नामान्त पद सम्बन्धी जिन-जिन मर्यादाओ, विधाओ का ऊपर उल्लेख किया गया है वह सब खरतरगच्छ की श्री जिनभद्रसूरि परम्परा-बृहत्शाखा के दृष्टिकोण से यथाज्ञात लिखा है। सम्भव है इस विशाल गच्छ की अनेक शाखाओ की परिपाटी मे भिन्नता भी आ गई हो। यह शोध का विषय सामग्री की उपलब्धि पर निर्भर है।

वर्तमान मे उपर्युक्त परिपाटी केवल यति समाज मे ही है। जहा परम्परा मे हजारो यतिजन थे वे क्रमश. आचारहीन होते गये, क्रिया उद्धार करने वाले मुनिजनो से उनका सम्बन्ध विच्छेद होता गया। कुछ आचारवान विद्वानो के अतिरिक्त यतिजन भी गृहस्थवत् हो गये। मर्यादाएँ मरणोन्मुख होती जाने से अब दफ्तर लेखन प्रणाली भी नामशेष

हो रही है। खरतरगच्छीय मुनियो मे अभी एक शताब्दी से उन प्राचीन परिपाटियो/प्रणालियो का व्यवहार वन्द हो गया है। अब उनमे केवल 'सागर' नन्दी और श्री मोहनलालजी महाराज के समुदाय मे 'मुनि' एव साध्वियो मे "श्री" नामान्त पद ही रूढ हो गया है। गुरु-शिष्यो का एक ही नामान्त पद हो जाने से उतना सौष्ठव नही रहा। साध्वियो के नाम व दीक्षा आदि का विवरण जयपुर श्रीपूज्यजी के दफ्तर मे स० १७८३ से उपलब्ध है। त्याग वैराग्यमय परम्परा शिथिल होते, यतिनी-साध्वी परम्परा का नामशेष होना अनिवार्य था। सवेगी परम्परा मे वे परिपाटिया तो शेष हो गई पर जिन शासन की उन्नति एव शासन-प्रभावना मे चार चाद लग गये।

हमारे ऐतिहासिक परिशीलन मे गत पचास वर्षो मे खरतरगच्छीय दृष्टिकोण से जो देखा, अनुभव किया वही ऊपर लिखा गया है। इसी प्रकार अन्य विद्वानो को अन्य गन्थो के नामान्त पद सम्बन्धी विशेष परिपाटियो का अनुसन्धान कर उन पर प्रकाश डालना अपेक्षित है। आशा है इस ओर विद्वद्गण ध्यान देकर इतिहास के वन्द पृष्ठो को खोलने का प्रयास करेंगे।

खम्भात मे आयोजित श्री महावीर विद्यालय, वम्बई द्वारा जन साहित्य समारोह के छठे अधिवेशन मे अध्यक्षीय भाषण के रूप मे प्रस्तुत निवन्ध पढा गया था जो प्रस्तुत ग्रन्थ की भूमिका स्वरूप था। वस्तुत यह विषय अत्यन्त महत्वपूण है। आत्मा के उत्थान/ऊर्ध्वीकरण हेतु सयम मार्ग मे दीक्षित होना अनिवार्य है। यह आत्मोत्थान की नीव है, आत्म साधना साहित्य-निर्माण, तीर्थ-मन्दिरो की प्रतिष्ठा, तपश्चरण, सघ-यात्रा एव जानतिक जीवन को ऊचा उठाने, धर्म-मार्ग मे लगाने आदि समस्त सत्कार्यो की स्व-पर-कल्याण कर्त्तृ सयम मार्ग का प्रवेश द्वार दीक्षा है। गत एक हजार वर्षो मे जो चैत्यवास को निरसन कर आध्यात्मिक क्रान्ति आयी और सुविहित मार्ग/खरतरगच्छ मे दीक्षित हुए उनका आंशिक लेखा-जोखा इस ग्रथ मे सगृहीत किया गया है।

खरतरगच्छ एक महान् गच्छ है जिसकी बारह शाखाओ का इतिहास लुप्त है, शाखाएँ नाम शेष हो गई उनके क्रमिक इतिहास के दफ्तर भी अप्राप्त हैं। वर्तमान मे जितना भी उपलब्ध है, इस ग्रन्थ मे

सगृहीत है। यह सम्पूर्णतया नही पर खण्ड-खण्ड मे उपलब्ध हैं। प्रथम खण्ड गणधर सार्द्ध शतक वृत्ति के आधार पर श्री वर्द्धमानसूरि से जिनदत्तसूरि तक है। उस समय हजारो दीक्षाएँ सम्पन्न हुई थी पर थोडे से नाम उपलब्ध हुए। दूसरा खण्ड जिनपालोपाध्याय द्वारा स० १३०५ मे दिल्ली निवासी सेठ साहुली सुत हेमा की अभ्यर्थना से रचित है। बाद मे स० १३९३ तक युगप्रधान गच्छनायको के साथ वाले प्रामाणिक मुनियो द्वारा दैनदिनी की भांति सकलित है। युगप्रधानाचार्य गुर्वावली ही एतद्विषयक विश्व साहित्य का अजोड ग्रन्थ है। बाद को दीक्षाएँ विज्ञप्ति महालेख और रास-चौपई आदि के आधार से व पट्टावलियो मे प्राप्त सामग्री पर आधृत है। अकबर प्रतिबोधक चतुर्थ दादा श्री जिनचन्द्र-सूरि जी ने जिनका साधु सघ दो हजार के लगभग था, ४४ नन्दियो मे दीक्षा दी थी।

नन्दी शब्द महाकल्याणकारी है, भगवान के चौमुख समवशरण के सम्मुख दीक्षा, व्रत-ग्रहण आदि क्रियाएँ सम्पन्न होती हैं इसी से नामान्त पद को नन्दी कहते हैं। समवशरण त्रिगडे पर 'नन्दी मण्डाण' कहलाता है। गुजरात मे विचरते खरतरगच्छ के ४० आचार्यो को सघ-यात्रा से पाटण लौटने पर वस्त्र द्वारा सम्मानित करने का उल्लेख मिलता है। जिनकुशलसूरि पट्टाभिषेक रास मे ७०० साधु और २४०० साध्विया होने का उल्लेख है। जिनदत्तसूरिजी ने जहा हजारो दीक्षाएँ दी और लक्षाधिक नव्य जैन बनाये। जैसलमेर भण्डार में ३५० पत्रो का इतिहास था जो अप्राप्त है। खरतर-गच्छीय विद्वानो द्वारा साहित्य निर्माण बहुत बडी सख्या में हुआ। सरक्षण न मिलने से बहुत साहित्य अप्राप्त हो गया। गन्थो की पुष्पिकाओ और प्रशस्तियो व अभिलेखो का सग्रह किया जाय तो उसमे बहुत सा इतिहास उपलब्ध हो सकता है।

पर्वाचार्य सभी पच महाव्रतधारी और परिग्रह त्यागी थे, इधर १५०–२०० वर्षों में आचार-शैथिल्य बढा और क्रमश नामशेष हो रहे हैं। बीकानेर और जयपुर के अतिरिक्त ३५० वर्ष से प्राचीन इतिहास तो सर्वथा अनुपलब्ध है। श्री जिनधरणेन्द्रसूरिजी के प्राप्त दफ्तर मे स० १७०७ से दीक्षा न दी सूची प्राप्त हुई जो दूसरे खण्ड मे दे दी गई हैं। □

—भंवरलाल नाहटा

खरतर-गच्छ दीक्षा नन्दी सूची

[पूर्व इतिहास]

प्रथम खण्ड

पूर्व इतिहास

भगवान महावीर का शासन चढती-पडती १३ उदयो के बावजूद भी इक्कीस हजार वर्ष तक अखण्ड रहेगा, इन आप्त-वचनो के अनुसार आचार-शैथिल्य और चैत्यवास के अन्धकार युग की अनुभूति श्री हरिभद्र-सूरि जैसे महान् आचार्य ने अपने शिर शूल के रूप मे सम्बोध प्रकरण मे अभिव्यक्त की है। उनके समय मे चैत्यवास के उन्मूलन का काल परिपक्व नही हुआ था, फिर भी सुविहित साधु-वर्ग का सर्वथा दुष्काल नही था। तिमिरावसान का समय आया और चैत्यवास के अस्तगत होने के हेतु उदय काल का प्रादुर्भाव हुआ तथा आगम-सम्मत आचार-सम्पन्न महापुरुषो का तेज प्रसरित होने लगा, जिसके प्रभाव से बौद्धधर्म की भाति भारत से लुप्त होते-होते जैन धर्म बच गया, तीर्थंकर-वाणी सत्य हो गई। बौद्धधर्म तो अपनी सुविधावादी नीति से विदेशो मे भी पर्याप्त खप गया, पर जैन धर्म अपने चुस्त आचार-विचारो के कारण विदेशो मे कथचित् विस्तार पाकर भी स्थायित्व प्राप्त करने मे अक्षम रहा। शिथिलाचार प्रवाहित चैत्यवासियो मे आध्यात्मिक चेतना वाले त्याग-वैराग्य सम्पन्न सन्त-महात्मा शुद्ध मार्ग को ओर उन्मुख हुए, श्रावकगण भी उनके प्रभाव से मुक्त होकर विधि-मार्ग की ओर आकृष्ट हुए। जैनाचार्यों ने क्षत्रिय, ब्राह्मण, कायस्थ और वैश्यादि जातियो के नये खून से/नव्य प्रतिबोधित जातियो से जैन प्रजा मे नव चेतना का सचार किया और धर्म को सुव्यवस्थित रूप दिया। इस विषय के महत्वपूर्ण कार्य सर्जक दादा जिनदत्तसरि और उनके पूर्व व पश्चात्वर्ती ज्योतिर्धरो के नाम उल्लेख योग्य है। स्वर्गीय दादा जिनदत्तसूरिजी ने गुरुदेव श्री सहजानन्दजी महाराज से यह रहस्य बतलाया था कि हमारे समय मे जो योग्यता जैनेतरो मे थी वह आज जैनो मे भी नही है। तभी उस

समय जैनतेर लोग वीतराग मार्ग से प्रभावित होकर शासनोद्धार मे सहयोगी वने तथा मठवासी, चैत्यवासो लोग भी अपनी शुद्धि कर, सुविहित उप-सम्पदा ग्रहण कर स्व-पर-कल्याण पथ के पथिक बने।

वर्द्धमानसूरि

अभोहर देश के चौरासी चैत्यो के अधिपति जिनचन्द्र के शिष्य वर्द्धमान ने सुविहित आचार्य उद्य तनसूरिजी के पास अ कर त्याग वैराग्य पूर्वक उप-सम्पदा ग्रहण की और वद्धमा सृरि वने। उनके पास महान् प्रतिभा सम्पन्न जिनेश्वर और बुद्धिसागर भ्राताओ और कल्याणमति वहिन ने दीक्षा लो। वर्द्धमानसूरि जव पाटण पधारे तब उनके साथ १८ ठाणा अर्थात् १७ शिष्य थे, जिनके नाम अन्वेषणीय है। वद्धमानसूरि ने जिनेश्वर और बुद्धिमागर को आचार्य पद दिया। चत्यवासियो पर विजय प्राप्ति स्वरूप खरतर-विरुद प्रसिद्ध हुआ और यही से सुविहित विधि-मार्ग, कोटिक गण चन्द्रकुल वज्रशाखा मे खरतरगच्छ कहलाने लगा।

जिनेश्वरसूरि

श्री जिनेश्वरसूरिजी महाराज के जिनचन्द्रसूरि, अभयदेवसूरि, धनेश्वरसूरि, हरिभद्रसूरि, प्रसन्नचन्द्रसूरि आदि आचार्य एव धर्मदेव, सुमति, विमल आदि अनेक शिष्य उपाध्याय हुए। धर्मदेवोपाध्याय और सहदेव दोनो भाई थे। धर्मदेवोपाध्याय ने हरिसिंह व सर्वदेव भ्राताओ तथा सोमचन्द्र को शिष्य वनाया।

सहदेव गणि ने अशोकचन्द्र को अपना शिष्य बनाया जिसे जिनचन्द्र-सूरि ने सुशिक्षित कर आचार्य पदारूढ किया। इन्होने अपने स्थान पर हरिसिंहाचार्य को स्थापित किया। प्रसन्नचन्द्र और देवभद्र नामक दा सूरि और थे। देवभद्रसूरि सुमति उपाध्याय के शिष्य थे। प्रसन्नचन्द्र आदि चार शिष्यो को अभयदेवसूरिजी ने न्याय शास्त्रादि पढाये—१ प्रसन्नचद्र, २ वर्द्धमान, ३ हरिभद्र, ४ देवभद्र। डिडियाणा मे प्रवर्त्तिनी मरुदेवी ने ४० दिन का सथारा लिया हुआ था उसे सलेखना कराई। उन गाथाओ मे 'तुम्ह गच्छम्मि' लिखा है। इनके सिवाय विस्तृत मुनि मण्डल

होगा। पर यहा तक साधु-साध्वियो के दीक्षा-सवतादिका इतिहास सोमचन्द्र (जिनदत्तसूरि) के अतिरिक्त अप्राप्त हैं। श्री अभयदेवसूरि जी के प्रिय तेजस्वी शिष्य जिनवल्लभसूरि का भी दीक्षा समय अज्ञात है।

जिनदत्तसूरि :

इन्होने वागड देश मे अनेक साधु-साध्वियो को दीक्षा दी। जिनशेखर को उपाध्याय पद देकर मुनियो के साथ रुद्रपल्ली भेजा। जयदेवाचार्य, जिनप्रभाचार्य, गुणचन्द्र, विमलचन्द्र, जिनरक्षित, शीलभद्र को अपनी मा के साथ, जयदत्त रामचन्द्र, जीवानन्द, ब्रह्मचन्द्र, जिनरक्षित, शीलभद्र, वरदत्त, श्रीमती, जिनमती, पूर्णश्री को अध्ययनार्थ धारा नगरी भेजा। अध्ययन कर वापस आने पर श्री जिनदत्तसूरिजी ने स्वदीक्षित जीवदेवाचार्य को आचार्य पद दिया। जिनचन्द्रगणि, वा० शीलभद्रगणि, वा० स्थिरचन्द्र गणि, ब्रह्मचन्द्र गणि, वा० विमलचन्द्र गणि, वा० वरदत्त गणि, वा० भुवनचन्द्र गणि, वरनाग गणि, वा० रामचन्द्र गणि, वा० मणि चन्द्रगणि एव श्रीमती, जिनमति, पूर्णश्री, ज्ञानश्री, जिनश्री पाचो साध्वियो को महत्तरा पद से विभूषित किया। हरिसिंहाचार्य के शिष्य मुनिचन्द्र को उपाध्याय पद, उनके शिष्य वा० जयसिह को चित्तौड मे आचार्य पद, उसके शिष्य जयचन्द को पाटण मे समवशरण मे आचार्य पद दिया। जीवानन्द को उपाध्याय पद दिया। गुर्वावली मे लिखा है कि यदि इनका पूरा विवरण लिखें तो एक वडा ग्रन्थ हो जाय।

मणिधारी जिनचन्द्रसूरि :

इनकी दीक्षा श्री जिनदत्तसूरि जी के करकमलो से स० १२०३ फा० सु० ९ को अजमेर मे हुई और स० १२०५ वै० सु० ६ को पट्टधर आचार्य बनाया। इन्होने स० १२१४ त्रिभुवन गिरि (तहनगढ) मे प्रतिष्ठा व हेमदेवी को प्रवर्तिनी पद देकर स० १२१७ मे फाल्गुन सुदि १० को मथुरा मे पूर्णदेव, जिनरथ, वीरभद्र, वीरजय, जगहित, जयशील, जिन-भद्रादि सहित जिनपतिसूरि को दीक्षा दी। श्रे० क्षेमधर को प्रतिबोध दिया। उसी वर्ष वैसाख सु० १० को मरुकोट मे चन्द्रप्रभ विधि चैत्य मे स्वर्ण कलश-ध्वज दण्डारोहण किया। गोल्लक सेठ तथा क्षेमधर ने

५०० द्रम से माला ग्रहण की। स० १२१८ उच्चानगरी मे ऋषभदत्त, विनयचन्द्र, विनयशील, गुणवर्द्धन, मानचन्द्र ५ साधुओ, जगश्री, सरस्वती, गुणश्री आदि साध्वियों को दीक्षा दी। देवभद्र की पत्नी को भी दीक्षित किया। आशिका मे मुनि नागदत्त को वाचनाचार्य पद दिया।

जिनपतिसूरि :

इनका जन्म स० १२१० मे विक्कमपुर मे, दीक्षा स० १२१७ फा०सु० १०, पदारोहण स० १२२३ का० सु० १३ को हुआ। वाचनाचार्य पद धारक जिनभद्राचार्य को आचार्य पद देकर द्वितीय श्रेणी का आचार्य बनाया। पद्मचन्द्र, पूर्णचन्द्र को दीक्षित किया। स० १२२४ मे विक्रमपुर मे गणधर, गुणशील, पूर्णरथ, पूर्णसागर, वीरचन्द्र, वीरदेव को क्रमश ३ नन्दिया स्थापित कर दीक्षा दी। जिनप्रिय मुनि को उपाध्याय पद दिया। स० १२२५ पुष्करणी मे सपत्नीक जिनसागर, जिनाकर, जिनवन्धु, जिनपाल, जिनधर्म, जिनशिष्य व जिनमित्र को दीक्षा दी। विक्रमपुर आकर जिनदेवगणि को दीक्षा दी। स० १२२७ मे उच्चा नगरी पधारकर धर्मसागर, धर्मचन्द्र, धर्मपाल, धर्मशील, धनशील, धर्ममित्र एव साथ ही धर्मशील की माता को भी दीक्षित किया। जिनहित मुनि को वाचनाचार्य पद दिया।

श्री जिनपतिसूरि ने मरुकोट पधारकर शीलसागर, विनयसागर और उनकी वहिन अजितश्री को सयम व्रत दिया। स० १२२८ मे सागरपाडा पधारे।

स० १२२९ सागरपाडा मे मणिभद्र के पट्ट पर विनयभद्र को वाचनाचार्य पद दिया।

स० १२३० मे विक्रमपुर से विहार कर स्थिरदेव, यशोधर, श्रीचन्द्र, अभयमति, आसमति, श्री देवी को दीक्षा दी।

स० १२३२ मे पुन विक्रमपुर आकर भाण्डागारिक गुणचन्द्र गणि के स्तूप की प्रतिष्ठा की। फिर आसिका पधारे तो उस समय साथ मे ८० साधु थे। धर्मसागर, धर्मरुचि को दीक्षा दी। व्याघ्रपुर मे पार्श्वदेव गणि को दीक्षित किया।

स० १२३४ मे फलवर्द्धिका मे प्रतिष्ठा कर श्रीजिनमत गणि को उपाध्याय पद दिया। सूरिजी उन्हे आचार्य पद देते थे पर उन्होने अस्वीकार कर दिया। गुणश्री साध्वी को महत्तरा पद दिया। वही पर सर्वदेवाचार्य और जयदेवी साध्वी की दीक्षा सम्पन्न हुई। वहा से अजमेर जाकर स० १२३५ का चातुर्मास किया और जिनदत्तसूरि स्तूपोद्धार करवाया। देवप्रभ तथा उसकी मा चरणमति को दीक्षा दी।

स० १२४१ मे फलौदी आकर जिणनाग, अजित, पद्मदेव, गणदेव, यमचन्द्र, धर्मश्री व धर्मदेवी साधु-साध्वियो को दीक्षित किया।

स० १२४४ मे सघयात्रा व प्रद्युम्नाचार्य से शास्त्रार्थ के पश्चात् अणहिलपुर पाटण मे पधारे और गच्छ के आचार्यों को वस्त्र देकर सम्मानित किया।

लवणखेडा मे पूर्णदेव गणि, मानचन्द्र गणि, गुणभद्र गणि को वाचनाचार्य पद दिया। पुष्करिणी नगरी (पोकरण) मे स० १२४५ फाल्गुन मास मे धर्मदेव, कुलचन्द्र, सहदेव, सोमप्रभ, सूरप्रभ, कीर्त्तिचन्द्र, सिद्धसेन, रामदेव और चन्द्रप्रभ आदि मुनियो तथा सयमश्री, शान्तमति, रत्नमति आदि साध्वियो को दीक्षा दी।

स० १२४७–४८ मे लवणखेडा मे रहकर मुनि जिनहित को उपाध्याय पद दिया। स० १२४९ मे पुष्करिणी आकर मलयचन्द्र को दीक्षा दी। स० १२५० मे विक्रमपुर आकर पद्मप्रभ को आचार्य पद दिया और उन्हे सर्वदेवसूरि नाम से प्रसिद्ध किया। स० १२५१ मे कुहियप गाव मे जिनपाल गणि को वाचनाचार्य पद दिया।

स० १२५२ मे विनयानन्द गणि को दीक्षित किया। स० १२५३ मे सुप्रसिद्ध विद्वान् भण्डारी, नेमिचन्द्र को प्रतिबोध दिया।

स० १२५४ मे श्री धारा नगरी मे साध्वी रत्नश्री को दीक्षा दी।

स० १२५६ चैत्र वदि ५ को नेमिचन्द्र, देवचन्द्र, धर्मकीर्त्ति और देवेन्द्र को लवणखेटक मे दीक्षा दी।

स० १२५८ चैत्र वदि २ को वीरप्रभ, देवकीर्त्ति श्रावको को दीक्षा दी। इनको वडी दीक्षा स० १२६० मे आषाढ वदि ६ को हुई। साथ ही सुमति गणि व पूर्णभद्र गणि को दीक्षा दी, आनन्दश्री को महत्तरा पद दिया।

स० १२६३ फाल्गुन वदि ४ को लवणखेडा मे महावीर प्रतिमा स्थापना के अवसर पर नरचन्द्र, रामचन्द्र, पूर्णचन्द्र, विवेकश्री, मगलमती, कल्याणश्री, जिनश्री आदि साधु-साध्वियो को दीक्षा दी तथा धर्मदेवी को प्रवर्त्तिनी पद से विभूषित किया।

स० १२६५ लवणखेडा मे मुनिचन्द्र, मानचन्द्र, सुन्दरमति व आसमति को दीक्षा दी।

स० १२६६ मे भावदेव, जिनभद्र, विजयचन्द्र को दीक्षा दी। गुणशील को वाचनाचार्य वनाया एव ज्ञानश्री को साध्वी वनाया।

स० १२६९ मे जावालिपुर मे जिनपाल गणि को उपाध्याय पद दिया। धर्मदेवी प्रवर्त्तिनी को महत्तरा पद देकर नामान्तर 'प्रभावती' प्रसिद्ध किया। महेन्द्र, गुणकीर्त्ति, मानदेव, चन्द्रश्री, केवलश्री—पाचो को दीक्षित किया।

स० १२७४ मे वृहद्द्वार मे शास्त्रार्थ से लौटते हुए मार्ग मे भावदेव को मुनि दीक्षा दी।

स० १२७५ मे जावालिपुर मे जेठ सुदि १२ को भुवनश्री गणिनी, जगमती, मगलश्री एव विमलचन्द्र गणि, पद्मदेव गणि को दीक्षा दी।

स० १२७७ पालनपुर मे श्री जिनपतिसूरि आषाढ सुदि १० को स्वर्गवासी हुए।

जिनेश्वरसूरि (द्वितीय) :

श्री जिनेश्वरसूरि का जन्म मरोट में भण्डारी नेमिचन्द्र की पत्नी लक्ष्मणी की कोख से स० १२४५ मार्गशीर्ष शुक्ल ११ को हुआ था।

इनका जन्म नाम अम्बड था। स० १२५८ मे जिनपतिसूरि जी द्वारा वीरप्रभ नाम से खेड नगर मे दीक्षित हुए। सूरि पद स० १२७८ मा० सु० ६ मे हुआ, पट्टधर बने। स० १२७८ माघ सुदि ९ को जावालिपुर मे ७ शिष्यो को दीक्षाएं दी—

यशकलश गणि, विनयरुचि गणि, बुद्धिसागर गणि, रत्नकीर्ति गणि, तत्त्वप्रभ गणि, रत्नप्रभ गणि, अमरकीर्ति गणि।

स० १२७९ जेठ सुदि १२ को श्रीमालपुर मे निम्नोक्त दीक्षाएँ दी, इनमे साधुओ का नामान्त पद एक बिजय और दूसरा प्रभ था और साध्वियो का 'माला' था, नाम निम्नोक्त हैं :—

श्रीविजय, हेमप्रभ, तिलकप्रभ, विवेकप्रभ साधु तथा चारित्रमाला गणिनी, ज्ञानमाला, और सत्यमाला गणिनी—तीन साध्वियाँ।

स० १२७९ माघ सुदि ५ को जावालिपुर में हुई दीक्षाएँ—

अर्हद्दत गणि, विवेकश्री गणिनी, शीलमाला गणिनी, चन्द्रमाला गणिनी, विनयमाला गणिनी।

स० १२८० माघ सुदि १२ को पुन श्रीमालपुर मे प्रतिष्ठा और ध्वजारोपणादि के पश्चात् फाल्गुन कृष्ण १ के दिन ४ दीक्षाएँ सम्पन्न हुईं। यत.—

कुमुदचन्द्र, कनकचन्द्र तथा पूर्णश्री गणिनी व हेमश्री गणिनी।

स० १२८१ वैसाख सुदि ५ को जाबालिपुर मे निम्नोक्त ४ साधु और साध्वियो की दीक्षाएं हुई —विजयकीर्त्ति, उदयकीर्त्ति, गुणसागर, परमानन्द साधु और कमलश्री, कुमुद श्री साध्वियाँ।

स० १२८३ माघ बदि ६ को बाडमेर मे सूरप्रभ को उपाध्याय पद और मगलमति गणिनी को प्रवर्त्तिनी पद दिया गया। वीरकलश गणि, नन्दि-वर्द्धन गणि और विजयवर्द्धन गणि को दीक्षा दी।

स० १२८४ मे बीजापुर पधारकर श्रीवासुपूज्य स्वामी की स्थापना की और आषाढ सुदि २ अमृतकीर्ति गणि, सिद्धिकीर्त्ति गणि एव चारित्रसुन्दरी, धर्मसुन्दरी गणिनी को दीक्षा दी।

सं० १२८५ ज्येष्ठ सुाद २ को कीर्त्तिकलश गणि, पूर्णकलश गणि व उदयश्री गणिनी को बीजापुर मे ही दीक्षित किया। और, वही ज्येष्ठ सुदि ६ को न्यायचन्द्र, विद्याचन्द्र एवं अभयचन्द्र गणि को दीक्षा दी ।

स० १२८७ फाल्गुन बदि ५ को पालनपुर मे जयसेन, देवसेन, प्रबोधचन्द्र, अशोकचन्द्र गणि और कुलश्री गणिनी, प्रमोदश्री गणिनी को दीक्षा देकर उपकृत किया ।

स० १२८८ पौष सुदि ११ को जालोर मे निम्नोक्त दीक्षाएं दी—

१ कल्याणकलश, २ प्रसन्नचन्द्र, ३ लक्ष्मीतिलक, ४ वीरतिलक, ५ रत्नतिलक पाँच मुनि तथा धर्ममति, विनयमति, विद्यामति, चारित्रमति चार साध्वियो को दीक्षित किया ।

स० १२८८ ज्येष्ठ शुक्ला १२ को चित्तौड मे अजितसेन, गुणसेन, अमृतमूर्ति, धर्ममूर्ति, राजीमति, हेमावली, रत्नावली गणिनी तथा मुक्तावली गणिनी की दीक्षाएं हुई ।

स० १२६१ मे वैसाख सुदि १० को जाबालिपुर मे श्री जिनेश्वर-सूरिजी महाराज ने १ यतिकलश, २ क्षमाचन्द्र, ३ शीलरत्न, ४ धर्मरत्न, ५ चारित्ररत्न, ६ मेघकुमार गणि, ७ अभयतिलक, ८ श्रीकुमार मुनि एव शीलसुन्दरी तथा चन्दनसुन्दरी साध्वियो को दीक्षा दी। मिती ज्येष्ठ वदि २ के दिन मूल नक्षत्र मे श्री विजयदेवसूरि को आचार्य पद से विभूषित किया। स० १२६४ मे श्रीसघहित मुनि को उपाध्याय पद दिया ।

स० १२६६ मे पालनपुर पधार कर फाल्गुन वदी ५ को प्रमोदमूर्त्ति, प्रबोधमूर्त्ति, देवमूर्ति गणि —तीनो को दीक्षा प्रदान की।

सं० १२६७ मिती चैत्र सुदि १४ के दिन पालनपुर मे देवतिलक व धर्मतिलक को दीक्षा दी ।

स० १२६६ के प्रथम आश्विन मास की द्वितीया के दिन प्रगाढ वैराग्य के वशीभूत छाजहड महामत्री कुलधर को दीक्षा देकर कुलतिलक मुनि नाम रखा।

स० १३०४ वै० शु० १४ को विजयवर्द्धन गणि को आचार्य पद से

विभूषित कर उनका नाम बदलकर जिनरत्नाचार्य रखा एव निम्नलिखित साधुओ को दीक्षा प्रदान की :—

१ त्रिलोकहित, २ जीवहित, ३ धर्माकर, ४ हर्षदत्त, ५ सघप्रमोद, ६ विवेकसमुद्र, ७ देवगुरुभक्त, ८ चारित्रगिरि, ९ सर्वज्ञभक्त, १० त्रिलोकानद ।

स० १३०९ माघ शुक्ल १२ को पालनपुर मे श्रीजिनेश्वरसूरि जी महाराज ने समाधिशेखर, गुणशेखर, देवशेखर, साधुभक्त, वीरवल्लभ मुनि तथा मुक्तिसुन्दरी साध्वी को दीक्षित किया । उसी वर्ष माघ सुदि १० को नगरकोट आदि अनेक स्थानो मे प्रतिष्ठापनार्थ अनेक प्रतिमाओ की अजनशलाका-प्रतिष्ठादि सम्पन्न हुई ।

स० १३१० वैशाख सुदि ११ को जावालिपुर (जालोर) मे चारित्रवल्लभ, हेमपर्वत, अचलचित्त, लाभनिधि, मोदमन्दिर, गजकीर्त्ति, रत्नाकर, गतमोह, देवप्रमोद, वीरानन्द, विगतदोष, राजललित, वहुचरित्र, विमलप्रज्ञ और रत्ननिधि—इन पन्द्रह साधुओ को प्रव्रज्या धारण कराई । इन पन्द्रह मे चारित्रवल्लभ और विमलप्रज्ञ पिता-पुत्र थे । इसी वर्ष वैशाख सुदि त्रयोदशी शनिवार स्वाति नक्षत्र मे श्री महावीर स्वामी के विधिचैत्य मे राजा उदयसिह जी आदि अनेक राजाओ की उपस्थिति मे राजमान्य महामत्री श्री जैत्रसिह जी के तत्वावधान मे अनेक धनी-मानी सज्जनो द्वारा विपुल द्रव्य व्यय कर प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी, जिसके लिए खरतर गच्छ का इतिहास द्रष्टव्य है । इस अवसर पर प्रमोदश्री गणिनी को महत्तरा पद देकर लक्ष्मीनिधि नाम दिया गया और ज्ञानमाला गणिनी को प्रवर्त्तिनी पद दिया गया ।

स० १३११ वैशाख सुदि ६ को पालनपुर मे प्रतिष्ठा महोत्सव के पश्चात् खरतर गच्छ की नौका के कर्णधार सस्कृत के प्रौढ विद्वान श्रीजिनपालोपाध्याय जी समाधिपूर्वक स्वर्ग सिधार गये ।

स० १३१२ वैशाख सुदि पूर्णिमा के दिन चन्द्रकीर्ति गणि को उपाध्याय पद प्रदान किया, उनका चन्द्रतिलकोपाध्याय नया नामकरण किया । इसी अवसर पर प्रबोधचन्द्र गणि और लक्ष्मीतिलक गणि को वाचनाचार्य पद से सम्मानित किया गया । इसके बाद ज्येष्ठ वदि १ को उपशमचित्त, पवित्रचित्त, आचारनिधि और त्रिलोकनिधि को दीक्षा दी ।

स० १३१३ फाल्गुन सुदि ४ को जालोर मे स्वर्णगिरि स्थित वाहित्रिक उद्धरण श्रावक कारित शान्तिनाथ मूर्ति की स्थापना की। चैत्र सुदि १४ को कनककीर्ति, त्रिदशकीर्ति, विवुधराज, राजशेखर, गुणशेखर तथा जयलक्ष्मी, कल्याणनिधि, प्रमोदलक्ष्मी और गच्छवृद्धि की दीक्षा हुई।

स० १३१३ आपाड सुदि १० को पालनपुर मे भावनातिलक, भरत-कीर्ति को दीक्षा दी।

स० १३१४ या १५ आपाढ सुदि १० को पालनपुर मे सकलहित और राजदर्शन मुनि एवं वुद्धिसमृद्धि, ऋद्धिसुन्दरी और रत्नवृष्टि साध्वी त्रय की दीक्षा सम्पन्न हुई।

स० १३१६ माघ मुदि १४ को जालोर मे धर्मसुन्दरी गणिनी को प्रवर्तिनी पद से विभूपित किया तथा माघ सुदि ६ को पूर्णशेखर, कनककलश को प्रव्रजित किया।

स० १३१७ माघ सुदि १२ को लक्ष्मीतिलक गणि को उपाध्याय पद पद से विभूषित किया तथा पद्माकर नामक व्यक्ति को दीक्षा दी गई। जिन प्रतिमादि के वडे भारी प्रतिष्ठा महोत्सव के पश्चात् वैशाख सुदि द्वादशी के दिन सौम्यमूर्ति तथा न्यायलक्ष्मी नामक साध्वियो की दीक्षा वड़े धूमधाम से करवाई गई।

स० १३१८ पौप सुदि तृतीया के दिन सघभक्त को दीक्षा और धर्म-मूर्त्ति गणि को वाचनाचार्य पद दिया गया।

स० १३१९ मिगसर सुदि ७ दिन अभयतिलक गणि को उपाध्याय पद दिया गया। इसी वर्ष उपाध्याय जी ने पं० देवमूर्ति आदि साधुओ के साथ उज्जैन पधारकर तपागच्छीय प० विद्यानद को शास्त्रार्थ मे जीतकर जय-पत्र प्राप्त किया।

स० १३१९ माह वदि ५ को विजयसिद्धि साध्वी की दीक्षा हुई।

स० ३१२१ फागुन सुदि २ गुरुवार को चित्रसमाधि और शातिनिधि साध्वी द्वय की दीक्षा हुई।

सं १३२१ ज्येष्ठ सुदि १५ को चारित्रशेखर, लक्ष्मीनिवास और रत्नावतार साधुत्रय को दीक्षा दी।

स० १३२२ माघ सुदि १४ को विक्रमपुर मे त्रिदशानद, शान्तमूर्त्ति, त्रिभुवनानद, कीर्तिमडल, सुबुद्धिराज, सर्वराज, वीरप्रिय, जयवल्लभ, लक्ष्मीराज और हेमसेन मुनियो को तथा मुक्तिवल्लभा, नेमिभक्ति, मगलनिधि, प्रियदर्शना को तथा विक्रमपुर मे ही वैशाख सुदि ६ को वीरसुन्दरी को दीक्षित किया ।

स० १३२३ मार्गशीर्ष वदि ५ को नेमिध्वज व विनयसिद्धि, आगमसिद्धि को दीक्षा दी ।

स० १३२३ वैशाख सुदि १३ के दिन देवमूर्त्ति गणि को वाचनाचार्य पद दिया गया । ज्येष्ठ सुदि १० को जेसलमेर मे विवेकसमुद्र गणि को वाचनाचार्य पद दिया । आषाढ वदि १ को हीराकरको दीक्षित किया ।

स० १३२४ मिति मार्गशीर्ष कृष्णा २ शनि को कुलभूषण, हेमभूषण दो मुनि तथा अनन्तलक्ष्मी, व्रतलक्ष्मी, एकलक्ष्मी, प्रधानलक्ष्मी साध्वी चार का महोत्सव के साथ जालोर मे दीक्षा महोत्सव हुआ ।

स० १३२५ वैशाख सु० १० को जावालिपुर मे राजेन्द्रबल साधु तथा पद्मावती साध्वी को दीक्षा दी । वैशाख सुदि १४ को धर्मतिलक गणि को वाचनाचार्य पद दिया ।

स० १३२७ मिति ज्येष्ठ वदि मे श्री गिरनार तीर्थ पर श्री नेमिनाथ भगवान के समक्ष १ प्रबोधसमुद्र और २ विनयसमुद्र को दीक्षा दी ।

स० १३२८ जेठ वदि ४ हेमप्रभा साध्वी को जालोर मे दीक्षा दी ।

स० १३३० मिति वैशाख वदि ६ को प्रबोधमूर्त्ति गणि को वाचनाचार्य पद एव कल्याणऋद्धि गणिनी को प्रवर्त्तिनी पद दिया ।

स० १३३१ आश्विन बदी ५ को वाचनाचार्य प्रबोधमूर्ति गणि को अपने पद पर स्थापित किया । ये श्रीचन्द्र बोथरा के पुत्र (बच्छावतो के पूर्वज) थे । आश्विन वदि ६ को रात्रि मे श्रीजिनेश्वरसूरि जी स्वर्गवासी हुए ।

जिनप्रबोधसूरि

इनका जन्म बच्छावतो के पूर्वज सेठ श्रीचद-श्रीयादेवी के यहा स० १२८५ मे हुआ । जन्म नाम मोहन था । दीक्षा स० १२९६ पालनपुर मे हुई, प्रबोधमूर्त्ति नाम रखा गया । स० १३३१ फाल्गुन बदि ८ को जिनरत्नसूरिजी

द्वारा चन्द्रतिलकोपाध्याय, लक्ष्मीतिलकोपाध्याय, वाचनाचार्य पद्मदेव गणि आदि की उपस्थिति मे इनकी आचार्य पद पर स्थापना हुई।

स० १३३१ फाल्गुन शुक्ला ५ को स्थिरकीर्त्ति भुवनकीर्त्ति दो मुनियो तथा केवलप्रभा, हर्षप्रभा, जयप्रभा, यश प्रभा साध्वियो को दीक्षा दी।

स० १३३२ ज्येष्ठ वदि ९ के दिन विमलप्रज्ञ को उपाध्याय पद व राजतिलक को वाचनाचार्य पद प्रदान किया। मिती ज्येष्ठ सुदि ३ के दिन गच्छकीर्त्ति, चारित्रकीर्त्ति, क्षेमकीर्त्ति मुनियो और लब्धिमाला, पुण्यमाला साध्वियो को जावालिपुर मे दीक्षित किया।

स० १३३३ माघ वदि १३ को जावालिपुर मे कुशलश्री गणिनी को प्रवर्त्तिनी पद दिया गया।

स० १३३४ मार्गशिर वदि १३ को रत्नवृष्टि गणिनी को प्रवर्त्तिनी पद दिया। तदनतर भीमपल्ली नगरी मे वैशाख वदि ६ को मगलकलश साधु को दीक्षित किया।

स० १३३४ जेठ वदि ७ को शत्रुजय महातीर्थ पर जीवानद साधु तथा पुष्पमाला, यशोमाला, धर्ममाला, लक्ष्मीमाला साध्वियो को दीक्षा दी।

स० १३३५ मार्गशीर्ष वदि ४ के दिन पद्मकीर्ति, सुधाकलश, तिलककीर्त्ति, लक्ष्मीकलश, नेमिप्रभ, हेमतिलक, नेमितिलक को मुनि दीक्षा दी।

स० १३३५ वै० वदि ७ को मोहविजय, मुनिवल्लभ को दीक्षा दी तथा हेमप्रभ गणि को वाचनाचार्य पद दिया।

स० १३३६ ज्येष्ठ सुदि ९ को जिनप्रबोधसूरि जी के पिता सेठ श्रीचंद (बोथरा) का अन्त समय ज्ञात कर, चित्तौड़ से शीघ्र पालनपुर जाकर उन्हे दीक्षित किया। उनका नाम श्रीकलश रखा गया। सेठ के द्रव्य को सात क्षेत्र मे बाँट दिया गया तथा दीन-अनाथो का भी मनोरथ पूर्ण किया गया।

स० १३३७ ज्येष्ठ वदि १२ को बीजापुर मे आनदमूर्त्ति व पुण्यमूर्त्ति को दीक्षित किया।

स० १३३९ मिती ज्येष्ठ वदि ४ को जगच्चन्द्र मुनि और कुमुदलक्ष्मी,

भुवनलक्ष्मी साध्वी को दीक्षा दी । चदनसुन्दरी गणिनी को महत्तरा पद देकर चन्दनश्री नाम प्रसिद्ध किया।

स० १३४० मिती ज्येष्ठ सुदि ४ के दिन जैसलमेर मे जिनप्रबोधसूरि जी ने निम्नोक्त दीक्षाए दी—१ मेरुकलश, धर्मकलश, लब्धिकलश मुनि एव पुण्यसुन्दरी, रत्नसुन्दरी, भुवनसुन्दरी, हर्षसुन्दरी साध्वी।

स० १३४१ फाल्गुन कृष्णा ११ को बिक्रमपुर मे विनयसुन्दर सोमसुन्दर, लब्धिसुन्दर, चन्द्रमूर्त्ति, मेघसुन्दर साधु एव धर्मप्रभा, देवप्रभा साध्वियो को दीक्षित किया।

स० १३४१ मे जावालिपुर पधार कर मिती वैशाख सुदि ३ को अपने पाट पर श्रीजिनचन्द्रसूरि को अभिषिक्त किया और उसी दिन राजशेखर गणि को वाचनाचार्य पद दिया। वैशाख सुदि ८ को सकल सघ को एकत्र कर मिथ्यादुकृत दिया और वैशाख सुदि ११ को स्वर्ग सिधारे ।

जिनचन्द्रसूरि (कलिकाल केवली)

ये समियाणा (गढसिवाणा) के मत्री देवराज की धर्मपत्नी कोमलदेवी के पुत्र थे। इनका जन्म नाम खभराय था। इनका जन्म स० १३२४ मार्गशीर्ष सुदि ४ को हुआ था। स० १३३२ ज्येष्ठ सुदि ३ को जिन प्रबोधसूरि से दीक्षित हुए, क्षेमकीर्त्ति नाम प्रसिद्ध हुआ। जेसलमेर नरेश कर्णदेव, जैत्रसिंह और सिवाणा के समरसिंह व शीतलदेव आपके भक्त थे। सम्राट कुतुवुद्दीन को अपने सद्गुणो से चमत्कृत किया था।

स० १३४२ वैशाख सुदि १० को जावालिपुर मे प्रीतिचद्र, सुखकीर्त्ति, जयमदिर साधु और रत्नमजरी, शीलमजरी साध्वियो को दीक्षित किया। वाचनाचार्य विवेकसमुद्र गणि को उपाध्याय पद, सर्वराज गणि को वाचनाचाय पद, वुद्धिसमृद्धि गणिनी को प्रवर्त्तिनी पद से अलकृत किया। मिती जेठ वदि ११ को वा० देवमूर्त्ति को अभिषेक (उपाध्याय) पदाधिष्ठित किया।

स० १३४४ मार्गशीर्ष शुक्ल १० को जालोर मे प० स्थिरकीर्त्ति गणि को आचार्य पद देकर उनका नाम दिवाकराचार्य प्रसिद्ध किया।

स० १३४५ मिती आषाढ सुदि ३ को मतिचन्द्र, धर्मकीर्त्ति आदि को दीक्षा दी । मिती वैशाख वदि १ को पुण्यतिलक, भुवनतिलक मुनि तथा चारित्रलक्ष्मी साध्वी को दीक्षित किया। राजदर्शन गणि को वाचनाचार्य पद से विभूषित किया।

स० १३४६ माह वदि १ के दिन स्वर्णगिरि पर देववल्लभ, चारित्र तिलक, कुशलकीर्त्ति साधुओ व रत्नश्री साध्वी को दीक्षा दी ।

स० १३४६ ज्येष्ठ वदि ७ को पालनपुर मे नरचद्र, राजचद्र, मुनिचद, पुण्यचद्र साधु एव मुक्तिलक्ष्मी, युक्तिलक्ष्मी साध्वियो को दीक्षित किया ।

स० १३४७ मार्गशिर सुदि ६ को पालनपुर मे सुमतिकीर्ति को दीक्षा तथा नरचद्र आदि साधु-साध्वियो की बडी दीक्षा एव मालारोपणादि सम्पन्न हुए ।

स० १३४७ मिति चैत्र बदि ६ को अमररत्न, पद्मरत्न, विजयरत्न साधु और मुक्तिचन्द्रिका साध्वी को दीक्षा दी ।

स० १३४८ मिती वैशाख सुदि ३ को पालनपुर मे वीरशेखर साधु और अमृत श्री साध्वी को दीक्षा दी । त्रिदशकीर्ति गणि को वाचनाचार्य पद दिया । उसी वर्ष सुधाकलश, मुनिवल्लभ आदि साधुओ सहित पूज्यश्री ने गणियोग तप किया ।

स० १३४९ मिती भादवा वदि ८ के दिन सह-धर्मियो को सदाव्रत देने वाले सघपति अभयचन्द्र सेठ का अन्त समय जानकर उनको सस्तारक दीक्षा दी गई । उनका नाम अभयशेखर रखा गया । वहा पर मार्गशिर वदि २ को यश कीर्त्ति को दीक्षा दी गई ।

स० १३५० मिती वैशाख सुदि ९ को करहेटक, आबू तीर्थो की यात्रा कर, जन्म सफल करके वरडियानगर के मुख्य श्रावक नोलखा वंश भूषण शा० झाझण को स्वपक्ष-परपक्ष सभी को आश्चर्यकारी सस्तारक दीक्षा दी गई तथा नरतिलक राजर्षि नाम दिया गया ।

स०१३५१ मिती माघ वदि ५ को विश्वकीर्ति साधु व हेमलक्ष्मी साध्वी को दीक्षा दी । यह दीक्षाएं पालनपुर मे मंत्री तिहुण के प्रतिष्ठा महोत्सव के विस्तृत आयोजन मे हुई ।

सं० १३५३ का चातुर्मास वीजापुर मे कर मार्गसिर वदि ५ के दिन श्री वासुपूज्य जिनालय मे मुनिसिह, तपसिह तथा जयसिह साधुओ को दीक्षा दी ।

सं० १३५४ मिती जेठ वदि १० को जावालिपुर मे साह सलखण जी

के पुत्र सेठ सीहा कारित महोत्सव पूर्वक वीरचन्द्र, उदयचन्द्र, अमृतचन्द्र, साधु व जयसुन्दरी साध्वी की दीक्षा हुई।

स० १३५७ मार्गसिर सुदि ६ के दिन जेसलमेर मे सेठ लखम और भडारी गज के जयहस और पद्महस नाम के दो पुत्रो का दीक्षा महोत्सव समारोह पूर्वक हुआ।

स० १३६१ वैशाख वदि १० के दिन जावालिपुर प्रतिष्ठा महोत्सव मे सवा लाख मनुष्यो की उपस्थिति मे प० लक्ष्मीनिवास गणि व प० हेमभूषण गणि को वाचनाचार्य पद से अलकृत किया।

स० १३६४ वैशाख वदि १४ को जावालिपुर मे राजगृहादि अनेक तर्थों की यात्रा कर पुण्य सचय करने वाले वाचनाचार्य राजशेखर गणि को आचार्य पद से सम्मानित किया गया।

स० १३६७ मे भीमपल्ली पधारकर फागुन सुदि १ को ३ क्षुल्लक और दो क्षुल्लिकाओ को दीक्षा दी। उनके नाम रखे १ परमकीर्त्ति, २ वरकीर्त्ति, ३ रामकीर्त्ति, व पद्मश्री, व्रतश्री। प० सोमसुन्दर गणि को वाचनाचार्य पद दिया।

सं० १३६८ मे भीमपल्ली मे प्रतापकीर्ति आदि क्षुल्लको को बडी दीक्षा तथा तरुणकीर्त्ति, तेजकीर्त्ति, व्रतधर्मा तथा दृढधर्मा—क्षुल्लक, क्षुल्लिकाओ को महोत्सव पूर्वक दीक्षा दी। उसी दिन ठाकुर हांसिल के पुत्ररत्न देहड के छोटे भाई स्थिरदेव की पुत्री रत्नमजरी गणिनी को पूज्य श्री ने महत्तरा पद प्रदान कर जयर्द्धि महत्तरा नाम रखा तथा प्रियदर्शना गणिनी को प्रवर्त्तिनी पद दिया।

स० १३६९ मार्गशिर वदि ६ के दिन पाटण नगर मे चन्दनमूर्ति, भुवनमूर्त्ति, सारमूर्त्ति और हरिमूर्त्ति—चार छोटे साधु बनाये तथा केवलप्रभा गणिनी को प्रवर्त्तिनी पद दिया।

स० १३७० मिती माघ शु० ११ को पाटण मे मुनि (लब्धिनिधान), ज्ञाननिधान को एव यशोनिधि, महानिधि दो साध्वियो को दीक्षा दी।

स० १३७१ फा० सुदि ११ को भीमपल्ली मे त्रिभुवनकीर्ति मुनि तथा प्रियधर्मा, यशोलक्ष्मी, धर्मलक्ष्मी साध्वियो को दीक्षित किया।

स० १३७१ ज्येष्ठ वदि १० को जाबालिपुर मे देवेन्द्रदत्त, पुण्यदत्त, ज्ञानदत्त, चारुदत्त मुनि व पुण्यलक्ष्मी, कमललक्ष्मी, ज्ञानलक्ष्मी तथा मति-लक्ष्मी को दीक्षा दी।

सं० १३७३ मे पाटण से उपाध्याय विवेकसमुद्र के पास अध्ययनरत मुनि राजचन्द्र को पुण्यकीर्त्ति के साथ सिन्ध-देवराजपुर (देराउर) बुलाकर आचार्य पद से विभूषित कर श्री राजेन्द्रचन्द्राचार्य नाम रखा। ललितप्रभ, नरेन्द्रप्रभ, धर्मप्रभ, पुण्यप्रभ तथा अमरप्रभ नाम के साधुओ को दीक्षित किया।

स० १३७४ फागुन बदि ६ को दर्शनहित, भुवनहित मुनियो को दीक्षा दी।

स० १३७५ मिति माघ शुक्ल १२ को फलौदी पार्श्वनाथ पधार कर नागौर सघ की प्रार्थना से अनेक देश-नगर के सघ की उपस्थिति मे अनेक महोत्सव सपन्न हुए। सोमचद्र साधु एव शीलसमृद्धि, दुर्लभसमृद्धि, भुवन-समृद्धि साध्वियो को दीक्षा दी। प० जगच्चद्र गणि को उपाध्याय पद दिया। गृहस्थावस्था मे अपने भ्रातुष्पुत्र तथा शिष्यरूप मे दीक्षित होने वाले उभय प्रकार से सन्तान, अपने पट्ट योग्य महान् विद्वान प० कुशलकीर्त्ति को वाचनाचार्य पद प्रदान कर सम्मानित किया। धर्ममाला गणिनी और पण्य सुन्दरी गणिनी को प्रवर्त्तिनी पद से अलकृत किया।

स० १३७६ मिती आषाढ सुदि ९ को कोसवाणा मे डेढ प्रहर रात्रि गये ६५ वर्ष की आयु मे वाचनाचार्य कुशलकीर्त्ति गणि को अपने पट्ट पर बैठाने की आज्ञा प्रसारित कर श्रीजिनचन्द्रसूरि जी स्वर्गवासी हुए।

जिनकुशलसूरि

श्री जिनकुशलसूरि जी प्रगट प्रभावी और तृतीय दादा साहब हुए हैं। इनका जन्म छाजहड मत्री जेसल (जिल्हागर) की धर्म पत्नी जयतश्री के कोख से स० १३३७ मिती मार्गसिर वदि३ के दिन गढसिवाणा मे हुआ था। कलि-काल केवली श्री जिनचन्द्र सूरि जी आपके पितृव्य (चाचा) थे, जिनके पास स० १३४६ माघ वदि १ के दिन स्वर्णगिरि (जालोर) मे इनकी दीक्षा हुई। इनका जन्म नाम करमण था, दीक्षा नाम कुशलकीर्त्ति किया। स० १३७५

माघ शु० १२ को फलौधी पार्श्वनाथ तीर्थ मे इनको वाचनाचार्य पद से जिनचन्द्रसूरि ने अलकृत किया।

स० १३७७ जेठ वदि ११ को पाटण मे श्री राजेन्द्रचन्द्राचार्य ने तेजपाल रुद्रपाल कारित महोत्सव पूर्वक श्री जिनचन्द्रसूरि जी के पट्ट पर इनको स्थापित कर जिनकुशलसूरि नाम प्रसिद्ध किया।

स० १३७८ माघ सुदि ३ को भीमपल्ली मे आपने देवप्रभ मुनि को दीक्षा दी। वाचनाचार्य हेमभूषण गणि को उपाध्याय पद और प० मुनिचन्द्र गणि को वाचनाचार्य पद दिया।

स०१३८१ मिति आषाढ वदि ६ को शत्रुञ्जय तीर्थ पर देवभद्र, यशोभद्र को दीक्षित किया। पाटण आकर वैशाख वदि ६ को इन देवभद्र, यशोभद्र को वडी दीक्षा दी। एव सुमतिसार, उदयसार, जयसार मुनि और धर्मसुन्दरी, चारित्रसुन्दरी को दीक्षित किया। जयधर्म गणि को उपाध्याय पद दिया गया।

स०१३८२ वैशाख सुदि ५ को विनयप्रभ, मतिप्रभ, सोमप्रभ, हरिप्रभ, ललितप्रभ मुनि एव दो क्षुल्लिकाओ को दीक्षा दी।

स० १३८३ फागुण वदि ९ से १५ दिन तक उत्सवो के साथ छ दीक्षाएँ सम्पन्न हुई—न्यायकीर्त्ति, ललितकीर्ति, सोमकीर्त्ति, अमरकीर्त्ति, ज्ञानकीर्त्ति, एव देवकीर्ति।

स० १३८६ माह सुदि ५ को देवराजपुर (देरावर) मे ९ क्षुल्लक ३ क्षुल्लिकाओ को दीक्षा दी —

१ भावमूर्त्ति, २. मोहमूर्ति, ३ उदयमूर्ति, ४. विजयमूर्ति, ५ हेममूर्ति, ६ भद्रमूर्ति, ७. मेघमूर्ति, ८. पद्ममूर्ति, ९ हर्षमूर्ति क्षुल्लक एव कुलधर्मा, विनयधर्मा, शीलधर्मा क्षुल्लिकाएं। इस समय ७७ श्रावक-श्राविकाओ ने विविध व्रत धारण किए थे। इन वर्षों मे श्री जिनकुशल सूरिजी सिन्ध के अनेक स्थानो मे विचरे थे। स० १३८५ फाल्गुन सुदि ४ को पदस्थापना, क्षुल्लक-क्षुल्लिकाओ को दीक्षादि दी। कमलाकर गणि को वाचनाचार्य पद दिया।

स० १३८८ मिगसर सुदि १० को विद्वद्शिरोमणि श्री तरुणकीर्ति गणि को आचार्य पद से अलकृत किया एव श्री लब्धिनिधान गणि को उपाध्याय पद दिया। जयप्रिय और पुण्यप्रिय नामक दो क्षुल्लक व जयश्री, धर्मश्री दो क्षुल्लिकाओ को दीक्षा दी।

सं० १३८९ मिती फाल्गुन वदि ५ को तीसरे प्रहर सघ को एकत्र कर अपने पद पर पद्‌ममूर्त्ति नामक पन्द्रह वर्षीय शिष्य को अभिषिक्त करने के लिए तरुणप्रभाचार्य और महोपाध्याय लब्धिनिधान को आदेश देकर स्वर्ग सिधारे।

निजपद्‌मसूरि

ये सेठ लक्ष्मीधर के पुत्र, अवदेव सेठ की पुत्री कीकी के नदन स० १३८३ मे माघ सुदि ५ को देरावर मे दीक्षित हुए, पद्‌ममूर्त्ति दीक्षा नाम था। स० १३९० ज्येष्ठ सुदि ६ को मिथुन लग्न मे पट्टाभिषिक्त हुए थे। उस समय तरुणप्रभाचार्य, जयधर्म महोपाध्याय एव लब्धिनिधान महोपाध्याय आदि ३९ मुनि व अनेक साध्वियो की उपस्थिति थी। श्री जिन पद्‌मसूरि नाम रखा गया।

स० १३९० ज्येष्ठ सुदि १० सोमवार के दिन जिनपद्‌मसूरि ने १ जयचद्र, २ शुभचद्र, ३ हर्षचद्र मुनि और महाश्री, कनकश्री दो क्षुल्लिकाओ को दीक्षा दी। प० अमृतचद्र को वाचनाचार्य पद दिया।

स० १३९१ जेसलमेर मे लक्ष्मीमाला गणिनी को प्रवर्त्तिनी पद दिया।

स० १३९२ माघ सुदि ६ को साचोर मे मुनि नयसागर और अभय-सागर को दीक्षित किया और मार्गशीर्ष वदि ६ को पाटण मे दोनो क्षुल्लको को वडी दीक्षा दी।

युगप्रधानाचार्य गुर्वावली मे स० १३९३ तक का ही वर्णन सप्राप्त है। स० १४०० मिती वैशाख सुदि १४ को श्री जिन पद्‌मसूरि जी स्वर्गवासी हुए।

जिनलब्धिसूरि

ये जेसलमेर के थे। स० १३६० मितो मार्गशीर्ष शुक्ल १२ को अपने

ननिहाल साचोर मे जन्मे। इनके पिता नवलखा धणसिंह और माता का नाम खेताही था। इनका जन्म नाम लक्खणसीह था। स० १३७० माघ शुक्ल ११ को पाटण मे श्रीजिनचद्रसूरि जी से दीक्षित हुए। स० १३८८ मे श्रीजिन कुशलसूरि जी से उपाध्याय पद प्राप्त हुआ। सं० १४०० मिती आषाढ वदि १ को पाटण मे श्री तरुणप्रभाचार्य द्वारा श्री जिन पद्मसूरि जी के पट्ट पर आचार्य पदाधिष्ठित हुए।

इन्होने ४ उपाध्याय, ८ शिष्य साधु और दो आर्याए दीक्षित की, जिनके नाम सम्वतादि नही मिलते। स० १४०४ मिती आश्विन शुक्ल १२ को नागोर मे समाधिपूर्वक स्वर्गवासी हुए। अतिम समय मे अपने पट्ट पर यशोभद्र मुनि को स्थापित करने की शिक्षा दे गए थे।

जिनचन्द्रसूरि

आपका जन्म मारवाड के कुसुमाण गाँव मे मत्री केल्हा की धर्मपत्नी सरस्वती की कोख से हुआ था। आपका नाम पातालकुमार था। दिल्ली के सघपति रयपति के शत्रुञ्जयादि यात्री सघ के स० १३८० मे कुसुमाण आने पर पिता मत्री केल्हा भी सपरिवार सम्मिलित हो गए। युगादिदेव के समक्ष समर्पित पातालकुमार की दीक्षा मिती आषाढ बदि ६ को हुई और यशोभद्र नाम रखा गया। स० १३८१ मिती वैशाख बदि ६ को पाटण मे वडी दीक्षा हुई और अमृतचद्र गणि से विद्याध्ययन किया। श्री जिन लब्धिसूरि की आज्ञानुसार स० १४०६ माघ सुदि १० को जेसलमेर मे तरुणप्रभसूरि द्वारा गच्छनायक पद प्राप्त किया। स० १४१४ आषाढ बदि १३ को स्तभतीर्थ मे स्वर्गवासी हुए।

इनके द्वारा दीक्षा और पद प्रदान करने का इतिहास अप्राप्त है।

जिनोदयसूरि

आपका जन्म पालनपुर निवासी माल्हू गोत्रीय रुद्रपाल की धर्मपत्नी धारलदेवी की कोख से स० १३७५ मे हुआ था और जन्म नाम समर-कुमार था। स० १३८२ मे वैशाख सुदि ५ को भीमपल्ली मे बहिन कील्हू के साथ आचार्य प्रवर श्रीजिनकुशलसूरि जी के करकमलो से आपकी दीक्षा सम्पन्न हुई। सोमप्रभ नाम रखा गया। स० १४०६ मे जैसलमेर मे श्रीजिनचन्द्रसूरि जी ने इन्हे वाचनाचार्य पद प्रदान किया था। स० १४१५ ज्येष्ठ कृष्णा १३ को खभात मे अजितनाथ विधि चैत्य मे लूणिया जेसलसाह

कृत नन्दि महोत्सवपूर्वक श्री तरुणप्रभाचार्य ने आपकी पद स्थापना की थी। आपने २४ शिष्य और १४ शिष्याओ को दीक्षित किया। अनेको को संघपति पद, आचार्य, उपाध्याय, वाचनाचार्य, महत्तरा आदि पदो से अलकृत किया, जिनका नाम सवतादि इतिहास अप्राप्त है। स० १४३२ मिती भाद्रपद वदि ११ को लोकहिताचार्य जी को अन्तिम शिक्षा देकर स्वर्गवासी हुए।

विज्ञप्ति महालेख मे इनके शिष्य मेरुनदन गणि द्वारा लिखित अयोध्या मे विराजित श्री लोकहिताचार्य को प्रेषित पत्र से ज्ञानकलश मुनि, ज्ञाननदन मुनि, सागरचद्र मुनि के नाम अध्ययन रत होने के पाये जाते है। इनके अतिरिक्त तेजकीर्त्ति गणि, हर्षचद्र गणि, भद्रशील मुनि, धर्मचद्र मुनि, मुनितिलक मुनि के नाम तथा अयोध्या मे लोकहिताचार्य के पास रत्नसमुद्र मुनि, राजमेरु मुनि (जो आगे चलकर जिनराजसूरि हुए), स्वर्णमेरु मुनि पुण्यप्रधान गणि आदि विद्यमान थे।

स० १४३१ मिती मार्गशीर्ष की प्रथम छठ के दिन करहेडा तीर्थ मे जो भागवती दीक्षाएँ सम्पन्न हुई उनकी सूची इस प्रकार है :—

पूर्व नाम	दीक्षा नाम
१ चौरासी गाँवो मे अमारि घोपणा कराने से प्रसिद्ध मत्रीश्वर अरसिंह की सतान बोथरा गोत्रीय लाखा का पुत्र धीणाक मत्री	कल्याणविलास मुनि
२ काणोडा गोत्रीय राणा का पुत्र जेहड	कीर्त्तिविलास मुनि
३ छाहड वशी खेता का पुत्र भीमड श्रावक	कुशलविलास मुनि
४ भूतपूर्व देश सचिव माल्हू शाखीय डूगर सिंह की पुत्री उमा	मतिसुन्दरी साध्वी
५ व्यावहारिक वशी महीपति की पुत्री हाँसू	हर्षसुन्दरी साध्वी

देवपत्तनपुर मे निम्नलिखित दीक्षोत्सव हुआ —

१ सीहाकुल के मत्रीश्वर दाहू के पुत्र खेमसिंह	क्षेममूर्त्ति मुनि
माल्हू चापा के पुत्र पद्मसिंह	पुण्यमूर्त्ति मुनि

जिनराजसूरि (प्रथम)

इनका दीक्षा नाम राजमेरु मुनि था। स० १४३२ फाल्गुन कृष्ण ६ को श्री लोकहिताचार्य जी ने पाटण मे जिनोदयसूरिजी के पट्ट पर अभिषिक्त किया। वोथरा तेजपाल (वच्छावतो के पूर्वज) के सुपुत्र कडुआ, धरणा ने वडे समारोह पूर्वक पट्टोत्सव किया। इन्होने सुवर्णप्रभ, भुवनरत्न और सागरचद्र को आचार्य पद दिया। देउलपुर के छाजहड धीणिग के पुत्र रामणकुमार को स० १४६१ मे दीक्षित कर कीर्त्तिसागर नाम रखा, जो आगे चलकर सुप्रसिद्ध जिनभद्रसूरि हुए। श्री जिनराजसूरि जी का स० १४६१ मे देवलवाडा मे स्वर्गवास हुआ। उनके पट्ट पर श्री जिनवर्द्धनसूरि को स्थापित किया जो १४ वर्ष तक गच्छनायक रहे, वाद मे १४७५ मे दैवी प्रकोप से जिनभद्रसूरि को स्थापित किया। आबू खरतरवसही के निर्माता दरडा वशीय मडलिक के भ्राता जयसागर जी आपके शिष्य थे।

सागर चद्रसूरि के पट्टधर भावप्रभसूरि माल्हू शाखा के लूणिग कुल मे सव्वड साह की भार्या राजलदे के पुत्र थे।

जिनभद्रसूरि

ये देउलपुर निवासी छाजहड धीणिग की धर्मपत्नी खेतलदेवी की कोख से स० १४८९ चै० सुदि ६ को जन्मे। इनका जन्म नाम रामणकुमार था। स० १४६१ मे श्रीजिनराजसूरि के पास दीक्षित हुए। स० १४७५ मे इन्हे (कीर्त्तिसागर मुनि को) श्री सागरचन्द्रसूरि जी ने आचार्य पद देकर श्री जिनभद्रसूरि नाम प्रसिद्ध किया।

विज्ञप्तित्रिवेणी के अनुसार इनका चातुर्मास स० १४८४ मे अणहिलपुर पाटण मे था। उस समय इसके साथ प० पुण्यमूर्ति, मतिविशाल गणि, वा० लब्धिविशाल गणि, वा० रत्नमूर्त्ति गणि, प० मतिराज गणि, वा० मुनिराज गणि, प० सिद्धान्तरुचि गणि, प० सहजशील मुनि, प० पद्ममेरु मुनि, प० सुमतिसेन गणि, विवेकतिलक मुनि, क्रियातिलक मुनि, भानुप्रभ मुनि आदि थे। इन सबकी दीक्षा कब हुई? इसका उल्लेख नही मिलता। मलिक वाहनपुर से जयसागरोपाध्याय ने विज्ञप्तित्रिवेणी पत्र भेजा, तदनुसार उनके साथ मेघराज गणि, सत्यरुचि गणि, प० मतिशील गणि, हेमकुजर मुनि, प० समयकुंजर मुनि, कुलकेशर मुनि, अजितकेशरि मुनि, स्थिरसयम मुनि, रत्नचन्द्र

क्षुल्लक थे। सारे भारत मे खरतर गच्छ के हजारो साधु विचरण करते थे जिनका इतिवृत्त अप्राप्त है।

श्री जिनराजसूरि जी के शिष्य जयसागर जी को आपने ही उपाध्याय पद दिया था एव कीर्तिराज को भी आपने उपाध्याय पद और बाद मे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया था। कीर्तिरत्नसूरि जी के ५१ शिष्य हुए। श्रीभावप्रभाचार्य को भी आपने ही आचार्य पद दिया था। स० १५१४ मार्गशिर वदि २ को कुभलमेर मे आपका स्वर्गवास हुआ।

जिनचन्द्रसूरि

इनका जन्म स० १४८७ मे जेसलमेर मे चम्म गोत्रीय शाह वच्छराज के यहा धर्मपत्नी वाल्हादेवी की कोख से हुआ। सं० १४९२ में दीक्षा हुई और कनकध्वज नाम रखा गया। स० १५१५ ज्येष्ठ वदि २ को कुभलमेर मे श्री कीर्तिरत्नसूरि जी ने इन्हे आचार्य पद देकर श्री जिनभद्रसूरि के पद पर स्थापित किया। इन्होंने धर्मरत्नसूरि आदि अनेक मुनियो को आचार्य, उपाध्यायादि पद दिए। स० १५३० मे जेसलमेर मे स्वर्गवासी हुए।

श्री सोमध्वज के शिष्य क्षेमराज जो छाजहड लीला, पत्नी लीला देवी के पुत्र थे, को स० १५१६ मे श्री जिनचद्रसूरि ने दीक्षा दी थी। क्षेमराजोपाध्याय के शिष्य दयातिलक वच्छा साह-वाल्हादेवी के पुत्र थे।

जिनसमुद्रसूरि

ये वाहडमेर निवासी पारख देको साह के पुत्र थे। इनकी माता का नाम देवल देवी था। स० १५०६ मे जन्म और सं० १५२१ मुजपुर मे दीक्षा सपन्न हुई। कुलवर्द्धन नाम रखा गया। सं० १५३३ माघ सुदि १३ को जेसलमेर मे श्री जिनचद्रसूरि जी ने स्वय इन्हे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। स० १५५५ मिगसर वदि १४ को अहमदाबाद मे स्वर्गवासी हुए। इन्होंने सागरचद्रसूरि परम्परा के देवतिलकोपाध्याय को सं० १५४१ मे दीक्षा दी थी जो भणशाली करमचद-सोहण देवी के पुत्र थे और जो स० १५३३ मे जन्मे थे। स० १५६२ मे जिनहसूरि ने इनको उपाध्याय पद दिया था और सं० १६०३ मार्ग सु० ५ को स्वर्गवासी हुए।

जिनहंससूरि

आप सेत्रावा निवासी चोपड़ा मेघराज के पुत्र और श्री जिनसमुद्रसूरि जी की वहिन कमलादेवी की कोख से उत्पन्न हुए थे। स० १५२४ मे इनका जन्म हुआ था और धनराज इनका नाम था। स० १५३५ मे विक्रमपुर मे दीक्षित हुए, दीक्षा नाम धर्मरग था। स० १५५५ अहमदाबाद मे आपकी आचार्य पद पर स्थापना हुई। जिसका उत्सव बीकानेर मे स० १५५६ जेष्ठ सुदि ६ को बोहिथरा कर्मसी मत्री ने पीरोजी लाख रुपया व्यय करके किया था। श्रीशान्तिसागराचार्य ने आपको सूरिमत्र प्रदान किया था। स० १५८२ मे पाटण नगर मे तीन दिन के अनशनपूर्वक आप स्वर्गवासी हुए। स० १५६२ मे सागरचद्र सूरि परपरा के देवतिलक को उपाध्याय पद दिया था।

श्रीजिनहससूरि जी के शिष्य सुप्रसिद्ध गीतार्थ पुण्यसागर महोपाध्याय उदयसिंह की भार्या उत्तम देवी के पुत्र थे। ये स० १६५० तक विद्यमान थे, विशेष जानने के लिए हमारी युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरि पुस्तक देखना चाहिए।

स० १५६० मे आपने सारगकुमार जो ११ वर्षीय थे, दीक्षित किया, जिन्हें आपने स्वय स० १५८२ मे पाटण मे आचार्य पद भाद्रपद बदि १३ को देकर अपने पद पर स्थापित किया था।

जिनमाणिक्यसूरि

आपका जन्म स० १५४६ मे कूकड चोपडा साह राउलदेव की धर्म पत्नी रयणादे की कोख से हुआ था। जन्म नाम सारग था। स० १५६० मे बीकानेर मे ग्यारह वर्ष की अल्पायु मे श्री जिनहससूरि जी ने इन्हे दीक्षित किया था और स० १५८२ माघ सुदि ५ को बालाहिक देवराज कृत नन्दी महोत्सव द्वारा आपका पट्टाभिषेक हुआ। स० १६०४ मे खेतसर के रीहड श्रीवत-श्रियादे के पुत्र सुलतान कुमार को दीक्षा दी, सुमतिधीर नाम रखा जो इनके पट्टधर अकबर प्रतिबोधक श्रीजिनचद्रसूरि जी के नाम से प्रसिद्ध हुए।

श्री जिनमाणिक्यसूरि जी देरावर-दादा जिनकुशलसूरि जी की यात्रा-कर लौटते हुए मार्ग मे पिपासा परिषह मे अनशन पूर्वक स्वर्गस्थ हुए। इन्होने

एक ही नदि मे ६४ साधु दीक्षित किए थे। १२ मुनियो को उपाध्याय पद से अलकृत किया था।

श्रीजिनमाणिक्यसूरिजी ने जो अनेक दीक्षाए दी उनके नामादि पूरे नही मिले। कवि कनक, विनयसोम, जयसोम, कनकसोम, अमरमाणिक्य, साधुकीर्ति, विनयसमुद्र, भुवनधीर, कल्याणधीर, क्षेमरग, सुमतिधीर आदि नाम पाये जाते हैं। इनमे अमरमाणिक्य सभवत स० १५८२ के वाद जव जिनमाणिक्यसूरि आचार्य पदारूढ हुए उसी के आसपास दीक्षित हुए हो। श्रीपुण्यसागर महोपाध्याय तो जिनहमसूरि द्वारा दीक्षित होने से सवसे वडे थे। जयसोम, कनकसोमतो सम्राट अकवर के दरवारमे गये थे। साधुकीर्ति उपाध्याय सुचती वस्तिग-खोमलदे के पुत्र थे और स० १६४६ जालोर मे स्वर्गवासी हुए थे। विनयसमुद्र के शिष्य ने जिनचद्रसूरि जी के पास दीक्षा ली थी, जिनका नाम हर्षविशाल था और जिनकी नन्दी न० १९ है। गुणरत्न (नदि न० १३) शिष्य उपाध्याय ज्ञानसमुद्र (नदि न० ३४), उनके शिष्य ज्ञानराज के शिष्य लब्धोदय थे जिनकी पद्मिनी चोपाई आदि कई रचनाए उपलब्ध हैं। भुवनधीर भी जिनमाणिक्यसूरि के शिष्य थे। कल्याणधीर भी माणिक्यसूरि के शिष्य थे जिनके शिष्य कल्याणलाभ थे (नदि न २९), कमलकीर्ति (न० ४०) और धर्मरत्न (न० १३ मे)दीक्षित हैं। श्रीजिनमाणिक्यसूरि के शिष्य क्षेमरग के शिष्य विनयप्रमोद का (न० १८) और उनके शिष्य महिमसेन (नदि न० ४२) थे। यह ज्ञातव्य है कि जिनमाणिक्यसूरि जी के सभी शिष्य जिनराजसूरि जी के शिष्य जिनरत्नसूरि और जिनरगसूरि के अलग होने पर जिनरगसूरि शाखा मे आज्ञानुवर्ती रहे थे। ऊपर वर्णित हस्तदीक्षितो के लिए नही, यह वात स्वकीय शिष्यो के लिए है।

समयरग और नयरग श्री जिनमाणिक्यसूरि द्वारा दीक्षित होने चाहिए, क्योकि 'रग' नदि जिनचद्रसूरिजी की ४४ नदियो मे नही है। स० १६१८ की नयरग कृत सतरहभेदी पूजा मिलती है और १६२१-२४-२५ की अन्यकृतिया भी सप्राप्त हैं।

युगप्रधान जिनचंद्रसूरि

ये खेतसर के रीहड गोत्रीय श्रीवत-श्रियादेवी के पुत्र थे। ये स० १५९५ चैत्र कृ० १२ को जन्मे और स० १६०४ मे श्रीजिनमाणिक्यसूरि जी से दीक्षित हुए। सुमतिधीर नाम रखा गया। स० १६१२ मे जैसलमेर के रावल मालदेव कारित नन्दी महोत्सव पूर्वक खरतर-वेगड शाखा के आचार्य श्री गुणप्रभसूरि जी द्वारा भाद्रपद शु० ९ को सूरिमत्र प्राप्त कर श्री जिनमाणिक्यसूरि जी के पद पर प्रतिष्ठित हुए। उन दिनो गच्छ मे शिथिलाचार

फैला था, जिसे सामूहिक क्रियोद्धार द्वारा दूर करने के लिये श्री जिनचन्द्र सूरि जी कृत सकल्प थे। वीकानेर के मत्रीश्वर सग्रामसिंह वच्छावत की प्रवल वीनति से वीकानेर पधार कर उनकी अश्वशाला मे ठहरे, जिसे मत्रीश्वर ने अपनी माता की स्मृति मे पौपधशाला-वडा उपाश्रय घोषित कर दिया। तीन सौ यतिजन जो शिथिलाचारी थे उनमे से १६ शिष्य वने। अवशिष्ट को यतिवेश त्याग कर, मस्तक पर पगडी वाधकर (मत्थे-रिण-महात्मा) वनने को मजवूर किया। श्री सकलचद्र गणि प्रथम शिष्य 'चद्र' नदि मे स्थापित हुए। अवशिष्ट शिष्यो के नाम अज्ञात है। इत पूर्व सवत् १६०६ मे वीकानेर मे उ० कनकतिलक, वाचक भावहर्ष, वा० शुभवर्द्धन ने क्रियोद्धार किया था, शुद्ध साध्वाचार के नियम वनाये थे। पर, यह सामूहिक शिथिलाचार परिष्कार का महत्वपूर्ण प्रयोग हुआ।

ये श्री जिनचद्रसूरि जी अकवर एव जहागीर वादशाह को प्रतिवोध देने वाले चतुर्थ दादा साहव थे। इनका जीवन चरित्र हमने ५५ वर्ष पूर्व सप्रमाण विस्तार पूर्वक लिखा था जिसका गुजराती अनुवाद गणिवर्य बुद्धिमुनि जी द्वारा तथा सस्कृत काव्य उपाध्याय लब्धिमुनि जी द्वारा रचित प्रकाशित है।

श्री जिनचद्रसूरि द्वारा गच्छ की वडी उन्नति हुई। त्याग प्रधान सयम मार्ग का प्रभाव था जिससे गच्छ मे दो हजार से ऊपर साधु हो गए। आपने विम्नोक्त ४४ नदियो मे दीक्षा दी थी —

१	चद्र	१२	निधान	२३	मन्दिर	३४	समुद्र
२	मडण	१३	रत्न	२४	कल्लोल	३५	कुजर
३	विलास	१४	विजय	२५	धरम	३६	दत्त
४	मेरु	१५	तिलक	२६	वल्लभ	३७	पति
५	विमल	१६	सिह	२७	नदन	३८	कल्याण
६	कमल	१७	हर्ष	२८	प्रधान	३९	शेखर
७	कुशल	१८	प्रमोद	२९	लाभ	४०	कीर्ति
	विनय	१९	विशाल	३०	वर्द्धन	४१	मेरु
९	हेम	२०	सुन्दर	३१	जय	४२	सेन
१०	राज	२१	नन्दि	३२	प्रभ	४३	सिंह
११	आनद	२२	सिंधुर	३३	सागर	४४	कलश

इनमे प्रथम चद्र नदि मे सकलचद्र तथा अतिम कलश नदि मे पुण्यकलश, लालकलश आदि मुनि जन दीक्षित थे।

श्री जिनचन्द्रसूरिजी का स्वर्गवास स० १६७० बिलाडा—बेनातट मे हुआ था। मिती अश्विन वदि २ "दादा दूज" नाम से गुजरात आदि मे सर्वत्र प्रसिद्ध है। विशेष जानने के लिए हमारी युगप्रधान जिनचद्रसूरि पुस्तक देखना चाहिए।

जिनसिंहसूरि

इनका जन्म खेतासर निवासी चोपडा चापसी-चापलदे के यहा मार्गशीर्ष सुदि १५ को हुआ था। इनका जन्म नाम मानसिंह प्रसिद्धि मे रहा। स० १६२३ बीकानेर मे श्री जिनचद्रसूरि जी से आपने भागवती दीक्षा स्वीकार की। नाम महिमराज रखा गया। दसवी नदि मे इन्हे तथा समयराज को दीक्षित किया था। ९ वी हेम नदि थी जिसमे श्री पद्महेम दीक्षित थे, जो ३७ वर्ष सयम पाल कर स १६६१ बालसीसर मे स्वर्गवासी हुए। कमल नदि न ६ थी जिसमे तिलककमल दीक्षित थे और नदि न० ७ कुशल नदि थी जिसमे कनकसोम के शिष्य रगकुशल और यशकुशल दीक्षित थे। इस प्रकार शोध करने से दीक्षा पर्याय का पता लग सकता है। कनकसोम के शिष्य लक्ष्मीप्रभ और कनकप्रभ की प्रभ नदि ३३ नवर मे है। साधुसुन्दरोपाध्याय शिष्य विमलकीर्ति की नदि ४० वी है जो स० १६५४ मे दीक्षित हुए थे।

श्री महिमराज जी को स० १६४० माघ सुदि ५ को जैसलमेर मे वाचक पद और सं० १६४९ फा० शु० २ को लाहोर मे आचार्य पद प्राप्त हुआ था। इनके शिष्य १ हेममदिर, २ हीरनदन, ३ राजसमुद्र, ४ पद्मकीर्ति, ५ सिद्धसेन, ६ जीवरग आदि जिनकी दीक्षा श्री जिनचन्द्रसूरि जी के कर-कमलो से हुई थी। उनका स्वर्गवास स० १६७० मे होने पर आप युगप्रधान हुए और जो दीक्षाए दी, वे जिनसिंह सूरि नाम होने से 'सिह' नदि मे दी। दीपावली के दिन १ कनकसिंह, २ मतिसिंह, ३ महिमासिंह, ४ मानसिंह को दीक्षित कर इन्हे शिवनिधान जी के शिष्य बनाये। राजसिंह विमलविनय के शिष्य थे जिनकी विद्याविलासरास स० १६७९ चपावती मे तथा आराम शोभा चौपाई स० १६८७ मे रचित उपलब्ध है।

श्री जिनसिंहसूरि स० १६७४ मे बीकानेर थे तब जहागीर बादशाह ने मुकरबखान नवाब से फरमान पत्र लिखाकर बुलाया। आप विहार कर पधारे, पर मेडता से आगे जाने पर अस्वस्थ हो जाने से वापस मेडता पधारे और पोष सुदि १३ के दिन आप स्वर्गवासी हो गए।

जिनराजसूरि (द्वितीय)

आप बोहित्थरा गोत्रीय धर्मसी-धारलदे के पुत्र थे। स० १६४७ वैशाख सुदि ७ को आपका जन्म हुआ था। अपने ७ भाइयो मे ये तीसरे खेत-

सी थे। स० १६५६ मिगसर सुदि १३ को श्री जिनसिंहसूरि जी के पास 'राजसिंह' नाम से दीक्षित हुए। वडी दीक्षा श्रीजिनचन्द्रसूरि ने दी, राजसमुद्र नाम रखा गया। श्रीजिनचन्द्रसूरि जी ने इन्हे आसाउली मे वाचनाचार्य पद दिया था। स० १६७४ मिती फाल्गुन सुदि७ को मेड़ता मे आसकरण चोपडा कारित नान्द महोत्सव से पूर्णिमापक्षीय हेमाचार्य प्रदत्त सूरिमत्र से अपने गुरु भ्राता सिद्धसेन के साथ आप भट्टारक श्री जिनराजसूरि और सिद्धसेन आचार्य श्रीजिनसागरसूरि वने। वारह वर्ष इनकी आज्ञा मे रह कर श्रीजिन-सागरसूरि से लघु आचार्य शाखा अलग हुई। आपने ६मुनियो को उपाध्याय पद, ४१ को वाचक पद एव एक साध्वी को प्रवर्तिनी पद से विभूपित किया था।

स० १६७८ मे फाल्गुन कृष्ण ७ को रगविजय जी को दीक्षित किया और उन्हे उपाध्याय पद से भी विभूपित आपने ही किया था। स० १७०० के चातुर्मास हेतु पाटण पधारे और जिनरत्नसूरि को अपने पट्ट पर स्थापित कर आपाढ सुदि ६ को स्वर्ग सिधारे। श्री जिनचद्रसूरि के अधिकाश शिष्य जिनसागरसूरि जी के आज्ञानुवर्ती रहे।

जिनरत्नसूरि

ये सेरुणा निवासी लूणिया गोत्रीय तिलोकसी-तारादेवी के पुत्र थे—रतनसी और स. १६७० मे जन्मे तेजलदे के पुत्र रूपचद। पिता का देहान्त होजाने पर १६ वर्षीय रतनसी के साथ वीकानेर मे माता ने दीक्षा ली। रूप-चद्र उस समय आठ वर्ष के थे, श्रीविमलकीर्ति गणि के पास विद्याध्ययन कर १४ वर्ष की अवस्था मे दीक्षित हुए अर्थात् स० १६८४ वै० सु० ३ को दीक्षा ली। श्री जिनराजसूरि जी ने वडी दीक्षा देकर रत्नसोम नाम प्रसिद्ध किया। वाद मे अहमदावाद मे वुलाकर उपाध्याय पद दिया। स० १७०० आपाढ सुदि ७ को अपने पट्ट पर स्थापित किया। सघआग्रह से स १७०४ से १७०७ तक जैसलमेर विराजे। फिर तीन चातुर्मास आगरा मे किये। स० १७११ श्रावण वदि ७ को अपने पट्ट पर 'हर्पलाभ' को अभिपिक्त करने की आज्ञा दे स्वर्ग सिधारे।

स० १७०७ वैशाख सुदि ३ जैसलमेर से 'लाभ नदि' मे जो दीक्षाए दी, सूची उपलब्ध है जो प्रस्तुत ग्रन्थ मे प्रकाशित की जा रही है।

जिनराजसूरि जी ने 'विजय' नदी मे रगविजय जी को स० १६७८ फाल्गुन कृ० ६ को दीक्षित किया था। उसी नदि मे मानविजय, रामविजय, राजविजय, कल्याणविजय, चारित्रविजय, आदि को भी। 'हर्ष' नदि मे शाति-हर्ष, साधुहर्ष, सहजहर्ष, मतिहर्ष, ज्ञानहर्ष, राजहर्ष, उदयहर्ष, विवेकहर्ष,

जिनहर्ष, कल्याणहर्ष, थिरहर्ष, सौभाग्यहर्ष को तथा स० १६८४ वै० शु० ३ को 'सोम' नदि मे रत्नसोम (जिनरत्नसूरि), हर्पसोम, मतिसोम, अभय-सोम आदि को दीक्षा दी थी। और भी इन नदियो मे प्रचुर दीक्षाए दी होगी, पर सूची न मिलने से नाम, समय आदि कुछ भी बतलाना अशक्य है।

जिनराजसूरि जी के बडे शिष्यो मे उपाध्याय 'रगविजय थे, पर अतिम समय पाटण मे जिनरत्नसूरि जी को पट्टधर बनाने से जिनरगसूरि शाखा अलग हो गई। श्री जिनमाणिक्यसूरि जी के शिष्य उनके आज्ञानुवर्ती हो गये।

श्री जिनरगसूरि शाखा मे उनके सहदीक्षित रामविजय थे। श्री जिन-रगसूरि आज्ञानुवर्ती उ० रामविजय जी की परम्परा के नाम यहा दिये जाते हैं जिनमे योगिराज प्रथम चिदानद जी और ज्ञानानद जी हुए हैं।

जिनराजसूरि

श्रीजिनरगसूरि जी की प्रथम दीक्षित रग नदी थी जिसमे प्रीतिरग का नाम पाया जाता है।

खरतर-गच्छ दीक्षा नन्दी सूची

[वि० सं० १७०७ से]

द्वितीय खण्ड

खरतर गच्छ दीक्षा नन्दी सूची

वि० सं० १७०७ से

।। श्री जिनकुशलसूरिजी सदा सहाय छै ।।

संवत् १७०७ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने श्रीजेशलमेरु मध्ये भट्टारक श्रीजिनरत्नसूरिभि 'लाभ' नन्दी कृता ।

[गृहस्थ नाम]	[दीक्षा नाम]	[गुरु नाम]
मोहण	महिमालाभ	उ० राजविजय गणे
केशव	कनकलाभ	पद्मरंग रौ

।। मगसिर सुदि १२ जेशलमेरु मध्ये ।।

डाहा	दयालाभ	आपरै
हेमराज	हर्षलाभ	आपरै
वस्तौ	विद्यालाभ	आपरइ
खेतसी	क्षमालाभ	आपरै
वीदा	विजयलाभ	आपरै
अमीचन्द	उदयलाभ	सुमतिधर्म

।। श्रीमेडता मध्ये फागुण वदि १ दिने ।।

भूपति	भक्तिलाभ	कुशलधीर रौ
ठाकुरसी	शान्तिलाभ	शान्तिहर्ष रौ
संतोषी	सुमतिलाभ	साधुहर्ष रौ
खेतसी	कुशललाभ	कुशलधीर रौ
सांवल	सुखलाभ	सुमतिरंग रौ
लद्धौ	लक्ष्मीलाभ	सहजहर्ष रौ

॥ श्रीजयतारण मध्ये फागुण सुदि ५ दिने ॥

कचरा	कर्पूरलाभ	उदयहर्ष रौ
तोडर	ज्ञानलाभ	ज्ञानमूर्ति रौ
भावसिंघ	भुवनलाभ	मतिहर्ष रौ
उदयचन्द	आणदलाभ	ज्ञानमूर्ति रौ
रायसिंघ	राजलाभ	राजहर्ष रौ
खेतौ[1]	नयनलाभ	ज्ञानहर्ष रौ

॥ आगरा मध्ये वैशाख सुदि ३ दिने ॥

जेसिंघ	यशोलाभ	गुणसेन
योधौ	जयलाभ	महिमाकुमार
कर्मचन्द	कान्तिलाभ	कल्याणविजय
बालचन्द	विनयलाभ	विनयप्रमोद

॥ संवत् १७०८ वर्षे माह सुदि १३ दिने श्री आगरा मध्ये 'विशाल' नन्दी कृता ॥

प कानो	कनकविशाल	जसवत
प भवानी	भक्तिविशाल	उदयहर्ष
प भगवान	भाग्यविशाल	ताराचन्द

॥ भट्टारक श्रीजिनचन्द्रसूरिभि प्रथम 'चन्द्र' नन्दी कृता संवत् १७११ वर्षे मितो मगसिर वदि १३ श्री अहमदाबाद नगरे ॥

प देदा	उदयचन्द्र	कमलसिंह
प माधा	मतिचन्द्र	कमलसिंह
प माना	महिमाचन्द्र	हर्षसोम
प कृष्णा	कनकचन्द्र	हीररत्न

---

१ पृथालिया ग्रामे

।। सवत् १७११ चैत्र सुदि १० श्री राजनगरे ।।

प	माना	विजयचन्द्र	
प	मेहाजल	सोमचन्द्र	तेजपाल
प	मेघराज	समयचन्द्र	समयहर्ष
प	करमसी	कल्याणचन्द्र	थोभण
प	पत्ता	पूर्णचन्द्र	थोभण
प	हरपा	हर्षचन्द्र	राजविजय
प	देवसी	दयाचन्द्र	माना री
प	देवराज	रत्नचन्द्र	समयहर्ष
प	नयणसी	नयनचन्द्र	थोभण
प	मानो	कमलचन्द्र	कनकनिधान
प	रामजी	पद्मचन्द्र	पद्मरग री
प	कुअरपाल	कुशलचन्द्र	विवेकहर्ष री
प	धरमसी	धर्मचन्द्र	समयहर्ष री
प	जट्टा	जयचन्द्र	श्री राजविजय री
प	लाला	लब्धिचन्द्र	करमसो री
प	आणद	अमरचन्द्र	लाधा री
प	गोइद	गुणचन्द्र	क्षेमहर्ष री
प	लाला	लक्ष्मीचन्द्र	रत्नजय री

।। स० १७११ चैत्र सुदि १५ दिने श्री राजनगरे ।।

प	रामचद	रामचन्द्र	नाथा री
प	देवकरण	दानचन्द्र	कमलरत्न
प	वस्ता	विनयचन्द्र	नाथा री
प	गगाराम	ज्ञानचन्द्र	कमलरत्न

[जेठ मध्ये]

प	कल्लो	सकलचन्द्र	पुण्यकलस
प	चापो	चारित्रचन्द्र	पुण्यकलस
प	ताल्हा	तिलकचन्द्र	पुण्यकलस
प	गोदा	सुगुणचन्द्र	पुण्यकलस

॥ सवत् १७१२ वर्षे श्री राजनगर मध्ये मगसिर सुदि ५ दिने।
भ. श्री जिनचन्द्रसूरिभि द्वितीया 'कुशल' नदि कृता ॥

प मनोहर	महिमाकुशल	चारित्रविजय
प ऊदा	उदयकुशल	हर्षोदय
प सुन्दर	सुमतिकुशल	सुमतिधर्म रौ
प लाला	लावण्यकुशरा	हर्षोदय
प योधा	जयकुशल	सुमतिरग
प लाला	लालकुशल	ज्ञाननिधान
प सादा	शान्तिकुशल	पुण्यहर्ष रौ
प मानसिंघ	मतिकुशल	मतिवल्लभ
प पाचा	पद्मकुशल	सुमतिशेखर रौ
प नरसिंह	नग्नकुशल	
प देवा	विद्याकुशल	गुणनिधान
प. कृष्णा	लब्धिकुशल	लालकीर्ति
प गोदा	राजकुशल	राजहर्ष
प आसा	अभयकुशल	पुण्यहर्ष

॥ संवत् १७१३ वर्षे मगसिर मासे नवानगर मध्ये। श्री जिनचन्द्रसूरिभि-
स्तृतीया 'वर्द्धन' नन्दि. कृता ॥ माह वदि ११ जणा २

प शेषौ	श्रीवर्द्धन	सहजकीर्ति रौ
प नग्गौ	नयनवर्द्धन	कनककुमार रौ
प गोदौ	ज्ञानवर्द्धन	हेमसी रौ
प खीमौ	क्षमावर्द्धन	हेमनिधान
प प्रेमौ	प्रीतिवर्द्धन	मतिसोम रौ
प सामल	विनयवर्द्धन	थिरहर्ष रौ
प. हरराम	हर्षवर्द्धन	कनकोदय
प हीरौ	हीरवर्द्धन	कनकनिधान
प परमाणद	पुण्यवर्द्धन	सुगुणकीर्त्ति

[माह सुदि ३ जणा १७ दीक्षा]

प गिरधर	राजवर्द्धन	राजकीर्त्ति रौ
प मानौ	महिमावर्द्धन	मतिसोम रौ
प रामचन्द्र	रगवर्द्धन	मानहर्ष रौ
प शोभौ	शान्तिवर्द्धन	राजकीर्त्ति रौ

चैत वदि ६ श्री साचोर मध्ये

प गोपाल	विजयवर्द्धन	विजयहर्ष रौ
प जग्गौ	यशोवर्द्धन	सुगुणकीर्त्ति
प धरमसो	धर्म्मवर्द्धन	विजैहर्ष रौ
प न्यानजी	नयवर्द्धन	हीरोदय रौ

॥ संवत् १७१३ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्री सीरोही मध्ये ॥

प सागौ	सौभाग्यवर्द्धन	शान्तिहर्ष
प सुरताण	शिववर्द्धन	लक्ष्मीवल्लभ
प जोधौ	जयवद्धन	रत्नजय रौ
प चोलौ	चारित्रवर्द्धन	राजहर्ष रौ
प. ईसर	अमृतवर्द्धन	सुमतिरग
प लालौ	लाभवर्द्धन	शान्तिहर्ष
प भगवान	भाग्यवर्द्धन	रत्नजय रौ
प. रायचद्र	रत्नवर्द्धन	रत्नजय रौ
प लाधौ	लावण्यवर्द्धन	सोमहर्ष रौ
प मनोहर	माणिक्यवर्द्धन	ज्ञाननिधान
प जइतौ	सकलवर्द्धन	सुमतिरग
प सभाचद	सुखवर्द्धन	जिनहर्ष रौ
प लषमण	लक्ष्मीवर्द्धन	नयनप्रमोद रौ

॥संवत् १७१४ वर्षे मिगसर वदि २ दिने श्री साचोर मध्ये 'माणिक्य' नदि ४ कृता ॥

प माधव	मुनिमाणिक्य	नेमिहर्ष रौ
प. मानौ	मतिमाणिक्य	प्रेमहर्ष रौ

प कानजी	कीर्त्तिमाणिक्य	कल्याणहर्ष
प चतुरौ	चारित्रमाणिक्य	वा० लाभोदय
प मानसिंह	महिमामाणिक्य	मतिहर्ष रौ
प ठाकुर	थिरमाणिक्य	मानविजय
प. अमरसी	अभयमाणिक्य	हेमहर्ष रौ
प समरथ	समयमाणिक्य	सीहा नौ
प कर्मचन्द[1]	राजमाणिक्य	रूपहर्ष नौ

मिती जेठ सुदि १३ श्री पाली मध्ये—

प भगवान	भुवनमाणिक्य	प्रेमहर्ष रौ
प भगवान	भक्तिमाणिक्य	ज्ञानसुन्दर
प केसव	कल्याणमाणिक्य	कल्याणहर्ष
प. गौडीदास	गुणमाणिक्य	वा० भाग्यसमुद्र
प कुंभौ	कुशलमाणिक्य	वा० लाभोदय नौ
प कपूर	कर्पूरमाणिक्य	राजप्रमोद
प चेतन	चतुरमाणिक्य	सीहा नौ
प सावल	शान्तिमाणिक्य	थिरहर्ष नौ
प तुलछौ	कमलमाणिक्य	कनकोदय
प कानूजी	कनकमाणिक्य	पुण्यरत्न नौ

॥सवत् १७१५ वर्षे माह बदि ५ श्री बीलाड़ा मध्ये 'नन्दन' नादि ५ मी कृता ॥

प राजा	राजनन्दन	कुशलधीर नौ
प रामा	रत्ननन्दन	हेमहर्ष नौ
प सामा	समयनन्दन	सुमतिरग नौ
प देवीदास	दयानन्दन	कमलनिधान
प करमचन्द	कमलनन्दन	इलानिधान
प जयराम	जयनन्दन	कुशलधीर नौ

---

१ सुदि ४ बुधे बीलाडा मध्ये

प राजा	रगनन्दन	सौभाग्यहर्ष
प सोमचन्द[1]	सोमनन्दन	उदयहर्ष
प सामाचन्द[2]	शिवनन्दन	गुणसेन
प नरसिंघ	ज्ञाननन्दन	ज्ञाननिधान
प आसा[3]	अमरनन्दन	राजसुन्दर
प पद्मसी	पद्मनन्दन	कुशलधीर नौ

॥सवत् १७१८ वर्षे माह वदि ७ श्री बीकानेर मध्ये
'सागर' नदी ६ प्रारब्धा॥

प लषमीचन्द	लक्ष्मीसागर	सूरदास
प कर्म्मचन्द	कल्याणसागर	महिमामेरु
प माधव[4]	महिमासागर	राजसार नौ
प, रासा[5]	राजसागर	भुवनसोम
प देदा	दयासागर	मानविजय
प गरीवा	गुणसागर	सुमतिसिन्धुर
प देवीदास	मतिसागर	मतिसोम
प कान्हा	कमलसागर	भुवनकुमार
प किसना	भावसागर	भावप्रमोद
प कुयरपाल	कीर्त्तिसागर	आपरै
प कान्हा	कनकसागर	कनककुमार
प केसा	कुशलसागर	लावण्यरत्न
प चौथ	चारित्रसागर	मानविजय
प देवराज[6]	दानसागर	लब्धिनिधान
प दामोदर[7]	महिमासागर	महिमाचद

---

१ माघ सुदि ५ बीलाडा मध्ये
२. फा. व ११ झूठा मध्ये
३. वै सु २ गुढा मध्ये
४. फा ब ६ दिने देसणोक मध्ये
५ वै ब ९ जालोर मध्ये
६-७ जे सु १ दि जालोर मध्ये

प डूंगर[1]	उदयसागर	आपरै
प नरहरदास[2]	ज्ञानसागर	क्षमालाभ

॥ स० १७१६ वर्षे जेठ वदि १ दिने सूरेत मध्ये ॥

प धरमसी	धर्म्मसागर	कुशलधीर
प रतनसी	रत्नसागर	कुशलधीर
प थोभण	धीरसागर	कुशलधीर

॥ स० १७२० वर्षे मगसिर वदि ११ दिने । श्री अहम्मदपुर मध्ये ७ मी (प्रधान) ॥

प थानसिंह	मुनिप्रधान	महिमाकल्लोल

॥ स० १७२१ वर्षे चै । व । ३ श्री खभाइत मध्ये 'समुद्र' नन्दी कृता ८ मो ॥

प करमसी	कीर्तिसमुद्र	युक्तिरग
प राघवजी	रत्नसमुद्र	समयहर्ष

॥ वै० व० १० दिने श्री गौड़ी ग्राम मध्ये ॥

प परमाणद	पुण्यसमुद्र	कनकोदय
प रामजी	रगसमुद्र	अभयसोम
प रोहितास	अभयसमुद्र	अभयसोम
प भूपति	भीमसमुद्र	रत्नजय
प भीमजी	भुवनसमुद्र	हीरोदय
प तुलछी	तिलकसमुद्र	अभय (सोम)

श्री हणाद्रा मध्ये ।

॥ स० १७२१ वर्षे जे० सु० ८ दिने पाली मध्ये ॥

प रामचन्द्र	लाभसमुद्र	रत्नजय
प सुरताण	शान्तिसमुद्र	रत्नजय

१-२ स १७१९ पो व १३ दिने सूरत मध्ये

बीलाड़ा मध्ये आषाढ बदि १

प लाला	लक्ष्मीसमुद्र	सोमहर्ष
प रूपा	सहजसमुद्र	सहजहर्ष
प लड्डुजी	लावण्यसमुद्र	आपरै
प खीमा	क्षमासमुद्र	आपरै
प हीरजी	हर्षसमुद्र	लक्ष्मीवल्लभ
प केसा[1]	कनकसमुद्र	सहजहर्ष
प जीवण	जयसमुद्र	सुमतिसिंधुर
प लक्ष्मण	ललितसमुद्र	हीररत्न

॥ सवत् १७२२ वर्षे पोष सुदि ४ श्रीमालपुरा मध्ये 'विमल' नन्दी ९ कृता ॥

प रूपा	रत्नविमल	चारित्र (विजय)
प नारायण	नयनविमल	ज्ञानमूर्त्ति
प रामा	रगविमल	हेमप्रमोद
प रायचद	राजविमल	ज्ञानमूर्त्ति
प भल्ला	भक्तिविमल	कल्याणहर्ष
प वीरा	विद्याविमल	ज्ञाननिधान
प हरिचद	हर्षविमल	विनयराज
प सभाचद	सौभाग्यविमल	सुमतिधर्म
प भागचद	विनयविमल	विनयराज
प गगाराम	ज्ञानविमल	ज्ञानमूर्त्ति
प गोवर्द्धन	गुणविमल	गुणनिधान
प भवानी	भाग्यविमल	राजप्रमोद
प मानसिंघ	महिमाविमल	चारित्रविजय
प सूजा	सुमतिविमल	विनयप्रमोद पौत्र
प खीमा	क्षमाविमल	योधा रै पो। सु। ११
प लखमा	लक्ष्मीविमल	राजहर्ष

---

१ लोटोदरी मध्ये आषाढ बदी ४

प रतनसी	रिद्धिविमल	सुमतिधर्म
प जयचद	जयविमल	विनयराज

[।। स० १७२२ माह् वदि २ शुक्र श्रीमालपुरा मध्ये ।।]

प धनजी	धर्मविमल	पद्मरत्न रौ
प राघव	यशोविमल	सुगुणकीर्त्ति
प दामोदर	दानविमल	कमलरत्न
प खेतसी	क्षमाविमल	उदयहर्ष
प केसव	कनकविमल	सुगुणकीर्त्ति
प तारा[1]	तिलकविमल	प्रेमहर्ष

।। स० १७२३ वर्षे जे । सु । १३ आगरामध्ये ।।

प मोहण	मतिविमल	उदयहर्ष रै
प वधावा	वृद्धिविमल	सुमतिविजय

।। सं० १७२३ वर्षे माह् वदि २ दिने ।। श्री आगरा मध्ये ।
'सेन' नन्दी १० कृता [भ० श्री जिनचन्द्रसूरिभि]

प हरजी	लक्ष्मी	लक्ष्मीसमुद्र
प केसा	कीर्त्तिसेन	हर्षोदय
प मूला[2]	महिमासेन	पद्मरग
प. धनजी	धर्म्मसेन	सोमहर्ष
प देवजी	दयासेन	विद्यालाभ
प मयाचन्द[3]	मतिसेन	समयमूर्त्ति रै

१　श्रीदन्तवास मध्ये जेठ वदि ४ दिने

२　सीकर फतेपुर मध्ये

३　चाटसू मध्ये

।। स० १७२४ वर्षे फागुण वदि २ दिने श्रीमालपुरा मध्ये 'सौभाग्य' नन्दी ११ मो कृता ।।

प जयता	जितसौभाग्य	मा०
प देवकरण[1]	देवसौभाग्य	भावनिधान
प पदमसी	पुण्यसौभाग्य	भावनिधान
प केमा	कीर्त्तिसौभाग्य	प खीमा रै
प गोपाल	ज्ञानसौभाग्य	कनककुमार
प कर्मचद	कमलसौभाग्य	कनककुमार

[।। सवत् १७२५ वर्षे प्रथम आषाढ वदि ५ श्रीरिणी मध्ये ।।]

प मुकुद	मुनिसौभाग्य	साधुनिधान
प अमरा	उदयसौभाग्य	जयरग
प जेठा	जयसौभाग्य	समयहर्ष
प माना	मतिसौभाग्य	जयरग रै
प मेतसी	क्षेमसौभाग्य	विजयहर्ष

।। सवत् १७२६ वर्षे वैशाख वदि ११ दिने 'तिलक' नन्दी १२ कृता । चिरकाना मध्ये ।।

प आणद	अभयतिलक	पीथा रै
प नाथा	ज्ञानतिलक	विजयहर्ष
प ऊदा	उदयतिलक	आपरै
प. गोपाल	गुणतिलक	महिमाकुमार
प पोमा[2]	पुण्यतिलक	ऊदा रै
प देवा	दयातिलक	रत्नजय रै
प वच्छराज	विनयतिलक	सुमतिनिधान
प रामा	राजतिलक	तुलछी रै
प जैराज	जयतिलक	स १७२७ वै

१ वै सु ७ सागानेर मे ।

२ महाजन मध्ये जेठ वदि १

प गगाराम	कीर्त्तितिलक	सुमतिसिन्धुर
प जगो	जयतिलक	पदमसी रै
प परमाणद	पद्मतिलक	कल्याणहर्ष
प पदमसी	प्रेमतिलक	पद्मनिधान

सवत् १७२८ वर्षे पोष वदि ७ दिने 'आनन्द' नन्दी १३ कृता बीकानेर मध्ये

प सामल	सदानन्द	साधुहर्ष
प सुखा	सुखानन्द	सुगुणकीर्त्ति
प गौडीदास	गजानन्द	सुमतिरग
प नेता[1]	नयनानन्द	कमलरत्न रै
प सुन्दर	महिमानन्द	समयमूर्त्ति
प जसवन्त	युक्तानन्द	सुमतिरग

सवत् १७२९ वर्षे वैशाख सुदि ५ नागौर मध्ये 'सिह' नन्दी १४ कृता ।।

प डावर	दयासिह	शान्तिहर्ष रै
प रायचन्द	लक्ष्मीसिह	लक्ष्मीवर्द्धन
प रायमल्ल	रत्नसिह	वा० रत्नसिह
प बीदा[2]	विजयसिह	ज्ञाननिधान

स० १७३३ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ श्री पाटण मध्ये १५ 'रुचि' नन्दी कृता

प वेणी	विनयरुचि	वा० सहजहर्ष
प तिलोकसी	तिलकरुचि	श्रीजिताम्
प अमीचन्द[3]	अभयरुचि	वा० कल्याणनिधानरै
प हेमसी	हेमरुचि	श्रीजिताम्
प गणेश[4]	ज्ञानरुचि	वा० सुमतिनिधान

---

१ स १७२८ वै व ३ बीकानेर मध्ये ।

२ बीलाडा मध्ये माह सुदि ४

३ वैशाख वदि ४ दिने

४ मा० सु० १०

स० १७३६ वर्षे मिती पोह सुदि १३ दिने श्री पाटण मध्ये "शेखर" नन्दी १६ कृता

प रामचन्द[1]	रत्नशेखर	वा० पुण्यरत्न रै
प कपूरचन्द	भावशेखर	श्री भावप्रमोद
प अमरसी	अमरशेखर	वा० कल्याणहर्ष
प रिषभा[2]	रिद्धिशेखर	श्रीजी रै
प चौथ	विजयशेखर	विजयलाभ रै
प ताराचन्द	त्रिभुवनशेखर	श्रीजी रै
प भागचन्द[3]	भाग्यशेखर	वा० कनकनिधान रै

स० १७४० वर्षे आषाढ वदि २ शुक्रे श्री अजार मध्ये १७वीं 'शील' नन्दी कृता।

प सतीदास	सत्यशील	समयहर्ष रै
प जैतसी[4]	जयशील	उ० क्षमालाभ रै
प राघव	रत्नशील	प सुगुणचन्द्र नौ
ऋषि खीमो[5]	क्षमाशील	वा० सुमतिनिधान
प वीरचन्द	लब्धिशील	आपरइ
प जसा	जश शील	उ० क्षमालाभ
प सूजा[6]	सुमतिशील	प० चारित्रचन्द्र
प धरमसी	धर्मशील	प० सुभलाभ रै

।। सवत् १७४१ पोष सुदि ७ गुरौ श्री साचोर मध्ये 'सुन्दर' नन्दी १८ कृता ।।

प राजसी	रत्नसुन्दर	सहजहर्षस्य

---

१ स० १७३७ रा मि सु ९ शनौ पाटण मध्ये

२ स० १७३७ रा जे। सु० १३ दिने भुज्ज मध्ये।

३ स० १७३७ रा फा० सु० १ दिने अजार मध्ये।

४ स० १७४० रा मा। सु ११ शुक्रे पाटण मध्ये।

५ फा० सु० ९

६ फा० व० १३ रवौ।

प लषमीचन्द	लक्ष्मीसुन्दर	वा० लावण्यरत्न
प साजण	सौभाग्यसुन्दर	आपरइ
प कुशला	कुशलसुन्दर	प भक्तिविमल
प हरजी	हर्षसुन्दर	वा० पद्मरग रै
प सद्दा	सुखसुन्दर	वा० पद्मरग रै
प धन्नौ	धर्म्मसुन्दर	वा० पद्मतिलक
प डाहा	देवसुन्दर	वा० कनककुमार
प जीवण[1]	जयसुन्दर	वा० विजय रै
प सादूल	सुमतिसुन्दर	उ० विनय
प देवा	दानसुन्दर	उ० विनय
प कानजी	कीर्त्तिसुन्दर	वा० विजय
प जैता	जिनसुन्दर	प० पुण्यवल्लभ
प तेजसी	तेजसुन्दर	वा० मतिहर्षस्य
प विजयचन्द	विजयसुन्दर	वा० मतिहर्ष
प भागचन्द	राजसुन्दर	प राजलाभ रै
प हर्षचन्द्र	हेमसुन्दर	वा० मतिहर्ष
प टीला	त्रैलोक्यसुन्दर	प क्षेमविमल
प सामल	सत्यसुन्दर	वा० कनकोदय
प मोहण	माणिक्यसुन्दर	प० हीरोदय
प मेघा[2]	मतिसुन्दर	वा० प्रेमहर्षनौ
प खीमा[3]	क्षमासुन्दर	प० कल्याण नौ
प केशव	कमलसुन्दर	प० कनकमाणिक्य
प आसौ	अमरसुन्दर	वा० मानविजय
प नाथौ	नयसुन्दर	वा० कान्हजी
प हीरा	हितसुन्दर	वा० पाचा कान्हजी
प गोवर्द्धन	गुणसुन्दर	महो० भुवनसोमानाम्
प नाथा[4]	नेमिसुन्दर	आपरइ

१ स० १७४१ फा० व० रवौ ७ श्री आम्विला मध्ये ।

२ वै० व० ५ सोमे सिणधरी मध्ये दीक्षा ।

३ वै० सु० ९ श्री वाहडमेरु मध्ये ।

४ पो० सु० १० सोम श्री साचौर मध्ये ।

प भल्ला	भक्तिसुन्दर	वा० रूपहर्ष रै
प नाथा	ज्ञानसुन्दर	वा० चारित्रविजय
प खेता	क्षेमसुन्दर	वा० चारित्रविजय
प आणन्द	अभयसुन्दर	प० भक्तिविमल
प लद्धा[1]	लब्धिसुन्दर	वा० कनककुमार
प दत्ता	दयासुन्दर	वा० कनककुमार
प लषमण	लाभसुन्दर	वा० विजय
प रामचन्द	रूपसुन्दर	प० पीथा री
प रामचन्द	रंगसुन्दर	उ० विनय प्र०
प मेघा	महिमासुन्दर	वा० विजय
प खेतसी[2]	दयासुन्दर	प० दयावल्लभस्य
प तिलोकसी	तिलकसुन्दर	वा० राजहर्ष कैरीया
प महिमचन्द	महिमसुन्दर	वा० मतिहर्ष
प फतैचन्द	पुण्यसुन्दर	प० मतिविमल रै
प दीपचन्द	दीपसुन्दर	वा० मतिहर्ष रै
प सुक्खा[3]	सुगुणसुन्दर	वा० कनकोदय
प दीपो[4]	कुशलसुन्दर	वा० कुशललाभ रै
प हेमा	हीरसुन्दर	वा० कुशललाभ
प टीलो[5]	तत्त्वसुन्दर	प० उदयसौभाग्य नौ
प राजसी	ऋद्धिसुन्दर	वा० हेमहर्ष
प जैता	युक्तिसुन्दर	प० यशोलाभ
प धन्नो	धनसुन्दर	प० अमरनन्दन गणे.
प देवसी	दर्शनसुन्दर	प० समयनन्दन रै

---

१. मा० सु० ५ साचोर

२. फा० व० ११

३ चै० सु० ५ राडधरा मध्ये ।

४ चै० सु० ७ सिणधरी मध्ये ।

५ वै० सु० ७ सिणधरी मध्ये ।

।। स० १७४२ माह सुदि ११ सोमे श्री बाहडमेरु मध्ये 'प्रिय' १९वीं नन्दी कृता ।।

प विजयराम	विद्याप्रिय	वा० दयासेन
प विहारी	विनयप्रिय	उ० लक्ष्मीवल्लभ
प जइतो	जयप्रिय	प० सकलहर्ष रै
प करमचन्द	कनकप्रिय	प० सोमहर्ष रै
प कपूर	कर्पूरप्रिय	प० सोमहर्ष रै
प मयाचन्द	मतिप्रिय	वा० अभयसोम
प हीरा	हेमप्रिय	प० सलकहर्ष रो
प जोगा	येगप्रिय	महो० भुवनसोम रै
प सहसा	सुमतिप्रिय	वा० अभयसौभाग्य
प मानौ	महिमाप्रिय	प० महिमाकल्लोल
प तिलोको	तिलकप्रिय	उ० लक्ष्मीवल्लभ
प दयाराम	दयाप्रिय	उ० लक्ष्मीवल्लभ
प रूपा	रूपप्रिय	उ० भावप्रमोद
प केसर	कीर्त्तिप्रिय	प० धर्मसी रो
प रूपा	रगप्रिय	प० हीरोदय रो

।। स० १७४२ वर्षे चैत्र सुदि १५ दिने श्री कोटडा मध्ये 'हंस' २० नन्दी कृता ।।

प देवा	देवहस	वा० हेमनिधान रौ
प जीवण	जयहस	उ० रूपहर्ष रो
प जगसी	जिनहस	वा० सुखलाभ रै
प रूपौ	रूपहस	वा० कनकनिधान
प कल्लो	कल्याणहस	प० उदयतिलक,
प वीरजी	विद्याहस	वा० रत्नजय रो
प चतुरा	चारित्रहस	उ० रूपहर्ष रो
प राजसी	राजहस	वा० सुखलाभ रे
प जीदउ	मुक्तिहस	प० क्षमासमुद्र रो

॥ सं० १७४३ वैशाख सुदि ५ बुधे श्री जेसलमेर मध्ये 'कल्याण' २१ नन्दी कृता ॥

प हीरो	हर्षकल्याण	वा० हेमनिधान रो
प माणिकचन्द[1]	मुनिकल्याण	प० पद्मचन्द रो
प धारसी	धर्मकल्याण	वा० कनककुमार
प मेघा[2]	महिमाकल्याण	वा० यशोरंग रै
प जैतसी	जयकल्याण	प० पदमचंद रो

॥ सं० १७४४ वैशाख सुदि १० सोमे । श्री जेसलमेरु मध्ये 'धर्म्म' (२२) नदि कृता ॥

प आणद	अभयधर्म्म	प० महिमासार
प रूपो	मतिधर्म	वा० नेमहर्ष रो
प श्रीमल्ल	समयधर्म	वा० मतिरत्न रो
प धन्नो[3]	दयाधर्म	वा० कमलरत्न रो
प केसव	कीर्त्तिधर्म	प० उदयतिलक
प राजो	राजधर्म	वा० मतिरत्न रो
प रामो	रंगधर्म	वा० धर्मविमल रो
प देवचद	देवधर्म	प० श्रीजीरइ
प प्रेमजी	प्रीतिधर्म	प० उदयतिलकस्य

॥ सं० १७४६ माह सुदि ११ शनौ श्री बीकानेर मध्ये 'धीर' (२३) नदि कृता ॥

प दल्लो	दयाधीर	उ० सुमतिसिन्धुर
प धरमसी	धर्मधीर	प० राजकुशल
प लखमी	लक्ष्मीधीर	श्रीजी रौ
प सुखो	सौरभधीर	वा० शान्तिहर्ष
प मोहण	महिमाधीर	वा० रत्नजय रै

---

1 सं० १७५४ रा फा सु २ बुधे

2 सं० १७४ मा। व० ५ गुरौ जेसलमेरौ

3 सु० ११ दिने

प ऊदौ	उदयधीर	उ० सुमतिसिन्धुर
प अमृत	आनन्दधीर	वा० ज्ञाननिधान
प कान्हौ	कीर्त्तिधीर	प० दयावल्लभ
प जैतसी	जिनधीर	प० प्रेमतिलक रो
प आसौ	अभयधीर	उ० सुमतिसिन्धुर
प करमचद	कान्तिधीर	वा० थिरहर्ष
प जयचद	युक्तिधीर	महिमामाणिक्य
प राजौ	रत्नधीर	वा० थिरहर्ष
प दीपौ	दीपधीर	वा० रत्नजय
प मानसिंघ	कमलधीर	प० जीवरत्न
प तेजसी	तिलकधीर	श्रीजी रो
प मानौ	मतिधीर	प० भाग्यवर्द्धन
प कपूर	कर्पूरधीर	वा० रत्नजय रो
प कानजी	कनकधीर	प० राजकुशल रै
प जैतौ	जयधीर	प० जयनदन रौ
प धरमसी	ध्यानधीर	उ० सुमतिसिन्धुर
प मनोहर	माणिक्यधीर	प० साधुनिवान
प क्षेतो	क्षमाधीर	प० राजलाभ रे
प डावर	कलशधीर	वा० कुशललाभ
प हरचद	हीरधीर	महिमामाणिक्य
प लद्धौ	लब्धिधीर	वा० मानविजयजी
प देवौ	देवधीर	वा० ज्ञाननिधान
प हेमो	हेमधीर	प० गुणविमल रो
प हरौ	रगधीर	प० रगवर्द्धन रो
प खेतौ	क्षेमधीर	प० जयविमल
प जगौ	यशोधीर	वा० सोमहर्ष
प रेखौ	ऋषिधीर	वा० हेमप्रमोद रै
प नदौ	ज्ञानधीर	प० ज्ञानचन्द्र रो
प सुरताण[1]	समयधीर	प० कनकमाणिक्य

---

१ फा सु १२ शुक्रे

प किसनौ	कलाधीर	प० अभयकुमार
प श्रीचद	सत्यधीर	प० श्यामा रो

॥ स० १७४७ रा जेठ वदि ४ शनौ ॥ श्री बीकानेर मध्ये 'दत्त' (२४) नदी कृता ॥

प मयाचद	माणिक्यदत्त	प० राजचद्र
प भगतौ	भक्तिदत्त	वा० राजप्रमोद
प प्रेमौ	पुण्यदत्त	प० कनकचद रौ
प अमीचन्द	अमरदत्त	प० रत्नसिंह रो
प खेतौ	क्षमादत्त	वा० राजप्रमोद
प देवौ	दयादत्त	प० पद्मनन्दन
प सदारग	सोमदत्त	प० आणदलाभ
प लखमौ	लक्ष्मीदत्त	प० ज्ञानलाभ
प जीवौ	जयदत्त	प० पूर्णचन्द्रस्य
प रतनौ	रूपदत्त	वा० कनकमाणिक्य
प मनोहर[1]	मुक्तिदत्त	प० क्षमाविमल रो

॥ स० १७४७ फागण बदि ७ सोमे श्री बीकानेर मध्ये '२५' राज नदी कृता ॥

प स्यामौ	सोमराज	वा० शान्तिहर्ष रै
प सुन्दर	शिवराज	प० चारित्रचन्द्र
प वीठल	विद्याराज	वा० शान्तिहर्ष
प भागचन्द्र	भुवनराज	वा० विजयलाभ
प सुक्खा[2]	शान्तिराज	वा० अभयसोम
प देवा	देवराज	प० वीदा
प आसौ	अभयराज	प० मतिसेन रो
प प्रेमौ[3]	प्रीतिराज	प० भक्तिविशाल
प चतुरौ	चरणराज	प० जयविमल

१ जे० व० ३ वीकानेर मध्ये। जेठ सुदि ९ गुरौ बीकानेर मध्ये।

२ फा० सु० ३ शनौ ३ जे० व ७ दिने

प वाघौ	विद्याराज	श्रीजी रै शिष्य प० कीर्त्तिसागर रौ
प खीमौ	क्षेमराज	प० सुगुणचन्द्र रौ
प कान्हौ	कीर्त्तिराज	वा० सकलहर्ष
प० गिरधर	ज्ञानराज	वा० तिलोकचन्द्र
प लालचन्द	लब्धिराज	प० भावसागर
प पोथा[1]	प्रेमराज	प० वीरा रै
प खीमौ	क्षमाराज	प० कनककुमार
प कर्मचन्द	कनकराज	प० परमाणद
प भागचन्द[2]	भक्तिराज	श्रीजी रो

॥ सं० १७४८ वर्षे माह सुदि ५ दिने । श्री बीकानेर मध्ये (२६) 'विनय' नन्दो कृता ॥

प रामौ	रत्नविनय	प० अमरसी रो
प लखमौ	लक्ष्मीविनय	प० अभयमाणिक्य
प डूगर	दयाविनय	प० रत्ननन्दन रो
प चतुरौ[3]	चारित्रविनय	प० तिलकप्रमोद
प गौडीदास	ज्ञानविनय	प० रत्नवल्लभ
प रामौ	रंगविनय	प० मतिकुशल
प गोइंद	गंगविनय	प० रत्नवल्लभ
पं गोवर्द्धन	गुणविनय	वा० सुखलाभ रौ
प हरराम	हर्षविनय	प० चारित्रवर्द्धन रौ
प भागचन्द	भाग्यविनय	वा० मतिरत्न रौ
प वाघौ	विद्याविनय	वा० नेमहर्ष रौ
प खेतौ[4]	खेमविनय	प० विद्याकुशल
प कुशलौ	कुशलविनय	प० रत्नवल्लभ
प ऊदौ	उदयविनय	प० रत्नवल्लभ
प भागचन्द[5]	भक्तिविनय	वा० सुखलाल

१　वै० व० विने ६　　　　२ आषाढ सुदि १० गुरो

३　फा० ब० ४　　　　　४ फा ब १३

५　आसा ब ७ बीकानेर

॥ सं० १७४९ फागुण वदि ३ सोमे। रवणीया मध्ये (२७) 'कमल' नन्दी कृता॥

प डूगर	दयाकमल	भागचन्द
प लालो	लब्धिकमल	प० दयासागर रौ
प फतेचन्द	प्रीतिकमल	वा० लावण्यरत्न
प लालचन्द[1]	लाभकमल	श्रीजी रो
प लालो[2]	लक्ष्मीकमल	वा० विनयलाभ
प मौजो	महिमाकमल	प० कनकप्रिय वा० सोमहर्ष लालजी रौ
प हेमो	हेमकमल	प० विद्याकुशल रौ
प केसरो[3]	कीर्त्तिकमल	प० कुशलचन्द
प जसवन्त[4]	जयकमल	वा० कनकोदय
प महिमराज	पद्मकमल	वा० कनकोदय
प भूधर	भक्तिकमल	वा० कमलमाणिक्य

॥ स० १७५२ फागुण वदि ५ गुरो। बीकानेर मध्ये (२८) नदी कृता॥

प सुखौजी[5]	सुखकीर्त्ति	जिनचन्द्रसूरि
प नारायण	ज्ञानकीर्त्ति	सौभाग्यसुन्दर रै
प तुलछी	तिलककीर्त्ति	उ० धर्मवर्द्धन
प साऊ[6]	समयकीर्त्ति	वा० शान्तिहर्ष
प चतुरोजी	चारित्रकीर्त्ति	श्रीजी रै
प भारमल	भावकीर्त्ति	उ० धर्मवर्द्धन
प सुन्दर	सत्यकीर्त्ति	वा० शान्तिहर्ष

॥ १७५३ वर्षे। माह वदि ११ दिने। श्री बीकानेर मध्ये 'मूर्त्ति' (२९) नन्दी कृता॥

प मोहण	मोहनमूर्त्ति	वा० कनकविलास

---

१ फा व कालू मध्ये — २ म १७५१ वै. व ७ नवहर मध्ये
३. फा. व १ आहडसर — ४. फा. व १३ कालू मध्ये
५ भट्टारक थया — ६ फा सु २ बीकानेर म

प लालौ	लब्धिमूर्त्ति	प० रगविमल रौ
प रतनौ	रत्नमूर्त्ति	प० विद्याविलास
प सावल	शिवमूर्त्ति	वा० कनकमाणिक्य
प नाथौ	नयमूर्त्ति	वा० रगवर्द्धन रौ
प रामौ	रगमूर्त्ति	वा० विजयहर्ष रौ
प उत्तम	अमरमूर्त्ति	प० विद्याविलास
प मनोहर	मतिमूर्त्ति	वा० कनकमाणिक्य
प जीवण	जीवमूर्त्ति	वा० सुखलाभ
प मोटौ	मुनिमूर्त्ति	प० गजानन्द रौ
प रुघौ	राजमूर्त्ति	प० राजसी रौ
प रूपौ[1]	रूपमूर्त्ति	वा० कुशललाभ रौ
प टीलौ	जयमूर्त्ति	प० जयनन्दन रौ
प केसौ	कुशलमूर्त्ति	वा० विनयलाभ
प खेतौ	क्षमामूर्त्ति	वा० कनकविलास
प आसौ[2]	अभयमूर्त्ति	प० समयचन्द्र रौ
प उत्तम	उदयमूर्त्ति	श्रीजी रै
		प० नेमसुन्दर रौ
प नरसिंघ	नेममूर्त्ति	प० रगविमल
प मेघौ	महिमामूर्त्ति	वा० कनकमाणिक्य
प देदौ	दयामूर्त्ति	प० कमलसौभाग्य
प वैणौ	विद्यामूर्त्ति	प० विद्याविलास
प नैणौ	नयनमूर्त्ति	वा० कान्हजी रौ
प मुखौ	सकलमूर्त्ति	प० कीर्त्तिसौभाग्य
प विज्जौ[3]	विजयमूर्त्ति	वा० सुखलाभ
प कान्हजी	कनकमूर्त्ति	प० गजानन्द
प मलू	माणिक्यमूर्त्ति	प० जगसी रौ
प पूरौ[4]	प्रेममूर्त्ति	वा० कनकविलास रौ
प किसनौ[5]	कल्याणमूर्त्ति	प० धर्मविमल

१ मा. सु १३ दिने २ फा सु १५ वीकानेरे
३ स १७५३ रा माहवदि १३ दिने ४ मा सु ६ दिने
५ फा व ३ दिने

प प्रेमो[1]	पुण्यमूर्त्ति	वा० विनयलाभ रौ
प गिरधर	गुणमूर्त्ति	वा० विनयलाभ
प हरकिसन[2]	हर्षमूर्त्ति	प० पद्मनन्दन
प समरथ[3]	साधुमूर्त्ति	प० तिलकविमल

॥ स० १७५४ मिगसर सुदि ३ शनौ । श्री फलवधी मध्ये 'भद्र' (३०) नन्दी कृता ॥

प हृदयराम	हर्षभद्र	प० मतिसुन्दर रौ
प ऊदो	उदयभद्र	प० रगसमुद्र रौ
प मनोहर	मुनिभद्र	उ० श्रीदेवधर्म रौ
प खेतो[4]	क्षमाभद्र	प० क्षमासुन्दर रौ
प सोभो	सदाभद्र	वा० राजकुशल रो
प नेतसी	नित्यभद्र	उ० क्षमालाभ रो
प रामचन्द्र[5]	रगभद्र	वा० जयविमल
प रतनो	रत्नभद्र	वा० जयविमल रौ
प कम्मो[6]	कीर्त्तिभद्र	वा० राजलाभ रौ
प मानो[7]	मानभद्र	वा० भावसागर
प भीमो	भक्तिभद्र	प० उदयसौभाग्य
प रूपो	रूपभद्र	प० भक्तिविशाल रौ
प लखमो	लक्ष्मीभद्र	प० विनयविमल
प जयतो	जयभद्र	प० मतिमन्दिर
प नरसिंह	नयभद्र	प० कुशलचन्द्र रौ
प दीपो	दयाभद्र	प० रगसमुद्र रौ
प सुखो	समयभद्र	वा० राजकुशल रौ
प नेतो	नेमिभद्र	प० रूपहस रौ
प नैणसी	ज्ञानभद्र	उ० क्षमालाभ रौ

---

१ फा व १० दिने २ फा सु १ गुरौ

३ आषाढ वदि ६ भोमे फलवद्धी मध्ये

४ मिगसर सुदि ११ रवौ फलवद्धी मध्ये

५ पो व १ फलवद्धी मध्ये ६. मा व १३ फलवद्धी मध्ये

७ फा व ११ गुरौ लोहीयावट मध्ये

प राजौ	राजभद्र	वा० जयविमल रौ
प प्रेमौ	प्रीतिभद्र	प० जयनन्दन रौ
प गोइद	गुणभद्र	वा० राजलाभ रौ
प नेमौ	नोतिभद्र	प० उदयसौभाग्य रौ
प सीचौ	सत्यभद्र	प० भक्तिविमल
प नाथौ	नयनभद्र	प० सोमनन्दन रौ

॥ स० १७५४ फागुण सुदि २ बुधे श्री मेवरा ग्राम मध्ये 'प्रभ' (३१) नन्दी कृता ॥

प वाघौ	विनयप्रभ	वा० कीर्त्तिविलास रौ
प लखमौ	लक्ष्मीप्रभ	वा० कीर्त्तिविलास रौ
प नाथौ	ज्ञानप्रभ	प० दयासागर रौ
प खीमो	लक्ष्मीप्रभ	प० रगसमुद्र रौ
प पूरो	पूरणप्रभ	प० शान्तिकुशल रौ
प जगनाथ[1]	जयप्रभ	प० भुवनसमुद्र रो
प लालौ	लालप्रभ	वा० अभयकुशल रौ
प भानौ	मतिप्रभ	प० राजसागर रौ
प सावल[2]	शिवप्रभ	प० नयवर्द्धन रौ
प दामौ	दयाप्रभ	वा० कीर्त्तिविलास
प जीवौ[3]	जयप्रभ	वा० महिमाकल्लोल
प जीवण	जिनप्रभ	वा० मतिमन्दिर रौ
प रूपौ[4]	रत्नप्रभ	वा० जयलाभ रौ
प अमीचन्द	अमृतप्रभ	प० शान्तिकुशल रौ
प वाल्हजी	विद्याप्रभ	प० भुवनसमुद्र रौ
प जिनदास	जीवप्रभ	प० राजसागर रौ
प वीरचन्द	विमलप्रभ	प० राजसागर
प रूपौ	राजप्रभ	प० नयवर्द्धन रौ

---

१ द्वितीय ज्येष्ठ वदि ३ बुधे । महेवा नगरे

२ द्वि जे सु ५ पाडनाळ मध्ये ३ फा सु ७ दिने मडोवर मध्ये

४ प्रथम ज्येष्ठ सुदि ६ आसोतरा मध्ये

॥ सं० १७५४ वर्षे आषाढ वदि १० गुरौ । श्री पाली मध्ये । 'सोम' नदि कृता ॥ (३२)

प क्षेतौ	क्षेमसोभ	वा० रत्नवल्लभ रौ
प राजसी	राजसोम	प० लालजी रौ
प प्रेमौ	पद्मसोम	प० लक्ष्मीसमुद्र
प प्रेमौ	प्रीतिसोम	प० ज्ञानलाभ रौ
प गोवर्द्धन	ज्ञानसोम	वा० रत्नवल्लभ
प हेमौ	हेमसोम	वा० रत्नवल्लभ रौ
प लाखणसी[1]	लक्ष्मीसोम	प० देवधर्म रो
प श्यामा	शान्तिसोम	उ० धर्मवर्द्धन
प अमीचन्द	अमृतसोम	वा० आणदलाभ
प जेसौ	यश सोम	प० लक्ष्मीसमुद्र रौ
प ईसर	उदयसोम	प० लक्ष्मीसमुद्र रो
प सामत	शिवसोम	वा० रत्नवल्लभ रो
प भगवान	भाग्यसोम	वा० रत्नवल्लभ
प पिरागौ	पुण्यसोम	प० पद्मतिलक रो
प रतनसी	राजसोम	प० तिलकधीर रो
प हरिनाथ	हससोम	उ० धर्मवर्द्धन रो

॥ स० १७५५ माघ बदि ६ दिने । श्री सादडी मध्ये 'विजय' नदी कृता ॥ (३३)

प रामौ	रूपविजय	वा० कमलमाणिक्य
प गोइद	गुणविजय	प० कुशलचन्द
प सुन्दर[2]	सत्यविजय	प० भुवनसमुद्र
प देदौ	देवविजय	प० पूर्णचन्द्र नौ
प नाथौ	ज्ञानविजय	प० ज्ञाननिधन
प श्यामजी	सोमविजय	प० मुनिकल्याण
प मनीराम	मुक्तिविजय	प० मुनिकल्याण

---

१ स० १७५५ का सु १२ पाली मध्ये

२ मा० सु० १ घाणोरा मध्ये

प गोवरधन	गजविजय	वा० विजयवर्द्धन
प चापसी	चरणविजय	प० जिनसुन्दर री
प न्यानजी[1]	नित्यविजय	प० दयातिलक
प हरदास	हसविजय	वा० चारित्रचन्द्र
प गदी	गगविजय	पं० ज्ञानराज री
प अमरी[2]	अमरविजय	उ० उदयतिलक
प मामल	शान्तिविजय	उ० उदयतिलक
प रुपी[3]	रामविजय	प० दयासिह री
प मनोहर	महिमाविजय	वा० यशोलाभ री
प वीरी	वीरविजय	जिनसौभाग्य नी
प कुशलो	कुशलविजय	प० कुशलचन्द
प हरजी	हर्षविजय	प० भुवनसमुद्र री
प चतुरो[4]	चतुरविजय	वा० जयलाभ री
प धनजो[5]	धर्मविजय	प० पद्मचन्द्र री
प रुपो	रत्नविजय	प० विजयहस नी
प राजाराम	रिद्धिविजय	प० जयकल्याण
प आसकरण	अमृतविजय	प० सुखसुन्दर री
प ऊदो	उदयविजय	वा० महिमाकुशल
प हरचन्द[6]	हेमविजय	प० सुगुणचन्द्र री
प जगो	जयविजय	वा० चारित्रचन्द्र नी
प नागजी	नयविजय	प० राजसागर नी
प कान्हजी	कीर्त्तिविजय	उ० उदयतिलक
प दीपो[7]	दीपविजय	वा० विजयलाभ री
प श्रीचन्द[8]	सिद्धिविजय	प० महिमामाणिक्य

---

१ वै० व० १ वील्हावास मध्ये   २ वै सु २ वील्हावास मध्ये

३ वै सु ११ सोझित मध्ये   ४ माह सुदि ९ देवसूरी मध्ये

५ चै सु १३ वील्हावास मध्ये दीक्षा

६ वै व ९ वील्हावास मध्ये   ७ वै सु ३ वील्हावास मध्ये

८ आसाढ वदि १२ सोझित मध्ये

।। संवत् १७५६ माह सुदि ५ सोमे । श्री सोझित मध्ये । 'रग' नदी (३४) कृता ।।

प रतनौ	रत्नरग	वा० भक्तिविशाल
प राघव	ऋद्धिरग	प० जयतिलक रौ
प वालचन्द[1]	विनयरग	प० मुनिसौभाग्य
प नगौ	नयनरग.	वा० राजलाभ
प रिषभौ	राजरग	वा० अमरनन्दन रौ
प कर्मचन्द	कल्याणरग	वा० श्रीवर्द्धन
प चतुरौ	चारित्ररग	वा० अमरनन्दन रौ
प नन्दौ	आणदरग	प० तत्त्वसुन्दर रौ
प रिषभौ[2]	रूपरग	प० लाभसमुद्र रौ
प करमचन्द	कीर्तिरग	प० धर्मसागर
प ठाकुर	थिररग	वा० जयविमल रौ
प नाथौ[3]	नित्यरग	वा० सुगुणचन्द्र रौ पौत्र राधा रौ
प वीरौ	विद्यारग	प० दयासागर नौ
प भलौ	भावरग	प० सुमतिप्रिय रौ
ऋषि सारग[4]	सहजरग	आपरै
प घासीराम	ज्ञानरग	प० कनकराज रौ
प सुन्दर	समयरग	प जयतिलक रो
प अमरौ[5]	उदयरग	प० तिलकप्रमोद
प आणद[6]	भाग्यरग	प० भाग्यनिधान रो
प नदौ	नेमरग	प० रत्नसुन्दर रा
प मयाचन्द	महिमरग	वा० अमरनन्दन रो
प कर्मचन्द	कनकरग	प० मतिसुन्दर रो
प रामचन्द[7]	कुशलरग	वा० लावण्यरत्न रो
प केसौ	कमलरग	प० लाभसमुद्र रौ

---

१ स १७५६ फा सु १ सोझित मध्ये । २ वै व ७ श्री रायपुर मध्ये
३ जे व ५ जैतारण मध्ये । ४ स १७५७ मा व ११ श्री मेडता मध्ये
५ फा सु १३ सोझित मध्ये । ६ स १७५६ फा सु ७ सोझित मध्ये
५ चै सु ५ गुरौ वच्छराज रा गुढा मध्ये

प धन्नौ	धर्मरग	उ० क्षमालाभ रौ
प हेमौ	हेमरग	प० सिवनन्दन मुनि
प नाथौ[1]	दानरग	प० दानसागर नौ
प दीपौ	दयारग	वा० कनकविलास
प मेहो	मुनिरग	वा० कनकविलास
प ऋषि रामचन्द	रामरग	वा० विनयलाभ रौ

॥ सवत् १७५७ वर्षे पोष सुदि १३ श्री मेड़ता मध्ये ॥ 'उदय' नदी कृता (३५)

प स्यामौ	शुभोदय	प० सौभाग्यवर्द्धन रौ
प रामचन्द[2]	रत्नोदय	प० गुणविमल रौ
प गागौ	ज्ञानोदय	प० सुमतिप्रिय रौ
प रूपौ	रगोदय	वा० राजचन्द्र रौ
प नारायण[3]	तिलकोदय	प० तिलकप्रिय
प अखौ	अभयोदय	प० लाभसमुद्र रौ
प पदमसी[4]	पुण्योदय	प० दयाविनय रौ
प भूधर[5]	भावोदय	प० अभयसुन्दर रौ
प नाढौ[6]	नयनोदय	वा० राजचन्द्र रौ
प भागचन्द	भक्तोदय	वा० राजचन्द्र रौ
प. शीतल[7]	सत्योदय	प० दयाप्रिय रौ

॥ सवत् १७५८ वर्षे मिगसर सुदि ६ दिने गुरुवारे "हेम" (३६) नदी कृता ॥ वीलाड़ा नगरे ॥

प केसर	कुशलहेम	वा० जयलाभगणि रो
प तिलकचन्द	तिलकहेम	वा० लावण्यरत्न रो
प सुखौ[8]	सुखहेम	वा० ज्ञाननिधान रो

---

१ जे सु ३ जयतारण मध्ये   २ फा सु ६ लावीया मध्ये
३. वै व १० रूपनगर मध्ये   ४ माह सुदि १ मेड़ता मध्ये
५. चै व १३ कठमहूर मध्ये   ६ चै सु १ कठमहूर मध्ये
७ वै ब १३ गुरौ रूपनगर मध्ये   ८ वीलाडा मध्ये

प हरखौ	हससहेम	प० कल्याणसागर रो
प सूजौ	सत्यहेम	वा० नेमिहर्ष रो
प अमीचन्द	अभयहेम	प० जिनसौभाग्य
प देदौ[1]	दत्तहेम	प० विनयविमल रौ प्रपौत्र
प खेतौ[2]	सुमतिहेम	वा० विनयलाभ गै
प कुशलौ	कल्याणहेम	प० माणिक्यसुन्दर
प देवचन्द	दयाहेम	वा० लावण्यरत्न रौ
प लालौ	लक्ष्मीहेम	प० कीर्त्तिसौभाग्य
प. जीवण	जयहेम	वा० अभयकुशल रौ
प सुखौ	समयहेम	वा० नेमिहर्ष गणि
प पदमौ[3]	पदमहेम	प० तिलकप्रिय रो
प मयाचन्द[4]	माणिक्यहेम	वा० सुगुणचन्द
प धन्नौ	धर्महेम	प० क्षमाविनय रौ

॥ सवत् १७५९ वर्षे मिगसर बदि १३ तिथौ गुरुवारे (३७) 'सार' नदी कृता । श्री जयतारण मध्ये ॥

प मानौ	मुनिसार	वा० लाभवर्द्धन गणि रो
प भोजौ	भक्तिसार	प० अभयमाणिक्य रो
प जैतौ	जयसार	प० जयहस रो
प जीवण	जिनसार	प० रत्न समुद्रस्य
प देवौ[5]	दयासार	प० लाभवर्द्धन रौ
प पदमसी[6]	पुण्यसार	प० मतिविमल
प समरथ[7]	समयसार	वा० सौभाग्यसुन्दर

॥ संवत् १७६० वर्षे माह वदि १४ सोमे मेवाड देसे दारू ग्राम मध्ये 'सिन्धुर' (३८) नंदी कृता ॥

प अजौ	अभयसिन्धुर	वा० भावसागर गणि गे

---

१ वै व ११ बीलाडा मध्ये २ आसा व ३ गनगीया मध्ये
३. चैत्र सुदि १२ बीलाडा मध्ये ४ वै सु १ खारीया मध्ये
५ मा सु ४ जयतारण मध्ये ६ मा सु १५ श्री जयतारण मध्ये
७ फा व ११ श्री जयतारण मध्ये

प सारग	समयसिन्धुर	प० क्षेमविमल गणि
प श्रीचन्द	सुखसिन्धुर	प० सदानन्द गणि रौ
प सूजो[1]	शान्तिसिन्धुर	प० ज्ञानसौभाग रै
प सिवराम	शक्तिसिन्धुर	प० सोमराज रौ
प ईसर	इलासिन्धुर	प० मतिविमल रौ
प सभाचन्द[2]	सुगुणसिन्धुर	प० सदानन्द ग०
प रूपौ[3]	रूपसिन्धुर	प० लब्धिचन्द्रस्य
प रामचन्द[4]	रत्नसिन्धुर	वा० भक्तिविशाल

।। स० १७६२ वर्षे माह सुदि १ शुक्रे। श्री थाणला मध्ये। 'प्रमोद' नदी कृता (३९) ।।

प पेमो	पुण्यप्रमोद	वा० सुखलाभगणे
प राजौ	रगप्रमोद	वा० कनकविलास गणे
प खेमौ	क्षमाप्रमोद	प० रत्नसमुद्रस्य
प वीरौ	वृद्धिप्रमाद	प० मुनिसौभाग्य नौ
प नाथौ	ज्ञानप्रमोद	वा० सुखलाभ ग०
प वधौ	विद्याप्रमोद	प० कीर्त्तिधर्मस्य
प वछौ[5]	विवेकप्रमोद	प० कुशलसुन्दर

श्री जिनसुखसूरि

।। सवत् १७६५ वर्षे मिती फागुन वदि २ दिने भट्टारक श्री जिनसुख सूरिभि प्रथम (१) सुख नदी कृता खभाइत मध्ये ।।

प लालौ	लक्ष्मीसुख	प० रत्नशेखर रै
प नारायण	नयनसुख	प० रत्नशेखर रै
प जैराम[6]	जोवसुख	प० सागा रो
प कुशलौ[7]	कुशलसुख	उ० धर्मवर्द्धन रो

१　मा सु १२ रतलाम म०　　२ स १७६१ मा व ६ रतलाम मध्ये

३　मा सु ५ श्री रतलाम मध्ये

४　चैत वदि १ दिने। उज्जयिनी नगर्यां बेगमपुरा मध्ये। श्री थाणला मध्ये आषाढ वदि १ दिने।

५　फा सु ५ श्री मारगी मध्ये। ६ प्रथम वै सु १। ७ मा सु १ दिने

प वीरो	विद्यासुख	प० अभयमूर्त्ति
प सभाचन्द	सुमतिसुख	प० पुण्यदत्त
प जीवन	जयसुख	प० मतिसौभाग्य
प गोदौ[1]	ज्ञानसुख	प रूपसुन्दर रो
प विज्जो[2]	विजयसुख	वा० महिमाकुशल
प हेमचन्द	हेमसुख	श्रीजिताम्
प लालो	लाभसुख	प० दयादत्त रो
प महानद[3]	महिमासुख	प० विद्याविमल
प वर्द्धमान[4]	विनयसुख	प० सत्यशील
प जैतौ[5]	जेतमुख	प० लब्धिकुशल रो
प ताराचन्द	त्रिभुवनसुख	प० महिमाकल्याण
प माडण	मदनसुख	प० लक्ष्मीकुशल
प रत्नपाल	राजसुख	प० रूपसुन्दर रो
प सुखौ[6]	सदामुख	प० दर्शनसुन्दर रो

।। स० १७६८ माह सुदि १ दिने पालणपुरे मध्ये । श्री जिनसुखसूरिभि (२) 'जय' नदी कृता ।।

प खीमो	क्षेमजय	प० देवहस रौ
प सूजो	सत्यजय	प० विनयरग रो
प जालप[7]	यशोजय	प० महिमासुन्दर
प रिखभदास	ऋद्धिजय	वा० यश।वर्द्धन
प जयराम	जगज्जय	प० जिनजय रो
प लखमौ[8]	लक्ष्मीजय	प० भाग्यविशाल
प अमरसी	अमृतजय	प० भागचन्द रै
प मोहन	महिमाजय	प० भागचन्द रै
प दुलीचन्द	धर्मजय	वा० अमरनन्दन रो

---

१ वै सु. ११ दिने २ जे व १२ रवौ ३ प्र वै सु १३
४ स १७६६ रा वै व ५ पाटण ५ म १७६७ रा
६ स १७६७ जे व ३ पाटण एव सुख नदिना जणा १८ थया गुजराति मध्ये
७ स १७६८ चै सु ४ साचोर मध्ये ८ वै. व ४ राडधरा मध्ये

प राधाकृष्ण	ऋद्धिजय	वा० दयातिलक
प गोपी[1]	ज्ञानजय	वा० दयातिलक रो
प लालौ	लावण्यजय	प० दयाविनय रो
प अमरा[2]	अमृतजय	प० यशोधीरस्य
प लालचन्द	लाभजय	प० महिमसुन्दर
प जीवण[3]	जिनजय	प० हर्षविमल रौ
प रामौ[4]	राजजय	वा० विजयशेखर रो
प स्यामजी[5]	सुमतिजय	प० भागचन्द रै
प नन्दलाल	ज्ञानजय	प० भागचन्द रै
प रतनौ[6]	चारित्रजय	वा० अमरनन्दन
प करमचन्द[7]	कीर्त्तिजय	प० दयासार
प प्रीतम	प्रीतिजय	वा० दयातिलक रो

।। सं० १७७१ वर्षे पो० सु० ६ शुक्रे । श्री जेसलमेरु मध्ये । श्री जिनसुखसूरिभि (३) निधान नंदी कृता ।।

प लीलापति	लक्ष्मीनिधान	वा० भावसागर
प सदानन्द	सुखनिधान	वा० भक्तिविनय
प ऋषभौ	ऋद्धिनिधान	प० मुनिमूर्त्ते
प बालकृष्ण	बुद्धिनिधान	प० रत्नवर्द्धन
प गंगाराम	लालनिधान	प० लाभोदय
प वेलजी	विद्यानिधान	श्रीजी रै
प चतुरो	चारित्रनिधान	उ० राजसागरस्य
प गांगजी	गुणनिधान	वा० दयातिलक
प मोटो	महिमानिधान	प० समयधीर

---

१ सं १७७० वै व ५ पाटोधी मध्ये २ फा व १२ श्री साचोर मध्ये
३ चै सु ५ साचोर मध्ये ४ जे व ८ साचोर मध्ये
५ जे व २ मिणधरी मध्ये ६ सं १७७० मा सु १२ श्री जालोर मध्ये
७ सं १७७० चै सु ८ थोभ मध्ये

॥ सं० १७७१ वर्षे पो० सु० ६ शुक्र । श्री जेसलमेरु मध्ये । श्री जिनसुख-सूरिभिः (३) निधान नदी कृता ॥

प लीलापति	लक्ष्मीनिधान	वा० भावसागर
प सदानन्द	सुखनिधान	वा० भक्तिविनय
प ऋषभो	ऋद्धिनिधान	प० मुनिमूर्त्ति
प वालकृष्ण	वृद्धिनिधान	प० रत्नवर्द्धन
प गगाराम	लालनिधान	प० लाभोदय
प वेलजी	विद्यानिधान	श्रीजी रै
प चतुरो	चारित्रनिधान	उ० राजसागरस्य
प गागजी	गुणनिधान	वा० दयातिलक
प मोटो	महिमानिधान	प० समयधीर

॥ सं० १७७१ वर्षे माघ सुदि ५ शनौ । जेसलमेरु मध्ये । श्री जिनसुख-सूरिभिः (४) रत्न नन्दी कृता ॥

प हेमो	हस्तिरत्न	वा० रत्नशेखरस्य
प लालो	लब्धिरत्न	प० भक्तिविनय
प खुस्यालो	क्षमारत्न	प० चारित्रकीर्त्ति
प गुलालो	गुणरत्न	उ० श्रीधर्मवर्द्धन
प राजसी	राजरत्न	उ० श्रीधर्मवर्द्धन
प साहिवराय	सुखरत्न	उ० राजसागर
प माधव[1]	महिमारत्न	उ० सुखलाभ रै
प गगाराम	गजरत्न	महो० क्षमालाभ
प. अभैराज	अभयरत्न	उ० सुखलाभ
प रामचन्द[2]	ऋद्धिरत्न	प० अमरदत्त ग०
प ऋषभो	ऋषिरत्न	वा० रत्नशेखरस्य
प लखमो	लाभरत्न	वा० भागचन्द्रस्य
पं कान्हजी[3]	कनकरत्न	श्रीजीरै

---

१ स० १७७३ मा. सु ९ श्री जेसलमेरु मध्ये

२ स० १७७३ मा सु ११ दिने श्री जेसलमेरु मध्ये

३. स० १७७३ आ.सा सु ३ जेसलमेरु मध्ये

प ज्ञानचन्द	ज्ञानरत्न	श्रीजी रै
प सभाचन्द	सभारत्न	उ० श्री धर्मवर्द्धन
प देवौ	देवरत्न	प० भाग्यरग रै
प वद्धौ[1]	विद्यारत्न	उ० श्रीनेमिसुन्दर ग०
प भगवती	भक्तिरत्न	प० आणदवीर रो
प रूपचन्द	रूपरत्न	उ० सुखलाभ
प कपूरौ[2]	कर्पूररत्न	प० कुशलसुन्दर
प. मोटौ[3]	मानरत्न	प० पूर्णप्रभस्य
प ज्ञानचन्द	गुणरत्न	वा० जिनहस ग०

॥ स० १७७३ वर्षे जे० व १० श्री पुहकरण मध्ये । भ । श्री जिनसुख-सूरिभि. (५) मेरु नन्दी कृता ॥

प भारमल्ल	भानुमेरु	वा० मोहन ग०
पं भागचन्द	भक्तिमेरु	वा० लाभसुन्दर
प हरचन्द	हर्षमेरु	प० हितसुन्दर ग०
प हरचन्द	लाभमेरु	वा० लाभसुन्दर
प खुस्यालो[4]	क्षमामेरु	उ० श्रीलाभवर्द्धन ग०
प नाथा	नित्यमेरु	वा० मोहन गणे
प मनोहर	मुनिमेरु	वा० तत्त्वसुन्दर
प कान्हजी	कनकमेरु	प० राजप्रभ रै
प जीवण	जयमेरु	वा० तत्त्वसुन्दर गणे

॥ सं० १७७४ रा पोष सुदि १० श्री उदयरामसर मध्ये भ० श्री जिनसुखसूरिभि (६) कुशल नन्दी कृता ॥

प लालौ	लाभकुशल	वा० दयातिलक
प रूपौ	ऋद्धिकुशल	वा० रगविमल
प धन्नौ	धनकुशल	प० चारित्रकीर्त्ति

---

१. मा सु १५ । २ स० १७७३ चै. ब. १० जेसलमेरु मध्ये

३. स० १७७३ वै सु ११ जालोडा मध्ये ।

४ स० १७७४ म सु ३ लोहीयावट मध्ये

प केसरीचन्द	कनककुशल	पं० कनकमूर्त्ति·
प मेघौ	महिमाकुशल	प० राजमूर्त्ति.
प गौडीदास[1]	ज्ञानकुशल	उ० राजसागर
प. विमलसी	विवेककुशल	वा० सुमतिसुन्दर
प थाहरू[2]	थिरकुशल	प० मुनिकल्याण
प वद्धौ[3]	वृद्धिकुशल	प० दत्तहेम रो
प कान्हौ[4]	कीर्त्तिकुशल	प० रत्नोदय रो
प. दलौ[5]	दानकुशल	प० चारित्रवर्द्धन ग०,
प सूजौ	सत्यकुशल	श्री राजसागर ग०
पं जीवण	जगतकुशल	प० प्रीतिधर्म रो
प दौलौ	दयाकुशल	वा० दर्शनसुन्दर
प दीपौ[6]	दानकुशल	प० ज्ञानकीर्ति
प श्रीचन्द	सदाकुशल	प० जीवमूर्त्ति.
प साहिबौ	सहजकुशल	प० मुनिमूर्त्ति
प पासू	पद्मकुशल	प० पुण्योदयस्य
प वीरचन्द	विनयकुशल	प० भक्तिविशाल
प ऊदौ[7]	उदयकुशल	प० जिनजय रौ
प ऋषभौ	रत्नकुशल	प० भावकीर्त्ति रो
प सुक्खौ	सकलकुशल	प० दत्तहेम रौ
प मनरूप	मुनिकुशल	प० रत्नोदय रौ
प खोमौ	क्षेमकुशल	प० धर्मधीर गणे.
प वद्धमान	वृद्धिकुशल	प० हर्षसमुद्र
प लखमौ	लाभकुशल	प० अमरसी रो

१. स० १७७४ फा सु ७
२. जे सु २ वीकानेर मध्ये
३ जे सु १३
४. आसा ब २-वीकानेर मध्ये
५ आसा ब ९
६. स० १७७४ मग व ४ श्री वीकानेर मध्ये
७ स० १७७४ चै सु १३ वीकानेर मध्ये

॥ सं० १७७६ वर्षे श्री बीकानेर मध्ये । पो० सु० ५ दिने श्री जिनसुख-सूरिभि (७) वल्लभ नन्दी कृता ॥

पं. लक्ष्मीचन्द	ललितवल्लभ	प० लीला रौ
प. सदारग	सत्यवल्लभ	प० कल्याणहस गणे
प सबलौ	सदावल्लभ	प० ज्ञानकीर्त्ति
प लखमण	लब्धिवल्लभ	वा० धर्मसुन्दर रो
प दौलौ	देववल्लभ	वा० देवधीर गणे
पं गौडीदास	ज्ञानवल्लभ	प० क्षमाप्रमोद
प मोहण	माणिक्यवल्लभ	श्रीजी रै
प रतनौ	रिद्धिवल्लभ	वा० अभयमाणिक्य
प गगाराम[1]	ज्ञानवल्लभ	उ० धर्मवर्द्धन गणे
प पूरण	प्रतापवल्लभ	उ० देवधर्म रो
प हरचन्द	हर्षवल्लभ	उ० देवधर्म गणे
पं जीवण	जयवल्लभ	प० चारित्रकीर्त्ति
प रामचन्द्र	रगवल्लभ	वा० कर्पूरप्रिय
प खुस्यालौ	क्षमावल्लभ	प० रत्नसुन्दर
प ताराचन्द	तत्त्ववल्लभ	वा० कर्पूरप्रिय
पं अमरौ	अमृतवल्लभ	प० वेणीदास
प गोवर्द्धन	गणिवल्लभ	वा० रगविमल
प रूपचन्द	राजवल्लभ	उ० राजसागर रो
प आसौ	उदयवल्लभ	प० कल्याणहस रो
प लखमण	लाभवल्लभ	वा० भुवनलाभ रो
प ऊदौ	आणदवल्लभ	वा० महिमसुन्दर ग०
पं दीपौ	दानवल्लभ	वा० मतिसौभाग्य
प भीमौ	भक्तिवल्लभ	प० क्षमासुन्दर
प केसर	कीर्त्तिवल्लभ	वा० धर्मधीर गणे
प अखौ	अभयवल्लभ	वा० अभयमाणिक्य
प कुशलौ	कुशलवल्लभ	प० जयहेम रो

१ पो सु १० शनौ

प वच्छराज	विद्यावल्लभ	श्रीजी रै
प रामचन्द	रामवल्लभ	प० भक्तिराज ग०
प वलू	मुनिवल्लभ	उ० देवधर्म रो
प चतुरौ	चारित्रवल्लभ	उ० विद्याविलास
प चन्दौ	चन्द्रवल्लभ	प० रामविजय ग०
प देवचन्द	दर्शनवल्लभ	वा० कर्पूरप्रिय
प जीवण	जगवल्लभ	प० सत्यकीर्त्ति
प मयाचन्द	महिमावल्लभ	वा० रगविमल
प रतनौ	लाभवल्लभ	वा० रगविमल
प गिरधर	गजवल्लभ	प० उनम रो
प लखमौ	लावण्यवल्लभ	वा० त्रैलोक्यसुन्दर
पं कुशलौ	कमलवल्लभ	वा० क्षमासुन्दर
प खेमौ[1]	क्षेमवल्लभ	वा० महिमाकल्याण
प माणिकचन्द	मित्रवल्लभ	वा० युक्तिसुन्दर
प सामल	समयवल्लभ	वा० अमरनन्दन
प हेमौ	सुमतिवल्लभ	प० सुमतिहेम रै
प कपूर	क्रियावल्लभ	प० उदयधीर रै
प गौडीदास	गीतवल्लभ	प० अभयसुन्दर
प सुन्दर	सुन्दरवल्लभ	उ० नेमसुन्दर
प नाथौ	नित्यवल्लभ	वा० जयशील ग०
प ऊदौ	आदित्यवल्लभ	उ० नेमसुन्दर
प नैणौ	नेमिवल्लभ	वा० क्षमासुन्दर ग०
प अमरौ	इलावल्लभ	वा० माणिक्यदत्त
प सिवचन्द	सकलवल्लभ	उ० सुमतिप्रिय
प नन्दौ	न्यायवल्लभ	प० सुमतिहेम ग०
प महासिंघ	मयावल्लभ	उ० श्री राजसागर
प जवाहर	यशोवल्लभ	वा० त्रैलोक्यसुन्दर
प रघुनाथ	रूपवल्लभ	श्रीजी रै
प. मयाचन्द	मनोवल्लभ	वा० युक्तिसुन्दर

---

१ मा सु २ दिने

प रामकृष्ण	रामवल्लभ	वा० समयधीर ग०
प. मनसौ	मयावल्लभ	वा० समयधीर ग०
प तिलोको	त्रैलोक्यवल्लभ	वा० अमरनन्दन
पं भूपति	भाववल्लभ	प० विनयप्रभु-वाघउ
प अमरौ	आर्यवल्लभ	प० वरमधीर रौ
प ऊदौ	अतिवल्लभ	प० अभयसुन्दर रौ
प लच्छौ	लोकवल्लभ	उ० नेमसुन्दर ग०
प सभौ	सौभाग्यवल्लभ	वा० जयशील ग०
पं हेमौ[1]	हीरवल्लभ	वा० माणिक्यदत्त ग०
प दीपचन्द	दीपवल्लभ	उ० राजसागर
प हरखौ[2]	हरिवल्लभ	वा० लाभसुन्दर ग०

।। स० १७७६ वैशाख वदि १३ रवौ श्री जिनसुखसूरिभि. (८) कल्लोल नन्दी कृता. ।।

पं विज्जौ	विद्याकल्लोल	प० रत्नशीलमुनि
प यशौ	युक्तिकल्लोल	वा० महिमाप्रिय
प गगाराम	ज्ञानकल्लोल	वा० रत्नशेखर
प दीपौ	दयाकल्लोल	वा० दर्शनसुन्दर
प मनरूप	समयकल्लोल	प० समयसार
प किसनौ	कनककल्लोल	वा० जिनहस
पं जीवण	जयकल्लोल	वा० महिमसुन्दर
प लखमौ	लक्ष्मीकल्लोल	वा० जयविमल
प हरराज	हेमकल्लोल	प० रत्नसिन्धुर
प भोजौ	भक्तिकल्लोल	प० उदयविनय
प गिरधर	गुणकल्लोल	प० पूर्णप्रभ
प गुलालौ	गीतकल्लोल	वा० राजसुन्दर
प वखतू[3]	विवेककल्लोल	वा० शान्तिराज रै
प कर्मचन्द	कीर्त्तिकल्लोल	वा० विजयशेखर

---

१. फा व २। २. चै सु २

३ स० १७७८ मा व १० श्री वीकानेर मध्ये

प मईयौ	मयाकल्लोल	श्रीजी रै
प मयाचन्द	मुनिकल्लोल	वा० रत्नशेखर
प हरजी	हर्षकल्लोल	प० लब्धिशील ग०
प हरौ	हितकल्लोल	वा० क्षेमराज ग०
प वीरौ	विनयकल्लोल	वा० महिमसुन्दर
प जयचन्द	यश कल्लोल	वा० क्षेमराज ग०
प खीमौ[1]	क्षमाकल्लोल	प० रूपभद्रस्य
प देवचन्द	दानकल्लोल	प० रत्नरगस्य
प रूपौ[2]	रत्नकल्लोल	प० अमीचन्द रौ
प जयराज[3]	जगत्कल्लोल	वा० राजसुन्दर रै
प सुक्खौ[4]	सदाकल्लोल	कमलरग रो

॥ स० १७७८ मा० सु० ६ दिने श्री बीकानेर मध्ये श्री जिनसुखसूरिभि (९) विशाल नन्दी कृता ॥

प छजू	अभयविशाल	वा० मतिसेन ग०
प ऊदौ	उदयविशाल	श्रीजी रै अमरदत्त ग०
प देवचन्द	दयाविशाल	प० जिनजय
प मयाचन्द	महिमाविशाल	प० अमरमूर्त्ति ग०
प गुलौ	ज्ञानविशाल	प० सामा रौ
प चतुरौ	चारित्रविशाल	प० क्षमासुन्दर
प देवचन्द	दानविशाल	वा० श्रीवर्द्धन पौत्र
प जीवण[5]	जगद्विशाल	वा० मतिसेन ग०
प हीरौ	हेमविशाल	वा० मतिसेन ग०
प हरनाथ	हर्षविशाल	वा० पुण्यदत्त ग०
प लालौ	लब्धिविशाल	प० रगप्रिय ग०
प भवानी	भुवनविशाल	वा० आणदधीर
प वस्तौ	विद्याविशाल	वा० हितसुन्दर

---

१ फा सु ३ दिने   २ स० १७७७ वै बीकानेर मध्ये

३ जे सु ११ बीकानेर।   ४. स० १७७८ मा. सु ३ बीकानेर मध्ये

५ घडसीसर मध्ये ज्ये सु ३

प करमचन्द	कमलविशाल	वा० धर्मसुन्दर
प ईसर	अमरविशाल	वा० दर्शनसुन्दर
प प्रतापसी[1]	पूर्णविशाल	वा० यश शील

॥ सं० १७७६ वष श्री नवहर मध्ये मि० व० ३ भ० श्री जिनसुखसूरिभि: (१०) क्षेम नन्दी कृता ॥

प कर्मचन्द	कुशलक्षेम	वा० कीर्त्तिसौभाग्य पौत्र
प रामचन्द	रगक्षेम	वा० विद्याविमल ग०
प जयवन्त	जगत्क्षेम	वा० राजहस गणे:
प मोतीराम	मुनिक्षेम	उ० दयातिलक ग० पौत्र
प मेघौ	मतिक्षेम	वा० विद्याविमल
प भीमराज[2]	भक्तिक्षेम	श्रीजिताम्

श्री जिनभक्तिसूरि

॥ स० १७७६ वर्षे भ० श्री जिनभक्तिसूरिभि प्रथम भक्ति नन्दी (१) कृता श्री रिणी मध्ये ॥

प शीतल	शुभभक्ति	उ० भक्तिविनय
प गुलाल	गुरुभक्ति	उ० भक्तिविनय
प दीपौ	दानभक्ति	प० विजयमूर्त्ति ग०
प सुन्दर	सदाभक्ति	वा० यश शील
प. फतैचन्द[3]	पुण्यभक्ति	श्रीजिताम्
पं देवचन्द	देवभक्ति	वा० कुशलसुन्दर
प सामौ[4]	शान्तिभक्ति	वा० रत्नकुशल
प ऋषभौ	ऋषभभक्ति	प० कुशलमूर्ति
प जैतसी	जयभक्ति	प० पुण्यमूर्ति ग०
प हरदेव[5]	हरिभक्ति	वा० महिमासुन्दर

१　स० १७७९ आसा सु नवहर मध्ये ।　२ भट्टारक पदम्

३　स० १७८० मा सु १३　४ स० १७८० फा. ब १३

५　स० १७८१ वै व ३ वीकानेर

पं सुन्दर	सत्यभक्ति	प० सत्यशीलस्य
पं हरजी	हर्षभक्ति	दयाधीर ग०
प देवचन्द	दयाभक्ति	वा० महिमसुन्दर
पं दलो[1]	दर्शनभक्ति	प० हेमकमल
प उदयचन्द[2]	उदयभक्ति	प० शिवराजस्य
प कुशलो	कुशलभक्ति	प० सुमतिहेम
प हरचन्द	हेमभक्ति	वा० धर्मसागर रौ
प गोडो	ज्ञानभक्ति	वा० दयादत्तस्य
पं पेमो	पद्मभक्ति	प० तिलकहेम
प यादव	युक्तिभक्ति	प० तिलकहेम
प. सुखो	सुखभक्ति	वा० सदानन्दस्य
प अखो	अमरभक्ति	उ० तत्त्वसुन्दर
प वस्तो	विनयभक्ति	उ० तत्त्वसुन्दर
प वालो	वल्लभभक्ति	प० इलासिन्धुर
प नैणसी	नित्यभक्ति	प० पुण्यसार
प शिवराज	शान्तिभक्ति	वा० रामविमल
प हरखो	हितभक्ति	उ० दयातिलक
प जीवराम	जीवभक्ति	उ० दयातिलक
प कानो	कनकभक्ति	प० राजभद्रस्य
प थानो	थिवरभक्ति	उ० शिवनन्दन

॥ स० १७८२ मि० सु० ५ दिने श्री बीकानेरे भ० श्री जिनभक्ति-
सूरिभि. (२) 'हर्ष' नन्दी कृता ॥

प रायचन्द	रगहर्ष	उ० भक्तिविनय ग०
प रूपो	रत्नहर्ष	वा० राजहसस्य
प नित्यानन्द	ज्ञानहर्ष	उ० भक्तिविनय
प. चोखो	चतुरहर्ष	वा० देवधीर गणेः
प रतनो	कीर्त्तिहर्ष	वा० कल्याणहस

१. स० १७८१ बै सु. ६ बीकानेर। २ स० १७८१ जे. ब. १० बीकानेर

प कुशलौ	कुशलहर्ष	वा० ज्ञानसौभाग्य
प गोकल	चारित्रहर्ष	प० चतुरा रौ
प गोवर्द्धन	गुणहर्ष	वा० ज्ञानसौभाग्य
प भवानी	भावनहर्ष	वा० जिनहंस
प लद्धौ[1]	लावण्यहर्ष	वा० रंगविमल
प फत्तौ	प्रीतिहर्ष	प० अमृतविजयस्य
प भीमौ	भाग्यहर्ष	वा० राजहंस
प तिलोकौ	तिलकहर्ष	वा० जीवमूर्त्ति
प खुस्यालौ	क्षमाहर्ष	वा० राजसुन्दर
प वर्द्धमान	समयहर्ष	वा० ज्ञानसौभाग्य
प सिंघौ	श्रीहर्ष	प० मुनिमूर्त्ति गणे
प दुरगौ	दयाहर्ष	वा० ज्ञानसौभाग्य
प महिरचन्द	मूर्त्तिहर्ष	वा० जिनहंस ग०
प जयराम	जयहर्ष	वा० जिनहंस ग०

।। सं० १७८३ मिग० सु० १२ भ० श्री जिनभक्तिसूरिभि (३) 'वर्द्धन' नन्दी कृता उदंरामसर मध्ये ।।

प खुस्यालौ	क्षेमवर्द्धन	प० यश सोम रै
प लखमौ	ललितवर्द्धन	प० तिलकप्रिय
प नेमौ	नित्यवर्द्धन	प० ज्ञानप्रभ ग०
प टेको	तिलकवर्द्धन	प० तिलकप्रिय
प कर्मचन्द	कीर्त्तिवर्द्धन	श्रीजिताम्
प नन्दौ[2]	नेमिवर्द्धन	वा० भावरंग रै
प दीपौ[3]	दत्तवर्द्धन	प० जयदत्तस्य
प ऋषभौ[4]	ऋद्धिवर्द्धन	वा० माणिक्यदत्त
प जैतो	जयवर्द्धन	प० सत्यशीलस्य
प देवचन्द[5]	देववर्द्धन	उ० राजसागर

---

१ सं० १७८३ मि व १० सोमे । २ बावडी मध्ये ३ दिने

३ सं० १७८३ वै व ७ कैरू मध्ये ।

४ सं० १७८३ आषा सु ५ फलोदी मध्ये

५ सं० १७८४ मा सु ५ फलवृद्धि ग्रामे

प गौडीदास	गुणवर्द्धन	वा० अभयमाणिक्य
प गुलाल	ज्ञानवर्द्धन	प० अमरविजय रौ
प दोपौ[1]	देववर्द्धन	प० देवहस रौ
प शिवौ	शिववर्द्धन	प० जीवसुख रौ
प दीपौ[2]	देववर्द्धन	वा० क्षमाधीरस्य
प नगौ	नीतिवर्द्धन	वा० धर्मधीरस्य
प वीरचन्द	विद्यावर्द्धन	प० सुमतिसुख

॥ स० १७८४ वर्षे चं० व० ११ भ० श्री जिनभक्तिसूरिभि· (४) 'नन्दन' नन्दी कृता श्री जेसलमेरु दुर्गे ॥

प फतौ	पद्मनन्दन	वा० विजयशेखर
प हीरौ	हितनन्दन	प० नयनभद्रस्य
प शिवराज	श्रीनन्दन	प० लक्ष्मीनिधान
प सत्तौ[3]	सत्यनन्दन	वा० देवधीरस्य
प खेतौ[4]	क्षमानन्दन	प० मुनिरग गणे
प प्रेमौ	प्रभनन्दन	प० उदयधीर
प नयणौ	ज्ञाननन्दन	प० मुनिरग गणे
प मनोहर	माणिक्यनन्दन	वा० दयाधीर गणे·
प मनरूप[5]	मतिनन्दन	प० गगविनय रै
प मयाचन्द	महिमानन्दन	प० गगाविनय
प अगरौ	अमरनन्दन	वा० कुशलविनय

॥ स० १७८६ माह वदि १३ भ० श्री जिनभक्तिसूरिभि (५) 'समुद्र' नन्दी कृता श्री जैसलमेरौ ॥

प रूपौ	रगसमुद्र	प० लाभोदयस्य
प जसवन्त	जयसमुद्र	उ० शान्तिविजय ग०
प. नैणौ	ज्ञानसमुद्र	प० जिनजय मुने

---

१. पो. व १ फलोधी मध्ये २ स० १७८४ भा सु २ फलवधी मध्ये

३. स० १७८५ पो सु. ११ ४ मा सु १

५ स० १७८५ जे सु १ जेसलमेरी

प भगवान	भाग्यससुद्र	उ० धर्मवर्द्धनस्य
प. जीवौ	युक्तिसमुद्र	उ० यश:शील रै
प रिणछोड	ऋद्धिसमुद्र	वा० इलासिन्धुर

॥ स० १७८८ माघ ब० १३ श्री सिणधर्यां म० श्री जिनभक्तिसूरिभि (६) 'सागर' नन्दी कृता ॥

प जीवौ	युक्तिसागर	प० विवेकप्रमोद
प अमीचन्द	आणदसागर	प० विवेकप्रमोद
प नरसिंह	नयसागर	वा० शान्तिकुशल
प केसरौ	कनकसागर	प० धर्मकल्याण
प जोइतौ	जीवसागर	उ० त्रिलोकसुन्दर
प शिवचन्द	शीलसागर	प० कुशलहेम रै
पं वल्लभ	विनयसागर	उ० यश शील
प. वीरचन्द	विवेकसागर	उ० नेममूर्त्ति ग०
प कल्याण	कुशलसागर	उ० यश शील रै
प लखमण	लक्ष्मीसागर	वा० नेममूर्त्ति
पं सुखौ	सत्यसागर	प० नयनभद्र
प गोइद	गुणसागर	वा० गुणसुन्दर
प माईदास	मतिसागर	वा० गुणसुन्दर
प वखतौ	विनीतसागर	प० ज्ञानप्रमोद
प सरूपौ	सुखसागर	सदासुख
प कर्मचन्द[1]	कमलसागर	उ० गुणसुन्दर
प माणकौ	माणिक्यसागर	श्रीजिताम्
प प्रेमचन्द	प्रीतिसागर	श्रीजिताम्
प. रूपौ[2]	रत्नसागर	वा० क्षमाप्रमोद गणे
प नरपाल[3]	नयनसागर	वा० राजसुन्दर गणे

---

१. स० १७८९ चै. व. ३ साचोर २. स० १७८९ चै. ब. ४ साचोर मध्ये

३. मंगलवास मध्ये वै. सुदि १

॥ स० १७९० मिगसर सुदि ३ बुधे श्री सोझित मध्ये (७) 'तिलक' नन्दी कृता ॥

प रतनौ	राजतिलक	प० क्षेमसुन्दर रौ
प ऋषभौ	ऋद्धितिलक	वा० धर्मधीर गण.
प जोगौ[1]	युक्तितिलक	प० ज्ञानसोम रौ
पं जैराम	जयतिलक	वा० ज्ञानविनय
प. कपूरौ	कीर्त्तितिलक	प० प्रीतिसोम
प लालचन्द	लब्धितिलक	प० ज्ञानसोम मुनेः
प खुस्यालो	क्षेमतिलक	प० हससोम
प हीरो	हेमतिलक	वा० ज्ञानविनय गणेः
प कल्याण	कान्तितिलक	प० प्रीतिसोम
प कम्मो	कनकतिलक	उ० भक्तिविनय
प लखमौ	लक्ष्मीतिलक	उ० भक्तिविनय
प दीपौ[2]	दानतिलक	प० अभयसोम मुनेः
प मगल[3]	महिमातिलक	प० विनयप्रभ
प रूपौ[4]	रत्नतिलक	उ० जिनप्रभ गणेः
प फत्तौ	पद्मतिलक	उ० जिनप्रभ गणे.
प सोमचन्द्र[5]	सौम्यतिलक	प० सुगुणसिन्धुर
प भवानी	भाग्यतिलक	प० चन्द्रविजय
प कर्मचन्द	कुशलतिलक	उ० अमृतवल्लभ

॥ सं० १७९१ वैशाख वदि १० रवौ पाली मध्ये भ० श्री जिनभक्ति-सूरिभि (८) 'विमल' नन्दी कृता ॥

प रतनौ	रत्नविमल	प० धर्मकल्याण रो
प जयचन्द	युक्तिविमल	वा० ज्ञानप्रभ रौ
प देवौ	देवविमल	वा० ज्ञानप्रभ गणे

---

१ स० १७९० फा सु. १ सोझित मध्ये

२. १७९० आसा. ब १२ देहरिया ग्रामे   ३ स० १७९१ मि सु ४

४ स० १७९१ फा. सु. ७   ५. वै. ब. ४ पाली मध्ये

प अजबौ	अमरविमल	प० माणिक्यमूर्त्ति
प लखमौ	लक्ष्मीविमल	प० हर्षमेरु रो
प कुशलौ[1]	कुशलविमल	वा० समयधीर
प रतनौ	लब्धिविमल	वा० सत्यकीर्त्ति ग०
प खुस्याल	क्षमाविमल	प० नित्यरगस्य
प. खुस्यालौ	खुश्यालविमल	वा० महिमाकल्याण

।। स० १७९३ पो० सु० १५ बुधे जालोर दुर्गे भ। श्री जिनभक्ति-सूरिभि (९) 'सौभाग्य' नन्दी कृता ।।

प कुशलौ	कुशलसौभाग्य	वा० अमरमूर्त्ति
प कानौ	कनकसौभाग्य	प० हेमविजय
प हीरौ	हितसौभाग्य	प० जयसुख
प जयकरण[2]	जगत्सौभाग्य	प० अभयराज
प यशौ	युक्तिसौभाग्य	प० अभयराज
प हेमौ[3]	हर्षसौभाग्य	प० चारित्रहस
प लालौ	लक्ष्मीसौभाग्य	उ० क्षमाप्रमोद
प जिणदास	जयसौभाग्य	प० नयसागर
प आत्माराम	अभयसौभाग्य	प० अभयसुन्दर
प० देवौ	देवसौभाग्य	प० नित्यरग

।। स० १७९४ वर्षे माह बदि १० बुधे बीकानेर मध्ये (१०) 'माणिक्य' नन्दी कृता ।।

प जीवौ	जयमाणिक्य	प० जिनजय
प गोडन्द[4]	ज्ञानमाणिक्य	वा० दर्शनसुन्दर
प खुस्यालौ	क्षमामाणिक्य	प० जिनजय
प देवचन्द	देवमाणिक्य	वा० क्षमासुन्दर
प कर्मचन्द	कीर्त्तिमाणिक्य	वा० दर्शनसुन्दर

---

१ स० १७९२ प्र जे व १०   २ भा सु. २

३ जे सु ५ आगोलाई मध्ये   ४ फा व १ बीकानेर

प योधौ	युक्तिमाणिक्य	वा० दर्शनसुन्दर
प जीवण[1]	जीवमाणिक्य	वा० उदयमूर्त्ति
प देवचन्द[2]	दयामाणिक्य	प० भावकीर्त्ति
प केसरौ[3]	कमलमाणिक्य	श्रीजिताम्
प पेमौ	पद्ममाणिक्य	उ० रामविजय
प खेमो	क्षेममाणिक्य	उ० नेममूर्ति ग० क्षेमशाखा

स० १७९५ माह सुदि १३ श्री बीकानेर मध्ये (११) 'लाभ' नन्दी कृता ।।

प सूजौ	सुमतिलाभ	वा० ज्ञानप्रमोद ग०
प सुखौ	समयलाभ	वा० दीपधीर ग०
प कृपाराम	कनकलाभ	वा० दीपधीर ग०
प दीपचन्द	दर्शनलाभ	वा० पुण्योदय
प दयाराम	दयालाभ	वा० पुण्योदय
प मयाचन्द	मतिलाभ	प० ऋद्धिवल्लभ
प लालचन्दजी	लक्ष्मीलाभ	श्रीजिताम् [भट्टारक पदम्]
प. ग्यानचन्द	ज्ञानलाभ	श्रीजिताम्

स० १७९६ माह सुदि १३ श्री जेसलमेरौ (१२) 'विलास' नन्दी कृता ।।

प हीरौ	ज्ञानविलास	प० ज्ञानविजय
प स्वरूपौ	सुखविलास	वा० आणदधीर
प गगाराम	गुणविलास	वा० आणदधीर
प क्षेमौ	क्षमाविलास	उ० कर्पूरप्रिय
प फत्तौ	पद्मविलास	प० शिवराज मुनि
प गलौ	गगविलास	प० शिवराज मुनि
प भारमल्ल	भाग्यविलास	उ० कर्पूरप्रिय
प बालचन्द	विनयविलास	प० पद्मसोम

---

१ स० १७९५ जे व ५ बीकानेर। २ आषाढ वदि २ बीकानेर

३ आषाढ सुदि ६ बीकानेर

प जीवण	जगद्विलास	वा० यश सोम
प महिमचन्द	मतिविलास	श्रीजिताम्
प खेतौ	क्षेमविलास	श्रीजिताम्
प फतौ	प्रीतिविलास	उ० कर्पूरप्रिय

॥ स० १७९७ फा० सु० ३ शनौ श्री जेसलमेरौ भ। श्री जिनभक्तिसूरिभि., (१३) 'सेन' नन्दी कृता ॥

प परमाणन्द	पद्मसेन	वा० रत्नोदय ग०
प श्रीचन्द	सत्यसेन	वा० रत्नोदय ग०
प पूरण	पुण्यसेन	उ० कर्पूरप्रिय
प जीवण	युक्तिसेन	प० महिमामूर्त्ति
प हरचन्द	हर्षसेन	वा० आणदधीर
प गोरधन	ज्ञानसेन	वा० देवधीर
प श्रीचन्द	समयसेन	प० भाववल्लभ
प दुलीचन्द	दयासेन	वा० ज्ञानप्रभ गणि
प दयालौ	दानसेन	उ० नेममूर्ति
प केशरौ	कनकसेन	वा० आणदधीर ग०
प अनोपौ	आणदसेन	वा० विद्यारत्न
प ज्ञानौ	गजसेन	श्री कर्पूरप्रिय ग०
प रामौ	राजसेन	वा० देवधीर गणे
प वखतौ[1]	विद्यासेन	वा० पुण्यसार ग०

॥ सं० १८०० फा० सु० ७ गुरौ पानला ग्रामे भ० श्री जिनभक्तिसूरिभि (१४) 'कलश' नन्दी कृता ॥

प हरखौ	हर्षकलश	प० नेमरग गणेः
प रामौ[2]	राजकलश	उ० त्रैलोक्यसुन्दर
प किशनौ	कमलकलश	वा० केशरौ
प राजौ[3]	रत्नकलश	प० शिवसोम

---

१ स १८०० मा व १२ सिणधर्याम् । २ चैत बदी ८ श्रीनगर मध्ये

३. श्री जूनागढ मध्ये ।

प किशोरौ	कनककलश	प० नयविजय
प मुकनौ	माणिक्यकलश	उ० जिनप्रभ
प अखौ[1]	अमृतकलश	उ० कर्पूरप्रिय ग०

।। स० १८०२ वर्षे वैशाख वदि ४ बुधवासरे भट्टारक श्री जिनभक्तिसूरिभि· (१५) 'आनन्द' नन्दी कृता श्री मज्जीर्ण दुर्गे ।।

प सिद्धराज	सहजानन्द	प० सुखनिधान
प हीरौ	हर्षानन्द	वा० तिलकहेम
प खुश्याल	क्षमानन्द	प० सुखनिधान
प	दयानन्द	वा० देवधीर गणे
प नरसिंह	ज्ञानानन्द	प० सुखनिधान
प माणिकौ	महिमानन्द	प० सुखनिधान
प हरषौ	सुखानन्द	प० सुखनिधान

श्री जिनलाभसूरि

श्री जिनेश्वरो जयतु ।। स० १८०४ वर्षे फाल्गुन सुदि १ दिने श्री भुज्ज नगर मध्ये भट्टारक प्रभ श्री १०५ श्री जिनलाभसूरिभि (१) 'धर्म्म' नन्दी कृता ।।

प गौडीदास	गुणधर्म्म	प० गजवल्लभस्य
प हेमौ	हेमधर्म्म	वा० नेमिरग गणे
प ज्ञानौ	ज्ञानधर्म्म	वा० नेमिरग गणे
प हीरौ	हितधर्म्म	प० शिवसोम मुने
प गुलालौ	गजधर्म्म	वा० नित्यभद्र गणेः पौत्र
प हरखौ[2]	हर्षधर्म्म	उ० श्री क्षमाप्रमोद ग०
प ईशर	इलाधर्म्म	प० कीर्त्तिवर्द्धन मुने
प मेघौ	मानधर्म्म	वा० पुण्यभक्ति गणे
प. हरषचन्द	हीरधर्म्म	श्रीजिताम्
प तेजसी[3]	तत्त्वधर्म्म	वा० माणिक्यसागर ग०

---

१ श्री धाडूआ मध्ये । २ श्री जिनभद्रसूरि शाखा । ३ श्री जिनभक्तिसूरि शा०

॥ स० १८०७ मार्गशीर्ष सुदि ७ श्री जेसलमेरु मध्ये ॥

पं रतनौ	रत्नशील	प० सुखनिधान गणे.
प ऊदौ	उदयशील	प० सुखनिधान गणे.
प भागू	भक्तिशील	प० शिवराज मुने
प दौलौ	दर्शनशील	प० क्षमानन्द मुने.
प कल्याणौ	कनकशील	प० क्षमाकुशल मुने.
प मानौ	महिमाशील	वा० धर्मकल्याण गणे
प जैकू	युक्तिशील	वा० माणिक्यमूर्त्ति ग०

॥ सवत् १८०८ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ श्री जेसलमेरु मध्ये भट्टारक प्रभु श्री जिनलाभसूरिभि (३) 'दत्त' नन्दी कृता ॥

प खेतौ	क्षमादत्त	प० महिमासुख मुने.
पं फत्तौ	पूर्णदत्त	प० त्रिभुवनसुख गणे
प रतनौ[1]	रत्नदत्त	श्री कर्पूरप्रिय गणे
प जेठौ[2]	जयदत्त	श्री कर्पूरप्रिय गणे
प देवौ[3]	देवदत्त	श्री कर्पूरप्रिय गण
प नरसिंह	नेमिदत्त	श्री नेमिरग गणे
प मलूकौ	महिमादत्त	वा० महिमाविजय ग०
प भगवानौ	भक्तिदत्त	पं० ज्ञानविजय मुने
प महियौ	माणिक्यदत्त	प० भाग्यहर्ष मुने.
प लखौ	लक्ष्मीदत्त	प० ऋद्धितिलक मुने
प वन्नौ	विनयदत्त	वा० महिमसुन्दर गणे
प हीरौ	हेमदत्त	वा० महिमसुन्दर गणे
प सद्दौ	सत्यदत्त	वा० महिमसुन्दर गणे
प देव्रो	दयादत्त	वा० इलासिन्धुर गणे
प रूपौ	रगदत्त	वा० महिमसुन्दर ग०
प जगनाथ	जीवदत्त	वा० इलासिन्धुर ग०
प. वखतौ	विद्यादत्त	वा० महिमसुन्दर ग०

१ क्षेमशाखायाम् २ क्षेमशाखायाम् ३ क्षेमशाखायाम्

॥ सवत् १८०९ वर्षे पोष सुदि १३ श्री जेसलमेरु मध्ये भट्टारक प्रभु श्री जिनलाभसूरिभि (४) 'विनय' नन्दी कृता ॥

प. धन्नौ	धर्म्मविनय	प० माणिक्यहेम मुने
प रूपौ	रगविनय	प० माणिक्यहेम मुने.
प गोकल	ज्ञानविनय	प० मयावल्लभ मुने, जिनभद्रसूरिशाखा

॥ मिती माघ सुदि १० दिने । देवीकोट मध्ये ॥

प जगमाल	जगद्विनय	वा० नित्यरग ग०
प हरनाथ	हेमविनय	वा० नित्यरग ग०
प. पीथौ	पुण्यविनय	वा० नित्यरग ग०
प. सोभौ	सौभाग्यविनय	प० कमलकलश मुने·
प रिणछोड	रत्नविनय	श्री नेममूर्त्ति ग०, क्षेमशाखाया

॥ सवत् १८१० वर्षे मिती वैशाख बदि १३ जूना बहिलवा मध्ये ॥

प पदमौ	प्रीतिविनय	प० क्षमावर्द्धन मुने
प श्रीचन्द	सत्यविनय	प० दानकुशल मुने
प रूपौ	ऋद्धिविनय	वा० मुनिरग ग०
प चन्दौ	चारित्रविनय	वा० मुनिरग ग०
प. रामौ	राजविनय	प० लोकवल्लभ ग०
प. हीरौ	हसविनय	प० जयवल्लभ मुने:
प उत्तमौ	उत्तमविनय	वा० मुनिरग ग०
प केसरौ	कनकविनय	प० इलावल्लभ मुने
प फतौ	प्रमोदविनय	प० भुवनविशाल ग०
प देवौ	दर्शनविनय	प० इलावल्लभ मुने
प गिरधर	गजविनय	प० क्षमामेरु मुने
प पोमौ	नेमविनय	प० जगद्वल्लभ मुने
प विज्जौ	विद्याविनय	वा० मुनिरग ग०

॥ स० १८१० वर्षे वैशाख सुदि २ नवा बहिलवा मध्ये भट्टारक प्रभु श्री जिनलाभसूरिभि (५) 'रुचि' नन्दी कृता ॥

प रिणछोड	रत्नरुचि	प० मानरत्न मुने
प रूघौ	राजरुचि	प० आर्यवल्लभ मुने

प	हरीदास	हर्षरुचि	प० आर्यवल्लभ मुने
प	नेतौ	नित्यरुचि	प० आर्यवल्लभ मुने
प	ईश्वर	इलारुचि	प० पद्मतिलक मुने
प	खुश्याल	क्षमारुचि	प० गजवल्लभ मुने
प	प्रेमौ	प्रेमरुचि	वा० महिमसुन्दर ग०, पौ० जिनचन्द्रसूरिशा०
प	जगतौ	जगरुचि	वा० महिमसुन्दर ग०, पौ० दयाभक्ति शि०
प.	रुघौ	रगरुचि	प० भाववल्लभ मुने
प	हीरौ	हेमरुचि	प० भाववल्लभ मुने
प	हीरौ	हस्तरुचि	प० सुमतिवल्लभ मुने
प	रामौ	रामरुचि	प० सुमतिवल्लभ मुने
प	मेघौ	महिमारुचि	वा० सदासुख गणे

॥ स० १८१० आषा। व० १० भ० श्री जिनलाभसूरिभि (६) 'राज' नन्दी कृता बीकानेरे॥

प	रूपौ	रूपराज	प० नयरग गणे
प	जैतौ	युक्तिराज	प० नयरग ग०
प	रायचन्द	रत्नराज	श्रीजिताम्
प	देवौ	दयाराज	वा० ज्ञानप्रमोद ग०
प	महानन्द	महिमाराज	प० ऋद्धिरत्न मुने
प	देवौ	देवराज	प० विद्याविशाल मुने
प	माणकौ	माणिक्यराज	वा० रूपवल्लभ मुने
प	जग्गू	जगद्राज	वा० सदासुख गणे
प	नारायण	नेमिराज	प० नयविजय गणे
प	सुन्दर	सत्यराज	प० जिनजय गणे
प	ऊदौ	उदयराज	प० मित्रवल्लभ मुने
प	पुनसी	पुण्यराज	श्रीजिताम्
प	लखमौ	लक्ष्मीराज	प० मतिविलास मुने
प	देवचन्द	दर्शनराज	प० क्षमासुन्दर मुने
प	जैतौ	जयराज	प० हेमविशाल रौ
प	हीरौ	हेमराज	प० मयाकल्लोल रौ
प	भवानी	भीमराज	प० मयाकल्लोल मुने

प रायचन्द शिवराज प० राजसोम गणे
प खेतौ क्षेमराज प० राजसोम गणे, क्षेम शाखा

॥ सं० १८१० फाल्गुन बदि ३ श्री बीकानेर मध्ये (७) 'शेखर' नन्दी कृता ॥

प दौलौ दयाशेखर प० कमलसागर मुने
प चतुरौ चारित्रशेखर उ० श्री धर्मकल्याण गणे
प रूपौ राजशेखर उ० श्री धर्मकल्याण गणे
प हरचन्द हर्षशेखर उ० श्री नेमिरग गणे

॥ स० १८११ वर्षे आषाढादि के श्री बीकानेर मध्ये ॥

प आणदौ अमरशेखर उ० अमृतवल्लभ गणे
प दीपौ दर्शनशेखर उ० श्री ज्ञानप्रभ गणे
पं चैनसुख लाभशेखर उ० श्री लाभोदय गणे
प सर्वसुख सुगुणशेखर उ० श्री लाभोदय गणे
प जसू[1] जयशेखर प० कनकराज मुने
प मानौ मानशेखर वा० पुण्यसागर गणे
प हेमौ हितशेखर प० कीर्त्तिवल्लभ मुने
प कल्याण कनकशेखर वा० रामवल्लभ गण
प प्रेमौ प्रेमशेखर प० सदाभक्ति मुने
प हेमौ हस्तिशेखर प० विनयसागर मुने
प नेमौ नयशेखर प० कीर्त्तिवर्द्धन मुने
प सामा सत्यशेखर प० रत्नसागर मुने
प रतनौ रत्नशेखर प० जयप्रभ मुने.
प सगतौ सुमतिशेखर प० ज्ञानविजय मुने
प जीवण युक्तिशेखर

॥ स० १८१२ फा० सु० २ श्री जिनलाभसूरिभिः (८) 'कमल' नन्दी कृता श्री बीकानेरे ॥

प गोविन्द ज्ञानकमल वा० सुगुणसिन्धुर गणे

---

1 ज्येष्ठ वदि १०

प रूपचन्द रत्नकमल वा० नीतिभद्र गणे
प दुलीचन्द दानकमल प० विनयभक्ति गणे
प मोहन मानकमल प० जयमेरु गणे
प सुन्दर सत्यकमल वा० ज्ञानप्रमोद गणे
प लालो ललितकमल प० रत्नविजय मुने
प लद्धो लब्धिकमल प० दानधर्म्म मुने
प अभो अभयकमल वा० ज्ञानवल्लभ गणे जिनभद्रसूरि शाखा
प पन्नो पुण्यकमल उ० श्रीक्षमाप्रमोद गणे जिनभद्रसूरि शा०
प देवचन्द्र दयाकमल वा० ऋद्धिवल्लभ गणे
प लच्छो लक्ष्मीकमल वा० अमरनन्दन गणे
प अनोपो अमृतकमल उ० श्री नेमिरग गणे
प खूबो क्षमाकमल वा० दानविशाल गणे
प लालो लावण्यकमल उ० श्री रत्नकुशल गणे
प ऊदो उदयकमल उ० श्री रत्नकुशल गणे.
प नैणो नित्यकमल उ० श्रो रत्नकुशल गणे
प गुलाबो गुणकमल उ० श्री रत्नकुशल गणे
प रायचन्द रत्नकमल उ० श्री नेमिरग गणे

।। स० १८१३ माघ वदि ८ गुरुवारे श्री बीकानेर मध्ये (९) 'सुन्दर' नन्दी कृता ।।

प सवाई सत्यसुन्दर प० हर्षमेरु मुने
प डूगर दयासुन्दर प० हर्षमेरु मुने
प कुशलो कीर्त्तिसुन्दर प० देवधीर गणे
प अमरु अमृतसुन्दर उ० श्रीमाणिक्यमूर्त्ति ग, पौ कीर्त्तिरत्न शा
प अमी आनन्दसुन्दर उ० श्रीमाणिक्यमूर्त्ति ग०, कीर्त्तिरत्न शा०
प ताराचन्द तिलकसुन्दर उ० श्री रत्नकुशल गणे
प केशरो कमलसुन्दर उ० श्री रत्नकुशल गणे
प गुलालो गजसुन्दर प० शीलसागर
प भाणो भानुसुन्दर वा० सौभाग्यवल्लभ गणे
प धन्नो धनसुन्दर वा० सौभाग्यवल्लभ गणे

प	सालगौ	सौभाग्यसुन्दर	उ० श्री रत्नकुशल गणे
प	राजौ	रत्नसुन्दर	उ० श्री रत्नकुशल गणे
प	माहौ	मतिसुन्दर	प० लाभकुशल
प	मोहण	माणिक्यसुन्दर	वा० सत्यकीर्त्ति गणे
प	देवौ	दीपसुन्दर	प० माणिक्यवल्लभ गणे
प	मानौ	मयासुन्दर	प० दीपविजय गणे
प	प्रेमौ	प्रीतिसुन्दर	वा० भुवनविशाल गणे
प	जगमाल	जयसुन्दर	प० शिववर्द्धन मुने
प	सदौ (सदानन्द)	समयसुन्दर	उ० रामविजय गणे, क्षेमशा०
प	राजसी	रगसुन्दर	वा० विनयभक्ति गणे
प	वृद्धौ	विद्यासुन्दर	वा० नीतिभद्र गणे
प	धरमौ	धर्म्मसुन्दर	प० प्रीतिविलास गणे, क्षेम शा० (उ० श्री राजसोम गणे)
प	हरषौ	हर्षसुन्दर	प० भाग्यविलास गणे, क्षेम शाखा
प	निहालौ	न्यायसुन्दर	उ० श्री क्षमाप्रमोद गणे, जिनभद्र शा०
प	चोखौ	चारित्रसुन्दर	प० सत्यसागर मुने
प	खुस्यालौ	क्षमासुन्दर	प० सत्यसागर मुने
प	विरधौ	विनीतसुन्दर	प० कीर्त्तिवर्द्धन मुने, जिनसुखसूरि शा०
प	हीरौ	हितसुन्दर	प० दानकल्लोल मुने, (सत्यसागर मुने)
प	वखतौ	विनयसुन्दर	उ० श्री सदासुख गणे
प	श्रीचन्द	सौभाग्यसुन्दर	प० मयावल्लभ मुने पौत्र, जिनभद्र शा०
प	आसौ	अमृतसुन्दर	प० मयावल्लभ मुने पौत्र, जिनभद्र शा०

॥ स० १८१५ मिगसर बदि ५ श्री नाथूसर मध्ये भ। श्री जिनलाभसूरिभि (१०) 'कल्याण' नन्दी कृता॥

प	गगाराम	ज्ञानकल्याण	प० सत्यसागर मुने
प	सामन्त	शिवकल्याण	वा० अमरविजय गणे., जिनचन्द्र शा०
प	कपूरौ	कीर्त्तिकल्याण	वा० अमरविजय गणे
प	कुशलौ	कुशलकल्याण	वा० अमरविजय गणे
प	डाहौ	दयाकल्याण	ऋद्धिवल्लभ गणे

प	मोती	महिमाकल्याण	वा० विद्याविशाल गणे, क्षेमशा०
प	तेजौ	तत्त्वकल्याण	वा० विद्याविशाल गणे, क्षेमशा०

॥ स० १८१५ चैत्र वदि १ दिने कातर मध्ये ॥

प	जयचन्द	जयकल्याण	वा० भुवनविशाल गणे
प	लालौ	लक्ष्मीकल्याण	प० रूपशील मुने
प	धरमौ	धीरकल्याण	वा० भुवनविशाल गणे
प	ज्ञानौ	गुणकल्याण	वा० भुवनविशाल गणे
प	भागू	भाग्यकल्याण	प० सत्यसागरस्य
प	भगवानौ[1]	भक्तिकल्याण	उ० नेममूर्त्ति गणे, क्षेम शा०

॥ आषाढ वदि २ श्री जेसलमेरु दुर्गे ॥

प	देवौ	देवकल्याण	वा० शान्तिविजय गणे
प	मोटौ	मुनिकल्याण	वा० शान्तिविजय गणे
प	तुलछौ	तिलककल्याण	वा० शान्तिविजय गणे
प	मानौ	मतिकल्याण	वा० शान्तिविजय गणे
प	जग्गू	जगत्कल्याण	प० मुनिकल्लोल मुने
प	खुस्यालौ	क्षेमकल्याण	प० सत्यभक्ति मुने
प	रुघौ	रत्नकल्याण	उ० श्री क्षमाप्रमोद गणे पौत्र, जिनभद्र शा०
प	वीरौ	विवेककल्याण	श्रीजिताम्
प	खुश्यालचन्द	क्षमाकल्याण	प० अमृतधर्म मुने, जिनभक्ति शा०
प	कर्मचन्द	कीर्त्तिकल्याण	उ० श्री विनयसागर गणे
प	अभौ	आनन्दकल्याण	उ० श्री विनयसागर गणे
प	धरमौ	धर्म्मकल्याण	प० भाग्यतिलक मुने
प	मूजौ	सत्यकल्याण	महो० सत्यकीर्त्ति गणे
प	मयाचन्द	मयाकल्याण	प० चारित्रवल्लभ मुने

॥ स० १८१६ वर्षे मिती फाल्गुन सुदि ३ दिने भट्टारक प्रभु श्री जिनलाभसूरिभि (११) 'कुमार' नन्दी कृता श्री जेसलमेरु मध्ये ॥

प	थानौ	देवकुमार	ऋ० वर्द्धमान मुने

---

१ वं व ३ फलोधी

प तेजौ तत्त्वकुमार वा० पद्मकुशल मुने
प देवौ दयाकुमार प० शीलसागर मुने
प नरसिंह ज्ञानकुमार उ० श्री विनयसागर गणे
प कुशलौ कीर्त्तिकुमार उ० श्री विनयसागर गणे
प गौडीदास गुणकुमार प० त्रिभुवनसुख गणे
प रायसिंह रत्नकुमार प० त्रिभुवनसुख गणे
प जसू जयकुमार प० देववल्लभ मुने
प तेजौ तिलककुमार प० देववल्लभ मुने
प आणदौ अभयकुमार प० चतुरहर्ष गणे, सागरचन्द्रशा०
प रूपौ राजकुमार प० चतुरहर्ष गणे, सागरचन्द्रशा०
प अनोपौ उदयकुमार प० रत्नकुशल मुने
प माणकौ माणिक्यकुमार प० मुनिमेरु मुने
प ऋषभौ ऋद्धिकुमार प० विनयतिलक मुने
प पृथ्वीचन्द्र पुण्यकुमार प० सुमतिसुख मुने
प सागरचन्द्र सुमतिकुमार प० सुमतिसुख मुने

।। स० १८१८ माह सुदि ४ दिने श्री जेसलमेरु दुर्गे द्वादशमी 'धीर' (१२) नन्दी कृता ।।

प रामकृष्ण रत्नधीर प० ललितकुमार मुने
प देवचन्द्र दयाधीर प० आणदसेन मुने
प सरूपौ सुखधीर प० आणदसेन मुने
प हीरौ हर्षधीर प० आणदसेन मुने
प डाहौ दानधीर वा० लोकवल्लभस्य
प जैतौ युक्तिधीर वा० हस्तरत्न गणे
प बालकचन्द विवेकधीर प० दानकुशल मुने
प खुस्यालो क्षमाधीर वा० कनकसागर गणे

।। स० १८१९ वै० ब० १३ बाहड़मेरु ।।

प रूपौ रूपधीर प० कुशलभक्ति मुने, जिनचन्द्रशाखा
प धरमौ धर्मधीर प० मुनिकल्लोल मुने
प जेठौ जयधीर प० हीराकस्य

प	सुरतौ	सुमतिधीर	प० ज्ञानविलास मुने., सागरचन्द्र शा०
प	देवचन्द	दत्तधीर	प० ज्ञानविलास मुने, सागरचन्द्र शा०
प	जोधौ	युक्तिधीर	प० ज्ञानविलास मुने, सागरचन्द्र शा०
प	सदानन्द	सुगुणधीर	प० ज्ञानविलास मुने, सागरचन्द्र शा०

॥ वीरावाव मध्ये मिती ज्येष्ठ वदि ३ दिने ॥

प	छत्तौ	सौभाग्यधीर	प० क्षमानन्द मुने
प	हरखौ	हितधीर	प० कुशलभक्ति मुने, जिनचन्द्र शा०
प	केसरौ	कीर्त्तिधीर	प० कमलसागर मुने:
प	पुनसी	पुण्यधीर	वा० पद्मकुशल गणे पौत्र
प	मुहकमौ	महिमाधीर	उ० श्री सदासुख गणे पौत्र
प	सिरदारौ	सदाधीर	उ० श्री सदासुख गणे पौत्र
प	भवानी	भाग्यधीर	प० दर्शनराज गणे
प	खेतौ	सत्यधीर	प० सत्यभक्ति मुने

॥ स० १८१९ वर्षे प्रथमाषाढ बहुल चतुर्थ्यां ४ सोमवासरे भट्टारक प्रभु श्री जिनलाभसूरिभि (१३) 'उदय' नन्दी कृता डभाल ग्रामे ॥

प	धन्नौ	धर्मोदय	प० रत्नकलश मुने
प	गिरधारी	ज्ञानोदय	प० रत्नकलश मुने
प	देवौ[1]	दानोदय	प० त्रिभुवनसुख गणे पौत्र, जिनभद्र शा०
प	चन्दौ	चारित्रोदय	प० जयसौभाग्य मुने.
प	वखतौ	विवेकोदय	प० त्रिभुवनसुख गणे पौत्र, जिनभद्र शा०
प	जयकरणौ	युक्तोदय	प० युक्तिधर्म मुने
प	तेजौ	तिलकोदय	वा० लावण्यहर्ष गणे पौत्र, क्षेम शाखाया
प	खेतौ	क्षमाउदय	वा० लावण्यहर्ष गणे पौत्र, क्षेम शाखाया
प	गौडीदास	गुणोदय	प० मानरत्न मुने
प	मानौ[2]	माणिक्योदय	प० जयसौभाग्य मुने
प	अमौ	अमृतोदय	वा० मुनिमेरु गणे पौत्र

१　कारोला मध्ये जणा ७ प्र० आषाढ वदी १०

२　गुढा मध्ये

॥ सं० १८२० वर्षे मिति माघ शुक्ल पञ्चम्यां ५ भौमे भ० श्री जिनलाभसूरिभि श्री राड़द्रहा नगरे (१४) 'हेम' नन्दी कृता ॥

प लाधौ	लक्ष्मीहेम	वा० धर्मसुन्दर गणे पौत्र
प गगाराम	ज्ञानहेम	प० गजवल्लभ मुने
प गुलालौ	गुणहेम	उ० श्रीमाणिक्यमूर्त्ति गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प ऊदौ	उदयहेम	उ० श्रीमाणिक्यमूर्त्ति गणे प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प खुश्यालौ	क्षमाहेम	वा० लोकवल्लभ गणे पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प श्रीचन्दौ	सुगुणहेम	प० सत्यसागर मुने, कीर्त्तिरत्न शा०

॥ सं० १८२० वर्षे मिती चैत सुदि ६ दिने ॥

प अनोपौ	अमरहेम	उ० माणिक्यमूर्त्ति गणे
प माणकौ	महिमाहेम	उ० माणिक्यमूर्त्ति गणे
प भीमौ[1]	भाग्यहेम	प० सत्यभद्र मुने
प माणकौ	माणिक्यहेम	प० त्रिभुवनसुख गणे पौत्र, जिनभद्र शा०
प. जैरौ[2]	युक्तिहेम	प० त्रिभुवनसुख गणे, जिनभद्र शा०
प खुश्यालौ	खुश्यालहेम	प० दानभक्ति मुने
प महासिंघ	मूर्त्तिहेम	प० त्रिभुवनसुख गणे, जिनभद्र शा०
प वखतौ[3]	विद्याहेम	प० क्षमामाणिक्य मुने, कीर्तिरत्न शा०
प विज्जौ	विनयहेम	प० लाभकुशल गणे
प तोगौ	तिलकहेम	प० पुण्यसोम गणे
प श्रीचन्द	सत्यहेम	प० अभयसौभाग्य मुने
प फत्तौ	पद्महेम	प० कमलकलश मुने
प सोमौ	सुखहेम	प० क्षमाविमल मुने जिनभद्र शा०
प खुश्यालौ	क्षान्तिहेम	प० कमलकलश मुने
प उत्तमौ[4]	अमृतहेम	प० विवेकसागर मुने, क्षेमशाखाया
प प्रेमौ	पुण्यहेम	प० विवेकसागर मुने, क्षेमशाखाया

---

१ चैत्र सुदि ५ सोमे   २ तलवाडा मध्ये ज्ये व ८

३ ज्येष्ठ स. ५ पचपदरा म.   ४. बालोतरा मध्ये

॥ स० १८२१ माह सुदि ८ सिद्ध योगे श्री पादरू ग्रामे (१५) 'सार' नन्दी कृता ॥

प	श्रीचन्द	सत्यसार	प० मयावल्लभ मुने
प	मोतीचन्द	मतिसार	प० मयावल्लभ मुने
प	गुलाबौ	ज्ञानसार	वा० गजवल्लभ गणे पौत्र
प	रुघौ	रत्नसार	प० शिववर्द्धन मुने
प	गोमौ	गुणसार	प० दयाभक्ति मुने, श्री जिनचन्द्र शा०
प	जैतौ	युक्तिसार	प० युक्तिविमलस्य
प	मूलौ	महिमासार	प० दयाभक्ति मुने, श्री जिनचन्द्र शा०
प	नितौ	नित्यसार	प० दयाभक्ति मुने
प	कूंभौ	कीर्त्तिसार	वा० महिमानिधान गणे पौत्र
प	अनोपौ[1]	उदयसार	श्रीजिताम्
प	नरायण	ज्ञानसार	श्रीजिताम् पश्चात् रत्नराजस्य शिष्य कृत
प	गौडीदत्त	गजसार	उ० रामविजय पौत्र, क्षेमशाखाया

॥ स० १८२२ माह सुदि १३ रोहीठ मध्ये ॥

प	सुन्दरौ	समयसार	वा० लोकवल्लभ गणे पौत्र
प	जयचन्द	जयसार	वा० हस्तरत्न गणे पौत्र
प	विज्जौ	विद्यासार	प० ऋद्धिरत्न मुने
प	देवदत्त	दयासार	प० माणिक्यदत्त मुने
प	सिरदारौ	सुखसार	प० माणिक्यदत्त मुने

॥ स० १८२२ वर्षे फागुण वदि ११ मण्डोवर नगरे (१६) 'प्रिय' नन्दी कृता श्री जिनलाभसूरिभि

प	चतुरौ	चारित्रप्रिय	प० सकलवल्लभस्य
प	वस्तौ	विद्याप्रिय	प० जयमाणिक्य मुने
प	जुगतौ	युक्तिप्रिय	प० क्षमानन्दनस्य
प	अजवौ	आणदप्रिय	प० लाभमेरु मुने

---

१ उदयसार नु गुढा मध्ये पद स्थापना स० १८३४ माघ वदि १३

प	सुखौ	सुमतिप्रिय	प० सुमतिधर्म मुने जिनचन्द्र शा०
प	श्रीधर	सत्यप्रिय	वा० ज्ञानप्रमोदस्य
प	श्रीकरण	सदाप्रिय	वा० ज्ञानप्रमोदस्य
प	रामौ	रंगप्रिय	प० हंसविनय मुने

॥ स० १८२२ वैशाख सुदि ५ बुधवारे मेडता मध्ये ॥

प	अमरू	अमरप्रिय	वा० जगद्विशाल गणे
प	रुघौ	राजप्रिय	वा० माणिक्यसागर गणे
प	कर्मचन्द	कनकप्रिय	प० लाभजय मुने
प	रामौ	रत्नप्रिय	वा० जगविशाल गणे
प	फतौ	पुण्यप्रिय	प० अमरधर्म मुने
प	गुमानौ	ज्ञानप्रिय	वा० गजवल्लभस्य
प	चैनौ	चतुरप्रिय	वा० गजवल्लभ गणे पौत्र
प	हररूप[1]	हर्षप्रिय	उ० श्री सदासुख गणे पौत्र
प	सुरतौ	सुगुणप्रिय	वा० जगद्विशालस्य पौत्र
प	वद्धौ	विवेकप्रिय	वा० जगद्विशालस्य पौत्र
प	दीपौ	दर्शनप्रिय	प० जयमाणिक्य मुने
प	हररूप	हस्तप्रिय	प० दयाभक्ति मुने पौत्र
प	वीरभाण	विनयप्रिय	प० आणदसागरस्य

॥ सं० १८२३ वर्ष मिति मार्गशीर्ष बदि ७ रविवारे श्री मेडतानगर मध्ये भट्टारक प्रभु श्रीजिनलाभसूरिभि (१७) 'कीर्त्ति' नन्दी कृता ॥

प	तिलोकौ	तिलककीर्त्ति	प० नयशेखरस्य
प	गुलाबौ	ज्ञानकीर्त्ति	प० ज्ञानकल्लोल मुने
प	जीवौ	जयकीर्त्ति	महो० श्रीमाणिक्यमूर्त्ति गणे कीर्तिरत्न शा०
प	वखतौ	लाभकीर्त्ति	प० लाभनिधानस्य पौत्र

॥ स० १८२३ चैत्र वदि ४ श्री जयपुर मध्ये ॥

प	खेमौ	खुश्यालकीर्त्ति	प० सौम
प	कुशलदत्त	कुशलकीर्त्ति	प० लाभनिधानस्य

---

1 स० १८२३ ज्ये० सुदि ५ गुरौ मेडता नगरे

प माणकौ	माणिक्यकीर्त्ति	प० लाभनिधानस्य पौत्र
प किसनौ	कनककीर्त्ति	प० लाभनिधानस्य पौत्र
प खुस्यालौ	क्षमाकीर्त्ति	प० लाभनिधानस्य पौत्र
प अमरदत्त	अमृतकीर्त्ति	श्रीजिताम्

।। स० १८२४ मिती पोह वदि ३ श्री जयपुर नगरे ।।

प सहजराम	सुन्दरकीर्त्ति	प० लाभकुशल गणे
प भागचन्द	भक्तिकीर्त्ति	प० विनीतसुन्दरस्य
प रामकृष्ण	रत्नकीर्त्ति	प० कुशलसागरस्य

।। सं० १८२४ वर्षे मिती पोह वदि ६ शुक्रवारे । श्री जयपुर मध्ये भट्टारक श्री जिनलाभसूरिभि (१८) 'प्रभ' नन्दी कृता ।।

प भैरवौ	भाग्यप्रभ	प० ज्ञानवल्लभ मुने
प चदौ	चारित्रप्रभ	प० भाग्यसमुद्र मुने
प शीतलौ	सदाप्रभ	प० भाग्यसमुद्र मुने
प दीपौ	दानप्रभ	प० विनयभक्ति गणे
प चतुरौ	चतुरप्रभ	प० विनयभक्ति गणे

।। स० १८२४ वर्षे शाके १६९० वैशाख सुदि ३ उदयपुरे ।।

प हरषौ	हितप्रभ	प० प्रभनन्दनस्य
प मनरूप	मतिप्रभ	प० दत्तवर्द्धनस्य
प जगनाथ	जयप्रभ	प० दत्तवर्द्धनस्य
प हीराचन्द	हर्षप्रभ	प० रत्नकल्लोलस्य

।। सं० १८२५ मि । मिगसर वदि द्वितीय १२ दिने श्री पाली मध्ये ।।

प लद्धौ	लक्ष्मीप्रभ	प० तत्त्वधर्म मुने , जिनभक्ति गा०
प अर्जुन[1]	आनन्दप्रभ	वा० जयमाणिक्य गणे पौत्र

।। स० १८२५ माह सुदि १० बुधे जूठा मध्ये ।।

प० वखतौ	विवेकप्रभ	प० नयसागर मुने
प० रूपौ	रत्नप्रभ	वा० रामवल्लभ गणे

१ चण्डावल मध्ये

॥ सवत १८२५ वर्षे मिती माह सुदि १२ झूठा नगरे ॥

प	गोकल	गुणप्रभ	उ० श्री सदासुख गणे प्रपौत्र
प	हिमतौ	हेमप्रभ	उ० श्री सदासुख गण प्रपौत्र
प	नन्दौ	नयप्रभ	उ० श्री नयनसागर मुने
प	मनछौ	माणिक्यप्रभ	उ० नयनसागर मुने

॥ सवत् १८२५ माघ सुदि १५ दिने श्रीरायपुर मध्ये ॥

प	अजबौ	अमृतप्रभ	म० श्रीशान्तिविजयगणे पौत्र
प	खुस्यालौ	क्षमाप्रभ	म० श्रीशान्तिविजय गणे पौत्र, भद्र० शा०

॥ संवत् १८२५ फागुण बदि १३ सोमे छिपीया मध्ये अपरनाम खुश्यालपुर मध्ये ॥ भट्टारक प्रभु श्रीजिनलाभसूरिभिरेकोनविंशतितमा १९ 'मूर्ति' नन्दि कृता ॥

प	खुश्यालौ	क्षेममूर्त्ति	प० जयकल्लोल मुने
प	जसौ	जयमूर्त्ति	प० लाभजय मुने
प	सरूपौ[1]	सत्यमूर्त्ति	प० मतिविलास गणे, जिनभद्र शा०

॥ स० १८२५ वैशाख बदि १० दहीपुडा मध्ये ॥

प	सरूपौ	सदामूर्त्ति	प० जयकल्लोल मुने पौत्र
प	अखौ	अभयमूर्त्ति	प० कीर्त्तिकल्लोल मुने

॥ सवत् १८२६ वर्षे माह बदि ५ दिने साचोर मध्ये ॥

प	वाल्हौ	विवेकमूर्त्ति	सत्यभक्ति मुने
प	चदौ	चारित्रमूर्त्ति	प० देववल्लभस्य
प	भगवान	भाग्यमूर्त्ति	प० देववल्लभस्य
प	रूपौ[2]	राजमूर्त्ति	वा० पद्मकुशल गणे पौत्र

॥ सवत् १८२९ शा० १६९४ चैत सुदि १३ सूरेत मध्ये विंशतितमी २० 'सोम' नन्दि कृता ॥

प	वीरचद्र	विद्यासोम	उ० दानविशाल गणे

---

1 वै० ब० ३ घूडा ग्रामे । 2. स० १८२७ वै० सु० ३ सुरते मध्ये ।

प रामौ रत्नसोम प० त्रैलोक्यवल्लभ मुने. क्षेमशा०
प दीपौ दर्शनसोम उ० रूपवल्लभ गणे
पं मुकनौ महिमासोम वा० पुण्यभक्ति गणे पौत्र

॥ सं० १८३० वर्षे शाके १६९५ चैत्र वदि ४ दिने श्री जूनागढ मध्ये ॥

प लखमसी लक्ष्मीसोम प० युक्तिभक्ति मुने, जिनभद्र शा०
प. नैणसी नित्यसोम प० युक्तिभक्ति मुने, जिनभद्र शा०
प. नारण ज्ञानसोम प० युक्तिभक्ति मुने, जिनभद्र शा०
प देवराज दत्तसोम प० युक्तिभक्ति मुने, जिनभद्र शा०
प कल्याण कीर्त्तिसोम प० युक्तिभक्ति मुने., जिनभद्र शा०
प देगल दानसोम प० युक्तिभक्ति मुने, जिनभद्र शा०

॥ सं० १८३० वर्षे शाके १६९५ चैत्र वदि ११ दिने श्रीजूनागढ मध्ये ॥

प रायचद रगसोम
प रतनचद ऋद्धिसोम
प देवकरण दयासोम
प चतुरौ चारित्रसोम

॥ सं० १८३० द्वि० वै० सु० ४ कालावल मध्ये ॥

प सरूपौ सुमतिसोम प० सदाभक्ति मुने जिनरत्नसूरि शा०

॥ स० १८३२ वै० सु० १२ श्रीभुज्ज मध्ये २१ 'जय' नदिः कृता भ० श्री जिनलाभसूरिभि. ॥

पं पूर्णचद्र पुण्यजय प० दर्शनराज गणे पौत्र
प जैतौ[1] युक्तिजय वा० जयसौभाग्य गणे पौत्र, कीर्त्तिशा०

॥ सं० १८३३ मिते आषाढ वदि १ दिने श्री गुढा मध्ये ॥

प मयाराम महिमाजय अतिवल्लभ मुने. अ० प्र० जिनचन्द्र शा०
प अमौ अमृतजय सत्यविनय मुने रत्न० जिनचन्द्र शा०

1, स० १८३३ मिती माघ सु० ९ अजार म० ।

प वाल्हो[1] विवेकजय प० उदयभक्ति गणे जिनभद्र शा०
प माणको[2] माणिक्यजय प० तिलककुमार मुने सागर० शा०

श्रीजिनचन्द्रसूरिः

।। सवत् १८३१ वर्षे शाके १७०० प्रवर्त्तमाने वैशाख सुदि ३ दिने। भट्टारक श्री जिनचन्द्रसूरिभि प्रथमा "चन्द्र" नन्दि कृता। श्री बालोतरा नगरे ।।

प धन्नो धर्म्मचन्द्र प० दयावर्द्धन गणे जिनभद्र शा०
प भीमो भक्तिचन्द्र प० जिनप्रभ गणे जिनभद्र शा०
प अनोपो उदयचन्द्र उ० रत्नविमल गणे पौत्र, क्षेम शा०
प मोती मयाचन्द्र प० प्रभनन्दन गणे पौत्र, क्षेम शा०
प वाको वीरचन्द्र प० मयावल्लभ गणे क्षेम शा०
प गणेशो गुणचन्द्र उ० श्रीदानविशाल गणे पौत्र, क्षेम शा०
प लच्छो लक्ष्मीचन्द्र उ० श्रीदानविशाल गणे पौत्र, क्षेम शा०
प सुखो अमृतचन्द्र वा० हर्षकलश गणे पौत्र, क्षेम शा०
प शम्भू शिवचन्द्र वा० पुण्यशील गणे पौत्र, क्षेम शा०
प देवो दयाचन्द्र प० अमरशेखर गणे जिनराज शा०
प देपो दीपचन्द्र प० सुमतिसोम मुने जिनरत्न शा०

।। स० १८३५ वर्षे मिती माघ बदि ९ दिने करू मध्ये ।।

प अमी अमरचन्द्र प० गजविनय मुने क्षेम शा०
प लच्छो लब्धिचन्द्र प० सत्यकल्याण मुने क्षेम शा०
प नगो नेमिचन्द्र गजवल्लभ गणे प्रपौत्र, राज० शा०
प वखतो विजयचन्द्र प० सुखधीर मुने, जिनचन्द्र शा०
प रतनो रामचन्द्र वा० मतिविलास गणे. प्रपौत्र

।। स० १८३५ वर्षे शाके १७०० प्रमिते फाल्गुन कृष्णैकादश्या ११। भट्टारक प्रभु श्रीजिनचन्द्रसूरिभि द्वितीया 'विजय' नन्दि कृता ।।

प० जुगतो जीतविजय प० विद्यावर्द्धन मुने जिनभद्र शा०
प० कुशलो कीर्त्तिविजय प० हर्षसेन मुने सागरचन्द्र शा०

---

१ आषाढ ब० ६ गुढा मध्ये। २ आषा० सु० ८ गुढा मध्ये।

प केशरी कमलविजय वा० दर्शनलाभ गणे पौत्र, सागर० शा०
प विनैचन्द विनयविजय वा० ज्ञानमेन मुने पौत्र, सागर० शा०
प मानचन्द मानविजय प० रत्नधर्म मुने
मयाचन्द महिमाविजय श्रीजिताम्
प कस्तूरी कल्याणविजय वा० अमृतधर्म गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०
प ज्ञानी गगविजय वा० राजधर्म गणे पौत्र
प भोजौ भक्तिविजय वा० मतिविलास गणे प्रपौत्र
प रतनौ रगविजय प० मेरुधर्म मुने शिष्य क्षेम शा०
प विज्जौ वल्लभविजय प० कनकसेन मुने, सागरचन्द्र शा०
प भागचन्द भाणविजय प० कनकसेन मुने, सागरचन्द्र शा०
प वद्धू बुद्धिविजय प० गुणकल्याण मुने, सागरचन्द्र शा०
प दौलौ दीपविजय प० लक्ष्मीकमल मुने क्षेम शा०
प. गुणौ ज्ञानविजय उ० अमरविमल गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प हरिचन्द्र हर्षविजय उ० अमरविमल गणे प्रपौत्र, कीर्त्ति० शा०
प श्रीधर[1] श्रीविजय प० विनीतसागर मुने कीर्त्तिरत्न शा०
प श्रीकरण शातिविजय प० विनीतसागर मुने
प परसौ प्रीतिविजय प० मयावल्लभ पौत्र, जिनभद्र शा०
प भागचन्द भाग्यविजय प० ज्ञानोदय मुने, क्षेमशा०
प नवलौ नेमिविजय प० महिमाधर्म्म गणे, जिनलाभ शा०
प निहालौ नीतिविजय प० विवेककल्याण गणे, जिनलाभ शा०
प हरिसुख हितविजय प० ज्ञानसार मुने, जिनलाभ शा०
प कुशलौ कनकविजय वा० हीरधर्म गणे, जिनलाभ शा०
प अणदौ आणदविजय प० दानोदय मुने, जिनभद्र शा०
प उमेदौ अमरविजय प० विवेककल्याण गणे, जिनलाभ शा०
प रूपौ रामविजय प० माणिक्यहेम मुने, जिनभद्र शा०
प गुमानौ गुणविजय प० कनकधर्म मुने, जिनचन्द्र शा०
प चैनौ चारित्रविजय प० अभयकुमार मुने, सागरचन्द्र शा०
प पीथौ प्रेमविजय वा० विवेकसागर गणे पौत्र, क्षेमशा०
प पासदत पुण्यविजय कुशलभक्ति गणे पौत्र, जिनचन्द्र शा०

---

१ स० १८३५ वै सु ९ मोरसी मध्ये

प भगवानो भीमविजय प० सुमतिधर्म्म मुने , जिनचन्द्र शा०
प मोतीलाल मेरुविजय प० ज्ञानवर्द्धन गणे , पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प. भीमो भावविजय वा० जयमाणिक्य गणे', पौत्र कीर्त्ति० शा०
प विज्जो विवेकविजय वा० अमृतधर्म गणे , पौत्र
प चन्दो चन्द्रविजय प० जयराज मुनेः, सागरचन्द्र शा०
ग लालो लाभविजय उ० श्री जगद्विशाल गणे प्रपौत्र सागर० शा०
प ऊदो उत्तमविजय उ० श्री जगद्विशाल गणे', सागर० शा०
प जसो जयविजय वा० जयमाणिक्य गणे , प्रपौत्र कीर्त्ति० शा०
प दौलो देवविजय वा० जयमाणिक्य गणे , प्रपौत्र कीर्त्ति० शा०

।। सं० १८३७ वर्षे शाके १७०२ प्रवर्त्तमाने मिते चैत्र सुदि ९ दिने भट्टारक प्रभु श्रीजिनचन्द्रसूरिभि तृतीया 'प्रमोद' नन्दी कृता। श्री जेसलमेरु मध्ये ।।

प चतरु चारित्रप्रमोद प० कनकराज मुनि , सागरचन्द्र शा०
प किशनो कमलप्रमोद प० जयराज मुने , पौत्र सागरचन्द्र शा०
प रामो रत्नप्रमोद प० सौभाग्यसुन्दर मुने , जिनभद्र शा०
प जगमाल जयप्रमोद प० चारित्रमूर्त्ति मुने , सागरचन्द्र शा०
प कुशलो कीर्त्तिप्रमोद वा० जगत्सौभाग्य गणे पौत्र, सागर० शा०
प रूपो राजप्रमोद वा० जगत्सौभाग्य गणे पौत्र, सागर० शा०
प गुलाबो गुणप्रमोद वा० जयराज गणे , पौत्र
प श्रीचन्द सुमतिप्रमोद उ० लोकवल्लभ गणे पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प मोती मयाप्रमोद वा० क्षमामाणिक्य गणे पौत्र, कीर्त्ति० शा०
प खूबो क्षमाप्रमोद वा० क्षमामाणिक्य गणे पौत्र, कीर्त्ति० शा०
प रतनो रंगप्रमोद प० आणदप्रिय मुने , जिनभद्र शा०
प निहालो ज्ञानप्रमोद प० रत्नविमल गण पौत्र, क्षेमशा०
प हुकमो हितप्रमोद प० रत्नविमल गणे , क्षेमशा०
प मयाचन्द मुनिप्रमोद प० रत्नविमल गणे पौत्र, क्षमशा०
प ईंदो उदयप्रमोद प० प्रीतिविलास गणे पौत्र, क्षेमशा०
प कृपाराम नमप्रमोद वा० तत्त्वधर्म गणे पौत्र, क्षेमशा०
प सुमेरुचन्द्र समयप्रमोद वा० लावण्यकमल गणे पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प. गोवर्द्धन गुणप्रमोद वा० भाग्यतिलक गणे. पौत्र, क्षेमशा०

प लालौ　लक्ष्मीप्रमोद　वा० भाग्यतिलक गणे पौत्र, क्षेमशा०
प नैणसी　नेमिप्रमोद　वा० सुखसागर गणे, कीर्त्तिरत्न शा०
प सुखौ　सुगुणप्रमोद　लाभकुशल गणे पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प जैतौ　जीतप्रमोद　उ० अमरविमल गणे पौत्र, कीर्त्ति० शा०
प मयाचन्द　महिमाप्रमोद उ० अमरविमल गणे पौत्र, कीर्त्ति० शा०
प तिलोकौ　तिलकप्रमोद प० क्षमाप्रभ मुने, जिनचन्द्र शा०
प गौडीदास　गगप्रमोद　वा० कनकधर्म गणे, जिनचन्द्र शा०

॥ स० १८३९ आषाढ सुदो ९ भ० श्री जिनचन्द्रसूरिभि ४ 'निधान' नन्दी कृता जेसलमेरौ ॥

प शिवौ　श्रीनिधान　प० मयाकल्याण, जिनराज शा०
प नित्यानन्द ज्ञाननिधान　उ० श्रीजयमाणिक्य गणे पौत्र, कीर्त्ति०
प रूपौ　रत्ननिधान　उ० श्रीजयमाणिक्य गणे पौत्र, कीर्त्ति०
प हरीदास　हर्षनिधान　प० दीपसुन्दर, क्षेमशा०
प सगतौ　सुगुणनिधान　वा० युक्तिमेन गणि पौत्र, क्षेम शा०
प रायचन्द　रगनिधान　प० सत्यसार मुने, जिनभद्र शा०
प 'खुश्यालो　क्षमानिधान　वा० दर्शनलाभ गणे, सागरचन्द्र शा०
प गौडीदत्त　गगनिधान　प० सत्यसागर मुने प्रपौत्र, कीर्ति० शा०
प खूवौ　क्षेमनिधान
प सुरतौ　सुमतिनिधान प० पुण्यराज गणे जिनलाभ शा०
प उत्तमौ　उदयनिधान　वा० कुशलभक्ति गणे पौत्र, जिनचन्द्र०
प तिलोकौ　तिलकनिधान वा० कुशलभक्ति गणे पौत्र, जिनचन्द्र०
प चैतौ　चतुरनिधान　प० कनकसेन मुने, सागरचन्द्र शा०
प खूवौ　विद्यानिधान　गजवल्लभ गणे प्रपौत्र, राज शा०
प रामकरण　ऋद्धिनिधान उ० जयमाणिक्य गणे प्रपौत्र, कीर्त्ति० शा०
प गौडीदास　गुणनिधान　प हितसुन्दर मुनि शिष्य

॥ सं० १८४० चैत्र व० ४ भ० श्रीजिनचन्द्रसूरिभि ५ 'सिन्धुर' नन्दि कृता । जेसलमेरौ ॥

प कर्मचन्द्र　कीर्त्तिसिन्धुर प० कुशलविमल गणे पौत्र, क्षेम शा०
प चतुरौ　चारित्रसिन्धुर प० विद्यासेन गणे, कीर्त्तिरत्न शा०

प मोती माणिक्यसिन्धुर प० दयादत्त मुने, कीर्त्ति० शा०
प माणको महिमासिन्धुर प० दयादत्त मुने, कीर्त्ति० शा०
प. देवचन्द्र दयासिन्धुर वा० मेरुधर्म्म गणे, क्षेम शा०
प धरमचन्द्र धर्मसिन्धुर वा० मेरुधर्म्म गणे, क्षेम शा०
प. अमरो अमृतसिन्धुर वा० ज्ञानकमल गणे', क्षेम शा०
प रूपचन्द रत्नसिन्धुर प० जयधीर मुने, क्षेम शा०
प ज्ञानचन्द्र ज्ञानसिन्धुर प० रामवल्लभ गणे. पौत्र, क्षेम शा०
प लालो लक्ष्मीसिन्धुर प० रामवल्ल गणे. पौत्र, क्षेम शा०
प चतुरो चारित्रसिन्धुर प० मतिवल्लभ गणे पौत्र, क्षेम शा०
प मनरूपो मानसिन्धुर प० सुगुणहेम मुने, कीर्त्तिरत्न० शा०
प गौडीदत्त गुणसिन्धुर वा० युक्तिसेन गणे' पौत्र, क्षेम शा०
प अमरो अमरसिन्धुर वा० युक्तिसेन गणे पौत्र, क्षेम शा०
प कानो कनकसिन्धुर उ० जयसौभाग्य गणे. पौत्र, कीर्त्ति०
प भगवानो भक्तिसिन्धुर उ० जयसौभाग्य गणे पौत्र, कीर्त्ति०
पं. मौजो मुक्तिसिन्धुर उ० जयसौभाग्य गणे पौत्र, कीर्त्ति०
प पासदत्त पद्मसिन्धुर वा० कमलसागर गणे., जिनभद्र शा०
प चेतो चित्तसिन्धुर वा० कमलसागर गणे पौत्र, जिनभद्र०
प. गुलाबो गीतसिन्धुर वा० तत्त्वधर्म गणे. पौत्र, जिनभक्ति०
प हरिचन्द हितसिन्धुर वा० तत्त्वधर्म गणे पौत्र, जिनभक्ति०

॥ सं० १८४१ वर्षे शाके १७०६ प्रमिते फाल्गुन सुदि ७ दिने भट्टारक श्री जिनचन्द्रसूरिभि ६ 'रंग' नन्दी कृता श्री जैसलमेरौ ॥

प खुश्यालो क्षमारंग प० जीवदत्तमुने, शिष्य कीर्त्ति० शा०
प शिवो सुमतिरंग प० अभयधर्म मुने, शिष्य जिनभद्र शा०

॥ सं० १८३१ ग्राम पडियाल मध्ये ॥

प ज्ञानो ज्ञानरंग वा० ज्ञानविनय गणे, जिनभद्र शा०
प पोमो पद्मरंग वा० उदयधर्म गणे पौत्र, जिनभद्र शा०
प लालो लक्ष्मीरंग वा० उदयधर्म्म गणे. पौत्र, जिनभद्र शा०
प. सुक्खो सदारंग प० राजविनय मुने, जिनचन्द्र शा०

प	जीवौ	जीतरग	श्रीजिताम्
प	इन्द्रभाण	उदयरग	श्रीजिताम्
प	हीरौ[1]	हितरग	श्रीजिताम्
प	गुणचन्द्र	गजरग	प० सुमतिसोम मुने , जिनरत्न शा०
प	रतनचन्द	रत्नरग	प० अभयमूर्त्ति मुने , जिनरत्न शा०
प	रायचन्द	राजरग	वा० ज्ञानकल्लोल गणे पौत्र, क्षेमशा०
प	ज्ञानचन्द्र	गीतरग	प० विनीतसुन्दर मुने , जिनसुख शा०
प	अर्जुन	अमृतरग	प० कीर्त्तिकुमार, जिनरत्न शा०
प	मनसुख	मुक्तिरग	प० जयदत्त मुने , क्षेमशा०
प	भूधर	भक्तिरग	प० जयदत्त मुने , क्षेमशा०
प	अमरौ	आणदरग	प० ज्ञानविनय गणे पौत्र, जिनभद्र शा०
प	सवाई	सुगुणरग	वा० सुखसागर गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प	वुद्धौ	विद्यारग	उ० जयमाणिक्य गणे प्रपौत्र, कीर्त्ति० शा०
प	नथमल	नीतिरग	उ० जयमाणिक्य गणे प्रपौत्र, कीर्त्ति० शा०
प	जगरूप	जयरग	उ० ज्ञानविलास गणे पौत्र, सागर० शा०
प	तिलोकौ	तिलकरग	उ० ज्ञानविलास गणे पौत्र, सागर० शा०
प	खेमचन्द	क्षान्तिरग	उ० ज्ञानविलास गणे पौत्र, सागर० शा०
प	चतुरौ	चारित्ररग	उ० ज्ञानविलास गणे पौत्र, सागर० शा०
प	वुद्धौ	विजयरग	उ० ज्ञानविलास गणे पौत्र, सागर० शा०
प	माणकौ	माणिक्यरग	उ० ज्ञानविलास गणे पौत्र, सागर० शा०
प	ऊदौ	उदयरग	उ० ज्ञानविलास गणे पौत्र, सागर० शा०
प	विज्जौ	विनयरग	वा० हीरधर्म गण , जिनलाभ शा०
प	अभौ	अमृतरग	वा० हीरधर्म गणे , जिनलाभ शा०
प	चन्दौ	चतुररग	वा० महिमाधर्म्म गणे , जिनलाभ शा०
प	शिवदान	सहजरग	प० रत्नधर्म मुने , पौत्र सागरचन्द्र शा०
प	गुमानौ	गुणरग	वा० युक्तिसेन गणे पौत्र, क्षेमशा०
प.	मोतीचन्द	महिमारग	वा० लावण्यकमल गणे पौत्र, जिनचन्द्र
प	जगतचन्द	जयरग	वा० लावण्यकमल गणे प्रपौत्र, जिनचन्द्र
प	दयाचन्द	देवरग	वा० लावण्यकमल गणे प्रपौत्र, जिनचन्द्र

---

१ स० १८५५ जे सु १५ सूरत मध्ये पदस्थापना थई ।

पं	महिरचन्द	मुनिरंग	वा० लावण्यकमल गणे प्रपौत्र, चन्द्र शा०
प	नदू	नयरंग	प० जयदत्त मुने शिष्य, क्षेम शा०
प	सवाई	शीलरंग	प० दयाराज मुने क्षेम शा०
प	जीवराज	युक्तिरंग	वा० रत्नसुन्दर मुने जिनचन्द्र शा०
प	गुमानो	गुप्तिरंग	वा० रत्नसुन्दर मुने जिनचन्द्र शा०
प	गंगाराम	गेयरंग	वा० रत्नसुन्दर मुने जिनचन्द्र शा०

।। सं० १८४२ आषाढ सु २ दिने भ० श्रीजिनचन्द्रसूरिजी बीकानेर पधार्या। शीतला रै दरवाजै जाल रै कनै तम्बू खड़ो कियो, उंठा सूं वाजा वजावता आया।

।। सं० १८४३ ज्येष्ट वदि ५ भ० श्री जिनचन्द्रसूरि ७ 'कुशल' नंदि कृता श्री बीकानेरे ।।

प	सरूपो	सुगुणकुशल	प० महिमा कल्याण मुने क्षेम शा०
प.	वखतो	विनयकुशल	प० तत्त्वकल्याण, क्षेम शा०
प	सुखो	सदाकुशल	विद्याविशाल गणे प्रपौत्र, क्षेमशा०
प	माणको	माणिक्यकुशल	प० दयासोम मुने क्षेम शा०
प	राजाराम	रत्नकुशल	प० जगत्कल्याण मुने क्षेम शा०
प	लखमो	लावण्यकुशल	प० पाणिक्यदत्त मुने कीर्त्ति शा०
प	उदैभाण	आणंदकुशल	श्री जितामृ मुने कीर्त्ति शा०
प	गुमानो	ज्ञानकुशल	उ० अमरविमल गणे प्रपौत्र, कीर्त्ति शा०
प	प्रभुदत्त	पुण्यकुशल	वा० दयासार गणे शिष्य, कीर्त्ति शा०
प	नथमल	नीतिकुशल	प० सुमतिसोम मुने जिनरत्न शा०
प	हरचन्द	हेमकुशल	प० सुमतिसोम मुने जिनरत्न शा०
प	हरलाल	हर्षकुशल	प० सुमतिसोम मुने जिनरत्न शा०
प	जीवो	जयकुशल	पद्मकुशलगणे प्रपौत्र, सागरचंद्र शा०
प	महासिंघ	मयाकुशल	प० क्षमाधर्म मुने शिष्य, जिनभद्र शा०
प	हरचन्द	हितकुशल	प० सौभाग्यसुन्दर मुने· जिनभद्र शा०
प	गोडीदास	गुणकुशल	प० शिवराज मुने क्षेम शा०
प	वर्द्धमान	विजयकुशल	प० हर्षसुन्दर मुने क्षेम शा०
प	कपूरो	कीर्त्तिकुशल	म० गजवल्लभ गणे जिनराज शा०

प	माणकौ	मूर्त्तिकुशल	वा० कुशलसौभाग्य गणे पौत्र, राज शा०
प	देवौ	देवकुशल	वा० कनकधर्म गणे जिनचद्र शा०
प	मुहकमौ	मुनिकुशाल	वा० कनकधर्म गणे. जिनचद्र शा०
प	फतौ	पूर्णकुशल	प० माणिक्यदत्त मुने कीर्त्तिरत्न०
प	मनसुख	मुक्तिकुशल	प० सुखधीर मुने जिनचन्द्र शा०
प	मौजीराम	मेरुकुशल	वा० प्रीतिविलास गणे पौत्र क्षेम शा०
प	मुकनौ	मतिकुशल	उ० जयसौभाग्य गणे, पौत्र कीर्त्ति शा०

॥ स० १८४३ फा० सु० ११ भ० श्री जिनचन्द्रसूरिभि ८ 'मेरु' नन्दी कृता श्री बीकानेरे ॥

प	किरपाराम	कीर्त्तिमेरु	प० कनकसेन मुने, सागरचन्द्र शा०
प	खुश्यालौ	क्षमामेरु	प० कनकसेन मुने, सागरचन्द्र शा०
प	गौडीदत्त	ज्ञानमेरु	प० कनकसेन मुने, सागरचन्द्र शा०
प	कनीराम	कनकमेरु	प० कनकसेन मुने, सागरचन्द्र शा०
प	विज्जौ	विद्यामेरु	वा० कुशलभक्ति गणे पौत्र, चन्द्र शा०
प	नेतौ	नयमेरु	प० विवेकजय मुने, जिनभद्र शा०
प	आसौ	अमृतमेरु	प० रत्नसार मुने, क्षेमशाखा
प	कानौ	कमलमेरु	वा० युक्तिभक्ति गणे पौत्र, जिन शा०
प	प्रेमचन्द	पुण्यमेरु	वा० युक्तिभक्ति गणे पौत्र, जिन शा०
प	जयचन्द	जयमेरु	प० विनयतिलक मुने, क्षेक्षशाखा
प	मनसुख	मूर्त्तिमेरु	प० चारित्रप्रमोद मुने, सागर शा०
प	लच्छौ	लक्ष्मीमेरु	प० कमलप्रमोद मुने, सागर शा०
प	चैनौ	चारित्रमेरु	प० खुश्यालहेम मुने, कीर्त्ति शा०
प	जीवौ	युक्तिमेरु	प० विजय मुने, कीर्त्ति शा०
प	देवौ	दानमेरु	प० खुश्यालहेम मुने, कीर्त्ति शा०
प	सूरतौ	सुमतिमेरु	प० खुश्यालहेम मुने, कीर्त्ति शा०
प	ठाकुरौ	गुणमेरु	प० विद्याशील मुने पौत्र,
प	ऊदौ	उदयमेरु	प० आनन्दप्रिय मुने, भद्र शा०
प	ईंदौ	इन्द्रमेरु	प० अमरप्रिय मुने, सागर शा०
प	उदौ	उत्तममेरु	प० अमरप्रिय मुने, सागर शा०

प दौलौ	दयामेरु	वा० कुशलकल्याण गणे , जिनचन्द्र शा०
प रूपौ	रत्नमेरु	प० सुगुणहेम मुने , कीर्त्तिरत्न शा०
प शिवौ	शिवमेरु	प० विनीतसुन्दर मुने , जिनसुख शा०
प लालौ	लक्ष्मीमेरु	प० विनीतसुन्दर मुने , जिनसुख शा०
प थिरौ	थिरमेरु	प० विनीतसुन्दर मुने , जिनसुख शा०
प खेतौ	क्षमामेरु	प० विनीतसुन्दर मुने , जिनसुख शा०
प गुमानौ	गुणमेरु	प० रूपराज मुने , जिनचन्द्र शा०
प सरूपौ	सत्यमेरु	प० गुणमेरु मुने
प जीवौ	युक्तिमेरु	प० रूपराज मुने
प नेतौ	नित्यमेरु	प० रूपराज मुने
प कुशलौ	कनकमेरु	वा० युक्तिमाणिक्य गणे पौत्र, कीर्त्ति शा०
प गुमानौ	गजमेरु	वा० युक्तिमाणिक्य गणे पौत्र, कीर्त्ति शा०

।। स० १८४४ माघ बदि ४ तिथौ शनिवारे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः नवमी 'समुद्र' नन्दी कृता । महाजन ग्राम मध्ये ।।

प चिमनौ	चारित्रसमुद्र	वा० लाभशेखर गणे
प वसतौ	विद्यासमुद्र	वा० तत्त्वधर्म्म गणे पौत्र
प हुकमौ	हितसमुद्र	वा० कीर्त्तिधर्म्म गणे , जिनभद्र शा०
प खूबौ	क्षमासमुद्र	प० अभयकमल मुने , जिनभद्र शा०
प कुशलौ	कीर्त्तिसमुद्र	वा० जयराज गणे पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प हुकमौ	हेमसमुद्र	वा० जयराज गणे पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प सहिजौ	सुगुणसमुद्र	उ० मतिविलास गणे प्रपौत्र
प जेठौ	जयसमुद्र	प० रूपवल्लभ गणे पौत्र
प वगसौ	विनयसमुद्र	उ० मतिविलास गणे प्रपौत्र
प गुमानौ	गुणसमुद्र	उ० पुण्यभक्ति गणे पौत्र
प हिमतौ	हरिसमुद्र	उ० लोकवल्लभ गणे प्रपौत्र
प पदमौ	पुण्यसमुद्र	वा० कनकधर्म गणे पौत्र, क्षेमशाखा
प अजबौ	अमृतसमुद्र	वा० प्रीतिविलास गणे पौत्र, क्षेमशाखा
प. लाखण	लाभसमुद्र	वा० प्रीतिविलास गणे पौत्र, क्षेमशाखा
प हरौ	हीरसमुद्र	प० लाभकीर्त्ति मुने , जिनभद्र शा०
प अणदौ	आणदसमुद्र	प० चारित्रप्रमोद मुने., सागरचन्द्र शा०

प	सदासुख	सत्यसमुद्र	वा० ज्ञानविनय गणे पौत्र, जिनभद्र शा०
प	सरूपौ	शान्तिसमुद्र	म० रूपवल्लभ गणे पौत्र, क्षेमशा०

।। स० १८४५ मिगसर बदि ७ गुरौ दशमी 'नन्दन' नन्दी कृता ।।
श्री बीकानेरे ।।

प	गुलालौ	ज्ञाननन्दन	वा० ज्ञानविनय गणे , जिनभद्र शा०
प	रामलौ	रत्ननन्दन	वा० मुनिकल्लोल गणे , क्षेक्षशा०
प	दयाचन्द	दयानन्दन	उ० ज्ञानविलास गणे पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प	कस्तूरौ	कमलनन्दन	प० युक्तिधर्म मुने पौत्र, क्षेमशा०
प	मनरूपौ	माणिक्यनन्दन	प० युक्तिधर्म मुने पौत्र, क्षेमशा०
प	दौलौ	देवनन्दन	वा० युक्तिसौभाग्य मुने पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प	जग्गू	युक्तिनन्दन	उ० ज्ञानविलास गणे प्रपौत्र, सागरचन्द्र शा०
प	गुमानौ	गुणनन्दन	उ० ज्ञानविलास गणे प्रपौत्र, सागरचन्द्र शा०
प	श्रीपाल	सत्यनन्दन	उ० ज्ञानविलास गणे प्रपौत्र, सागरचन्द्र शा०
प	नेमौ	न्यायनन्दन	उ० ज्ञानविलास गण प्रपौत्र, सागरचन्द्र शा०
प	भैरौ	भक्तिनन्दन	उ० ज्ञानविलास गणे प्रपौत्र, सागरचन्द्र शा०
प	चैनौ	चारित्रनन्दन	वा० युक्तिमाणिक्य गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प	हेमो	हर्षनन्दन	प० रत्नसोम मुने
प	चैनो	चित्रनन्दन	प० रत्नसोम मुने
प	देवौ	दत्तनन्दन	वा० राजधर्म गणे पौत्र
प	खूबौ	क्षमानन्दन	प० ज्ञानसार मुने जिनलाभ शा०
प	नयणौ	नयनन्दन	प० विवेककल्याण गणे जिनलाभ शा०
प	चेनो	चारित्रनन्दन	प० तत्त्वकुमार मुने सागरचन्द्र शा०
प	सुखौ	सदानन्दन	प० तत्त्वकुमार मुने सागरचन्द्र शा०
प	सरूपौ	सत्यनदन	प० चारित्र मुने
प	सुजाणौ	शीलनन्दन	वा० लालशील गणे पौत्र
प	हरखो	हेमनन्दन	प० विनयदेव मुने
प	विनयचन्द्र	विद्यानन्दन	वा० अमृतधर्म गणे प्रपौत्र
प	कानौ	कनकनन्दन	वा० युक्तिभक्ति गणे प्रपौत्र, जिनभद्र शा०
प	प्रेमचन्द	पुष्पनन्दन	वा० युक्तिभक्ति गणे. प्रपौत्र, जिनभद्र शा०

॥ स० १८४८ मिग० सु० १३ गुरौ भ० श्रीजिनचन्द्रसूरिभि. ११ 'रत्न' नदि कृता। लखनेउ मध्ये ॥

प	रतनौ	रामरत्न	प० क्षेमकीर्त्ति मुने जिनभद्र शा०
प	शिवलाल	सत्यरत्न	श्रीजिताम्
प	जादु	जयरत्न	श्रीजिताम्
प	सुखौ	समयरत्न	प० तिलकधर्म मुने, जिनभद्र शा०
प	राजौ	रगरत्न	प० न्यायसुन्दर मुने
प	खुश्यालौ	क्षमारत्न	प० रत्नसुन्दर गणे पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प.	पुनसी	पुण्यरत्न	प० जयमाणिक्य गणे पौत्र कीर्त्तिरत्न शा०
प	शिवाराम	सुगुणरत्न	पु० सदानन्दन गणे पौत्र
प	मानौ	महिमारत्न	वा० युक्तिसेन गणे क्षेम शा०
प	कुशलौ	कनकरत्न	वा० युक्तिसेन गणे क्षेम शा०
प	अगरौ	अमररत्न	अमरविमल गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प	कुशलौ	कान्तिरत्न	अमरविमल गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प	अखौ	उदयरत्न	वा० माणिक्य गणे प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प	साहिबो	सिद्धरत्न	प० राजकुमार मुने सागरचन्द्र शा०
प	उदयचन्द	आनन्दरत्न	श्रीजिताम्,
प	श्रीचन्द	श्रीरत्न	प० अभयकुमार मुने पौत्र, सागरचद्र शा०
प	जोवसुख	जीवरत्न	वा० युक्तिसोभाग्य गणे पौत्र, सागरचद्र शा०
प	जयचन्द	जीतरत्न	प० चारित्रप्रमोद मुने सागरचन्द्र शा०
प	श्रीचन्द	सुखरत्न	वा० जयराज गणे प्रपौत्र, सागरचन्द्र शा०
प	रामचन्द	ऋद्धिरत्न	प० पुण्यराज गणे जिनलाभ शा०
प	सदानन्द	शिवरत्न	प० शिवराज मुने क्षेम शा०
प	खेतसी	क्षमारत्न	प० हर्षसुन्दर मुने क्षेम शा०
प	खेमो	क्षान्तिरत्न	उ० जयमाणिक्य गणे प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प	उदो	अमृतरत्न	उ९ जयमाणिक्य गणे प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प	पदमौ	पद्मरत्न	प० विवेककल्याण गणे पौत्र, जिनलाभ शा०

॥ स० १८५० ज्येष्ठ व० ८ शनौ भ० श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः १२ 'हस' नन्दी कृता। जयपुरे ॥

प	विजैदत्त	विनयहस	वा० दयासागर गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०

प जगरूप	जयहस	प० दीपसुन्दर मुने पौत्र , क्षेम शा०
प मुकनौ	माणिक्यहस	वा० क्षमाविमल गणे पौत्र, भद्र० शा०
प किसनौ	कीर्त्तिहस	वा० क्षमाविमल गणे पौत्र, भद्र० शा०
प गणेशौ	राजहस	वा० पुण्यप्रिय गणे जिनराज० शा०
प पासदत्त	पद्महस	वा० पुण्यप्रिय गणे जिनराज० शा०
प माणकौ	माणिक्यहस	वा० पुण्यप्रिय गणे जिनराज० शा०
प मोतीचन्द	मानहस	प० गजहस मुने जिनराज० शा०
प लालचन्द	लक्ष्मीहस	प० पद्महस मुने जिनराज० शा०
प खूवौ	क्षमाहस	प० हीरसुन्दर मुने पौत्र, क्षेम शा०
प० सारगधर	सौभाग्यहस	वा० मेरुधर्म गणे क्षेम शा०

॥ स० १८५० भा० सु० १ पुडी भेजी जयपुर मे ॥

प० टीकरसी	तिलकहस	प० खश्यालकीर्त्ति मुने , क्षेम शा०
प० ऋषभौ	ऋद्धिहस	प० चारित्रोदय मुने , कीर्त्तिरत्न शा०
प० लक्ष्मीचन्द	लाभहस	प० दानसेनमुने शिष्य
प० पदमौ	पद्महस	वा० ज्ञानवल्लभ गणे पौत्र, जिनभद्र शा०
प० मगनौ	महिमाहस	प० युक्तिधीर, सागरचन्द्र शा०
प० भूधर	भक्तिहस	वा० धर्मचन्द्र गणे , जिनभद्र शा०
प० खुश्याल	क्षेमहस	प० हेमप्रभ मुने , कीर्त्तिरत्नसूरि शा०
प हीरौ	हर्षहस	वा० महिमा रुचि, कीर्त्तिरत्न शा०

॥ स० १८५१ वै० सु० ३ भृगौ भ० श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः १३ 'वर्द्धन' नदि कृता । रोहिणी मध्ये ॥

प वन्नौ	विनयवर्द्धन	प० ज्ञानकीर्त्ति मुने , क्षेम शा०
प गुमानौ	गुणवर्द्धन	प० विवेकप्रिय मुने , सागरचन्द्र शा०
प रामौ	रत्नवर्द्धन	प० विवेकप्रिय मुने , सागरचन्द्र शा०
प चैनौ	चारित्रवर्द्धन	प० अभयमूर्त्ति मुने , जिनरत्न शा०
प वेलौ	विद्यावर्द्धन	प० दानप्रभ मुने , जिनभद्र शा०
प लखमौ	लक्ष्मीवर्द्धन	प० सुमतिसोम मुने , जिनरत्न शा०
प. सालगौ	सुमतिवर्द्धन	प विनीतसुन्दर मुने , जिनसुख शा०
प रामकृष्ण	रगवर्द्धन	प सदाधीर मुने , कीर्त्तिरत्न शा०

प अमरो आनंदवर्द्धन प महिमाकल्याण मुने, क्षेम शा०
प डूंगर दयावर्द्धन वा० महिमरुचि गण, कीर्त्तिरत्न शा०
पं दोलो देवर्द्धन प दयाकमल मुने, सागरचन्द्र शा०
प सेवो सदावर्द्धन प क्षमाप्रभ मुने पौत्र, जिनमाणिक्य शा०
प मोती मानवर्द्धन वा० हस्तिशेखर गणे, जिनलाभ शा०
प अमरो अमृतवर्द्धन प० श्रीतत्त्वधर्म्म गणे, पौत्र, जिनलाभ

॥ सं० १८५१ मा। सु। १ भ० श्रीजिनचन्द्र सूरिभि १४ 'भद्र' नंदिः कृता। श्रीपालीनगरे ॥

प नेतो नित्यभद्र प० रत्नधीर मुने, कीर्त्तिरत्न शा०
प वखतो विनयभद्र प० क्षेममाणिक्य मुने, क्षेम शा०
प गुलावो ज्ञानभद्र प० विवेकोदय, जिनभद्र शा०
प सागर सत्यभद्र प० गजविनय मुने, क्षेम शा०
प देवो दयाभद्र प० रत्नकमल, जिनभद्र शा०
प पीथो प्रीतिभद्र प० भक्तिकल्याण, क्षेम शा०
प लखमो लक्ष्मीभद्र प० जयसुन्दर, क्षेम शा०
प माणको मानभद्र प० धर्मोदय मुने, क्षेम शा०
प कपूरो कर्पूरभद्र प० सत्यविनय मुने, जिनचन्द्र शा०
प. गोर्द्धन गगभद्र प० नित्यरुचि मुने, क्षेमकीर्त्ति शा०
प. ईसर इलाभद्र प० सत्यदत्त मुने जिनचन्द्र शा०
प अमरो अमरभद्र प० क्षेममूर्ति मुने जिनचन्द्र शा०
प. वर्द्धमान विजयभद्र प० कीर्त्तिकुमार मुने, जिनचन्द्र शा०
प रूपो रगभद्र प० कीर्त्तिकुमार मुने जिनचन्द्र शा०
प. भैरो भाग्यभद्र प० कन्चशील, क्षेमकीर्ति
प श्रीचद श्रीभद्र प० चतुरनिधान मुने, सागरचन्द्र त शा०
प रामो राजभद्र प० सुखसार मुने, कीर्त्तिरत्न शा०
प. वखतो वीरभद्र प० गुणकल्याण मुने, सागरचन्द्र शा०
प शभु सुगुणभद्र प० मूर्त्तिहेम मुने, जिनभद्र शा०
प केशर कनकभद्र प० नित्यरुचि मुने, क्षेमकीर्त्ति शा०
प खुश्यालो क्षेमभद्र वा० विवेकसागर गणे. पौत्र
प गोडीदत्त गुणभद्र प० रगदत्त मुने, जिनचन्द्र शा०

प	मानौ	माणिक्यभद्र	प० मतिप्रभमुने
प	गोविन्द	गजभद्र	प० धनसुन्दर मुने , जिनरत्न शा०
प	भाग्यचन्द्र	भीमभद्र	प० गजधर गणे , जिनरत्न शा०
प	अमियौ	अभयभद्र	प० जितविजय मुने (जावग्रामे) जिनभद्र शा०
प	हेमौ	हर्षभद्र	वा० रगभद्र मुने , जिनभद्र शा०
प	जयचन्द्र	युक्तिभद्र	वा० गजधर गणे , जिनरत्न शा०
प	रतनौ	रत्नभद्र	प० मुनिकल्याण मुने , जिनचन्द्र शा०
प	अमरौ	उदयभद्र	प० कनकभद्र मुने , क्षेमकीर्त्ति शा०
प	श्यामजी	सुमतिभद्र	वा० युक्तिभक्ति गणे पौत्र, (जूनागढे)
प	माहलजी	मेरुभद्र	वा० युक्तिभक्ति गणे पौत्र (जूनागढे)
प	टीकम	तिलकभद्र	वा० युक्तिभक्ति गणे पौत्र (जूनागढे)
प	खीमौ	क्षातिभद्र	वा० युक्तिभक्ति गणे पौत्र (जूनागढे)
प	रतनौ	ऋद्धिभद्र	वा० कमलकलश गणे पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प	जसवत	जयभद्र	प० कनकशेखर मुने , क्षेमशाखा
प	भीमौ	भुवनभद्र	प० भाग्यमूर्त्ति गणे पौत्र, सागरचन्द्र शा०

।। सं० १८५२ पोह सुदि ११ भ० श्रीजिनचन्द्रसूरिजी १५ 'हर्ष' नन्दी कृता पाटण नगरे ।।

(सं० १८५२ श्री जिनचन्द्रसूरिजी राधनपुरे चातुर्मास कर्‌यौ)

प	शोभौ	सुगुणहर्ष	प० प्रभनन्दन मुने , क्षेमशा०
प	दुलीचन्द	देवहर्ष	प० भानुचन्द्र मुने , जिनरत्न शा०
प	लक्ष्मीचन्द	लाभहर्ष	प० हितप्रभ मुने , क्षेमशा०
प	नृवौ	क्षमाहर्ष	प० हितप्रभ मुने , क्षेम शा०
प	सरूपौ	सुमतिहर्ष	प० धर्मकल्याण मुने क्षेम शा०
प	श्रीचन्द	सौभाग्यहर्ष	प० जयमाणक्य गणे प्रपौत्र
प	ऊदौ	आणदहर्ष	वा० कमलकलश गणे , जिनचन्द्र शा०
प	लालौ	लब्धिहर्ष	प० विनयभद्र मुने , क्षेम शा०
प	वखतौ	विनयहर्ष	प० देवकुमार मुने , क्षम शा०
प	खुश्यालौ	क्षान्तिहर्ष	उ० ज्ञानविनय गणे , जिनभद्र शा०
प	धरमौ	धर्महर्ष	वा० पुण्यशील गणे प्रपौत्र, क्षेम शा०

प	फतो	पुण्यहर्ष	वा० विजय गणे, कीर्तिरत्नशा०
प	अभो	अभयहर्ष	प० जयरंग मुने, जिनचन्द्रशा०

॥ सं० १८५४ फा० सु० ५ श्री जिनचन्द्रसूरिभि १६ 'वल्लभ' नन्दी कृता अहमदाबाद नगरे ॥

प	माणको	माणक्यवल्लभ	वा० रत्नसोम गणे पौत्र, क्षेमशा०
प	देवो	देववल्लभ	वा० रत्नसोम गणे पौत्र, क्षेमशा०
प	खूबो	क्षमावल्लभ	वा० रत्नसोम गणे पौत्र, क्षेमशा०
प	मोती	महिमावल्लभ	प० भाग्यहेम मुने, जिनचन्द्रशा०
प	उमेदो	आणदवल्लभ	वा० लक्ष्मीराज गणे प्रपौत्र, जिनभक्ति शा०

□ □

श्री जिनहर्षसूरि

॥ सं० १८५६ वर्षे शाके १७३१ प्रमिते माह मासे शुभ धवल दले १३ भृगौ भट्टारक श्रीजिनहर्षसूरिभि १ 'आनन्द' नन्दी कृता श्रीसूरतनगरे ॥

प	हरचन्द	हेमानन्द	प० क्षमाकमल मुने, क्षेम शा०
प	हिमो	भाग्यानन्द	प० क्षमारुचि मुने, जिनराज शा०
प	डूगर	दयानन्द	प० ज्ञानप्रिय मुने
प	उत्तमो	उदयानन्द	प० गजविनय मुने, क्षेमकीर्त्ति शा०
प	रतनो	रत्नानन्द	प० उदयहेम मुने पौत्र, जिनराज शा०
प	गोविन्द	गुणानन्द	वा० क्षमाकल्याण गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०
प	ज्ञानो	ज्ञानानन्द	वा० क्षमाकल्याण गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०
प	रतनो	राजानन्द	प० कीर्त्तिसार मुने, क्षेमकीर्त्ति शा०
प	खुश्यालो	क्षमानन्द	प० महिमाधर्म गणे, जिनलाभ शा०
प	अमरो	अभयानन्द	प० मयासुन्दर मुने, जिनरत्न शा०
प	मरूपो	लाभानन्द	उ० तत्त्वधर्म गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०
प	सुखो	सहजानन्द	उ० तत्त्वधर्म गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०
प	वीरो	विद्यानन्द	प० सदावर्द्धन मुने, जिनमाणिक्य शा०
प	अमरो	अमृतानन्द	प० विनयदत्त मुने, जिनचन्द्र शा०
प	खुश्यालो	क्षेमानन्द	प० शोभनन्द मुने, जिनभद्र शा०
प	देवो	दर्शनानन्द	प० चारित्रप्रिय मुने, जिनमाणिक्य शा०

प गिरधर गजानन्द प० विनीत मुने , जिनसुख० शा०
प. वीको विजयानन्द वा० सुमतिधीर गणे पौत्र, सागरचन्द्र० शा०
प माणको महिमानन्द प० सत्यविनय मुने , जिनचन्द्र० शा०
प गिरधर ज्ञानानन्द प० चारित्रप्रमोद गणे पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प मरूपो सुगणानन्द प० हम मुने. जिनचन्द्र० शा०
प भैरो भाग्यानन्द प० अमरशेखर मुने , जिनराज० शा०
पं कानो कमलानन्द प० जीवदत्त मुने, कीर्त्तिरत्न० शा०
प निहालो नित्यानन्द प० दीपसुन्दर मुने पौत्र, क्षेम शा०
प. जैतो जयानन्द प० जयमूर्त्ति मुने , जिनचन्द्र० शा०
प० खुस्यालो क्षेमानन्द प० लब्धिकमल मुनेः, जिनसुख० शा०

॥ संवत् १८५७ मा. व. १३ चन्द्रे श्री जिनहर्षसूरिभि २ 'सौभाग्य' नन्दी कृता सोझित मध्ये ॥

प उदो अमरसौभाग्य वा० मतिधर्म गणे. पौत्र, जिनचन्द्र० शा०
प लालो लक्ष्मीसौभाग्य प० कीर्त्तिविजय मुने , सागरचन्द्र० शा०
प श्यामो सत्यसौभाग्य वा० रत्नधर्म गणे प्रपौत्र, सागरचन्द्र० शा०
पं. माहीदास मूर्त्तिसौभाग्य वा० रत्नसार गणे पौत्र
प उमेदो उदयसौभाग्य प० विनयहम मुने पौत्र, जिनचन्द्र० शा०
प. फतो प्रतापसौभाग्य वा० अमृतसुन्दर गणे. पौत्र, कीर्त्तिरत्न०शा०
पं चैनो चारित्रसौभाग्य प० दानकमलमुने प्रपौत्र, जिनभद्र० शा०
पं फतो प्रीतिसौभाग्य वा० मतिधर्म गणे पौत्र, जिनचन्द्र० शा०
पं. दीपो दानसौभाग्य प० हितशेखर मुने
प गुलाबो ज्ञानसौभाग्य श्रीजिताम्
प मनरूप महिमासौभाग्य प० अमृतप्रभ, जिनचन्द्र० शा०
प जयचन्द जयसौभाग्य प० तिलककीर्त्ति मुने पौत्र, जिनचन्द्र० शा०
पं रूपो रत्नसौभाग्य प० कनककुशल मुने
प नाथो नीतिसौभाग्य प० गुणभद्र मुने , जिनचन्द्र० शा०

॥ स० १८६१ वर्षे मिती चैत्र सुदि १० विजयदशम्यां गुरुवारे भट्टारक श्री जिनहर्षसूरिभि. तृतीय ३ 'सागर' नन्दी कृता श्री सिणधरी मध्ये ॥

प. लालो लक्ष्मीसागर वा० कुशलसौभाग्य गणे प्रपौ० जिनराजशा०
प. हुकमो हर्षसागर उ० श्रीगुणकुमार गणे प्रपौ० जिनभद्र०शा०

प	सदानन्द	सत्यसागर	प० ऋद्धिरत्न मुने, जिनलाभ० शा०
प	सुखौ	समयसागर	वा० विद्याप्रिय गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्न० शा०
प	मगनौ	मतिसागर	वा० कनकधर्म गणे पौत्र, जिनचन्द्र० शा०

॥ मिती जेठ बदि ११ सोमवारे श्री पादरू मध्ये ॥

प	रूपौ	रत्नसागर	प० क्षेमभद्रमुने, क्षेम० शा०

॥ मिती मिगसर सुदि २ दिने जाणीया मध्ये ॥

प	कपूरौ	कर्पूरसागर	उ० हीरधर्म गणे पौत्र, जिनलाभ० शा०
प	रतनौ	रगसागर	उ० उदयधर्म गणे प्रपौत्र, जिनभद्र० शा०
प	आसौ	अमृतसागर	वा० ज्ञानवल्लभ गणे प्रपौत्र, जिनभद्र शा०
प	रूपौ	राजसागर	उ० हीरधर्म गणे पौत्र, जिनलाभ० शा०
प	मेघौ	महिमासागर	प० मयासुन्दर मुने,
प	रुघौ	रूपसागर	प० मयाकल्याण मुने
प	पेमौ	पद्मसागर	प० रत्नधीर मुने
प	मगनौ	मुक्तिसागर	प० युक्तिसार मुने, जिनराज० शा०
प	जसौ	युक्तिसागर	प० आनन्दप्रिय पौत्र, जिनभद्र० शा०
प	फरसौ	प्रमोदसागर	प० प्रीतिहर्ष मुने, जिनसिंह० शा०
प	उतमौ	उदयसागर	
प	शिवौ	शिवसागर	
प	कस्तूरौ	कल्याणसागर	वा० अमृतसुन्दर गणे प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प	नाथू	नयसागर	जिनभद्र० शा० कृता [तपागच्छादत्रे आगत]
प	रननौ	रगसागर	प० भक्तिकल्याण मुने प्रपौत्र, क्षेम शा०
प	भीमौ	भक्तिसागर	प० हर्षसुन्दर मुने, जिनसिंह० शा०
प	रामौ	लाभसागर	प० सत्यधीर मुने जिनभद्र० शा०
प	गुलावौ	ज्ञानसागर	प० विवेकमूर्ति मुने, जिनभद्र० शा०
प	खुश्यालौ	कीर्त्तिसागर	वा० महिमाकल्याण गणे पौत्र, क्षेम० शा०
प	रावत	ऋद्धिसागर	वा० दयाराज गणे, क्षेम शा०
प	नथू	न्यासागर	प० तत्त्वकल्याण मुने पौत्र, क्षेम शा०
प	नगौ[1]	ज्ञानसागर	प० विवेकजय मुने पौत्र

१ स० १८६३ आषा व १२ साहिला मध्ये।

प	तखतौ[1]	तिलकसागर	श्रीजिताम्
प	सदासुख	सुखसागर	प० प्र ज्ञानसार मुने, जिनलाभ शा०
प	कुशलौ	कनकसागर	वा० लावण्यकमल गणे. प्रपौत्र, जिनचन्द्र शा०
प	अमरौ	अमृतसागर	प० विनीतसागर मुने प्रपौत्र, जिनसुख शा०
प	रतनौ	राजसागर	वा० पुण्यशील गणे प्रपौत्र, क्षेमशा०
प	जोरौ[2]	जयसागर	प० विद्याशील मुने पौत्र
प	मनरूप	मानसागर	प० आणन्दप्रिय मुने पौत्र, जिनभद्र शा०
प	माणकौ	मुक्तिसागर	प० विनीतसुन्दर मुने. पौत्र, जिनसुख शा०
प	हीरौ[3]	हर्षसागर	वा० विद्याप्रिय गणे, कीर्त्तिरत्न शा०
प	विज्जौ	विनयसागर	प० सत्यराज गण प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प.	ऋषभौ	रामसागर	प० सत्यराज गणे प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प	गिरधारी	ज्ञानसागर	प० कीर्त्तिविजय मुने, सागरचन्द्र शा०
प	देवौ	दानसागर	वा० लक्ष्मीप्रभ गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०
प	खेमौ	क्षमासागर	वा० लक्ष्मीप्रभ गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०
प	हीरौ	हेमसागर	प० अभयमूर्त्ति गणे. पौत्र, जिनरत्न शा०
प	कस्तूरौ	कीर्त्तिसागर	प० अभयमूर्त्ति गणे पौत्र, जिनरत्न शा०
प	चतुरौ	चारित्रसागर	प० रत्नसार मुने पौत्र, क्षेम शा०
प	वच्छौ	विवेकसागर	प० आणदराज गणे, जिनचन्द्र शा०
प	दौलौ	दिनेन्द्रसागर	वा० हितधीर गणे पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प	दयाचन्द	दयासागर	जिनभद्र शा०
प	दौलौ	दिनेन्द्रसागर	प० अमृतहेम मुने पौत्र, क्षेम शा०
प	भीमौ	भक्तिसागर	प० नित्यरुचि गणे पौत्र, क्षम शा०

॥ स० १७६४ मृगशिर वदि ५ भ० श्रीजिनहर्षसूरिभि ४ 'कल्लोल' नन्दी कृता ॥

प.	वछौ	विनयकल्लोल	प० सौभाग्यसुन्दर मुने पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प	माणकौ	मानकल्लोल	वा० लावण्यकमल गणे पौत्र, जिनभद्र शा०

---

१ स० १८६३ आषा सु १० भाव सु दीक्षा लीधी सखवाल गोत्रे। वासी गुढा ना जालोर मध्ये ॥

२ स १८६३ पौष वदी ३ ३ कुण्डल ग्रामे

प. रायचन्द रायकल्लोल महो० श्री कीर्त्तिधर्म गणे पौत्र, जिनभद्र शा०
प रतनौ रगकल्लोल प० सुगुण प्रमोद मुने , जिनचन्द्र शा०
प वालौ विवककल्लोल वा० पुण्यप्रिय गणे पौत्र, जिनराज शा०
प. गुमानौ ज्ञानकल्लोल प० विवेककल्याण गणे पौत्र, जिनलाभ शा०
प शिवौ[1] सदाकल्लोल प० सत्यहेम मुने जिनचन्द्र शा०
पं पदमौ[2] प्रीतिकल्लोल वा० पुण्यधर्म गणे पौत्र, जिनभद्र शा०
प. हुकमौ[3] हर्षकल्लोल वा० रूपधीर गणे. पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प मेहरौ महिमाकल्लोल प० लक्ष्मीराज गणे प्रपौत्र, जिनभक्ति शा०
प. किसनौ कीर्त्तिकल्लोल प० सत्यमूर्त्ति मुने प्रपौत्र, जिनभक्ति शा०
प ज्ञानौ गजकल्लोल प० धर्मोदय मुने , क्षेमशा०
प ऊदौ आणदकल्लोल प० गजविनय मुने पौत्र, क्षेमशा०
प चैनौ चारित्रकल्लोल प० लब्धिचन्द्र मुने पौत्र, क्षेमशा०

॥ स० १८६५ मा० सु० १० भ० श्री जिनहर्षसूरिभिः ५ 'भक्ति' नन्दी कृता सीरोही मध्ये ॥

प ऊदौ उदयभक्ति वा० चारित्रप्रमोद गण पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प. जीवौ जयभक्ति वा० माणिक्यराज गणे पौत्र, जिनसुख शा०
प रूपौ रगभक्ति वा० माणिक्यराज गणे पौत्र, जिनसुख शा०
प. प्रेमौ प्रीतिभक्ति वा० क्षमाहेम गणे , जिनचन्द्र शा०
प भवानौ भाग्यभक्ति प० मुक्तिरग मुने क्षेम शा०
प. वृद्धिचन्द्र विनयभक्ति प० जयदत्त गणे पौत्र, क्षेम शा०
प भोजौ भुवनभक्ति वा० प्रीतिविलास गणे प्रपौत्र, क्षेम शा०
प. खुश्याल क्षेमाभक्ति वा० भाग्यविलास गणे प्रपौत्र, क्षेम शा०
प खुश्याल क्षमभक्ति प० रत्ननन्दन मुने प्रपौत्र, क्षेम शा०
प खुश्याल क्षातिभक्ति प० गुणभद्र मुने. प्रपौत्र, जिनचन्द्र शा०
प पीथौ पुण्यभक्ति प० गुणभद्र मुने प्रपौत्र, जिनचन्द्र शा०
प सावत सत्यभक्ति प० गुणभद्र मुने प्रपौत्र, जिनचन्द्र शा०
प मोतो महिमाभक्ति उ० क्षमाकल्याण गणे प्रपौत्र, जिनभक्तिशा०

---

१ २ ३ समदडी मध्ये

प देवानन्द	दयाभक्ति	उ० श्री उदयवर्म गणे. प्रपौत्र, जिनभद्र शा०
प ज्ञानौ	ज्ञानभक्ति	उ० श्री उदयधर्म गणेः प्रपौत्र, जिनभद्र शा०
प. मनरूप	सुमतिभक्ति	पं० भीमविजय मुने, जिनचन्द्र शा० वा० सुमतिधर्म पौत्र
प सदासुख	सदाभक्ति	वा० भावविजय गणेः, कीर्त्तिरत्न शा०
प फत्तौ	पुण्यभक्ति	प० ज्ञाननिधान, कीर्त्तिरत्न शा०
प रूपौ	राजभक्ति	वा० गजधर्म गणे. प्रपौत्र, जिनरत्न शा० प० जयभद्र शि०
प गुलाबौ	ज्ञानभक्ति	प० चारित्रविनय, क्षेम शा०

॥ स० १८६७ चैत्र सुदि ८ दिने ६ श्रीजिनहर्षसूरिभि. 'विलास' नन्दी कृता श्री जीर्णदुर्ग मध्ये ॥

प रूपौ[1]	रंगविलास	वा० लक्ष्मीसोम गणे. पौत्र, जिनभद्र शा०
प. प्रेमौ[2]	प्रीतिविलास	वा० लक्ष्मीसोम गणे पौत्र, जिनभद्र शा०
प खुस्यालौ	क्षेमविलास	प० कीर्त्तिसोम मुने., जिनभद्र शा०
प जीवराज	जीतविलास	प० कीर्त्तिसोम मुने, जिनभद्र शा०
प. भैरौ[3]	भक्तिविलास	प० रामविजय मुने. शिष्य, जिनभद्र शा०
प जसौ[4]	जीतविलास	प० ज्ञानभद्र मुने शिष्य, जिनभद्र शा०
पं उमेदौ	उदयविलास	प० ज्ञानभद्र मुने शिष्य, जिनभद्र शा०
प जीवौ	युक्तिविलास	पं० विद्याशील मुनेः पौत्र, क्षेम शा०
पं रतनौ	रत्नविलास	प० रत्नधीर मुने· पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प धरमौ	धर्म्मविलास	उ० श्री चारित्रोदय गणे. पौत्र, कीर्त्ति० शा०
प प्रेमौ	प्रेमविलास	वा० जयसार गणे पौत्र, क्षेमशा०
प देवौ	दयाविलास	वा० कनकशेखर गणे पौत्र, क्षेम शा०
प ऊदौ	अमृतविलास	वा० कनकधर्म गणेः पौत्र, जिनचन्द्र शा०
पं हंसराज	हंसविलास	श्रीजित्राम्
प रामौ	रत्नविलास	वा० पुण्यशील गणेः प्रपौत्र, क्षेमशा०
प संतोषौ	सत्यविलास	वा० क्षेमहेम गणे पौत्र, जिनचन्द्र शा०

१ २ जूनागढे ३ ४ पालीताणा मध्ये

प	रतनौ	रंगविलास	प० रत्नप्रभ मुने पौत्र, क्षेम शा०
प	वीरचन्द	विद्याविलास	वा० कनकशेखर गणे पौत्र, क्षेम शा०
प	मगनौ	मेरुविलास	वा० सुगुणहेम गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प	गुणीयौ	ज्ञानविलास	वा० सुगुणहेम गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प	अणदौ	आणदविलास	वा० सुगुणहेम गणे. पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प.	हीरौ	हिम्मतविलास	वा० दयाकमल गणेः पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प	सदासुख	सुखविलास	उ० श्री रत्नसुन्दर गणे पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प	भग्गौ	भाग्यविलास	प० मानभद्र मुने, क्षेम शा०
प	मनरूप	मानविलास	वा० रत्नधर्म्म गणे प्रपौत्र, सागरचन्द्र शा०
प	रूपौ	रूपविलास	उ० अमरविमल गणे प्रपौत्र, कीर्त्ति०शा०
प	साहिवौ	सदाविलास	वा० अमृतसुन्दर गणे. प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्न०शा०
प	अमीयौ	अभयविलास	वा० अमृतसुन्दर गणे प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्न०शा०
प	कपूरौ	कनकविलास	वा० अमृतसुन्दर गणे. पौत्र, कीर्त्तिरत्न०शा०
प	रामौ	राजविलास	उ० अमरविमल गणे प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्न०शा०
प	हरखीयौ	हेमविलास	प० ज्ञानकीर्त्ति मुने, क्षेमशा०
प	देवराज	दानविलास	प० कीर्त्तिसार मुनेः पौत्र, क्षेमशा०
प	कमलौ	कीर्त्तिविलास	उ० उदयधर्म गण प्रपौत्र, जिनभद्र शा०
प	मनरूप	मौजविलास	प० उदयहेम मुने. पौत्र, जिनराज शा०
प	हर्षचन्द	हर्षविलास	प० हसविनय मुने., जिनचन्द्र शा०
प	भानौ	भुवनविलास	वा० ज्ञानहेम गणे, जिनराज शा०
प	गुलाबौ	गुणविलास	वा० सुमतिधीर गणे. पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प	लच्छौ	लक्ष्मीविलास	वा० सुमतिधीर गण. पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प	रुघौ	ऋद्धिविलास	वा० सुमतिधीर गणे. पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प	शिवौ	सुमतिविलास	प० दत्तधीर गणे. पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प	पदमौ	पद्मविलास	प० दत्तधीर गणे. पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प.	रतनौ	ऋद्धिविलास	वा० जयधीर गणे क्षेमशा०
प.	मूलौ	मतिविलास	प० धनसुन्दर मुने, जिनरत्न शा०
प	गौडौ	गजविलास	वा० ज्ञानकमल गणे, क्षेमशा०
प	लखौ	लब्धिविलास	वा० विद्याहेम गणे, कीर्त्तिरत्न शा०
प	रतनौ	रामविलास	वा० विद्याहेम गणेः, कीर्त्तिरत्न शा०
प	धनसुख	धर्मविलास	प० दर्शनप्रिय मुने., कीर्त्तिरत्न शा०

प चन्दौ	चारित्रविलास	प० दर्शनप्रिय मुने , कीर्त्तिरत्न शा०
प. परतापौ	पुण्यविलास	वा० विद्याहेम गणे , कीर्त्तिरत्न शा०
प वालौ	विवेकविलास	प० भानुसुन्दर मुनेः, कच्छदेशीय
पं वखतौ	वखतविलास	प० पुण्यराज मुने पौत्र
पं रूपौ	ऋद्धिविलास	वा० जससार गणे. पौत्र, क्षेमशा०
प तेजौ	तत्त्वविलास	प० प्र. युक्तिधीर मुने. पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प. वल्लभौ[1]	विजयविलास	वा० महिमाधर्म गणे. पौत्र,
प खेतौ	क्षमाविलास	वा० सुखहेम गणे पौत्र, जिनभद्र शा०

।। स० १८६७ वर्षे शाके १७३३ प्रमिते मिती पौष शुक्लैकादश्यां भट्टारक श्री जिनहर्षसूरिभि ७ 'विमल' नन्दी कृता खारीया ग्रामे ।।

प खूबौ	क्षमाविमल	प० गुणसार मुनेः, जिनचन्द्र शा०
प. चन्दौ	चारित्रविमल	प० हस्तप्रिय मुने , जिनचन्द्र शा०
प हुकमौ	हेमविमल	वा० सुखहेम गणे पौत्र, जिनभद्र शा०
प. विनयचन्द	विवेकविमल	उ० रत्नसुन्दर गणे पौत्र, जिनचन्द्र शा०
पं आसौ[2]	आनन्दविमल	वा० महिमाधर्म गणे. पौत्र, जिनलाभ शा०
प खुश्यालौ	क्षेमविमल	प० सत्यविनय मुने. पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प ऊदौ	उदयविमल	वा० हितधीर गणे. पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प वालौ	विजयविमल	प० धर्मसुन्दर मुने पौत्र, क्षेम शा०
पं विनीयौ	विनयविमल	प० मानहस मुने , जिनराज शा०
पं. प्रेमौ	प्रीतिविमल	प० रगसोम मुने
पं. रूपलौ	राजविमल	प० रगसोम मुने.

।। स० १८६८ मिती वैशाख सुदि २ देशणोक ग्रामे उगमणेवास चउमास कर्यौ ।।

प राहू	रगविमल	वा० महिमारुचि गणेः पौत्र, कीर्त्ति० शा०
प. खेमौ	कीर्त्तिविमल	वा० महिमारुचि गणे. पौत्र, कीर्त्ति० शा०
प. हरसुख	हर्षविमल	प० जयरत्न गणे , जिनचन्द्र शा०

---

१ श्रीजी चतुरग कु वगसीस कर्यो । २ प्रसिद्ध नाम कस्तूरो

प. खेमौ खुश्यालविमल प० जयरत्न गणे, जिनचन्द्र शा०
प जीवण युक्तिविमल प० तत्वकुमार मुने पौत्र, सागर० शा०
प ज्ञानी ज्ञानविमल प० चारित्रमेरु मुने, वा० खुश्यालहेम पौत्र
प हेमौ हसविमल प० सौभाग्यसुन्दर मुने पौत्र, जिनभद्र शा०
प खुस्यालौ क्षान्तिविमल प० चित्तसिन्धुर मुने, जिनभद्र शा०
प लालौ लक्ष्मीविमल प० अमृतसुन्दर मुनेः पौत्र,
प वखतौ विद्याविमल प० भाग्यमूर्त्ति मुने पौत्र, जिनसागर शा०
पं शिवौ सोभाग्यविमल वा० धर्म्मचन्द्र गणे पौत्र, जिनभद्र शा०
प रूपौ रूपविमल वा० युक्तिधीर गणे पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प रुघौ रत्नविमल वा० चारित्रमूर्त्ति गणे.
प खेतौ क्षातिविमल प० गुणकल्याण मुने पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प नैणौ नित्यविमल प० प्रातिसुन्दर मुने. पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प नवलौ न्यायविमल प० प्रीतिसुन्दर मुने पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प दौलौ दानविमल उ० श्री ज्ञानविनय गणे पौत्र, जिनभद्र शा०
प मगनौ माणिक्यविमल वा० राजप्रिय गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०

।। सवत् १८६८ मिति मिगसर सुदि १० दिने शीतला रै दरवाजै माहि तंबू जाल कनै खडो कीयौ, उठा सु वाजा वजावता उपाश्रय आया ।।

प रामौ[1] रामविमल उ० श्रीरत्नसुन्दर गणे पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प दलौ दयाविमल प० श्रीरत्नमुने सागरचन्द्रशा०
प वालकृष्ण वुद्धिविमल प० कनकमेरु मुने., सागरचन्द्र शा०
प देवचन्द्र दयाविमल प० वीरभद्र मुन, सागरचन्द्र शा०

।। स० १८६८ मा० सुदि १० गुरौ ।भ। श्री जिनहर्षसूरिभि ८ 'मन्दिर' नन्दी कृता बीकानेरे ।।

प खुस्यालौ खुश्यालमन्दिर प० हर्षप्रिय मुने, कीर्त्तिरत्न शा०
प तखतौ तीर्थमन्दिर प० आणदवल्लभ गणे पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प नवलौ न्यायमन्दिर वा० आणदप्रिय गणे पौत्र, जिनभद्र शा०

---

1 पो० व० ८

प फत्तौ　प्रतापमन्दिर　वा० अमरप्रिय गणे पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प पेमौ　प्रीतिमन्दिर　प० सुगुणप्रिय मुने पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प पेमौ　प्रीतिमन्दिर　प० रामरत्न मुने (कोटै रहै छै) जिनभद्र शा०
प चैतौ　चारित्रमन्दिर　प० सुगुणधीर मुने. पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प देवराज　देवमन्दिर　प० हर्षहंस मुने, कीर्त्तिरत्न शा०

॥ स० १८६६ प्रथम वैशाख सुदी ७ श्री बीकानेरे ॥

प रूपौ　रूपमन्दिर　उ० ज्ञानविनय गणे. पौत्र, जिनभद्र शा०
प अखौ　अभयमन्दिर　प० आणंदरत्न गणे शिष्य, जिनचन्द्र शा०
प रामौ　रत्नमन्दिर　प० माणिक्यजय मुने· शिष्य, सागरचन्द्रशा०
प हरखौ　हर्षमन्दिर　प० महिमासोम मुने शिष्य, जिनभक्ति शा०
प प्रेमौ　पुण्यमन्दिर　वा० ज्ञानवल्लभ गणे प्रपौत्र, जिनभद्र शा०
प गुणचन्द्र　ज्ञानमन्दिर　वा० लावण्यकमल गणे प्रपौत्र
प सरूपौ　सुखमन्दिर　वा० लावण्यकमल गणे प्रपौत्र
प रामचन्द　रगमन्दिर　वा० लावण्यकमल गणे प्रपौत्र
प गणेश　ज्ञानमन्दिर　प० कीर्त्तिविजय मुने पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प चिमनौ　चित्रमन्दिर　वा० युक्तिधीर गणे पौत्र
प. आणदौ　आणदमन्दिर　वा० जयसार गणे पौत्र, क्षेमशा०

॥ स० १८६६ मि। मिगसर बदि ६ बीकानेरे ॥

प लालौ　लक्ष्मीमन्दिर　उ० श्री विद्याहेम गणे पौत्र, कीर्तिरत्न शा०
प हेमौ　हर्षमन्दिर　प० प्र ज्ञाननिधान मुने
प कानौ　कल्याणमन्दिर　वा० सुमतिसोम गणे पौत्र
प गुलाबौ　गुणमन्दिर　प० चतुरनिधान गणे पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प डूगर　राजमन्दिर　प० प्र जीतरग गणे
प गुणीयौ　गुणमन्दिर　प० प्र जीतरग गणे
प दानौ　दयामन्दिर　प० प्र जयरत्न गणे.
प. जसौ　जयमन्दिर　वा० सुमतिसोम गणे पौत्र
प अमौ　अखयमन्दिर　वा० सुमतिसोम गणे प्रपौत्र
प खुश्यालौ　खुस्यालमन्दिर वा० सुमतिधीर गणे: पौत्र

प चन्दो　चित्रमन्दिर　प० तिलककीर्त्ति गणे पौत्र
प गुलाबो　गजमन्दिर　वा० महिमाकल्याण गणे पौत्र, क्षेम शा०
प धन्नो　सुमतिमन्दिर　प० सुमतिभक्ति मुने, जिनचन्द्र शा०
प हसो　हर्षमन्दिर　प० सुमतिभक्ति मुने, जिनचन्द्र शा०
प केवल　कुशलमन्दिर　श्रीजिनाम्

।। स० १८६९ मा० सु० १० भ० श्री जिनहर्षसूरिभि ९ "विशाल" नन्दो कृता बीकानेरे ।।

प हेमो　हर्षविशाल　श्रीजिनाम्
प सुग्तो　सौभाग्यविशाल श्रीजिताम्
प शिवलाल　सुखविशाल　प० गुणप्रभ मुने, कीर्त्तिरत्न शा०
प विनैचन्द　विजयविशाल　प० रत्ननन्दन मुने, क्षेम शा०
प सामत　सुमतिविशाल　उ० अमृतसुन्दर गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प चतुरो　चन्द्रविशाल　प० प्र ज्ञानसार गणे पौत्र, जिनलाभ शा०
प जयचन्द[1]　जगतविशाल　प० ज्ञाननिधान गणे, कीर्त्तिरत्न शा०
प सरूपो　सौभाग्यविशाल वा० भावविजय गणे पौत्र
प अभो　अमृतविशाल　वा० भावविजय गणे पौत्र
प श्रीपाल　श्रीविशाल　वा० भावविजय गणे पौत्र
प हुकमो　हर्षविशाल　प० ज्ञाननिधान मुने पौत्र
प कस्तूरो　कीर्त्तिविशाल　वा० लब्धिकमल गणे पौत्र
प देवो　दानविशाल　वा० लब्धिकमल गणे पौत्र
प नन्दो　नेत्रविशाल　प० शान्तिसमुद्र गणे
प जगमाल　जीतविशाल　प० शान्तिसमुद्र गणे
प मोहण　मोहनविशाल　वा० राजप्रिय गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०
प ज्ञानो[2]　ज्ञानविशाल　वा० चारित्रसमुद्र गणे
प पदमो　प्रीतिविशाल　प० हीरसमुद्र मुने
प अमरो　आणदविशाल　प० हीरसमुद्र मुने

---

१ स० १८६९ फा सु ७ श्रीरतनगढे।

२ स० १८६९ चैत्र वदि ११ चूरू मध्ये।

।। स० १८७० ज्येष्ठ वदि १ दिने सीकर मध्ये ।।

प हेमौ हर्षविशाल वा० भावविजय गणे. पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०

।। स० १८७० वर्षे शाके १७३५ मिते जेठ बदि ६ जयनगरे चातुर्मास कृता ।।

प खुस्यालौ क्षमाविशाल प० कमलप्रमोद मुने. पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प जयचन्द जगद्विशाल वा० ज्ञानवल्लभ गणे. प्रपौत्र, जिनभद्र शा०
प पदमौ पुण्यविशाल प० गुणप्रमोद मुने पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प लखमौ लक्ष्मीविशाल प० कमलप्रमोद मुने पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प मोती महिमाविशाल प० शिवचन्द्र गण पौत्र, क्षेम शा०
प मनसुख माणिक्यविशाल प० शिवचन्द्र गणे. पौत्र, क्षेम शा०
प परमानन्द पद्मविशाल प० गजविनय मुने पौत्र, क्षेम शा०
प धरमौ धर्म्मविशाल उ० श्री क्षमाकल्याण गणे पौत्र, जिनभक्ति०
प मोती मुक्तिविशाल उ० अमृतसुन्दर गणे. प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्न०
प करमौ कनकविशाल उ० अमृतसुन्दर गणे प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्न०
प देवौ दानविशाल उ० अमृतसुन्दर गणे प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्न०
प तिलाकौ त्रैलोक्यविशाल महो० कीर्त्तिधर्म गणे. पौत्र, जिनभद्र०
प रुघौ राज्यविशाल वा० युक्तिहेम गणे, जिनभद्र शा०
प गोर्द्धन ज्ञानविशाल प० शिवचन्द्र गणे., क्षेम शा०
प सरूपौ सुखविशाल प० अमृतमेरु मुने, क्षेम शा०
प जोवौ जगद्विशाल प० प्र विवेककल्याण गणे पौत्र, जिनलाभ०
प महरचन्द मेरुविशाल उ० श्री हीरधर्म्म गणे. पौत्र, जिनलाभ०
प. भवानी भाग्यविशाल वा० कुशलकल्याण गणे. पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प विनौ विद्याविशाल प० विनयहेम गणे, जिनचन्द्र शा०
प सागर सौभाग्यविशाल वा० भाग्यधीर गणे, जिनचन्द्र शा०
प. भूधर भाग्यविशाल वा० भाग्यधीर गणे, जिनचन्द्र शा०

।। स० १८७१ आषाढ सु० ५ श्री अजीमगज नगरे १० 'कलश' नन्दी कृता ।।

प किशनौ कमलकलश प० शिवकल्याण, जिनचन्द्र शा०

प छज्जू	छत्रकलश	प० प्र मानधर्म गणे पौत्र
प कपूरो	कर्पूरकलश	उ० श्रीचारित्रमन्दिर, कीर्त्तिरत्न शा०
प. पेमो	पूर्णकलश	वा० महिमाधर्म, जिनलाभ शा०
प पूनमचन्द	पुण्यकलश	प० महिमासोम, जिनभक्ति शा०
प उमेदो	अमृतकलश	वा० चारित्रमूर्त्ति गणे. पौत्र, जिनलाभ शा०

।। सं० १८७२ वर्षे मिती मार्गशीर्ष कृष्ण ४ भ० श्रीजिनहर्षसूरिभिः ११ "धर्म्म" नन्दी कृता। श्री पूर्वदेशे बालूचर नगरे ।।

प लालो	लक्ष्मीधर्म	वा० कुशलकल्याण गणे पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प मयाचन्द	मेरुधर्म्म	उ० क्षमाकल्याण गणे प्रपौत्र जिनभक्ति शा०
प मनरूपो	माणिक्यधर्म	उ० शिवचन्द्र गणे प्रपौत्र, क्षेम शा०
प लालो	लाभधर्म्म	उ० अमृतसुन्दर गणे प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प धरमो	धीरधर्म	उ० अमृतसुन्दर गणे प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प केवल	कीर्त्तिधर्म्म	प० हर्षविजय मुने ,पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प हिमतो	हर्षधर्म्म	उ० जयमाणिक्य गणे प्रपौत्र, कीर्त्ति०शा०
प हसो	हेमधर्म्म	उ० शिवचन्द्र गणे पौत्र, क्षेम शा०
प सालगो	सोभाग्यधम्म	प० तत्त्वकुमार मुनि पौत्र, सागरचन्द्र शा०

।। स० १८७३ वर्षे मिती माह वदी ५ दिने श्री अजीमगज नगरे ।।

प कपूरो	कनकधर्म	वा० सुमतिधीर गणे पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प जेठो[1]	जीतधर्म	वा० युक्तिधीर गणे
प जैतो[2]	युक्तिधर्म	प० गुणकल्याण मुने

।। सं० १८७४ वर्षे मिती माघ वदि ६ दिने श्री अजीमगज नगरे ।।

प परमानन्द	पुण्यधर्म	प० न्यायनन्दन मुने सागरचन्द्र शा०
प रूपो	रत्नधर्म	प० न्यायनन्दन मुने , सागरचन्द्र शा०
प माणको	मानधर्म	प० भक्तिनन्दन मुने , सागरचन्द्र शा०
प ज्ञानो	गीतधर्म	प० भक्तिनन्दन मुने , सागरचन्द्र शा०

---

१ पश्चाच्छिष्य कृत   २ पश्चाच्छिष्य कृत

॥ स० १८७५ वर्षे मार्गशीर्ष शुक्ल १४ कीर्त्तिवाग मध्ये ॥

प सुगालो	सौभाग्यधर्म	वा० लावण्यकमल गणे प्रपौत्र, जिनचन्द्र शा०
प लालीयो	लावण्यधर्म	प० तत्त्वकुमार मुने पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प गगाराम	ज्ञानधर्म	उ० शिवचन्द्र गणे पौत्र, क्षेम शा०
प रायचन्द	रत्नधर्म	उ० शिवचन्द्र गणे पौत्र, क्षेम शा०
प मयाचन्द	मानधर्म	प० जयहस मुने शिष्य, क्षम शा०
प नगराज	न्यायधर्म	प० जयहस मुने शिष्य, क्षेम शा०
प रामचन्द	रगधर्म	प० जयहस मुने शिष्य, क्षेम शा०
प शिवचन्द्र[1]	श्रीधर्म	प० अमृतकीर्ति मुने पौत्र, जिनलाभ शा०
प विनीयो	विनयधर्म	प० आनन्दरत्न गणे पौत्र, जिनचन्द्र शा०

॥ सं० १८७६ वर्षे मिती ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपद्दिने भ० श्री जिनहर्षसूरिभि १२ 'लाभ' नन्दि कृता श्री मिरजापुर नगरे ॥

प कुन्दनलाल	कनकलाभ	प० सत्यरत्न गणे, जिनचन्द्र शा०
प सागर	सदालाभ	वा० रामचन्द्र गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०
प रूपो	रत्नलाभ	वा० रामचन्द्र गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०
प मूलो	मुनिलाभ	वा० रामचन्द्र गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०
प वुद्धो	विनयलाभ	वा० रामचन्द्र गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०
प ऊदो	अमृतलाभ	वा० रामचन्द्र गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०
प नैणचन्द	नीतिलाभ	वा० रामचन्द्र गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०

॥ स० १८७६ वर्षे मिती माघ वदि ५ श्री फरक्कावादे ॥

प हरसुख	हर्षलाभ	प० जसविजय गणे, कीर्त्तिरत्न शा०
प मगल	मुक्तिलाभ	प० जसविजय गणे, कीर्त्तिरत्न शा०
प गुलाबो	ज्ञानलाभ	
प. देवो	दयालाभ	उ० रत्नविमल गणे पौत्र, क्षेम शा०

---

१ स० १८७८ चैत्र वुदि ३ उदयपुरे। वर्तमान नाद तो 'तिलक'—री हुती—पिण कृपाकर 'धर्म' री नाद री पुडी दीवी।

॥ स० १८७६ वर्षे मिती माघ शुक्ला १२ बुधवारे भ० श्री जिनहर्ष-
सूरिभि १३ 'सिंह' नन्दि कृता श्री ग्वालेर नगर मध्ये ॥

प भैरौ	भक्तिसिंह	वा० राजप्रिय गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०
प रतनौ	रत्नसिंह	वा० क्षमाहेम गणे पौत्र, जिनभद्र शा०
प आसौ	अमरसिंह	वा० सुमतिसोम गण, जिनरत्न शा०
प इदौ	ईशरीसिंह	प० चतुरनिधान मुने पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प मानौ	मानसिंह	प० देवदत्त मुने पौत्र, क्षेम शा०
प मगनौ	मुनिसिंह	प० धर्मसुन्दर मुने पौत्र, क्षेम शा०
प धरमौ	धर्नसिह	प० उदयरग गणे जिनचन्द्र शा०
प हीरौ	हिमतसिंह	प० समयरत्न शिष्य, प० तिलकधर्म पौत्र
प चैनीयो	चारित्रसिंह	वा० राजप्रिय गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०
प आणदीयौ	अभयसिंह	वा० लक्ष्मीप्रभ गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०
प दौलीयौ	दानसिंह	वा० लक्ष्मीप्रभ गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०
प मयाचन्द	मानसिंह	वा० सुगुणहेम गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
(प्रसिद्ध नाम मिसरियौ)		प० रत्नमेरु शिष्य
प नेमौ	नरसिंह	प० रत्नमेरु मुने पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प भैरोयौ	भक्तिसिंह	प० प्र ज्ञानसार गणे पौत्र, जिनलाभ शा०

॥ स० १८७७ माघ वदि ११ सोमवासरे श्री उज्जयण नगरे निकटस्थ भैरू गढ मध्ये भट्टारक श्री जिनहर्षसूरिभि. १४ "तिलक" नन्दि कृता ॥

प निहालौ[1]	न्यायतिलक	उ० श्रीदानविशाल गणे पौत्र, क्षेम शा०
प लखमौ	लक्ष्मीतिलक	वा० लक्ष्मीकल्याण गणे, क्षेम शा०
प टेकौ	तत्त्वतिलक	प० अमरप्रिय मुने पौत्र, सागरचन्द्र शा०

॥ स० १८७७ माघ सुदि १२ दिने भ० श्री जिनहर्षसूरि इन्दौर नगर पधार्या, तिहा भगवानदास ढूढिया नै उपदेश देकर सर्व आलोयणा दे सर्व क्षेत्र प्रमुख त्याग कराय कै सघ समक्षै ढूंढियापणै रो मार्ग छोड़ाय यति पणो ग्रहण करायौ। वड़ी दीक्षा दीवी, खरतर गच्छ मे जिनभद्रसूरि शाखा रो यति कीयौ ॥

१ उज्जैन खाचरोद दिशि रा छै।

प. भगवानदास भक्तितिलक श्रीजीनामुपदेशात् श्री जिनभद्र शा०
प कीर्त्तिचन्द्र कर्पूरतिलक प० मुनिकुशल गणे, जिनचन्द्र शा०

।। सं० १८७८ वर्षे मिती वैशाख सुदि ४ दिने श्री जिनहर्षसूरि मालवा देशे तखतगढ ग्रामे समागता । तत्र दिन १३ रह्या, तत्र साधुना दीक्षा जाता ।

प हीराचन्द[1] हीर्रतिलक प० कीर्त्तितिलक मुने पौत्र, क्षेम शा०
प लक्ष्मीचन्द[2] लक्ष्मीतिलक प० कनकविनय मुने पौत्र, क्षेम शा०
प छजमल[3] छत्रतिलक प० विद्यासोम मुने, क्षेम शा०
प कपूरचन्द[4] कर्पूरतिलक प० गुणचन्द्र मुने, क्षेम शा०
प मयाचन्द[5] मुनितिलक प० कीर्त्तितिलक मुने, क्षेम शा०
प खुस्यालो[6] क्षमातिलक प० गगविनय पौत्र, क्षेम शा०
प अमरचन्द[7] अमरतिलक प० फतैचन्द जिनचन्द्र शा०
प लक्ष्मीचन्द लावण्यतिलक प० क्षमाधीर मुने, क्षेम शा०
प उदैचन्द[8] उदयतिलक प० फतैचन्द मुने, जिनचन्द्र शा०
प वस्तो विनयतिलक प० क्षमाधीर शिष्य भावचारित्रीय, क्षेम शा०
प माणको महिमातिलक प० मुनिप्रमोद मुने, क्षेम शा०
प लक्ष्मोचन्द्र[9] लाभतिलक प० रूपजी पौत्र, क्षम शा०
प हरिजी[10] हेमतिलक प० कल्याणजी क्षेम शा०

।। स० १८७८ मिती आषाढ सुदी २ दिने श्री प्रतापगढ नगरे भ० श्री जिनहर्षसूरिभिश्चतुर्मासी कृता, तत्र दीक्षा नामानि ।।

प रूपचन्द रत्नतिलक प० अभयमूर्त्ति मुने पौत्र, जिनरत्न शा०
प पेमचन्द पुण्यतिलक प० रत्नसोम गणे पौत्र, क्षम शा०
प नारायण नीतितिलक प० रत्नसोम गणे पौत्र, क्षेम शा०
प वस्तपाल विद्यातिलक प० रत्नसोम गणे पौत्र, क्षेम शा०
प चन्द्रदत्त चन्द्रतिलक प० मानवर्द्धन गणे पौत्र, जिनरत्न शा०
प आदिदत्त अमरतिलक प० मानवर्द्धन गणे पौत्र, जिनरत्न शा०

---

१ रनलाम २ वखतगढ ३ सुखेड ४ वडौद ५ रूणीजै
६ खाचरौद ७ जावरै ८ वरदावडो मालवै ९ सिलाणै रा
१०. वरडीया ग्राम रा

नदि तो 'विनय' री थी पिण कृपा कर 'तिलक' री दीवी। पाली मे सं० १८७९ वै सु ३।

सवत् १८७८ मिग० सु० ७ श्री प्रतापगढ थी श्री रतलाम पधार्या बड़े देहरे ऊतर्या, दिन ३९ रह्या, ठाणे ५५ सामल था, सामले दोनु तड वाला भोजो भगवान प्रमुख वडी चाकरी कीवी। रतलाम मे कटारिया खरतर गच्छ का है।

।। स० १८७८ माघ वदि ८ भौमे भ० श्री जिनहर्षसूरिभि १५ 'विनय' नन्दि कृता। रतलाम ।।

प गुलाबो[1]	ज्ञानविनय	प० लक्ष्मीतिलक शि०, क्षेमशा० प० कनकविजय प्रपौत्र
प. कस्तूरो	कल्याणविनय	प० हीरतिलक, कीर्तितिलक प्रपौत्र
प खूत्रो	क्षमाविनय	प० हीरतिलक कीर्त्तितिलक प्रपौत्र
प अमरो	अमरविनय	प० अमृतमेरु मुने. पौत्र, क्षमशा०

।। सं० १८७८ माघ वदि १२ भ० श्री जिनहर्षसूरिभि. उदयपुर नगरे पधार्या ।।

प जीवण	युक्तिविनय	विनीतसुन्दर मुने, जिनसुख शा०
प गुमानो	गुणविनय	विनीतसुन्दर मुने', पौत्र, जिनसुख शा०
प खेतसी	क्षेमविनय	प० पद्महस मुने, जिनभद्र शा०
प केसरो	कनकविनय	प० विनीतसुन्दर मुने पौत्र, जिनसुख शा०
प रामो	रत्नविनय	प० सदावर्द्धन मुने पौत्र, जिनभद्र शा०
प चन्द्रदत्त	चारित्रविनय	वा० दयासार गणे प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प मोती	महिमाविनय	प० प्रीतिमन्दिर मुने, जिनभद्र शा०
प कुशलो	कमलविनय	प० अभयमूर्त्ति मुने' पौत्र, जिनरत्न शा०
प पासदत्त	प्रेमविनय	वा० दयासार गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प शिवलाल	सत्यविनय	प० क्षमाहर्ष मुने, क्षेमशा०
पं रतनो	राजविनय	प० लाभहर्ष मुने, क्षेमशा०

---

1 वखतगढ

प तुलछीदास तीर्थविनय प० यशविजय मुने, सविग्न पक्षीय
पं गोपालो ज्ञानविनय प० क्षातिरत्न मुने, सविग्न पक्षीय

।। सं० १८७९ वैशाख वदि ५ भ० श्री जिनहर्षसूरि सादड़ी पधार्या ।।

प दयाचन्द देवविनय वा० रूपधीर गणे॰ पौत्र, जिनचन्द्र शा०
पं खूबो खुश्यालविनय उ० श्री रत्नविमल गणे. पौत्र, क्षेमशा०

।। स० १८७६ मिती वैशाख सुदि १ दिने श्री उदयपुर थी घाणेराव पंचतीर्थी कर भ० श्री जिनहर्षसूरि पाली पधार्या, तत्र दीक्षा नामानि ।।

प वृद्धिचन्द विद्याविनय प० मतिप्रभ मुने पौत्र, जिनभद्र शा०
प कस्तूरो कीर्त्तिविनय प० सत्यकल्याण मुने. पौत्र, क्षमशा०
प दयाचन्द दयाविनय प० गजविनय मुने पौ०, क्षेमशा०
प मयाचन्द मतिविनय प० गजविनय मुने पौ०, क्षेमशा०
प उमेदो अमृतविनय प० नयमेरु मुने. पौ०, जिनभद्र शा०
पं जयचन्द जीतविनय प० कर्पूरभद्र मुने, क्षेमशा०
प जसरूप जशविनय प० युक्तिजयमुने पौ०, कीर्त्तिरत्न शा०
प गिरधारी गणविनय प० विजयभद्र मुने, जिनरत्न शा०
प अमरो उदयविनय उ० श्री कीर्त्तिधर्म गणे पौत्र, जिनभद्रशा०
प साहिबो सत्यविनय प० पुण्यकमल मुने. पौत्र, जिनभद्र शा०
प मालो मानविनय प० नेमिचन्द्र मुने, जिनराज शा०
प नेमो न्यायविनय प० नेमिचन्द्र मुने पौत्र, जिनराज शा०
पं आसो आनन्दविनय प० सत्यसौभाग्य मुने, सागरचन्द्र शा०
पं धम्मो धर्मविनय प० मानविजय मुने पौत्र, सागरचन्द्र शा०
पं अखो अमृतविनय प० जीतविजय मुने., जिनभद्र शा०
प वरधो वृद्धविनय प० जीतविजय मुने, जिनभद्र शा०
प. मोती मेरुविनय वा० चारित्रप्रमोद गणे प्रपौ०, सागरचन्द्र०
प नाथो नित्यविनय वा० नित्यरुचि गणे पौत्र, क्षेमशा०
पं पुरषो प्रेमविनय वा० नित्यरुचि गणे पौत्र, क्षेमशा०
प कानो कुशलविनय प० लब्धिहर्ष मुने, क्षेमशा०
प. फत्तो[1] प्रीतिविनय प० विनीतसुन्दर मुने पौत्र, जिनसुख शा०

---

1. स० १८७९ आषा० व० ४ नागौर।

प. किसनो कल्याणविनय प० तिलकोदय मुने, क्षेमशा०
प चिमनो चारित्रविनय प० विनीतसुन्दर मुने. पौ०, जिनसुख०
प हुकमो हर्षविनय प० विनीतसुन्दर मुने. पौ०, जिनसुख०

।। संवत् १८७९ मिती आषाढ सुदि ४ दिने भ० श्री जिनहर्षसूरिजी श्री बीकानेर पधार्या। सामैलो शीतला रै दरवाजै सूं हुवो। उठ सूं गाजा वाजा वजावतां उपासरै आया। प्रोलां ४ हुई। कवला कूड़ो कजोयो करता था सो राजाजीयै कूड़ा किया। सामेलो पारख जोतमलजी यै कर्यो, बड़ौ महोत्सव हुवौ ।।

प. रुघो रगविनय प० चारित्रसोम मुनि, क्षेमशा०
प. गणेशो गजविनय प० अमररत्न मुने, कीर्त्तिरत्नशा०
प. मघो मुनिविनय वा० जयदत्त गणे पौ०, क्षेमशा०
प माणको माणिक्यविनय वा० जयदत्त गणे पौ०, क्षेमशा०
प गुमानो ज्ञानविनय वा० चारित्रसोद गणे पौ०, सागरचन्द्रशा०

।। संवत् १८७९ वर्षे मृगशिर बदि १३ बीकानेरे ।।

प जयकरण[1] जीतविनय प० शान्तिविजय मुने, कीर्त्तिरत्न०
प खुश्याल[2] खुश्यालविनय प० विवेकप्रिय मुने पौ०, सागरचन्द्र०
प गुलावो गुरुविनय प० विवेकप्रिय मुने: पौ०, सागरचन्द्रशा०
प. गुलालो[3] गीतविनय प० चारित्रमेरु मुने., कीर्तिरत्न०
प मलूको मुक्तिविनय प० पद्महस मुने, जिनराजशा०
प. रतनो रूपविनय प० मानहस मुने, कृष्णगढे
प भैरो भाग्यविनय उ० श्री ज्ञानविनय गणे.,
प दुलीचन्द दानविनय वा० अमृतसुन्दर गणे.
प गुमानो गुप्तिविनय वा० अमृतसुन्दर गणे, पौ०
प जीवो[4] जयविनय वा० अमृतसुन्दर गणे. पौ०
प देवो[5] देवविनय प० मतिसार मुने
प गुलावो गौतमविनय प० मतिसार मुने.

---

१ २ सिंघी, ३ सिंघी-उत्तराधी, ४ ५ सिंघी

॥ संवत् १८७९ फा० ब० ८ भ० श्री जिनहर्षसूरिभिः १६ 'शेखर' नन्दी कृता बीकानेरे ॥

प.	सुगालो	सुमतिशेखर	वा० राजविनयगणे. पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प	नैणसुख[1]	न्यायशेखर	प० युक्तिमेरु मुने , कीर्त्तिरत्नशा०
प	राजू[2]	रत्नशेखर	प० पुण्यहर्षमुने , कीर्त्तिरत्नशा०
प	चोखो	चारित्रशेखर	वा० ज्ञाननिधान गणे पौत्र०, कीर्त्तिरत्न०
प	कस्तूरो	कनकशेखर	वा० ज्ञाननिधान गणे पौ०, कीर्त्तिरत्न०
प	दुरगो	दानशेखर	वा० पद्मरग गणे पौ०, जिनभद्रशा०
प	आसो	अमरशेखर	वा० भावविजय गणे., कीर्त्तिरत्न०
प	धरमो	धर्मशेखर	वा० भावविजय गणे , कीर्त्तिरत्न०
प	पदमो	प्रीतिशेखर	वा० भावविजय गणे , कीर्त्तिरत्न०
प	गगाराम	गुणशेखर	प० गुणप्रमोद मुने , सागरचन्द्रशा०
प	सरूपो[3]	सौभाग्यशेखर	प० सत्यविनय मुने पौ०, जिनचन्द्रशा०
प	कुशलो	कनकशेखर	प० माणिक्यहस मुने , जिनभद्रशा०
पं	मोती	महिमाशेखर	प० दयाप्रभ पौ०, जिनभद्रशा०
प	लखमो	लावण्यशेखर	प० दयाप्रभ पौ०, जिनभद्रशा०
प	वर्द्धमान	वृद्धिशेखर	वा० मयाप्रमोद गणे. पौ०, कीर्त्तिरत्नशा०
प	दुलीचन्द	दानशेखर	वा० मयाप्रमोद गणे. पौ०, कीर्त्तिरत्नशा०
प	मोती	महिमाशेखर	प० मुनिकल्याणमुनेः, जिनचन्द्र०
प	हर्षचन्द्र	हस्तशेखर	प० महिमासौभाग्य मुने . जिनचन्द्र०
प	जीवो	जीनशेखर	प० मतिकल्याणमुने , जिनचन्द्र०
प	राजू	रगशेखर	प० रगवर्द्धनमुने , कीर्त्तिरत्नशा०
प	रूपो	ऋद्धिशेखर	प० विनीतसुन्दरमुने. पौ० जिनसुख०
प०	लालो	लक्ष्मीशेखर	प० ज्ञानसार गणे पौ०, जिनलाभ०
पं	राजो	रूपशेखर	प० चारित्रसोममुने , क्षेमशा०
प	पन्नो	पद्मशेखर	प० भाग्यमूर्त्तिमुने. प्रपौ०, सागरचन्द्र०
प	लालो	लक्ष्मीशेखर	प० गुणप्रमोदमुने. पौ०, सागरचन्द्र०
प	रामो	राजशेखर	प० गुणप्रमोदमुने पौ०, सागरचन्द्र०
प	शम्भू	सत्यशेखर	प० कीर्त्तिसमुद्रमुने , सागरचन्द्र०

---

१ पजावी　२ हासी रा वास्तव्य　३ स० १८८० सु० ४ बीकानेरे

प लाधौ	लाभशेखर	प० हर्षहंसमुने. पौ०, कीर्त्तिरत्नशा०
प गुलाबौ	ज्ञानशेखर	वा० आनन्दप्रिय गणे , जिनभद्र शा०
प गुमानौ	गजशेखर	प० देववर्द्धन मुने , सागरचन्द्र शा०
प मानौ	मतिशेखर	पं० गुणनन्दन मुने , सागरचन्द्र शा०
प जसराज	जयशेखर	प० सुमतिभक्ति मुने , जिनचन्द्रशा०

वर्त्तमान नन्दि तौ 'माणिक्य' री हुती पिण कृपा कर 'शेखर' री नन्दि दीधी सं० १८८? मा. सु ५

प मोती[1]	माणिक्यशेखर	पं० भीमभद्र मुने शिष्य, जिनरत्न शा०

॥ सं० १८८० पो० सु० १३ भ० श्री जिनहर्षसूरिभिः १७ 'शेन' नन्दी कृता, बीकानेरे ॥

प रतनौ	रत्नशेन	प० सुगुणानन्द मुने , जिनचन्द्र शा०
प उदयभाण	उदयशेन	प० चारित्रसोम मुने , जिनभद्र शा०
पं धरमौ	धर्मशेन	पं० चारित्रसौभाग्य मुने , जिनभद्र शा०
प श्रीचन्द	सुमतिशेन	प० दयाभद्र मुनेः
प शम्भू	सुमतिशेन	पं० उत्तमविजय मुने , सागरचन्द्र शा०
प कस्तूरौ	कनकशेन	प० सुमतिधीर गणे पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प सद्दौ	सुमतिशेन	प० शान्तिसमुद्र मुने
प डूगर	दयाशेन	प० शान्तिसमुद्र मुने
प जेसौ	युक्तिशेन	प० सत्यनन्द मुने , सागरचन्द्र शा०
प. कुशलौ	कीर्त्तिशेन	प० उदयरग मुन., सागरचन्द्र शा०
प फत्तौ	पुण्यशेन	उ० श्री ज्ञानविनय गणे पौत्र
प. तेजौ	तीर्थशेन	
पं धरमौ	धर्मशेन	
प. सरूपौ	सुखशेन	प० मानविजय मुने. पौत्र, सागरचन्द्र शा०

॥ स० १८८१ माघ शुक्ल ५ दिने भट्टारक प्रभु श्री जिनहर्षसूरिजिद्भिः १८ 'रुचि' नन्दी कृता श्री बीकानेर नगरे । श्रीमूं यादहनि २ ॥

प गिरधर	ज्ञानरुचि	वा० महिमाकल्याण गणे प्रपौत्र, क्षेमशा०

1 माडवी

प अखौ अक्षयरुचि प० आनन्दहर्ष मुने., जिनचन्द्र शा०
प मोती महिमारुचि प जीवविजय मुनि, जिनभद्र शा०
पं वृद्धिचन्द्र विवेकरुचि वा० सुखहेम गणे पौत्र, जिनभद्र शा०
पं. पेमौ पद्मरुचि वा० कनकशेखर गणेः प्रपौत्र, क्षेमशा०
प अमरौ आणन्दरुचि प० नित्यसार मुने , जिनचन्द्र शा०
प जगरूप जीतरुचि प० क्षेममूर्त्ति मुने , जिनचन्द्र शा०
प गामौ रामरुचि प० नित्यसार मुने., जिनचन्द्र शा०
प पन्नौ प्रेमरुचि प० लक्ष्मीरंग मुने॰, जिनभद्र शा०
पं अमरौ अमृतरुचि प० मयाकुशल मुने॰, जिनभद्र शा०
प विजजौ विद्यारुचि प० क्षेमानन्द मुने॰, जिनसुख शा०
प चैनौ चारित्ररुचि प० तिलकनिधान मुने , जिनचन्द्र शा०
प. माल्लगौ सुपनिरुचि प० शान्तिसमुद्र मुन पौत्र
पं हुकमौ हर्षरुचि प० गुणसमुद्र मुने. पौत्र, जिनभक्ति शा०
पं ज्ञानौ गुणरुचि प० मेरुविजय मुने॰, जिनचन्द्र शा०
प गणेशौ ज्ञानरुचि वा० सौभाग्यसुन्दर गणे पौत्र, जिनभद्र शा०
प मगनौ महिमारुचि वा० नेमविजय गणें. पौत्र, जिनलाभ शा०
प. धन्नौ धर्मरुचि प० क्षमामेरु मुने., जिनसुख शा०

॥ सं० १८८३ मृगशिर वदि २ दिने भ० श्री जिनहर्षसूरिभिः १६ 'शील' नन्दि कृता, बीकानेरे ॥

प. रतनौ रत्नशील प० भाग्यमूर्त्ति मुने. प्रपौत्र
प केशरौ कनकशील वा० अमृतसिन्धुर गणे पौत्र, क्षेमशा०
प सवाई सुखशील पं० मुक्तिसिन्धुर मुने., कीर्त्तिरत्न शा०
प धन्नौ धर्मशील प० लब्धिहर्ष मुने., क्षेमकीर्ति शा०
प गुमानौ गुणशील प० ऋद्धिभद्र मुने., जिनचन्द्र शा०
प. वीरचन्द विनयशील प० हर्षभद्र मुनेः, जिनभद्र शा०
प. मनसुख महिमाशील प० देवविजय मुनेः पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प उत्तमौ अमृतशील प० मयाकुशल मुने पौत्र, क्षेमशा०
प शिवौ सुमतिशील वा० आनन्दप्रिय गणे पौत्र, जिनभद्र शा०

प. मनरूपौ[1]	मुक्तिशील	प० मुक्तिसागर मुने', जिनसुख शा०
प	मनसुख महिमाशील	प० सुगुणप्रमोद मुने , जिनचन्द्र शा०
प	मोती मेरुशील	प० क्षमामेरु मुने , जिनसुख शा०

॥ सं० १८८४ वर्षे मार्गशीर्ष ५ दिने भट्टारक प्रभु श्री जिनहर्षसूरिभिः २० 'माणिक्य' नन्दि कृता, श्री बीकानेरे ॥

प सागर	सत्यमाणिक्य	प० जयमूर्त्ति मुने. पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प खेतसी	क्षेममाणिक्य	प० ज्ञाननिधान मुने पौत्र, कीर्त्तिरत्न०
प लालौ	लक्ष्मीमाणिक्य	वा० भावविजय गणे , कीर्त्तिरत्न०
प तेजसी	तत्वमाणिक्य	वा० भावविजय गणे प्रपौत्र कीर्त्तिरत्न० प० विद्यारग पौत्र
प. माणकौ[2]	मुक्तिमाणिक्य	प० कनकमेरु मुने , क्षेमशा०
प जीवौ	जयमाणिक्य	वा० चारित्रसमुद्र गणे
प अखौ	अभयमाणिक्य	वा० ऋद्धिरत्न गणे पौत्र, जिनलाभ शा०
प विनीयौ	विवेकमाणिक्य	प० हसविलास गणे , जिनहर्ष शा०
प अखौ	अमृतमाणिक्य	प० विनयसमुद्र मुने., जिनचन्द्र शा०
प. भैरौ	भक्तिमाणिक्य	प० जीतरग गणे. पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प कचरौ	कनकमाणिक्य	प० क्षेमरत्न मुने., क्षेमशा०
प. केशरौ	कमलमाणिक्य	प० ज्ञानप्रिय मुने , जिनराज शा०

---

१ स० १८८८ मिते प्रथम वैशाख सुदि ३ दिन घडी ६ चढ्या मुक्तिशील मुनि नै श्रीजी स्वशिष्य कीयौ। बीकानेर सु प० मेरुकुशल मुनि प उदयरत्न मुनि प्रमुख ठाणा १७ साधु च्यार शाखा रा नागोर मेलनै तत्र रा सर्व साधु समुदाय ठाणा २७ एव साधु ४४ ठाणै मिल आया, मुक्तिसागर नै दुसालौ दियौ। आगला पाचू शिष्या री फारगती कराई। खास रुक्कौ मुक्तिसागर नै कर दियौ। मनरूप नै पदस्थापन री पकावट कीवी सर्व साधु वर्ग समक्षै। स० १८९२ मिगसर वदि ११ चन्द्रे मण्डोवर दुर्गे नन्दी महोत्सवे आचार्य पद स्थापना सजात साधु ५०१ समक्षै।

२ वर्त्तमान नन्दी तौ 'राज' री हुती पिण कृपा कर 'माणिक्य' री नन्दि दीवी स० १८८७ मिगसर वदी ९ दिने।

प उमेदौ उदयमाणिक्य प० ज्ञानप्रमोद मुने, क्षेमशा०
प ऊदौ[1] अमरमाणिक्य प० लक्ष्मीमाद मुने, क्षमशा०
प नारायण[2] नोतिमाणिक्य प० गुणनिधान मुने
प उत्तमौ अमृतमाणिक्य प० रगनिधान मुने, जिनभद्र शा०

।। स० १८८६ वर्षे माघ शुक्ल ५ भट्टारक श्री जिनहर्षसूरिभिः २१ 'राज' नन्दी कृता। श्री बीकानेरे विजय मुहूर्त्त ।।

प टाकुरीयौ दयाराज प० ज्ञानानन्द मुने., जिनभक्ति शा०
प हुकमौ हकीमराज प० विनयसमुद्र मुने, जिनभक्ति शा०
प ऊदौ उदयराज प० रत्नविलास मुने, क्षेमशा०
प अमरौ अभयराज प० पद्महस मुने, जिनराज शा०
प. हरचन्द हिमतराज प० मानहस मुने, जिनराज शा०
प ऋषभौ ऋद्धिराज प० मानहस मुने, जिनराज शा०
प सूजौ सत्यराज प० मेरुकुशल मुने पौत्र, क्षेमशा०
प सरूपौ सुमतिराज वा० हितप्रमोद गणे पौत्र, क्षेमशा०
प तिलोकौ तीर्थराज प० मुक्तिमाणिक्य मुने, क्षेमशा०
प सुमेरचन्द्र शिवराज प० अमृतरग मुने पौत्र, जिनलाभशा०
प गोर्द्धन गजराज प० ऋद्धिसागर मुने', क्षेमशा०
प रुघौ ऋपिराज प० शीलरग मुने, क्षेमशा०
प जीवण यशराज उ० चारित्रप्रमोद गणे प्रपौत्र, सागरचद्रशा०
प उत्तमौ उदयराज प० सौभाग्यहर्ष मुने, कीर्त्तिरत्न शा०
प अखौ अखयराज प० जीतविनय मुने, कीर्त्तिरत्न शा०
प खुश्यालौ क्षेमराज महो० युक्तिधीर गणे प्रपौत्र, सागरचन्द्रशा०
प ऋषभौ रूपराज वा० रूपधीर गणे प्रपौत्र, जिनचन्द्र शा०
प. धरमौ धर्म्मराज प० दयामेरु मुने. पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प० भाग्यविशाल शि
प राजाराम रत्नराज प० धमविशाल मुने, जिनभक्ति शा०

स० १८९० वर्षे शाके १७५५ प्रमिते मिती वैशाख वदि ८ भृगुवारे भट्टारक श्री जिनहर्षसूरिभि. २२ 'प्रिय' नन्दी कृता बीकानेरे ।।

---

१. पाटण रहै २. वेलाउत रहै

प हुकमौ	हर्षप्रिय	प० ज्ञानविलास, कीर्त्तिरत्न शा० प० रत्नमेरु मुने पौत्र
प इन्दरौ	अमरप्रिय	प० क्षमानन्द मुने, जिनलाभशा०
प. माणकौ	मेरुप्रिय	प० पुण्यभक्ति मुने, कीर्त्तिरत्नशा०
प पदमौ	पुण्यप्रिय	प० दर्शनानन्द मुने, जिनमाणिक्यशा०
प हरू	हेमप्रिय	प० लब्धिहर्ष मुने पौत्र, क्षेम शा० धर्मशील शिष्य
प चिमनौ	चारित्रप्रिय	प० देवनन्दन मुने, सागरचन्द्रशा०
प माणकौ	मुक्तिप्रिय	प० इन्द्रमेरु मुने, सागरचन्द्रशा०
प रावत	राजप्रिय	प० अभयविलास मुने, कीर्त्तिरत्नशा०
प नन्दौ	नीतिप्रिय	प० सुखसागर मुने, जिनभद्रशा० ज्ञानसार गणे पौत्र
प लछमण	लक्ष्मीप्रिय	प० ज्ञानानन्द मुने पौत्र, जिनभक्तिशा०
प हीरौ	हिम्मतप्रिय	प० दयाविलास मुने, क्षेम शा०

श्री जिनमहेन्द्रसूरि

संवत् १८९२ वर्षे शाके १७५७ प्रमिते मिती मार्गशीर्ष कृष्णा ११ चन्द्रवारे श्री सूर्योदयादिष्ट गत घट्य १० पलानि १५ समये श्री मण्डोवर महादुर्गे बाफणा श्री सवाईरामजी मगनीरामजी जोरावरमल्लजी प्रतापचन्दजी दानमल्लजिद्भिः कृतनन्दिमहोत्सवेन जगम-युग-प्रधान भट्टारक श्रीजिनमहेन्द्रसूरीणा पट्टाभिषेको बभूव, तत्समये श्रीमद्भि प्रथमा 'पुरन्दर' नन्दी कृता ॥१॥

प मोती	मतिपुरन्दर	प० हेमविलास मुने शिष्य, क्षेमशा०
प खुसालौ	क्षमापुन्दर	प० सुगुणभद्र मुन शिष्य, जिनभद्र शा०
प. लखमौ	लक्ष्मोपुरन्दर	प० कर्पूरभद्र मुने शिष्य, जिनचन्द्र शा०
प तारौ	तिलकपुरन्दर	प० हितसमुद्र मुने, जिनभद्र शा०
प दौलौ	दयापुरन्दर	प० हेमविमल मुने., जिनभद्र शा०
प. सिरदारो	सौभाग्यपुरन्दर	प० विद्यावर्द्धन मुने. पौत्र, जिनभद्र शा०

प खूवो क्षेमपुरन्दर प० हीरतिलक मुने शिष्य, क्षेमशा०
प खेतसी क्षान्तिपुरन्दर प० क्षमाधीर मुने शिष्य, क्षेमशा०
प वीरचद[1] विवेकपुरन्दर प० रगविलास मुने शिष्य, जिनभद्र शा०
प. जयचन्द युक्तिपुरन्दर पं० रगविलास मुनेः शिष्य, जिनभद्रशा०
पं रूपो[2] ऋद्धिपुरन्दर प० प्रीतिमन्दिर मुनेः शि०, जिनभद्रशा०
प वछीयो सुमतिपुरन्दर पं० सुमतिभक्ति मुनेः पौत्र, जिनभद्रशा०
प पदमचन्द[3] पुण्यपुरन्दर जिनभद्रसूरि शाखायां उदयपुर
प. सीताराम[4] सत्यपुरन्दर जिनभद्रसूरिशा०

।। सं० १८९३ वर्षे शाके १७५८ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठ वदि ६ चन्द्रवारे शतभिषा नक्षत्रे विजय मुहूर्त्ते श्री पालीताणा महानगरे श्री सिद्धगिरि शाश्वत तीर्थे जंगम युग प्रधान भट्टारक श्रीजिनमहेन्द्रसूरिभि. द्वितीया 'उदय' नन्दि कृता २ ।। संघ मध्ये ।।

प. अमरो अमरोदय प० क्षमाविलास मुने. शिष्य, जिनभद्रशा०
प माणको माणिक्योदय उ० भीमभद्र गण. शिष्य, जिनरत्नशा०

---

१ जूनागढे २ कोटै रा

३ स० १८९९ वर्षे आ सु ५ कुजवारे भ० श्री जिनमहेन्द्रसूरिजी उदयपुर नगरे, तत्र पाली वास्तव्य चन्द्र गच्छीय प० ताराचन्दजी तत्शिष्य प० पदमचन्द ने श्री जी उपदेशात् खरतर भट्टारक गच्छ माहे आयो, आगे सुं समाचारी आज्ञा आदेश श्री जिन महेन्द्रसूरिजी रो प्रमाण करसी। इणरी शाखा श्री जिनभद्रसूरि मे स्थापन कीयो ।।

४ ।। स० १८९९ रा ज्येष्ठ सुदि १ दिने श्री धुलेवा नगरे श्री केशरियानाथजी अग्रे ज० यु० भ० श्रीजिनमहेन्द्रसूरिजी पार्श्वे माधोपुर वास्तव्य पचाण आचार्य गच्छे प० सीताराम प० गेनचन्द अमरचन्द सिरी किसनादि श्रीजी उपदेशात् सपरिवार सहितेन वृहत्खरतर गच्छ माहे आया। वडी दीक्षा लीनी। वासक्षेप श्रीजी कनै लीनो। आगे सु वृहत्खरतर गच्छ रा साधु छै। श्री जिनमहेन्द्रसूरिजी री आज्ञा प्रमाण करसी, हुकम राखसी। इणा री साखा जिनभद्रसूरि छै। सही,

।। दसकत प० सीताराम ज्ञानचन्द का छै, ऊपर लिख्यौ सो सही छै ।।

प. लखमी लावण्योदय	वा० माणिक्यशेखर गणे:, जिनरत्नशा०
प नैणसी नयनोदय	वा० माणिक्यशेखर गणे जिनरत्नशा०
प माणकी[1] महिमाउदय	प० प्र० जीतरग गणे पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प. नेमी ज्ञानोदय	प० लक्ष्मीसिंधुर मुने. शिष्य, क्षेमशा०
प. मोती मुक्तिउदय	प० पद्मरुचि मुने शिष्य, क्षेमशा० भावनगरे
प मानी मानोदय	प० हिम्मतप्रिय मुने शिष्य, क्षेमशा० ,,
प. जीवी युक्तिउदय	प० तिलकहस मुन: शिष्य, क्षेमशा० ,,
प लखमी लाभोदय	प० तिलकहस मुने शिष्य, क्षेमशा० ,,
प. दीपचन्द[2] ज्ञानोदय	प० लक्ष्मीसिंधुर मुने: शिष्य, क्षेमशा०
प रतनी रत्नोदय	प० लक्ष्मासिंधुर मुने: शिष्य, क्षेमशा०
प. सुखी सत्योदय	वा० अमरसिन्धुर गण पौत्र, क्षमशा०
प. घनी धर्मोदय	प० राजानन्द मुनि. शिष्य, पालीताणी
प गोर्द्धन ज्ञानोदय	प० राजानन्द मुनि· शिष्य,
प. अमरी आनन्दोदय	जिनभद्रशा०
प कनीराम कनकोदय	वा० चारित्रविजय गणि पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प भाईचन्द[3] भक्तोदय	प० ज्ञानसिन्धुर मुने शिष्य, क्षेमकीर्त्तिशा०
प. हेमराज[4] हर्षोदय	प० गुणमेरु मुने· शिष्य, जिनच द्र० शा०
प. सकलचन्द[5] शान्तिउदय	वा० सत्यभद्र गणि शिष्य, क्षेमशा०
प. जीणदास[6] युक्तोदय	वा० सत्यभद्र गणि: शिष्य, क्षेमशा०
प चन्द्रभाण चारित्रोदय	प० नयमेरु मुने पौत्र, जिनभद्र शा० न्यायसागर शिष्य
चि हरखी[7] हिमतोदय	प० गजानन्द मुने पौत्र, जिनसुख० शा०
चि रतनी[8] रगोदय	प० गजानन्द मुने. पौत्र, जिनसुख० शा०
चि वलदेवी[9] वर्द्धनोदय	प० क्षमामेरु मुने पौत्र, जिनसुख० शा०
प मोहण[10] मानोदय	प० लक्ष्मोमेरु मुने. पौत्र, जिनसुख० शा०
प नैणी[11] ज्ञानोदय	प० मुक्तिसागर मुने. पौत्र, जिनसुख०शा०

---

१. घाणेराव री श्रावक सामावत भाव सु दीक्षा लीवी, भावनगर मध्ये वडी दीक्षा हुई।

२. सूरतबिंदरे ३ अहमदावाद ४. मन्दसौर स० १९०० ज्येष्ठ सुदि १३

५. ६ पाली मध्ये ७ ८ ९. १० ११. नागौर मध्ये

प भीमो[1] भाग्योदय	उ० क्षमाकल्याण सतानीय सवेगो प० राजसागर मुने शि०
प आणदराम[2] अमृतोदय	प० घनसुन्दर मुने प्रपौत्र, क्षेमशा०

॥ सं० १८९७ वर्षे शाके १७६२ प्रमिते मिती ज्येष्ठ सुदि ५ गुरुवासरे जं० यु० भ० श्रीजिनमहेन्द्रसूरिभिः तृतीय 'सुन्दर' नन्दि. ३ कृता श्रीमज्जेशलमेरु नगरे ॥

प मीठियो माणिक्यसुन्दर	प० तीर्थमन्दिर मुने पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प अमोलख[3] अमृतसुन्दर	प० ज्ञानविलास मुने शिष्य, क्षेमशा० उ० शिवचन्द गणे पौत्र
प फतीयो[4] प्रीतसुन्दर	प० विवेकमूर्त्ति मुने पौत्र, जिनभद्रशा०
प गणेश[5] गुणसुन्दर	पं० जीतरग गणे. प्रपौत्र, जिनचन्द्रशा०
प गिरधारी[6] ज्ञेयसुन्दर	प० जीतरग गण प्रपौत्र, जिनचन्द्रशा०
प देवराज[7] दयासुन्दर	वा० माणिक्यहस गणे प्रपौत्र, जिनभद्र०शा०
कस्तूरचन्द[8] कनकसुन्दर	उ० राजसागर गणे. पौत्र, क्षेमधाड शा०
प गुलाबो[9] ज्ञानसुन्दर	उ० राजसागर गणे प्रपौत्र, क्षेमधाडशा०
प पूनमो प्रेमसुन्दर	उ० राजसागर गणे पौत्र, क्षेमधाड़शा०
प विज्जौ[10] विवेकसुन्दर	उ० आणदरत्न गणे. पौत्र, जिनचन्द्र०शा०
प अगरौ[11] अमरसुन्दर	प० पद्महस गणे पौत्र, जिनभद्रशा०
प फत्तौ[12] प्रेमसुन्दर	वा० माणिक्यहस गणे पौत्र, जिनभद्रशा०
प नन्दौ[13] नयसुन्दर	प० लक्ष्मीवर्द्धन मुने. पौत्र, जिनरत्नशा०
देवकिसन[14] दानसुन्दर	प० लक्ष्मोवर्द्धन मुने पौत्र, जिनरत्नशा०
प रामौ[15] रगसुन्दर	प० लक्ष्मीवद्धन मुने. पौत्र, जिनरत्नशा०
प हरदेव[16] हषसुन्दर	प० लक्ष्मीवर्द्धन मुने पौत्र, जिनरत्नशा०

---

१ पाली मध्ये २. सीतामऊ

३. स० १८९७ फा सु ७ ४ जेसलमेरु मध्ये

५ ६ स० १८९८ वै सु २ जेसलमेरु मध्ये

७ ८ ९ स० १८९८ आ सु फलौदी मध्ये १० फलौदी मध्ये

११ मि व ९ फलौदी मध्ये १२ खीचुद मध्ये

१३ १४. १५ १६. स० १८९९ वै व ११ मडोवर दुर्गे

प	जीतू	जैतसुन्दर	वा० अमृतमेरु गणेः पौत्र, क्षेमशा०
प,	रीधौ[1]	रंगसुन्दर	उ० क्षमाकल्याण गणेः, प्रपौत्र, जिनभक्ति०
प	रामौ[2]	राजसुन्दर	प० पुण्यपुरन्दर मुने शिष्य, जिनभद्रशा०
प.	ग्येनौ[3]	गुणसुन्दर	प० सत्यपुरन्दर मुने. शिष्य, जिनभद्रशा०
प	मानौ[4]	महिमासुन्दर	प० हर्षकुशल मुने पौत्र, जिनरत्नसूरिशा०
प	ओटौ[5]	आनन्दसुन्दर	प० सुमतिवर्द्धन पौत्र, जिनसुखसूरि शा०
प	दीपौ[6]	दानसुन्दर	श्रीजिताम् भाव दीक्षित,
प	फरसौ[7]	पेमसुन्दर	श्रीजिताम्
प	दोलौ[8]	दयासुन्दर	प० अमृतउदय मुने शिष्य, क्षेमशा०
प	खूबचन्द[9]	क्षमासुन्दर	प० अमरतिलक पौत्र, जिनचन्द्रशा०
			प० मानसिंह शिष्य
प.	रामचन्द्र[10]	रंगसुन्दर	प० क्षमातिलक शिष्य, क्षेमशा०
प.	वेणीचन्द[11]	विवेकसुन्दर	प० लाभतिलक मुनेः शिष्य
प	सदासुख[12]	सुगुणसुन्दर	प० गुणभद्र मुने पौत्र, जिनभद्रशा०
प	गुलाबौ[13]	गुप्तसुन्दर	प० लाभतिलक मुने शिष्य, क्षेमशा०
प	हेमराज[14]	हर्षसुन्दर	प० लाभतिलक मुने शिष्य, क्षेमशा०
प	ताराचन्द[15]	त्रैलोक्यसुन्दर	वा० पुण्यधर्म गणे. प्रपौत्र, जिनभद्रशा०
प	हसराज[16]	हर्षसुन्दर	प० गुणमेरु मुने पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प.	माणकौ[17]	माणिक्यसुन्दर	प० छत्रतिलक मुने शिष्य
प	चीमनौ[18]	चारित्रसुन्दर	उ० विद्यासमुद्र गणे. पौत्र, जिनभद्रशा०
प	हीरौ[19]	हितसुन्दर	वा० विद्यावर्द्धन गणे पौत्र, जिनभद्रशा०

---

१ पाली मध्ये २ उदयपुरे ३ माधवपुरे
४ ५ स० १८९९ मि सु ४ उदयपुरे ६ उदयपुरे स० १८९९ मि सु १०
७ मन्दसोर मध्ये स० १८९९ जे सु १३ ८ सीतामऊ ९ जावरै
१० खाचरोद स० १९०० ज्ये सु १३ मन्दसौर मध्ये
११ शिलाणै क्षेमशाखा आ सु १४ खाचरोद
१२ खाचरोद मध्ये स० १९०० मि ब. ६
१३ श्रीरतलाम मध्ये सलाणै रा स० १९०० १४ स० १९०१ फा व १
१५ शिवाणची जावरै दीक्षा हुई स० १९०० माघ सुदि १६ मन्दसौरवासी
१७ सुखेडा रा १८ स० १९०५ चै सु १५ मन्दसौर
१९ नाद 'कीर्त्ति' री कृपा से सुन्दर री दीवी स० १९०६ चैत सुदि ५

।। सं० १९०० रा वर्षे शाके १७६५ प्रमिते मिती आषाढ सुदि ११ भृगुवासरे जं० यु० भ० श्रीजिनमहेन्द्रसूरिभि. चतुर्थी 'कीर्त्ति' नन्दि कृता । श्री खाचरोद नगरे ।।

प गुलाबौ[1]	ज्ञानकीर्त्ति	वा० अमरभद्र गणे. शिष्य, जिनचन्द्रशा०
प. देवराज	दयाकीर्त्ति	श्रीजिताम्
प भगवानौ[2]	भुवनकीर्त्ति	प० क्षमातिलक मुनेः पौत्र, क्षेमशा०
पं. सुगालौ[3]	सुगणकीर्त्ति	प० सुमतिभक्ति मुनेः पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प. शिवचन्द[4]	सौभाग्यकीर्त्ति	वा० मुनिप्रमोद गणे पौत्र, क्षेमशा०
प माणौ[5]	महिमाकीर्त्ति	प० प्र सत्यधीर मुने· पौत्र, जिनभद्रशा०
पं. जमरूपौ[6]	जयकीर्त्ति	पं० सुगणानन्द मुने पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प. ज्ञानो[7]	गुणकीर्त्ति	प० हेमविलाश मुने. शिष्य, क्षेमशा०
पं भीमौ[8]	भाग्यकीर्त्ति	प० प्र रत्नधीर मुने. पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प. मयालो[9]	मानकीर्त्ति	प० विवेकसुन्दर मुने. शिष्य, क्षेमशा०
प सरूपौ[10]	सुखकीर्त्ति	प० लक्ष्मीतिलक मुने पौत्र, क्षेमशा०
प. रायचन्द[11]	रत्नकीर्त्ति	प० रूपराज मुने. शिष्य, जिनचन्द्रशा०
पं. वालचन्द[12]	विवेककीर्त्ति	प० कनकविजय गणेः पौत्र, जिनलाभशा०
प शोभाचन्द[13]	सुखकीर्त्ति	प० हितप्रमोद गणे. पौत्र, क्षेमशा०
पं श्रीचन्द[14]	सदाकीर्त्ति	प० हितप्रमोद गणेः पौत्र क्षेमशा०
पं विरधौ[15]	विनयकीर्त्ति	प० हितप्रमोद गणे. पौत्र, क्षेमशा०
प माणौ[16]	महिमाकीर्त्ति	प० विवेकसुन्दर शिष्य, क्षेमशा०
पं. मोती[17]	माणिक्यकीर्त्ति	पं० लावण्यतिलक मुने. शिष्य

---

१ २ खाचरोद मध्ये ३ स० १९०० आ सु ११ ४ श्रीखाचरोद मध्ये

५ खाचरोद मध्ये म० १९०० रा मि व ५ हाथी वाला

६ ७ रतलाम मध्ये स० १९०१ ८ रतलाम ९ सलाणं स० १९०१ का व १

१० वखतगढ ११ इन्दौर मध्ये १२ काशीनगर

१३. १४ जालौर १५ म० १९०३ पो व ६ भोपाल

१६ सलाणै रा वासी १७ खाचरोद

प गंगो	गुणकीर्त्ति	उ० विद्यासमुद्र गणे पौत्र, जिनभक्ति० सतानी
प रामो	राजकीर्त्ति	वा० मुक्तिसिन्धुर गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प कस्तूरो[1]	कनककीर्त्ति	वा० मुक्तिसिन्धुर गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प नवलो[2]	न्यायकीर्त्ति	प० गुप्तसुन्दर मुने शिष्य, क्षेमशा०
प परतापो[3]	पदमकीर्त्ति	प० पुण्यपुरन्दर मुनेः शिष्य, जिनभद्रशा०
प कल्याणो	कुमुदकीर्त्ति	उ० शिवचन्द्र गणे पौत्र, क्षेमशा०
प चिमनो	चारित्रकीर्त्ति	प० मुक्तिसागर पौत्र, जिनसुखसूरि सतानीय
प हीरीयो[4]	हर्षकीर्त्ति	प० अमरतिलक मुनेः प्रपौत्र, जिनचन्द्रशा०
प प्यारीयो[5]	पदमकीर्त्ति	प० क्षमातिलक मुने पौत्र, क्षेमशा०
प. गम्भीरो[6]	गुणकीर्त्ति	प० अमृतउदय मुने पौत्र, क्षेमशा०
प रामो[7]	राजकीर्त्ति	प० ऋद्धिहस मुने' पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प रामचन्द[8]	राजकीर्त्ति	प० अमृतकलश मुने पौत्र, क्षमशा०
		प० इन्द्रभाण मुने शिष्य
प. हेमराज[9]	हर्षकीर्त्ति	प० दयानन्द मुने शिष्य, जिनराजसूरि शा०
प मनसुख[10]	महिमाकीर्त्ति	प० नयनन्दन मुने' पौत्र, जिनलाभसूरिशा०
प इन्द्रचन्द[11]	उदयकीर्त्ति	प० दानसुन्दर गणि', जिनमहेन्द्रसूरि
पं ऋषभो	ऋद्धिकीर्त्ति	उ० आनन्दवल्लभ गणे पौत्र, जिनभक्तिशा०
प मेघराज[12]	महिमाकीर्त्ति	श्रीजिताम्, वाराणस्या मध्ये पद स्थापना हुई

॥ स० १९०६ मि० वैशाख वदि ७ रविवारे ज० यु० प्र० भ० श्रीजिन-महेन्द्रसूरिभि' ५ 'कल्याण' नन्दि कृता श्री भीलाड़ा मध्ये ॥

प मोती	महिमाकल्याण	प० दयानन्द मुने. पौत्र, जिनराजशा०
		प० हर्षकीर्त्ति शिष्य

---

१ मालवे स० १९०४ २ पिपलौदे ३ पाली ४. जावरा

५ खाचरौद ६ स० १९०४ सीतामऊ ७ उदयपुर

८ श्री भाणपुरा मध्ये सुणेलवास्तव्य स० १९०५ मि व ७ भृगौ

९ चित्तौड मध्ये १० मोहनपुरा आरामे ११ स० १९०७ आषा सु १

१२ स० १९१५ मि द्वि ज्येष्ठ सुदि १० चन्द्रे काशीनगरे नन्दिमहोत्सवेनाचार्य-पदस्थापन सजात भट्टारक थया। वर्त्तमान नाद 'कल्याण' री थी पिण कृपा कर 'कीर्त्ति' री नाद दीवी मि० ज्ये० सुदि ५..............११ काश्या.............. ....सम्मेत शैले मिती फाल्गुन सुदि १ स० १९०७ वर्षे जाता।

प हीरो[1]	हर्षकल्याण	प० प्रीतिमन्दिर मुने पौत्र, जिनभद्रशा० प० महिमाविनय शिष्य
प रामो[2]	रंगकल्याण	प० सुगुणभद्र मुने. पौत्र, जिनभद्रशा०
प रामो[3]	रत्नकल्याण	प० प्रीतिमन्दिर मुने पौत्र, जिनभद्रशा० प० ऋद्धिपुरन्दर शिष्य
प माणो	महिमाकल्याण	प० महिमाविनय मुने पौत्र, जिनभद्रशा०
प अमरो	अभयकल्याण	प० सत्यपुरन्दर मुने शिष्य, जिनभद्रशा०
प मोती[4]	मेरुकल्याण	प० सालभद्र मुने पौत्र, जिनभद्रशा० प० परमसुख मुने शिष्य
प मनसुख	मेरुकल्याण	प० ज्ञानकल्लोल मुने. शिष्य, जिनलाभशा०
प रामो[5]	रत्नकल्याण	वा० ज्ञानप्रमोद गणे. पौत्र, क्षेमशा०
प जशो	जयकल्याण	प० राजमन्दिर मुने पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प गगू	गुणकल्याण	प० गुणभद्र मुने पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प. गोपाल[6]	ज्ञानकल्याण	प० युक्तिमेरु मुने पौत्र, पजावी कीर्त्तिरत्न०
प दोलो[7]	सुमतिकल्याण	महो० सुमतिभक्ति गणे प्रपौत्र, जिनचन्द्रशा०

।। भ० श्रीजिनमुक्तिसूरिजिद्भि कृपया 'कल्याण' नन्दिर्दत्ता परं वर्तमान नन्दिस्सुखस्येति ज्ञातव्य, मिती चैत वदि ३ मधुवन शिखरे ।

प गुलाबचन्द[8] ज्ञानकल्याण वा० ज्ञानप्रमोद गणि· पौत्र, क्षेमशा०

।। स० १९०७ मि० द्वि० वैशाख सुदि ४ बुधे दिने श्री जयनगर मध्ये जं० यु० भ० श्री जिनमहेन्द्रसूरिजी पार्श्वे राघोगढ वाला वृहत् खरतर भट्टारक गच्छ रा प० प्र० परमसुखजी रे नावें उणां री आजीविका ऊपरं विजै गछ रो साधु पं० मोतीचन्द नै उणारे चेलो कीधा, बड़ी दीक्षा दीधी सो हमे वृहत्खरतर भट्टारक गच्छ री मर्यादा साचवसी । इणां री शाखा श्रीजिनभद्रसूरि, वजरंगगढ ।।

---

१ २ ३ कोटा रामपुरा मे ४ माधुपुर ५ शिखरगिरि मधुवने

६ काशी मध्ये स० १९११ ज्येष्ठ सुदि ५ गुरु पुष्य ।

७ श्री वाराणस्या स० १९१८ मि० का० सु० ५

८ सं० १९०७ व ।

❀ श्री जिनमुक्तिसूरि ❀

।। श्री गौतमस्वामिने नम ।। श्रीजिनकुशलसूरिसदगुरुभ्यो नमः ।। स० १९१५ वर्षे श के १७८० प्रमिते मिति द्वितीय ज्येष्ठ सुदि १० तिथौ चन्द्रवासरे श्री सूर्योदयादिष्ट घट्यः १६ पल ३० समये श्री वणारस नगरे लखणेउ वास्तव्य राजा वछराज जी हजारीमल्लजी नाहटा तथा श्री वणारस श्रीसघ, श्रीमिरजापुर श्रीसघ, लखणउ गाधी गुलाबचन्दजी छोटूनलालजी कृत नन्दी महोच्छवेन जगम युगप्रधान भट्टारक श्रीजिन-मुक्तिसूरीणां पट्टाभिषेको बभूव, तत्समये प्रथम श्रीमद्धि. 'सुख' नन्दी कृता ।।

प	केशरीचन्द	कनकसुख	वा० रत्नशेन गणे पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प	सुखलाल	सुमतिसुख	वा० मानहस गणे पौत्र, जिनराज शा०
प	किशनो	कमलसुख	प० सत्यमाणिक्य मुने पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प	सतोपो	सदासुख	प० सत्यमाणिक्य मुन पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प	ग्यानचन्द	ग्यानसुख	उ० राजसागर गणे पौत्र, जिनलाभ शा०
प	गुणचन्द	गुणसुख	उ० राजसागर गणे पौत्र, जिनलाभ शा०
प	दलीचन्द	दानसुख	प० गुणसार मुन. पौत्र, जिनचन्द्र शा० प० क्षमाविमल शिष्य
प	कस्तूरचन्द[1]	कीर्त्तिसुख	प० हस्तप्रिय मुने पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प	देवोचन्द[2]	दयासुख	प० आनन्दहर्ष पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प	पुनिमचन्द[3]	प्रेमसुख	प० ऋद्धिशेखर मुने पौत्र, जिनसुख शा०
प	शोभाचन्द[4]	सौभाग्यसुख	प० अगरचन्द मुने शिष्य, जिनभद्र शा०
प	मयाचन्द	मनसुख	प० जीतविजय मुने पौत्र, जिनभद्र शा०
प	धर्मचन्द	धनसुख	प० क्षमासमुद्र मुने पौत्र, जिनभद्र शा०
प	खूबचन्द	क्षमासुख	प० विजयभद्र मुने पौत्र, जिनरत्न शा०
प	रूपचन्द[5]	राजसुख	प० सत्यपुरन्दर मुने पौत्र
प	सकलचन्द	सुमतिसुख	प० जयशेखर मुने पौत्र, जिनचन्द्र शा०

---

१ २ वणारस मध्ये ३ लखणेउ मध्ये स० १९१९ चै व ६
४ कोटा रामपुरा मध्ये १९२० मि पो सु ८ ५ सवाई माधोपुर मध्ये

प दीपचन्द दयासुख प० ज्ञानविशाल मुने पौत्र, क्षेमशा०
प विनयचन्द[1] विनयसुख प० ज्ञानविशाल मुने पौत्र, क्षेमशा०
प छोगमल्ल छत्रसुख वा० सुखशील गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प धनराज धर्मसुख प० हर्षकल्याण मुने पौत्र, जिनभद्रशा०
प हरचन्द हर्षसुख प० अभयकल्याण मुने पौत्र, जिनभद्रशा०
प सुगुणचन्द शांतिसुख
प पूनमचन्द पद्मसुख प० जीतविजय गणे प्रपौत्र
प सरूपचन्द सर्वसुख प० वृद्धिविनय मुने पौत्र, जिनभद्रशा०
प चुन्नीलाल चारित्रसुख वा० सुखशील गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प रामचन्द[2] रत्नसुख वा० मानहंस गणे पौत्र, जिनराजशा०
प रामचन्द राजसुख वा० सत्यमाणिक्य गणे पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प गम्भीरो गेयसुख वा० रत्नशेन गणे प्रपौत्र, जिनचन्द्रशा०
प धनसुख धर्मसुख उ० आनन्दवल्लभ गणे पौत्र, जिनभक्तिशा०
प सावतसी सत्यसुख उ० आनन्दवल्लभ गणे पौत्र, जिनभक्तिशा०
प पूनमो[3] पुण्यसुख प० कीर्त्तिसागर शिष्य, क्षेमशा०

।। स० १९२० वर्षे शाके १७८५ प्रवर्तमाने मासोत्तम मासे फाल्गुनि मासे शुभे शुक्ल पक्षे ३ तिथौ गुरुवासरे ज० यु० भ० श्रीजिनमुक्तिसूरिभिः द्वितीया 'प्रधान' नन्दी कृता बून्दी मध्ये ।।

प प्रतापचन्द[4] पुण्यप्रधान प० प्रीतिविनय पौत्र, जिनसुखशा०
प मुनीराज मतिप्रधान प० कल्याणमन्दिर मुने शिष्य, जिनरत्नशा०
प वालचन्द विवेकप्रधान प० अक्षयमन्दिर मुने शिष्य, जिनरत्नशा०
प केशरीचन्द[5] कनकप्रधान प० अमरविनय मुने शिष्य, क्षेमशा०
प कस्तूरचन्द[6] कीर्त्तिप्रधान प० अमरविनय मुने शिष्य, क्षमशा०
प रामचन्द[7] कीर्त्तिप्रधान प० चन्द्रतिलक मुने शिष्य, जिनरत्नशा०

---

१ वून्दी मध्ये २ अजमेर स० १९२१ वै सु १०
३ १९२२ मिगसर सुदि ७ विजय योगे
४ नागौर स० १९२१ मि ज्ये सु ५ गु
५ ६ जोधपुर मध्ये ज्ये सु ११ गु ७ आ व ४

प	बलदेव[1]	विनयप्रधान	उ० मानवर्द्धन पौत्र, जिनरत्नशा०
प	नथमल[2]	नयप्रधान	उ० मानवर्द्धन पौत्र, जिनरत्नशा०
प	सुखो[3]	सुखप्रधान	प० रत्नराज मुने शिष्य, जिनभक्ति शा०
प	दीपो[4]	दयाप्रधान	प० रत्नराज मुने शिष्य, जिनभक्ति शा०
प	थानो[5]	थानप्रधान	प० रत्नराज मुने. शिष्य, जिनभक्ति शा०
प	देवो[6]	दानप्रधान	उ० हर्षकल्याण गणे पौत्र, जिनदत्तशा०
प	सोभाग[7]	सोमप्रधान	प० ऋद्धिपुरन्दर मुने पौत्र जिनदत्तशा०
प	कर्मचन्द[8]	कुशलप्रधान	प० विनयलाभ मुने. पौत्र, जिनभक्तिशा०
प	केशरीचन्द[9]	कमलप्रधान	प० नित्यभद्र मुने पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प	धनो[10]	धर्मप्रधान	प० चारित्रसागर मुने पौत्र, क्षेमशा०
प	लाधो[11]	लब्धिप्रधान	प० युक्तिपुरन्दर शिष्य, जिनभद्रशा०
प	कुनणमल[12]	कुशलप्रधान	श्रीजिताम्, भावदीक्षित.
प	दलीचन्द[13]	दयाप्रधान	प० कीर्त्तिसागर मुने प्रपौत्र, क्षेमशा०
प	रतनु[14]	रत्नप्रधान	प० पुण्यसुख मुने प्रपौत्र, क्षेमशा०
प	ज्ञानानन्द[15]	ज्ञेयप्रधान	प० क्षान्तिभक्ति मुने प्रपौत्र, जिनचन्द्रशा०
प	चिमनो	चारित्रप्रधान	उ० कल्याणमन्दिर गणे. पौत्र
प	तिलोको	तिलकप्रधान	उ० कनकविजय गणे पौत्र, जिनसुखशा०
प	मेघो[16]	महिमाप्रधान	प० पद्महंस मुने पौत्र, जिनभद्रशा०
प	पन्नो[17]	पुण्यप्रधान	प० पद्महंस मुने पौत्र, जिनभद्रशा०
प	डाल्यो[18]	राजप्रधान	श्रीजिताम्
प	वगतो[19]	विवेकप्रधान	प० राजमन्दिर मुने पौत्र, जिनचन्द्रशा०

---

१ जोधपुर २ १९२१ आ व ४ ३ आषाढ व ७
४ ५ आ व ७ जोधपुर ६ ७ कोटे रा ८ जयपुर
९. स० १९२१ ज्ये व १४
१० श्री योधपुरे, बीलाडा वास्तव्य, स० १९२८ आषाढ सु २
११ जूनागढे स० १९२८ प्र भा सु १५
१२ जेसलमेर मध्ये स० १९२८ पो सु ११ १३ खीचन्द वा०
१४ श्री दुर्गे स० १९३० ज्ये सु ३ १५ स० १९३० आसो० सु० १०
१६ १७. श्री दुर्गे स० १९३० मि व १३ १८ स० १९३० मि व १३
१९ स० १९३० मि व १३

प करणीयौ	कनकप्रधान	प० अभयमाणिक्य मुनेः शिष्य, जिनलाभशा०
प लालो[1]	लक्ष्मीप्रधान	प० दयाभद्र मुने पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प मोहणीयो[2]	माणिक्यप्रधान	प० भक्तिमाणिक्य मुने पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प सूजीयो[3]	सत्यप्रधान	प० भक्तिमाणिक्य मुनेः पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प इन्द्रचन्द[4]	इन्दुप्रधान	प० मनसुख मुने पौत्र, जिनभद्रशा०
प. इन्द्रचन्द[5]	इन्द्रप्रधान	प० पनेचन्द वा० दयासुख गणे पौत्र

॥ सं० १९३२ रा वर्षे शाके १७९७ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे वैशाख मासे शुभे शुक्ल पक्षे ३ तिथौ शनिवासरे जं० यु० प्र० भ० श्रीजिन मुक्तिसूरिभिः तृतीया रत्न' नाम्नि नन्दी कृता, श्री जेसलमेरु मध्ये ।

प दुर्गो[6]	दयारत्न	प० विवेकरुचि मुने. पौत्र, जिनभद्रशा०
प चोथीयो[7]	चैनरत्न	प० प्रेमसुन्दर मुने. पौत्र, जिनभद्रशा०
प विनैचन्द[8]	विनयरत्न	प० अखयरुचि पौत्र, जिनचन्द्र शा०
प विनैचन्द[9]	विवेकरत्न	वा० क्षमाविलास गणे पौत्र, जिनभद्रशा०
प गुलाबो[10]	ज्ञेयरत्न	प० जयरत्न गणे पौत्र, जिनभद्रशा०
प वगतो[11]	विमलरत्न	प० धनसुख मुनेः शिष्य
प बुधो[12]	विबुधरत्न	प० चारित्रविमल शिष्य, जिनचन्द्रशा०
प सोभागो[13]	सौभाग्यरत्न	श्रीजिताम्
प शिवो[14]	शान्तिरत्न	श्रीजिताम्
प मेघराज[15]	महिमारत्न	प० जेतसुन्दर मुने पौत्र, क्षेमशा०
प खीमो[16]	क्षमारत्न	प० लाभसागर मुने , जिनभद्रशा०
		प० महिमाकीर्त्ति शिष्य
प वेनीयो[17]	ज्ञानरत्न	वा० धनसुख शिष्य, जिनभद्रशा०

नोट :—यहाँ तक की नन्दियें दफ्तर मे रखे एक पत्र मे 'कुजर' नन्दि लिखा है ।

---

१ स० १९३० जेसलसेरु २ ३ स० १९३१ मा सु १० श्री दुर्गे
४ यशोल ५ वासथोभ ६ ७ सेत्रावै ८ फलोधी स० १९३४ थोभ मे
९ सिवाणची स० १९३३ रा १० श्रीदुर्गे स० १९३३ रा
११ श्रीदुर्गे सिवाणची १२ पचपदरा मध्ये सं० १९३–
१३ १४ श्री कोटडा मध्ये स० १९३५ रा चैत्र
१५ वीलाडे वा० १६ गुढा म० हाडेनो वा० १७ काणाणो चवाणची वा०

प. सवाई[1]	सुखरत्न	प० धर्मशेन मुने पौत्र, जिनभद्रशा०
प वनौ[2]	विशालरत्न	उ० प्रेमविनय गणे' पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प वरघो[3]	वृद्धिरत्न	प० पद्महस मुने. पौत्र, जिनभद्रशा० प० सत्यविनय शिष्य
प जगतचन्द्र	जयरत्न	प० क्षेमविनय पौत्र, जिनभद्रशा० प० अमरसुन्दर शिष्य
प कर्पूरचन्द्र[4]	कनकरत्न	प० लब्धिप्रधान शिष्य जिनभद्रशा० प० युक्तिपुरन्दर पौत्र
प हुकमचन्द[5]	हर्षरत्न	प० तिलकहस पौत्र
प मोतीचन्द[6]	मुक्तिरत्न	प० कुशलचन्द शिष्य, मेरुधर्म प्रपौत्र, प० सारग मुनेः पौत्र
प कल्याणशिव[7]	कनकरत्न	प० रगजी पौत्र, ज्ञानकमल मुने प्रपौत्र
प जगतचन्द[8]	जयरत्न	उ० हर्षकल्याण गणे पौत्र, प० महिमाकल्याण शिष्य
प शिवचन्द[9]	शान्तिरत्न	उ० हर्षकल्याण गणे पौत्र, जिनभद्रशा० म० जिनदत्तसूरि सतानीय,
प मयाचन्द[10]	मेरुरत्न	प० क्षमासुन्दर पौत्र, जिनचन्द्रशा० प० हर्षकीर्त्ति शिष्य
प. नेमिचन्द[11]	नयरत्न	प० लाभतिलक पौत्र, क्षेमशा० प० विवेकसुन्दर शि०
प. रतीचन्द[12]	राजरत्न	प० क्षमासुन्दर मुने. पौत्र, जिनचन्द्र शा० प० हर्षकीर्त्ति शि०
प. रामलाल	ऋद्धिरत्न	जिनभद्रसूरि शा० उपदेशात् श्रीमुखात्
प किशनचन्द[13]	कल्याणरत्न	उ० विवेककीर्त्ति शि० रूपचन्द पौत्र

---

१ जयपुर मध्ये सणधरी वा० स० १९३६ रा २ ३ चाणोदवा० जयपुर मध्ये
४ जूनँगढ स० १९३६ फा व ६ जयपुर मध्ये ५ स० १९४० जयपुर मध्ये
६, मुदरा ग्रामे कच्छ देशे ७ ग्राम कपाया कच्छदेश स० १९४० जयपुर
८ अजमेर मध्ये ९ कोटा वा० १० जावरा ११ सल्लाणा वास्तव्य
१२ जयपुर मध्ये
१३ वणारस वास्तव्य स० १९४२ रा श्रा सु १० रविवासरे जयपुरमध्ये

।। सं० १९४३ वर्षे शाके १८०८ प्रमिते मिती आश्विन शुक्ल विजय-दशम्यां तिथौ गुरुवासरे ज० यु० प्र० भ० श्रीजिनमुक्तिसूरिभि चतुर्थी 'आनन्द' नन्दी कृता श्री सवाई जयपुर मध्ये ।।

प. मीठालाल[1] महिमानन्द	वा० रगसुन्दर पौत्र, क्षेमशा०
पं किशनचन्द[2] कृष्णानन्द	प० दयासुन्दर पौत्र, जिनभद्रशा०
पं रतनसिंह[3] रत्नानन्द	प० रूपचन्द शिष्य, जिनभद्र शा०
	प० जयचन्द पौत्र, जिनरत्न सतानीय
प. गिरवाणचन्द[4] ज्ञानानन्द	प० महिमाकीर्त्ति पौत्र, क्षेमशा०
	प० विवेकसुन्दर शि०
प हीराचन्द	प० माणिक्योदय शि०, जिनरत्न० सतानीय
	उ० भीमभद्र प्रपौत्र
प. प्रेमराज	प० माणिक्योदय शि०, जिनरत्न० सतानीय
	उ० भीमभद्र प्रपौत्र
प कृष्णो[5]	प० माणिक्योदय शि०, जिनरत्न० सतानीय
	उ० भीमभद्र प्रपौत्र,जिनभद्रशा०
पूनमचन्द	प० धर्मोदय मुने शिष्य,
	प० राजानन्द मुने. पौत्र
प पूनमचन्द[6] पूर्णानन्द	उ० देवीचन्द पौत्र, सदाकीर्त्ति शि०, क्षेमशा०
प गम्भीरो[7] गजानन्द	प० कनककीर्त्ति मुनेः शि०, कीर्त्तिरत्नशा०
	प० सुखशील गणे पौत्र, (प० कनककीर्त्ति मुनि के कहने से) प० चारित्रसुख गणे. पौत्र
प सरुपचन्द[8] सदानन्द	वा० विनयविमल गणे. पौत्र,
	पं० सुमतिसुख शि०,
प. रामचन्द्र[9] रामानन्द	उ० हर्षकल्याण गणे. प्रपौत्र, जिनभद्रशा०
	प० महिमाकल्याण पौत्र, जेयसुख शि०,

---

१ खाचरोद २ सेत्रावै ३ आ. व ४ सवाई जयपुर माडवी वास्तव्य

४. मल्लाणी ५. कच्छ देशे माडवी वास्तव्य स० १९४४ रा आ सु ८ जयपुर मध्ये ६ जालोर वा० स० १९४५ जयपुर ७ स० १९४६ जयपुर

८ सं० १९५२ माह वदि १२ रतलाम मध्ये श्री हजूर रैवास अजमेर

९ स० १९५२ माघ वदि १२ रेवास कोटै

प	दयाचन्द[1]	देवानन्द	वा० हीराचन्द पौत्र, क्षेमकीर्तिशा० प० खूबचन्द शिष्य
प	कस्तूरो[2]	कनकानन्द	वा० रामचन्द पौत्र, क्षेमशा० प० भुवनकीर्त्ति मुने शिष्य
प	देवीचन्द[3]	दयानन्द	प० इद्रभाण पौत्र, शिष्य गजकीर्त्ति मुने
प	सागर[4]	सत्यानन्द	प० हेमराज पौत्र, क्षेमशा० प० हर्षकीर्त्ति शि०
प	खेमो[5]	क्षमानन्द	प० गुणमेरु मुने प्रपौत्र, जिनचन्द्रशा० प० हर्षसुन्दर शि०
प	मोतीचन्द[6]	मेघानन्द	प० अमृतादय मुने पौत्र, क्षेमशा० प० दयासुन्दर शि०

।। सं० १९५५ वर्षे शाके १८२० प्रमिते मिति फाल्गुन कृष्ण ५ तिथौ गुरुवासरे ज० यु० प्र० भ० श्रीजिनमुक्तिसूरिभि पचमी 'राज' नन्दी कृता श्री आहोर नगरे, श्रीरस्तु, कल्याणमस्तु ।।

प	सरूपो[7]	सत्यराज	प० चारित्रविमल मुने पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प	मिलापो	माणिक्यराज	उ० रूपसुन्दर गणे शि०, जिनसुख० सतानीय
प	रतनो	रत्नराज	उ० रूपसुन्दर गणे शि०, जिनसुख० सतानीय
प	पूनमो	पुण्यराज	उ० दयालाभ गणे पौत्र, क्षमशा०
प	रतनो	रत्नराज	प० तीर्थराज मुने शि०, क्षेमशा०
प	इद्रचन्द		
प	अमोलख[8]	अमृतसुन्दर	

---

१ स० १९५ माघ सुदि ५ सोमवारे रतलाम नगरे।

२ स० १९५२ रा माघ सुदि ५ सोमे खाचरोद रे वासी रतलाम मध्ये।

३ स० १९५२ माघ सुदि ५ सोमे रतलाम मध्ये सुणेल वास्तव्य।

४ स० १९५२ माघ सुदि ५ सोमे रतलाम मध्ये पीपलोद वास्तव्य।

५ स० १९५२ माघ सुदि ५ सोमे मन्दसौर वास्तव्य रतलाम मध्ये।

६ स० १९५२ माघ सुदि ७ रतलाम मध्ये सीतामऊ वास्तव्य।

७. आहोर मध्ये दुदा रै वाडै वास्तव्य ८ नागोरी सधाडा

प कल्याणो　　　　　　प० कुमुदकीर्त्ति
प हसराज[1]　　　　　　प० हेमधर्म मुने'

।। महोपाध्याय वालचन्द गणे उ० विवेककीर्त्ति गणे' शिष्य वाचक प० प्र० गुणचन्द्र गणे गुणसुख मुने ।।

प अमरो　　　　　　प० अभयकल्याण
प सुगणचन्द[2]　　　　प० शातिसुख
प कुनणमल[3]　　　　प० कुशलप्रधान मुने
प फरसराम　　　　　श्री हजूर सायबा रे शिष्य
स'ध्वी चन्द्ररिद्धि[4]
साध्वी चारित्ररिद्धि[5]

प हुकमचन्द प० पन्नालाल रा चेला ठाणू ३ रोहिणी नागौर परगनै रा मडाय नं वासक्षेप लीनौ इत्यलभ् शुभम्
प करणीदान रो चेलो वासक्षेप री पुडी लेनै नाम मण्डायो
प चुन्नोलाल[6]
प गुलावचन्द[7] शिष्य विनेचन्द रासीसजी वडी दोक्षा नाम ज्ञानकल्याण मुने.

❀ श्री जिनचन्द्रसूरि ❀

।। स० १९५७ शाके १८२२ मिती चैत वदि १२ श्री जयपुर नगरे ज० यु० भ० श्री १००८ श्रीजिनचन्द्रसूरिभि प्रथमा 'विमल' नन्दी कृता ।।

प पन्नो[8]　　विनयविमल　प० ज्ञेयरत्न मुने. शिष्य, जिनभद्रशा०
प चुनीयो[9]　चारित्रविमल　प० कनकप्रधान मुने. शिष्य, जिनभद्रशा० जिनलाभ सतानीय

।। सं० १९६३ रा वर्षे शाके १८२८ प्रमिते मिती पौष कृष्ण १४ तिथौ भृगुवासरे ज० यु० प्र० वृ० ख० भ० श्रीजिनचन्द्रसूरिभि १ 'विमल' नन्दी कृता सवाई जयपुर नगरे ।।

प नेमिचन्द्र[10] नेमिविमल　महो० विवेककीर्त्ति गणे, जिनलाभशा० प० कनकविजय गणे. प्रपौत्र

---

१ वास पाली　२ माधोपुर　३ हाला　४ ५ मेडतै　६ वास चोहटण
७ वास थोत्र　८ जीझणीयाली　९ चोहटण　१० वणारस नगर निवासी

।। स० १ ७२ वर्षे शाके १८३७ प्रमिते मिती जेठ सुदि १ वार रवि थोव स पचपदरे आयने भेट कीनी, नाम दर्ज करायो। वृहत्खरतर गच्छाधीश्वर श्रीजिनचन्द्रसूरिभि ।।

प वीरचन्द[1] विनयविमल प० विनैचन्द शिष्य, प्रपौत्र दानसुख वृद्ध दीक्षा प्रदत्ता

।। सं० १९७२ वर्षे शाके १८३७ प्रमिते मिती मागशिर कृष्ण १ तिथौ चन्द्रवासरे ज० यु० प्र० वृ० भट्टारक श्रीजिनचन्द्रसूरिभि. द्वितीय 'रत्न' नन्दी कृता बाडमेर नगरे, श्री रस्तु । कल्याणमस्तु ।।

पं. विरो[2] विनयरत्न प० सत्यराज मुने शिष्य, जिनचन्द्रशा०
प गेनो[3] ज्ञेयरत्न प० कनकप्रधान मुने' शिष्य, जिनभद्रशा० जिनलाभ सतानीय
प. वेलो[4] विमलरत्न प० कनकप्रधान मुने शिष्य, जिनभद्रशा० जिनलाभ सतानीय
प भीमो[5] भानुरत्न प० लब्धिप्रधान शि०, जिनभद्रशा०
प तिलोकचन्द त्रैलोक्यरत्न श्रीचन्द मुने शि०, जिनचन्द्रशा०

विजय गच्छ समाचारी त्यक्त्वा श्री खरतर गच्छ समाचारी अगी कृता जयपत्तन मध्ये मि० माघ कृष्ण ३ गुरुवारे स० १९७३ रा।

।। स० १९७६ मिती मागशिर शुक्ल पक्ष ४ श्री जयनगरे ।।

प वृद्धिचन्द[6] विवेकरत्न प० दयासुन्दर मुने पौत्र, क्षेमशा० प० मेघानन्द मुने शि०,

।। सं० १९७७ रा वर्षे शाके १८४२ प्रमिते चैत्र कृष्ण ९ शुक्रवासरे ज० यु० प्र० वृ० ख० भट्टारक श्रीजिनचन्द्रसूरि विजय राज्ये श्री जालोर दुर्गे खरतरगण शुभम् ।

प वीरो विवेकरत्न प० पुण्यराज शि०, क्षेमशा० प० उदयलाभ गणे पौत्र

---

१ थोव ग्रामे
२ बाडमेर मध्ये, दुधारे वाडे वास्तव्य
३ वास्तव्य चोहटण
४ पो सु. ११ चन्द्रे, वास्तव्य चोहटण
५ नया गुढा मे फा सु ३
६ रैंवास सीतामऊ

❀ श्री जिनधरणेन्द्रसूरि ❀

।। स० २००३ मिती ज्येष्ठ कृष्णा १३ बुधवासरे जं० यु० प्र० वृ० भ० श्रीजिनधरणेन्द्रसूरिभि प्रथम 'चन्द्र' नन्दी कृता श्री सवाई जयपुर मध्ये ।।

प अरुण[1] प्रेमसुन्दर प० रायचन्द्र पौत्र, क्षेमशा०, अरुणचन्द्र
वृहत दीक्षा जयपुर मे

"गादी की आज्ञानुसार कार्य करता रहूगा, आज से आपश्री की खरतर गच्छी गादी की आम्नाय आज्ञा पालन करता रहूगा।

द यति अरुणचन्द्र मुने सही द पोते स० २००३ ज्ये कृ. १३ बुध।

—०—०

भाव चारित्र आदरयां री विगत

स० १८८८ वैशाख सुदि ३ मेडता वास्तव्य सोलकी रतनचन्दजी पुत्र पीरचन्दजी भार्या सिरूपा, सुमतिवर्द्धनस्य शिष्यणी, प० चारित्रविनय मुनेरुपदेशात् सजाता 'सिद्धश्री' इति दीक्षा नाम प्रदत्त।

स० १८८८ पोप बदि २ नागोर वास्तव्य छजलानी वृद्धिचन्दजी कस्य भार्या गुमानी प० सुमतिवर्द्धनस्यैव शिष्यणी जाता ज्ञानश्रीति नाम कृत। तदनु—पुहकरण वास्तव्य लूणीया चैनजी भार्या रूपा।

स० १८९३ ज्ये० बदि १० सिद्धगिरौ सिद्धश्रिया उपदेशेन चारित्र गृहीतं तस्या एवातेवासिनी सजाता, आभि सर्वाभि श्रीविमलाद्रौ ज० यु० प्र० भ० श्रीजिन महेन्द्रसूरि मुख्याना निकटे वासो गृहीत. सघवी वाहदरमल्लजित्सघमध्ये चतुर्विध सघ समक्षम् ।।

पश्चात् स० १८९४ वर्षे आषाढ सुदि १० दिने पाली वास्तव्य घारीवाल खूबचन्दजी पुत्र रुघजी भार्या लाछा कया सिद्धश्री उपदेशात् श्रीसूरिशिरोमणि ज० यु० भ० श्रीजिनमहेन्द्रसूरीणा समीपे पाली नगरे चतुर्विध सघ समक्ष महदाडवरेण भावन ससारानित्यता विज्ञाय चारित्र गृहीत्वा सिद्धश्रिया शिष्यणी जाता श्रीजिद्धिर्लक्ष्मीश्रीति दीक्षा नाम प्रतिष्ठितम्।

—०—०

---

[1] फलोधी मध्ये दफ्तरी पदारूढ।

साध्वी दीक्षा नन्दी

—००—

।। स० १७८३ वर्षे फाल्गुन शुदि ५ भ० श्रीजिनभक्तिसूरिभिः साध्वीनां दीक्षा दत्ता, तन्नामान्येवम् ।।

सा माना	मानसिद्धि	सा० जीवसिद्धि री
सा वखतू	विनयसिद्धि	सा० भामा री
सा लक्ष्मी	लक्ष्मीसिद्धि	सा० जावा री

।। स० १८०५ वैशाख सुदि ५ श्री जेसलमेरु मध्ये भ० श्रीजिनलाभसूरिभि ।।

सा भागा	भक्तिसिद्धि
सा मलूका[1]	मलूकसिद्धि

।। स० १८१० मिती मार्गशीर्ष वदि ५ श्रीबीकानेर नगरे ।।

सा रतना	रत्नसिद्धि	सा० जीवसिद्धि री
सा लाला	लालसिद्धि	सा० लावण्यसिद्धि री
सा फाछू	फतैसिद्धि	सा० नैणसिद्धि री
सा रुक्मिणी	रुक्मसिद्धि	सा० रत्नसिद्धि री
सा माहो	महासिद्धि	सा० मलूकसिद्धि री
सा वखती	विवेकसिद्धि	सा० विनयसिद्धि री
सा जसू	जयचूला	सा० वीरचूलाया
सा. राई	रत्नचूला	सा० वीरचूलाया
सा फत्तू[2]	फूलसिद्धि	सा० राजसिद्धि री
सा अजवा[3]	अमृतलक्ष्मी	सा० रूपलक्ष्मी री

।। स० १८२४ वर्षे वैशाख सुदि ३ उदयपुर नगरे ।।

सा. सरूपा	सरूपसिद्धि	सा० भावसिद्धि री
सा अणदो[4]	अमृतसिद्धि	सा० नैणसिद्धि री

---

१. स० १८१० जेठ सुदि १५ श्री देशनोक मध्ये २. दशवाणीयैं रे खण री

३ स० १८२१ वैशाख सुदि ३ तलवाडै ४. स० १८२५ पुडी ३ साथे दीधी

सा फूला[1]	पुष्पशोभा	सा० दीपशोभा री
सा वखती	विनयसिद्धि	सा० रत्नसिद्धि री

॥ सं० १८२५ वर्षे मिती पोष सुदि ७ भूंभा दड़ा ग्राम मध्ये ॥

सा अखू	अक्षयसिद्धि	सा० लावण्यसिद्धि
सा कुशली	कुशललक्ष्मी	सा० रूपलक्ष्मी री
सा जीवी	जयसिद्धि	सरूपसिद्धि री

॥ स० १८३० फाल्गुन कृष्णा द्वितीयायां श्री पालीताणा मध्ये श्री जिनलाभसूरिभि ॥

सा फूला	फूलसिद्धि	सा० रत्नसिद्धि री पौत्री
सा अखू	अमृतसिद्धि	सा० रत्नसिद्धि री पौत्री
	अमरसिद्धि	सा० विनयसिद्धि री चेली
सा रूपा	रगचूला	सा० रत्नचूलाया दुर्गस्था
सा अजीया[2]	अमृतचूला	

॥ श्राविका स्वभावेन आत्मनिस्तरणार्थं दीक्षा गृहीता वा० कुशलभक्ति गणे पार्श्वे ॥

॥ स० १८४३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १ श्री बीकानेर मध्ये भ० श्रीजिनचन्द्रसूरिभि ॥

सा चन्दू	चारित्रसिद्धि	सा० फूलसिद्धि री चेली
सा खुश्याली	क्षमासिद्धि	सा० अखयसिद्धि री
सा जेकू	जयमाला	सा० फतमाला री
सा. लाछा	लक्ष्मीसिद्धि	सा० रत्नसिद्धि री पौत्री
सा फूदा	फूंदमाला	सा० मानमाला री
सा फत्तू	फतैमाला	सा० फूंदमाला री
सा रूपा	रत्नशोभा	सा० पुष्पशोभा री
सा वरजू	विजयमाला	सा० फतैमाला री
सा लाडू	लक्ष्मीसिद्धि	सा० अमृतसिद्धि री

---

१ नाहटा रै खण री

२ स० १८४१ वर्षे मिती फाल्गुन सुदि ७ फलवर्द्धिक वास्तव्य ।

सा जसू[1]	जयलक्ष्मी	सा० अमृतलक्ष्मी री पौत्री
सा गुमानी	ज्ञानसिद्धि	सा० अषयसिद्धि री
सा विज्जू	विनयसिद्धि	सा० फूलसिद्धि री चेली
सा मानूडी[2]	मानशोभा	सा० पुष्पशोभा री पौत्री

।। सं० १८६८ ज्येष्ठ बदि १ श्री देशनोक मध्ये भ० श्रीजिनहर्षसूरिभि ।।

सा. मगनाई[3]	मुक्तिशोभा	सा० मानशोभा री चेली

।। स० १८६७ वर्षे आषाढ सुदि ६ दिने पाली मध्ये ।।

सा उमेदी	आनन्दमाला	सा० जयमाला री चेली
सा. अमेदी[4]	आनन्दसिद्धि	सा० जयसिद्धि री चेली
सा उमेदी[5]	अमृतसिद्धि	सा० विनयसिद्धि री चेली
सा रतना	राजसिद्धि	सा० लक्ष्मीसिद्धि री चेली
सा हस्तूडी	हस्तसिद्धि	सा० चारित्रसिद्धि री चेली

।। स० १८६९ श्री बीकानेर मिगसर बदि १३ ।।

सा जीतूडी	जीतलक्ष्मी	सा० जयलक्ष्मी री चेली
सा पन्नूडी	प्रीतलक्ष्मी	सा० जोतलक्ष्मी री चेली

।। सं० १८७६ वर्षे आषाढ सुदि १० बीकानेरे ।।

सा शम्भडी[6]	श्रीशोभा	सा० रत्नशोभा री पौत्री
सा शिरदारी[7]	सत्यशोभा	सा० श्रीशोभा री चेली
सा लछमाई[8]	लब्धिसिद्धि	सा० राजसिद्धि री चेली
सा सिणगारी[9]	स्वर्णसिद्धि	सा० ज्ञानसिद्धि री चेली
सा. नवली[10]	नीतिसिद्धि	सा० स्वर्णसिद्धि री चेली
सा रतना[11]	ऋद्धिचूला	सा० रगचूलाया शिष्यणी
सा. धन्नाई	धर्ममाला	सा०
सा सेराई[12]	सौभाग्यसिद्धि	सा० विनयसिद्धि री पौत्री

---

१ स० १८४५ मिगसर वदि ७ २ स० १८५१ मि ब ११ बीकानेरे
३ नाहटा रे खण री ४ सुभटपुरस्था जिनराजसूरि ५ सूजाई—देशनोक
६ ७ नाहटा रै खण री ८ पारखा रै खण री ९ १० खजानचिया रै खणरी
११ दुर्ग १२ दशवाणी खण री

सा चूनी[1] चित्रसिद्धि सा० लक्ष्मीसिद्धि री प्रपौत्री
सा मोनू[2] मानसिद्धि सा० चारित्रसिद्धि री पौत्री
सा धर्मनी[3] धर्मलक्ष्मी सा० जीतलक्ष्म्या पौत्री
सा खुश्याली[4] क्षेमचूला सा० रगचूला री पौत्री

॥ सं० १९०८ प्रमिते मार्गशीर्ष शुक्ल एकादश्यां तिथौ गुरुवारे श्री कलकत्ता बिंदर मध्ये ॥

सा गुमानी ज्ञानसिद्धि श्री आनन्दरत्न गणे शिष्यणी

दादरी वास्तव्य दुधोडिया गोत्रे बाई गुमाना राबा दिल्ली मध्ये उ० श्री आनन्दरत्न गणे पार्श्वे स्वात्मसिद्धयर्थं दीक्षा गृहीता स० १९०३ रा मि माघ सु १३ तिथौ।

सा राधा रत्नसिद्धि सा० ज्ञानसिद्धि री चेली
सा ऊमा[5] आनन्दसिद्धि सा० ज्ञानसिद्धि री चेली
सा लिछमा[6] लावण्यसिद्धि सा० चित्रसिद्धि री पौत्री
सा सन्तोषा[7] सत्यसिद्धि सा० सिद्धश्री शिष्यणी, जिनसुखशा० चारित्रविनय मुने.
सा प्रतापा[8] पद्मसिद्धि सा० सत्यसिद्धि री शिष्यणी,
सा चनणा[9] चन्द्रसिद्धि सा० पद्मसिद्धि री शिष्यणी, जिनसुखशा०
सा चम्पाश्री चारित्रसिद्धि सा० चन्द्रसिद्धि री शिष्यणी प० सुमतिवर्द्धन मुने.
सा रूपा[10] राजसिद्धि प० रत्नराज मुने शिष्यणी
सा. ऊदा उदयसिद्धि प० रत्नराज मुने. शि०, जिनभक्ति सता०
सा तीर्था तीर्थसिद्धि प० रत्नराज मुने शि०, जिनभक्ति सता०

---

१ पारखा रै खण री स० १८८८ मा सु ५ बीकानेरे।
२ सावसुखा रे खण री स० १८८९ मा सु ४ भृगौ।
३ कोठारिया रे खण री स० १८९० वै सु २
४ स० १८९७ माह व ८ दुर्गमध्ये ५ बून्दी मध्ये स० १९२० फा व ५
६ पारखा रे खण री जोधपुर मध्ये ७ स० १९२– आषाढ वदि ४
८ स० १९२१ ज्ये व ८, मेडता मध्ये ९ मेडता मध्ये
१० जोधपुर नगरे स० १९२१ आषाढ वदि ७

सा	रम्भा	रत्नसिद्धि	प० रत्नराज मुने शि०, जिनभक्ति सता०
सा	सिरदारा	सुमतिसिद्धि	प० रत्नराज मुने शि०, जिनभक्ति सता०
सा	वल्लभश्री	विवेकसिद्धि	सा० ज्ञानसिद्धि शि०, जिनसुखशा०
सा	जडावश्री	जयसिद्धि	सा० ज्ञानसिद्धि पौत्री शि०, सवेगण
सा	महताब	मानसिद्धि	सा० गुलाबसिद्धि री शिष्यणी
सा	रतनसिरि	राजसिद्धि	सा० गुलाबसिद्धि री शिष्यणी

।। स० १९२८ प्रमिते मासोत्तम मासे माधव मेचकस्य गुणमिताया कर्म-वाट्या रविजयुतायां श्री अजमेर नगर मध्ये भ० श्रीजिनमुक्तिसूरिभिः वृहद् दीक्षा कृता श्रीजिनभद्रसूरि शाषाया जिनभक्तिसूरि सतानीय श्रीसुमतिवर्द्धन मुने तच्छिष्य चारित्रसागर मुन्युपदेशात् साध्व्य सजाता-स्तासा नामानि ।।

सा	सोभागश्री	सत्यसिद्धि	प० चारित्रसागर मुने शिष्यणी
सा	सत्वसिद्धि	सत्सिद्धि	
सा	निधानश्री	निधानसिद्धि	सा० सत्यसिद्धि शिष्यणी
सा	रतनश्री	रत्नसिद्धि	सा० सत्वसिद्धि शिष्यणी
सा	फूलश्री	पुष्पसिद्धि	सा० सत्वसिद्धि शिष्यणी
सा	जडावश्री	जानसिद्धि	सा० विद्यासिद्धि शिष्यणी

❋ ❀

श्रीजिनसौभाग्यसूरि

।। स० १८९२ माघ शु० दशम्यां तिथौ भ० ज० यु० प्र० श्रीजिन सौभाग्यसूरिजित् 'कीर्त्ति' नन्दी कृता ।।

प मनमुख मानकीर्त्ति महो० भावविजय गणे प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प भीखौ भुवनकीर्त्ति वा० राजप्रिय गणे पौत्र, जिनभक्ति शा०
प ईसर आणन्दकीर्त्ति प० हसविलास गणे शिष्य, जिनहर्षशा०
प खेमौ क्षेमकीर्त्ति प० चारित्रवर्द्धन मुने पौत्र, जिनरत्नशा०
प देवानन्द दिनेन्द्रकीर्त्ति प० हीरसमुद्र मुने. शिष्य, जिनभद्रशा०
प वखतावर विनयकीर्त्ति प० क्षान्तिरग मुने पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प हीरौ हर्षकीर्त्ति प० दयाविलास मुने शिष्य, क्षेमशा०
प परमानन्द पुण्यकीर्त्ति प० जयविजय शिष्य, जिनभद्रशा०
प जीतू जयकीर्त्ति प० दानसागर मुने शिष्य, जिनभक्तिशा०
प हुकमौ हेमकीर्त्ति प० चारित्रविलास मुने शि०, कीर्त्तिरत्नशा०
प सुरतो सहजकीर्त्ति महो० भावविजय गणे प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०

।। सं० १८९४ माघ कृष्ण ८ तिथौ भ० ज० यु० प्र० श्रीजिनसौभाग्य-सूरिभि 'धीर' नन्दी कृता ।।

प भवानी भाग्यधीर उ० हीरसमुद्र गणे पौत्र, जिनभद्रशा०
प. अमी अमृतधीर उ० रत्ननिधान गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प इन्दौ उदयधीर प० रत्नविलास मुने पौत्र, क्षेमशा०
प तिलोकौ तिलकधीर प० रत्नविलास मुने पौत्र, क्षेमशा०
प जीवण जयधीर प० मा॰सिन्धुर मुने
प कानौ कनकधीर प० गेयरग मुने पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प. पुनौ पुण्यधीर प० प्रतापसौभाग्य मुने पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प हीरौ हितधीर प० सदारग मुने पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प केसरो कीर्त्तिधीर वा० नेमविजय गणे पौत्र, जिनलाभशा०
प लाभू लक्ष्मीधीर प० सत्यसौभाग्य मुने पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प हीरौ हर्षधीर प० जयरग मुने पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०

प	गम्भीरो	ज्ञानधीर	प० चारित्रसोम मुने पौत्र, क्षेमशा०
प	गुलाबो	गुप्तिधीर	उ० आणन्दवल्लभ गणे पौत्र, जिनभक्तिशा०
प		महिमाधीर	प० पद्मरुचि मुने शिष्य, क्षेमशा०

।। सं० १८९७ ज्येष्ठ शुक्ल ५ भ० ज० यु० प्र० श्रीजिनसौभाग्यसूरिभि. २ 'सुन्दर' नन्दी कृता ।।

प	सावत	सत्यसुन्दर	उ० आणन्दवल्लभ गणे पौत्र, जिनभक्तिशा०
प	पृथ्वीराज	प्रीतिसुन्दर	प० हर्षविशाल गणे शिष्य, जिनहर्षशा०
प.	केसरो	कीर्त्तिसुन्दर	श्री जिनहर्षसूरि पौत्र, प० कुशलसिंह
प	गुणो	ज्ञानसुन्दर	उ० आनन्दवल्लभ गणे पौत्र, जिनभक्तिशा०
प	नेमो	नीतिसुन्दर	उ० आनन्दवल्लभ गण पौत्र, जिनभक्तिशा०
प	जीतू	जयसुन्दर	प० भक्तिनन्दन मुने पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प.	जीवराम	युक्तिसुन्दर	प० पुण्यभक्ति मुने पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प	हर्षचन्द्र	हेमसुन्दर	प० भक्तिनन्दन मुने पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प	लछमण	लक्ष्मीसुन्दर	प० विनयसमुद्र मुने पौत्र
प	तनसुख	तत्त्वसुन्दर	उ० चारित्रप्रमोद गणे प्रपौत्र, सागरचन्द्रशा० प० जीतरग पौत्र, प० उदयभक्ति शिष्य
प	किसनो	कनकसुन्दर	प० पुण्यहर्ष मुने पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प	निहालचन्द	नित्यसुन्दर	जिनभद्रशा०
प	मोतीचन्द	माणिक्यसुन्दर	प० भक्तितिलक शिष्य, जिनभद्रशा०

।। सं० १८९७ रा मिती फाल्गुन शु. ५ शुक्ले भ० ज० यु० प्र० श्रीजिन सौभाग्यसूरिभि ३ 'प्रधान' नन्दी कृता ।।

प	रतनचन्द[1]	रत्नप्रधान	प० भक्तितिलक पौत्र, जिनभद्रशा०
प	लछमण	लक्ष्मीप्रधान	प० विद्याविशाल मुने शिष्य
प	वखतावर	विनयप्रधान	प० महिमासेन मुने शिष्य
प	रामो	रगप्रधान	उ० लक्ष्मीरग गणे पौत्र, जिनभद्रशा०
प.	मानो	महिमाप्रधान	उ० लक्ष्मीरग गणे' पौत्र, जिनभद्रशा०

---

१. अजीमगज

प शम्भू	सत्यप्रधान	पं० ज्ञेयरग मुने पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प माधो	मयाप्रधान	प० क्षमाभक्ति मुनेः शिष्य, क्षेमशा०
प कस्तूरी	कीर्त्तिप्रधान	प० नित्यसुन्दर मुने. शिष्य, जिनभद्रशा०
प. दयाचन्द	दानप्रधान	प० विजयविमल मुने. शिष्य, क्षेमशा०
प वालचन्द	विद्याप्रधान	हर्षमन्दिर मुने शिष्य, जिनभक्तिशा०
प चन्दो	चारित्रप्रधान	हर्षमन्दिर मुने शिष्य, जिनभक्तिशा०
प रतनो	राजप्रधान	प० चारित्रसोम मुनेः पौत्र, क्षेमशा०
प तनसुख	तत्त्वप्रधान	वा० लाभसमुद्र गणे. पौत्र, क्षेमशा०
प हरषो	हितप्रधान	प० प्रतापसौभाग्य पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प वीरभाण	विवेकप्रधान	प० जयरग पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०

॥ सवत् १८९८ मि० पोष सुदि २ गुरौ भ० ज० यु० प्र० श्रीजिनसौभाग्य-
सूरिभि. 'सोम' ४ नन्दी कृता ॥

प सुखरूप	सुमतिसोम	प० गजमन्दिर मुनेः शिष्य, क्षेमशा०
प शिवचन्द्र	सन्यसोम	प० महिमाभक्ति मुनेः शिष्य
प चन्दौ	चारित्रसोम	प० क्षान्तिरत्न मुने पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प हरखौ	हितसोम	प० क्षान्तिरत्न मुने पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प चतरू	चन्द्रसोम	प० भीमचन्द्र मुनेः पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प मलूको	महिमासोम	प० क्षेमरत्न मुने. शिष्य, क्षेमशा०
प मूलो	माणिक्यसोम	प० रूपशेखर मुने, क्षेमशा०
प नारायण	जीतसोम	प० शातिसमुद्र गणेः पौत्र, जिनसुखशा०
प कपूरो	कीर्त्तिसोम	प० शातिसमुद्र गणे पौत्र, जिनसुखशा०
प शिवलाल	सहजसोम	प० अभयभद्र मुने पौत्र, जिनभद्रशा० रगमन्दिर शिष्य
पं महणो	मुक्तिसोम	प० आनन्दशेषर मुनेः शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प नवलो	न्यायसोम	प० मेरुकुशल गणे प्रपौत्र, क्षेमशा०
प रूपो	राजसोम	प० गुणरुचि मुनेः शिष्य, जिनचन्द्रशा०
प. लखमौ	लक्ष्मीसोम	
प चांदौ	चित्तसोम	प० दानसागर मुने. पौत्र, जिनभक्तिशा०
प रामानन्द	रत्नसोम	उ० पद्मरग गणे पौत्र
प रत्नानन्द	रगसोम	उ० पद्मरग गणे पौत्र

प मुहणौ मुनिसोम उ० शिवचन्द्र गणे पौत्र, क्षेमशा०
प नेमो नयसोम उ० शिवचन्द्र गणे पौत्र, क्षेमशा०
प. शिवलाल सुक्खसोम प० क्षेमरत्न मुने: पौत्र, क्षेमशा०
प बुद्धू विनयसोम प० दयानन्द गणे, सागरचन्द्रशा०
प रिछपाल ऋद्धिसोम प० राज मुने. शिष्य
प दुलू दयासोम वा० गुणनन्दन गणे पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प परमसुख पद्मसोम वा० गुणनन्दन गणे पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प० मतिशेखर शिष्य
प हेमो हेमसोम प० हर्षकीर्त्ति मुने: शिष्य, क्षेमशा०
प ईसर आणन्दसोम प० गुणप्रमोद पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प० राजशेखर शिष्य
प रतनौ राजसोम प० लाभशेखर शिष्य
प. सेढू समुद्रसोम प० प्रतापसौभाग्य पौत्र, कीर्त्तिरत्न शा०
प लालौ लावण्यसोम प० क्षेमभक्ति मुने शिष्य, क्षेमशा०
प जीवण जयसोम प० क्षमानन्द गणे. पौत्र, जिनसुखसूरि
प. गुलाबौ गुणसोम प० सत्यनन्दन मुने. शिष्य, सागरचन्द्रशा०

॥ स० १९०३ मिती वैशाख कृष्ण ५ दिने श्रीजिनसौभाग्यसूरिभि ५ 'निधान' नन्दी कृता ॥

प मोहन महिमानिधान प० भावविजय गणे पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प गोपाल गुणनिधान प० सौभाग्यविशाल मुने
प छत्रनिधान
प लालौ लक्ष्मीनिधान प० ज्ञानसागर गणे, जिनलाभशा०
प गगाराम गगानिधान प० कमलकल्याण शिष्य
प केसरो कीर्त्तिनिधान प० मुक्तिरग मुने पौत्र, क्षेमशा०
प आत्माराम आनन्दनिधान प० भक्तिरग मुने, क्षेमशा०
प मोहन मुक्तिनिधान प० क्षेमभक्ति मुने पौत्र, क्षेमशा०
प करमो कुशलनिधान प० धर्मशील मुने शिष्य, क्षेमशा०
प केशरो कल्याणनिधान प० लब्धिविलास मुने पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प राजरूप रत्ननिधान प० बुध्दिधीर मुने शिष्य
प जोधराज जयनिधान प० रत्नलाभ मुने शिष्य, जिनभद्रशा०

प नन्दौ	नीतिनिधान	पं० ज्ञानानन्द मुने पौत्र
प चतुरो	चारित्रनिधान	वा० सत्यसौभाग्य गणेः पौत्र प० आनन्दविनय शिष्य
प प्रेमचन्द	प्रीतिनिधान	संवेगी साधु
प लक्ष्मीचन्द	लावण्यनिधान	प० रत्नविलास मुनेः प्रपौत्र, क्षेमशा०
प केशरीचन्द	कनकनिधान	प० रत्नविलास मुनेः पौत्र, क्षेमशा०
प. जीवण	जीतनिधान	उ० आनन्दवल्लभ गणे प्रपौत्र
प नेमचन्द	पुण्यनिधान	प० जीतविनय मुने. शिष्य, जिनचन्द्रशा०
प शिवलाल	सुखनिधान	प० रत्नविलास मुनेः पौत्र, क्षेमशा०

जयपुर के

॥ सं० १९०५ मि० फाल्गुन कृ० १० दिने जं० यु० प्र० भ० श्रीजिन-सौभाग्यसूरिभि ६ 'लब्धि' नन्दी कृता विक्रमपुरे ॥

प बलदेव	विनयलब्धि	प० क्षेमराज मुने. शिष्य
प भादर	विद्यालवि	प० विनयसमुद्र मुनेः प्रपौत्र
प जोरौ	जयलब्धि	प० क्षमानन्द मुने पौत्र
प ऊदौ	उदयलब्धि	प० रत्नविमल मुने. शिष्य
प रामसुख	रत्नलब्धि	वा० क्षेमानन्द गणे. पौत्र
प सूरजमल	सत्यलब्धि	प० जीतरंग मुने पौत्र
प रामसुख	रंगलब्धि	उ० उदयभक्ति गणे· पौत्र
प. विसनौ	विवेकलब्धि	पं० विवेकमाणिक्य मुने· शिष्य, जिनहर्षशा०
प भवानी	भक्तिलब्धि	प० सहिजानन्द मुने. पौत्र
प गुलाबौ	ज्ञानलब्धि	प० क्षेमरत्न मुने
प हुकमौ	हर्षलब्धि	उ० हीरसमुद्र गणे' पौत्र
प. परमानन्द	प्रीतलब्धि	उ० हीरसमुद्र गणे पौत्र प० दिनेन्द्रकीर्त्ति शिष्य
प. गोपाल	गुणलब्धि	प० गुणरुचि मुने शिष्य
प रेखचन्द	राजलब्धि	वा० सत्यसौभाग्य गणे. पौत्र
पं करमो	कल्याणलब्धि	प० भाग्यविलास मुने·
प हीरो	हेमलब्धि	प० विजयविमल मुने शिष्य
पं मानो	महिमालब्धि	प० सुमतिविशाल पौत्र, प० समुद्रसोम मुने शिष्य

प	परमु	पुण्यलब्धि	वा० सौभाग्यहर्ष गणे पौत्र प० चारित्रशेखर शिष्य

॥ सं० १९०६ रा पौष सुदि १३ दिने ज० यु० प्र० भ० श्रीजिनसौभाग्यसूरिभि ७ 'वल्लभ' नन्दी कृता ॥

प	विज्जो	विवेकवल्लभ	प० नरसिंह मुने शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प	हरियो	हर्षवल्लभ	प० कनकधीर मुने शिष्य, जिनचन्द्रशा०
प	शिवचन्द्र	सत्यवल्लभ	प० कनकधीर मुने. शिष्य, जिनचन्द्रशा०
प	बालचन्द	विनयवल्लभ	प० सत्यप्रधान मुने शिष्य, जिनचन्द्रशा०
प	सुखलाल	शीलवल्लभ	प० रत्नराज मुने पौत्र, प० ऋद्धिसोम शिष्य
प	विजयराम	विद्यावल्लभ	प० रत्नराज मुने पौत्र, प० ऋद्धिसोम शिष्य
प	लच्छीराम	लक्ष्मीवल्लभ	प० मेरुविशाल शिष्य प० क्षान्तिरत्न पौत्र
प.	वच्छराज	विवेकवल्लभ	प० दयावर्द्धन पौत्र, प० कीर्त्तिविमल शिष्य
प	सुगुण	सत्यवल्लभ	प० ज्ञानसौभाग्य गणे शिष्य, जिनभद्रशा०
प	मुनराज	महिमावल्लभ	प० विवेकसागर मुने पौत्र
प	गोडीदास	गुणीवल्लभ	प० शीलरंग मुने शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प	धरमो	धर्मवल्लभ	प० गजमन्दिर मुने. शिष्य, क्षेमशा०
प	मेघो	महिमावल्लभ	वा० सत्यानन्द गणे. पौत्र प० ऋद्धिविलास शिष्य
पं	मनसुख	मानवल्लभ	वा० सत्यनन्दन गणे. पौत्र प० युक्तिसेन मुने. शिष्य
प	केसरो	कनकवल्लभ	वा० क्षमानन्द गणे पौत्र
पं	विनयो	विवेकवल्लभ	उ० शान्तिसमुद्र पौत्र
प	महिरचन्द	मुनिवल्लभ	प० पुण्यनिधान मुने. शिष्य, जिनचन्द्रशा०
प	कनिराम	कीर्त्तिवल्लभ	प० ऋद्धिसागर मुने पौत्र, क्षेमशा०
प	हिमतू	हितवल्लभ	प० दानसागर मुने पौत्र, जिनभद्रशा०

प घनसुख   धर्मवल्लभ   प० हंसविलास गणे. पौत्र,
प० आनन्दकीर्त्ति शिष्य
प हिमतू   श्रीजिताम्

॥ सं० १९१२ रा मि० द्वि० आषाढ शु० १ श्रीजिनसौभाग्यसूरिभिः 'मण्डन' ८ नन्दी कृता ॥

प मोती   महिमामण्डन   प० मानधर्म मुने शिष्य, सागरचन्द्रशा०
प केशरो   कुशलमण्डन   कीर्त्तिरत्नशा०
प सगुन   सुमतिमण्डन   प० धर्मविशाल मुने. शिष्य, [संवेगी साधु]
प   मुख प्रेममण्डन   प० धर्मविलास मुनेः प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प्रीतिमण्डन शिष्य, क्षान्तिरत्न पौत्र
प   रचन्द हर्षमण्डन   उ० उदयरग गणे पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प अमरचन्द   अमृतमण्डन   उ० उदयरग गणे पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प सुखियौ   सत्यमण्डन   प० प्रतापसौभाग्य मुने पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प० दानविशाल शिष्य
प कानियौ   कल्याणमण्डन   वा० रत्ननिधान गणेः पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प रतनो   रत्नमण्डन   प० जसराज पौत्र, सागरचन्द्र शा०
प कस्तूरो   कीर्त्तिमण्डन   वा० देवानन्द गणे पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प अर्जुन   आनन्दमण्डन   प० चित्तमन्दिर शिष्य, क्षेमशा०
प० गुणसिन्धुर पौत्र
प भूगो   भाग्यमण्डन   उ० उदयभक्ति गणे. पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प खेमो   खेममण्डन   वा० गुणप्रमोद गणे प्रपौत्र, सागरचन्द्रशा०
प रिषभो   ऋद्धिमण्डन   उ० उदयभक्ति गणे. पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प वीझौ   विद्यामण्डन   उ० शान्तिसमुद्र गणे. पौत्र,
प शिवलो   सदामण्डन   उ० विजयविमल गणे शिष्य, क्षेमशा०

॥ स० १९१४ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ दिने श्रीजिनसौभाग्यसूरिभि ९ 'जय' नन्दी कृता ॥

प भैरो   भक्तिजय   वा० सत्यसौभाग्य गणे· पौत्र
प ज्ञानो   ज्ञानजय   प० मतिविलास मुने. शिष्य
प भोमो   भाग्यजय   प० इन्द्रमेरु मुने पौत्र, सागरचन्द्र शा०

प	शिवजी	सुमतिजय	पं० सुमतिविशाल मुने पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प	सुगुन	सुशीलजय	प० रगसोम मुने. पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प	कस्तूरो	कनकजय	प० आनन्दमन्दिर शिष्य, क्षेमशा०
प	माणक	मुक्तिजय	प० गौतमविनय मुने. शिष्य, जिनभद्र शा०
प	गोरधन	प्रीतजय	प० हसविमल शिष्य, जिनभद्र शा०
प.	गणेश	ज्ञानजय	प० रत्नशेखर मुने. पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प	गुलाव	गुप्तजय	प० राजसागर गणे पौत्र, क्षेमशा०
			प० ज्ञानधर्म शिष्य
प	पन्नौ	पुण्यजय	प० रत्नवर्द्धन मुने. पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प	मोती	महिमाजय	उ० उदयरग गणे. पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प	वाघो	विद्याजय	वा० दयानन्द गणे. पौत्र

॥ स० १९१६ मिती फाल्गुन कृ० ८ दिने श्रीजिनसौभाग्यसूरिभिः 'रंग' १० नन्दी कृता ॥

प	लछीराम	लक्ष्मीरग	प० चारित्रशेखर मुनेः शिष्य
प	अबीरो	अमृतरग	वा० लाभसमुद्र गणे पौत्र, क्षेमशा०
प	हुकमो	हितरग	वा० देवनन्दन गणे पौत्र,
प	किशन	कीर्त्तिरग	वा० देवनन्दन गणेः पौत्र
प	गुमान	ज्ञानरग	प० अमृतकलश मुने पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प	लखमो	लावण्यरग	प० विद्याविमल मुने शिष्य, सागरचन्द्रशा०
प	गुलावो	गुणरग	वा० जीतरग गणेः पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०

श्रीजिनहंससूरि

॥ सं० १९१७ रा मिती फाल्गुन कृष्ण ११ दिने भ० जं० यु० प्र० श्रीजिनसौभाग्यसूरिभि 'कमल' २ नन्दी कृता ॥

पं	लछमण	लक्ष्मीकमल	वृहत् श्रीजिताम्
प.	दयानन्द	दानकमल	प० पेमचन्दजी सुशिष्य, सवेगी

प सदासुख सदाकमल प० मोतीविलास मुने. शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प रामचन्द्र रत्नकमल प० चारित्र्रविलास मुने. पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प हिमतू हितकमल प० धर्मधीर मुने शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प गणेशो ज्ञानकमल प० मानसिंह मुने शिष्य, क्षेमशा०
प धर्मो[1] धीरकमल वा० सदालाभ गणे शिष्य, जिनभक्तिशा०
प. कन्हैयालाल कनककमल उ० आनन्दवल्लभ गणे , जिनभक्तिशा०
प धनसुख धर्मकमल उ० आनन्दवल्लभ गणे', जिनभक्तिशा०
प मुहणो मुक्तिकमल प० लक्ष्मीप्रधान मुने. शिष्य, जिनहर्षशा०
प नत्थू न्यायकमल प० गुलाबचन्द मुने. शिष्य, सागरचन्द्रशा०
प सदासुख सत्यकमल प० अभयविलास मुने. शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प सुगणानन्द सौभाग्यकमल प० कीर्त्तिविलास मुने शिष्य, जिनभद्रशा०
प रुघो ऋद्धिकमल प० दानविशाल मुने. शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प डूगर राजकमल प० जसराज मुने पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प० आनन्दसोम मुने. शिष्य
प चिमनो चारित्रकमल प० जसराज मुने पौत्र, सागरचन्द्रशा०
(खोले विनय)
प सुगनो सुमतिकमल प० सुमतिविशाल पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प दानो दानकमल हर्षविशाल गणे. पौत्र, जिनहर्ष शा०
प कुशलो कुशलकमल प० हसविलास पौत्र

॥ सं० १९२० रा मि० माघ शु० ५ दिने भ० ज० यु० प्र० श्रीजिनहंस-
सूरिभि 'अमृत' २ नन्दी कृता ॥

प भोजो भक्तिअमृत प० नयरंग मुने. पौत्र, क्षेमशा०
प हुकमो हर्षअमृत प० नयरंग मुने पौत्र, क्षेमशा०
प चतुरभुज चारित्रअमृत उ० सुमतिशेखर गणे. पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प भीयो भावअमृत प० महिमासेन मुने. पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प भीमो भाग्यअमृत उ० सुमतिशेखर गणे पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प. ऋद्धिअमृत प० राजसोम मुने. शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०

---

१ मालासर

प	रामचन्द्र	रंगअमृत	प० राजसोम मुने शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प	रामचन्द्र	रत्नअमृत	प० राजसोम मुने शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प	माणक	मुक्तिअमृत	क्षेमभक्ति मुने पौत्र, क्षेमशा०
प	रायचन्द्र[1]	रत्नअमृत	प० उदयराज मुने पौत्र, क्षेमशा०
प	माणको	महिमाअमृत	वा० लक्ष्मीविलास गणे शिष्य, सागरचन्द्र०
प	वीझो	विवेकअमृत	प० पद्मशेखर मुने पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प	तनसुख	तत्वअमृत	महो० सत्यसौभाग्य गणे प्रपौत्र, सागरचन्द्र०
प	जोरो	युक्तिअमृत	प० सुमतिविशाल पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प	हरसुख	हीरअमृत	महो० सत्यसौभाग्य गणे पौत्र, सागरचन्द्र०
प	परतापो	प्रेमअमृत	उ० उदयभक्ति गणे. पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प	मुलतानो	महिमाअमृत	वा० नेत्रविशाल गणे पौत्र, जिनभद्रशा०
प	विनयचन्द[2]	विद्याअमृत	सवेगी प० प्र मोहन शिष्य,
प	लाधू[3]	लक्ष्मीअमृत	जयसोम मुने शिष्य, जिनभद्रशा०
प	शिवलाल	शीलअमृत	प० कल्याणसागर मुने शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प	मोहन	महिमाअमृत	प० धीरधर्म मुने पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प	परमसुख[4]	प्रीतिअमृत	प० गगभद्र मुने पौत्र, क्षेमशा०
प	बुलाकी	विवेकअमृत	प० लक्ष्मीकमल मुने शिष्य, जिनभद्रशा०
प	सुगनो	सत्यअमृत	प० लक्ष्मीकमल मुने शिष्य, जिनभद्रशा०
प	पतियो	प्रेमअमृत	प० लक्ष्मीकमल मुने शिष्य, जिनभद्रशा०
प	सिरदारो	सदाअमृत	प० दयाविलास शिष्य, जिनभद्रशा०,
प	रामचन्द्र	रत्नअमृत	बृहत् श्रीजिताम्
प	लखमो	लक्ष्मीअमृत	बृहत् श्रीजिताम्

॥ सं० १९२५ रा मि० चैत्र कृ० ३ दिने ज० यु० प्र० भ० श्रीजिनहंससूरिभि. 'सार' ३ नन्दी कृता ॥

मु	फूलचन्द	फतैसार	प० मयाप्रधान मुने शिष्य, क्षेमशा०
मु	रामलाल	ऋद्धिसार	प० धर्मशील मुने पौत्र, क्षेमशा०
मु	सदानन्द	सत्यसार	प० दयाभक्ति मुने प्रशिष्य, जिनभद्रशा०
			प० दानशेखर शिष्य

---

१ २ जयपुर ३ गिरनार ४ कुण्डल

चि	चुन्नीलाल	चारित्रसार	प० जयसोम मुने शिष्य, क्षेमशा०
चि	रामदयाल	रत्नसार	प० समुद्रसोम मुने पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
चि	किरपाचन्द	कीर्त्तिसार	प० समुद्रसोम प्रपौत्र, कीर्त्तिरत्नशा० प० युक्तिअमृत शिष्य
चि	पूनमचन्द	पुण्यसार	प० सागरचन्द्रशा०
चि	अनोपचन्द	अमृतसार	प० दानविमल पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प	सुमेरदत्त	सत्यसार	प० मानवल्लभ मुने शिष्य, जिनभद्रशा० प० सत्यनन्दन गणे पौत्र
प	करमानन्द[1]	कनकसार	प० हेमसोम शिष्य, क्षमशा०
प	माणक[2]	महिमासार	प० हर्षकीर्त्ति पौत्र, क्षेमशा०
प	महताब	मुक्तिसार	प० प्रेमरुचि मुने , जिनभद्रशा०
प.	विनैचन्द[3]	विनयसार	प० हेमसोम मुने. शिष्य, क्षेमशा०
प	नत्थू	नीतिसार	प० जसराज मुने पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प	अमरू	आनन्दसार	प० राजशेखर पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प	पूरण	प्रीतिसार	प० आनन्दसोम पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प	कपूरचन्द	कुशलसार	प० रत्नतिलक गणे. शिष्य, जिनभद्रशा०
प	हरलाल	हर्षसार	प० युक्तिअमृत मुने. शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प	नवलो	नयसार	प० लावण्यसोम मुने. शिष्य, क्षेमशा०

।। सं० १९३० रा मिती वशाख कृष्ण ५ दिने भ० श्रीजिनहंससूरिभि. 'उदय' ४ नन्दी कृता बीकानेर मध्ये ।।

प	हस्तू	हर्षउदय	उ० आनन्दविनय गणे पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प	समिरो	सत्यउदय	उ० आनन्दविनय गणे पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प.	नत्थू	नेत्रउदय	प० लक्ष्मीसुन्दर मुनेः शिष्य, जिनभद्रशा०
प	खेतसी	कृपाउदय	प० गगानिधान मुने शिष्य, जिनभद्रशा०
प	खूमो	क्षातिउदय	प० लक्ष्मीप्रधान मुने शिष्य, जिनभद्रशा०
प	हरलो	हितउदय	प० लक्ष्मीप्रधान मुने शिष्य, जिनभद्रशा०
प.	धनु	धीरउदय	प० विद्यारुचि मुने शिष्य, जिनसुखशा०
प	रत्नो	रत्नउदय	प० जयसोम मुने शिष्य, जिनसुखशा०

---

१ २ ३ पालीताणा

पं. जुहारियो	युक्तउदय	पं० पुण्यलब्धि शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
पं. प्रेमसुख	प्रीतउदय	पं० कनकशेखर पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
पं. नराण	नीतउदय	पं० मुक्तिजय मुनेः शिष्य, जिनभद्रशा०
पं. इन्दरचन्द	आनन्दउदय	बृहत् श्रीजिताम्
पं. करमो	कीर्त्तिउदय	पं० चारित्रप्रिय मुनेः प्रपौत्र
पं. धरमो	धीरउदय	पं० महिमाभक्ति मुनेः शिष्य, जिनभद्रशा०
पं. पनियो	पद्मउदय	पं० महिमाभक्ति मुनेः शिष्य, जिनभद्रशा०
पं. परतापो	प्रीतउदय	वा० युक्तिसेन गणेः शिष्य, जिनभद्रशा०
पं. गणेशो	ज्ञानउदय	वा० युक्तिसेन गणेः शिष्य, जिनभद्रशा०
पं. चिमनो	चित्तउदय	वा० युक्तिसेन गणेः शिष्य, जिनभद्रशा०
पं. पुनमियो	प्रेमउदय	पं० न्यायविमल मुनेः शिष्य
पं. रामलाल	ऋद्धिउदय	पं० गुणवल्लभ मुनेः शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
पं. किशनो	कनकउदय	पं० आनन्दमण्डन मुनेः
पं. भैरियो	भक्तिउदय	पं० महिमामृत मुनेः शिष्य, सागरचन्द्रशा०
		पं० पद्मसेन मुनेः रै खोलै
पं. आणंदियो	आणन्दउदय	पं० विनयसोम मुनेः, सागरचन्द्रशा०
पं. मोती	मुक्तिउदय	पं० हेमकीर्त्ति मुनेः शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
पं. जगरामो	जयउदय	पं० लक्ष्मीप्रधान पौत्र, जिनचन्द्रशा०
पं. रावत	रंगउदय	पं० लक्ष्मीप्रधान पौत्र, जिनचन्द्रशा०

।। सं० १९३४ रा मिती द्वि० ज्येष्ठ सु० ९ जं० यु० प्र० भ० श्रीजिनहंससूरिभिः श्री बीकानेर मध्ये ५ 'वर्द्धन' नन्दी कृता ।।

पं. जुहारियो	युक्तिवर्द्धन	पं० ज्ञानधीर मुनेः शिष्य, श्रीजिताम्
पं. वाघू	विवेकवर्द्धन	उ० दानसागर गणेः पौत्र, जिनभद्रशा०
पं. श्रीचन्द	शीलवर्द्धन	पं० सुखसोम शिष्य, क्षेमशा०
पं. मानो	मुक्तिवर्द्धन	पं० सुखसोम शिष्य,
पं. हेमलो	हितवर्द्धन	पं० सौभाग्यकमल मुनेः शिष्य
पं. जसू	जयवर्द्धन	पं० आणन्दसोम मुनेः शिष्य, सागरचन्द्रशा०

□□

❀ श्री जिनचन्द्रसूरि ❀

॥ सं० १९३५ मिती माघ कृ. ११ दिने भ० जं० यु० प्र० श्रीजिनचन्द्र-सूरिभिः 'पद्म' १ नन्दी कृता बीकानेर नगर मध्ये ॥ (श्रीजी गद्दी नशीन हुए उसी दिन यह नन्दी की) ।

प. गोपाल	गुणपद्म	प० कल्याणनिधान मुने शिष्य, जिनहर्षशा०
प. महताब	मुक्तिपद्म	प० नीतिनिधान शिष्य, जिनभद्रशा०
प उदो	उदयपद्म	उ० सुमतिशेखर गणेः प्रपौत्र
प. महरो	महिमपद्म	प० लक्ष्मीविलास पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प. गजानन्द	ज्ञानपद्म	वा० प्रीतिलब्धि गणे., जिनभद्रशा०
प. भैरू	भाग्यपद्म	वा० प्रीतिलब्धि गणे , जिनभद्रशा०
पं रामकुमार	रंगपद्म	वा० प्रीतिलब्धि गणे., जिनभद्रशा०
पं. रामरतन	राजपद्म	उ० तत्वप्रधान गणेः पौत्र, क्षेमशा०
प श्यामलाल[1]	सुमतिपद्म	उ० तिलकधीर गणे. पौत्र, क्षेमशा०
प. सुन्दरलाल[2]	सौभाग्यपद्म	उ० नयसोम गणे पौत्र, क्षेमशा०
प. रुघो	रत्नपद्म	प० मुक्तिसोम मुनेः शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
पं रिधू	ऋद्धिपद्म	श्रीजिताम् जिनभद्रशा०
प माणक	माणिक्यपद्म	प० रामचन्द्र गणे. शिष्य, श्रीहंससूरिशा०
प जयचन्द	जयपद्म	प० धर्मवल्लभ मुनेः पौत्र, जिनभद्रशा०
प. चम्पालाल	चारित्रपद्म	प० विवेकवल्लभ मुने. शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा० लश्कर रहे
प मूलचन्द	मुक्तिपद्म	प० विवेकवल्लभ मुने. शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प कपूरो[3]	कनकपद्म	प० लक्ष्मीअमृत मुनेः शिष्य, जिनभद्रशा०
प धनसुख	धीरपद्म	प० कीर्त्तिसोम गणे. शिष्य, जिनसुखशा०
प चतरू	चतुरपद्म	प० कीर्त्तिसोम गणे शिष्य, जिनसुखशा०

॥ स० १९४१ रा मिती वैशाख शुदि ३ जं० यु० प्र० भ० श्रीजिनचन्द्र-सूरिभि 'दत्त' २ नन्दी कृता वालूचरे ॥

पं कुशलो	कनकदत्त	प० वेणीदत्त शिष्य, क्षेमशा०

---

१ २ जयपुर ३ गिरनार

प आसू आनन्ददत्त प० हेमलब्धि मुने शिष्य, क्षेमशा०
प मयाचन्द महिमादत्त प० सुशीलजय मुने शिष्य, जिनचन्द्रशा०
प आसू अमरदत्त उ० लक्ष्मीप्रधान गणे पौत्र, जिनचन्द्रशा०
प बालचन्द विनयदत्त प० विवेकप्रधान मुने शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प ज्ञानदत्त उ० नयसोम गणे पौत्र
प चन्द न्यायदत्त प० नयसार मुने शिष्य, क्षेमशा०
प जुहारो जयदत्त उ० सुमतिमण्डन गणे (सवेगी शा०)
प धर्मदत्त प० चतुरभुजजी शिष्य छोले वाले
प चिमनो चारित्रदत्त प० विशनजी शिष्य, जिनहर्ष० से जिनभद्रशा०
प गगदत्त प० अभयसिंह मुने. शिष्य
प मगनो मगनदत्त प० राजसोम, कीर्त्तिरत्नशा०

॥ सं० १९४४ फा० कृ० ८ श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः ॥

प प्रतापचन्द पद्मदत्त प० कीर्त्तिनिधान शिष्य, क्षेमशा०
प. वृद्धिचन्द विनयदत्त प० कीर्त्तिनिधान शिष्य, क्षेमशा०
प रूपचन्द रत्नदत्त प० कीर्त्तिनिधान शिष्य, क्षेमशा०
प लिखमो लक्ष्मीदत्त प० कोर्त्तिनिधान शिष्य, क्षेमशा०

॥ सं० १९४७ मिती ज्येष्ठ कृ० ८ सोमवार जं० यु० प्र० भ० श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः 'भद्र' ३ नन्दी कृता बीकानेर नगरे ॥

प अखैचन्द आनन्दभद्र प० कुशलनिधान, क्षेमशा०
प कल्याणचन्द कीर्त्तिभद्र प० लक्ष्मीप्रधान गणे पौत्र, जिनभद्रशा०
प माणकचन्द महिमाभद्र प० विनयप्रधान मुने. पौत्र, जिनभद्रशा०
प कुनण कुशलभद्र उ० नयसोम गणेः पौत्र
प बालचन्द विनयभद्र प० मुनिसोम शिष्य, क्षेमशा०
प रामरत्न रगभद्र प० गुणवल्लभ मुने शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प कपूरचन्द कपूरभद्र प० महिमाअमृत मुने , कोर्त्तिरत्नशा०
प रामधन रगभद्र प० महिमाअमत मुने , कीर्त्तिरत्नशा०
प मगलचन्द मगलभद्र प० आनन्दमण्डन मुने शिष्य
प ऋद्धकरण रत्नभद्र प० प्रीतसार मुने शिष्य, सागरचन्द्रशा०
प नित्यानन्द नित्यभद्र वा० प्रीतलब्धि गणे शिष्य, जिनभद्रशा०
प नेमो नीतभद्र प० कल्याणसागर पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०

प जीवण	जीतभद्र	प० रगविनय मुनेः पौत्र, क्षेमशा०
प मुरली	महिमाभद्र	वा० हितरग गणे शिष्य
प. नाथू	नयभद्र	प० हेमकीर्त्ति मुने. पौत्र, कीर्त्तिरत्नशा०
प तिलोकचन्द	तिलकभद्र	सवेगी० कीर्त्तिसार मुनेः शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प रामलाल	राजभद्र	प० रामसोम शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प तेजू	तत्वभद्र	प० रामसोम शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प शिवराज	शिवभद्र	प० ऋद्धिसार शिष्य, क्षेमशा०
प मुनालाल	पुण्यभद्र	प० उदयपद्म मुने. शिष्य, जिनभद्रशा०
प गणेशो	ज्ञानभद्र	प० कीर्त्तिउदय मुने शिष्य, सागरचन्द्रशा०
प. हुकमो	हितभद्र	प० ऋद्धिसार मुने शिष्य, क्षेमशा०
प माणको	महिमाभद्र	प० अमृतरग मुने. शिष्य, क्षेमशा०

॥ सं० १९५४ रा कार्त्तिक सुदि १३ श्रीजिनचन्द्रसूरिभि. वीकानेरे 'कुशल' ४ नन्दी कृता ॥

प खीमो	क्षमाकुशल	वा० हितरग गणे शिष्य, सागरचन्द्रशा०
प जीवराज	जयकुशल	वा० हितरग गणे. शिष्य, सागरचन्द्रशा०
प हरियो	हितकुशल	उ० सुमतिमण्डन गणे शिष्य, जिनभद्रशा०

❀ ❀

❀ श्रीजिनकीर्त्तिसूरि ❀

॥ सं० १९५६ कार्त्तिक कृष्ण ५ भ० श्रीजिनकीर्त्तिसूरिभि. 'सौभाग्य' १ नन्दी कृता वीकानेर मध्ये ॥

पं श्रीपाल	शीलसौभाग्य	प० विवेकलब्धि मुने. शिष्य, जिनभद्रशा०
प रामचन्द्र	राजसौभाग्य	प० सुमतिमण्डन गणे. पौत्र, जिनभद्रशा०
प जीवण	जीतसौभाग्य	महो० लक्ष्मीप्रधान गणे प्रपौत्र, जिनभद्रशा०
प पेमलो	प्रीतसौभाग्य	प० ऋद्धिसार मुने. शिष्य, क्षेमशा०
प खेमो	क्षमासौभाग्य	प० ऋद्धिसार मुने. शिष्य, क्षेमशा०
प जीवलो	जयसौभाग्य	प० दानशेखर मुने शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प शिवनाथ	शिवसौभाग्य	प० पेममन्डन मुने. शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०

प	जस्सू	युक्तिसौभाग्य	श्रीजिताम्
प	ज्ञानचन्द	गुणसौभाग्य	प० अमृतसार मुने शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प	अमरचन्द	अमृतसौभाग्य	उ० ऋद्धिसार गण शिष्य, क्षेमशा०
प	फूलचन्द	फतेसौभाग्य	उ० ऋद्धिसार गण पौत्र, क्षेमशा०
प	विजयचन्द	विनयसौभाग्य	उ० ऋद्धिसार गणे. पौत्र, क्षेमशा०
प	गणेश	ज्ञानसौभाग्य	प० दानशेखर शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प	सहस्रकिरण	कान्तिसौभाग्य	प० युक्तिवर्द्धन मुने. शिष्य, क्षेमशा०
पं	चादियो	चन्द्रसौभाग्य	प० अमरचन्द शिष्य, महाजन रेवै।
प	पन्नालाल	पुण्यसौभाग्य	प० क्षान्तिउदय मुने. शिष्य, जिनभद्रशा०

॥ स० १९६० मि० फा० शु० १ दिने श्रीजिनकीर्त्तिसूरिभि 'रुचि' २ नन्दी कृता बालूचरे ॥

प	गोपीचन्द	ज्ञानरुचि	प० धनसुख मुने शिष्य, जिनभद्रशा० पूर्णिया रहै
प	केशरीचन्द	कीर्त्तिरुचि	हुकमचन्द मुने. शिष्य, जिनभद्रशा०

॥ स० १९६३ अक्षय तृतीया श्रीजिनकीर्त्तिसूरिभि. 'सुन्दर' ३ नन्दी कृता ॥

प	चुन्नीलाल	चारित्रसुन्दर	श्रीजिताम् (जिनचारित्रसूरि हुए)
प	अमरू	अमृतसुन्दर	उ० रामलाल गणे, क्षमशा०
प	रामलाल	राजसुन्दर	प० शिवलाल गणेः पौत्र, क्षेमशा० प० श्यामलाल शिष्य
प.	ऋद्धिकरण	ऋद्धिसुन्दर	प० लब्धिचन्द्र मुने. पौत्र, क्षेमशा०
प	लक्ष्मीचन्द्र[1]	लावण्यसुन्दर	प० कनकसार शिष्य
प	जी	जयसुन्दर	प० राजभद्र मुने. शिष्य
प		रत्नसुन्दर	उ० सुमतिमण्डन गणे पौत्र, जिनभद्रशा०
प	बलदेव	वल्लभसुन्दर	श्रीजिताम्
प	मुन्नोलाल	मुनिसुन्दर	उ० मोहनजी गणे पौत्र, जिनभद्रशा०

---

१ पालीताना

□□

❀ श्रीजिनचारित्रसूरि ❀

॥ सं० १९६७ माघ कृष्ण ६ ज० यु० प्र० भ० श्रीजिनचारित्रसूरिभिः 'चारित्र' १ नन्दी कृता विक्रमपुरे ॥

प		महिमाचारित्र	प० रत्नअमृत मुनेः शिष्य, क्षेमशा०
प		फतैचारित्र	प० रामचन्द्र वगले वाले का शिष्य
प	चम्पो	चारुचारित्र	श्रीजी रो (पर वृहत् श्रीजी का शिष्य)
प	गेवर	ज्ञानचारित्र	प० पूनमचन्द पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प	टीकू	टीकमचारित्र	प० पूनमचन्द पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प	रामू	रत्नचारित्र	प० पूनमचन्द पौत्र, सागरचन्द्रशा०
प	वालचन्द[1]	विनयचारित्र	प० विनयदत्त मुने शिष्य
प		कीर्त्तिचारित्र	प० गणेशचन्द्र मुने शिष्य, सागरचन्द्रशा०
प	वेलचन्द[2]	विवेकचारित्र	प० कनकप्रधान शिष्य, जिनभद्रशा०
प		कनकचारित्र	प० भाग्यजय मुने शिष्य, सागरचन्द्रशा०

॥ स० १९६६ आश्विन शु० १४ श्रीजिनचारित्रसूरिभिः 'लाभ' २ नन्दी कृता ॥

प	पालोराम	प्रियलाभ	श्रीजिताम्
प	पन्नालाल	पुण्यलाभ	श्रीजिताम्
प	प्यारेलाल	प्रीतिलाभ	श्रीजिताम्
प	पूर्णचन्द्र	पूर्णलाभ	श्रीजिताम्
प	विमलो	विजयलाभ	प० वालचन्द मुने शिष्य, (मि. ८ मगल)
प	जननलाल[3]	जयलाभ	प० विवेकवर्द्धन शिष्य
प	दुलीचन्द[4]	दयालाभ	प० रत्नपद्म (रुघजी) शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०
प	लाभचन्द	लक्ष्मीलाभ	महो० चारित्रप्रिय गणे पौत्र
प	वीझराज[5]	विनयलाभ	प० केशरीचन्द मुने. शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०

---

१ नागपुर २ चोहटण ३ स० १९६७ चैत्र सुदि १५

४ सुजानगढ

५ स० १९६७ माघ सुदि ६ सुजानगढे दीक्षा ।

प	वृद्धिचन्द[1]	विजयलाभ	प० मगलभद्र शिष्य, क्षेमशा०
प	सोहनलाल	सौभाग्यलाभ	पं० विजयलाभ मुने शिष्य,
प	रामेश्वर[2]	रत्नलाभ	प० रगपद्म मुने शिष्य, जिनभद्रशा०
प	रामचन्द्र	ऋद्धिलाभ	श्रीजिताम्

॥ स० १६७३ रा मिती ज्येष्ठ कृ. ३ भ० श्रीजिनचारित्रसूरिभि. 'जय' ३ नन्दी कृता बीकानेरे ॥

प	मोती	महिमाजय	प० अमृतरग मुनेः पौत्र, क्षेमशा०
प	पेमो	पुण्यजय	उ० चतुरभुज गणे शिष्य, जिनभद्रशा०
प	दयाचन्द	दानजय	श्रीजिताम्
प	हेमचन्द	हर्षजय	प० हेमप्रिय मुने शिष्य, क्षेमशा०
प	नगीनचन्द	न्यायजय	प० गोपजी मुने पौत्र, क्षेमशा०
प	चादू	चरणजय	श्रीजिताम्
प	वालू	विवेकजय	प० ऋद्धिसार गणे. पौत्र, क्षेमशा०
प	प्यारेलाल	प्रीतजय	प० अमृतसार मुने शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा० प० दानविशाल प्रपौत्र
प	[3]	चारित्रजय	प० धीरउदय मुने शिष्य, सागरचन्द्रशा०
प	डुरगो[4]	दयाजय	प० ऋद्धिकरण मुने शिष्य
प	गोपाल[5]	ज्ञानजय	वा० जीवण गणे शिष्य, क्षेमशा०
प	आनन्दीलाल[6]	अमृतजय	प० गणेशचन्द्र मुने शिष्य, सागरचन्द्रशा०

॥ सं० १६८३ आषाढ सुदि १५ ज० यु० प्र० भ० श्रीजिनचारित्रसूरिभि 'सागर' ४ नन्दी कृता बीकानेरे ॥

प	गोपाल[7]	गुणसागर	प० ज्ञानोदय मुने शिष्य, सागरचन्द्रशा०
प	मनीलाल[8]	मणिसागर	प० सागरचन्द्रशा०
प	आणदमल	आणदसागर	उ० चतुरभुज गणे शिष्य, जिनभद्रशा०
प	जयकरण[9]	जयसागर	वा० पद्मोदय गणे, जिनभद्रशा०

---

१ फा कृ १० स० १९७० २ रामगढ ३ लाडनू
४ चूरू ५ हिंगणघाट ६ बीदासर ७ कालूगाव
८ बीदासर ९ मुकनजी बाबा रे खोले

प	सिरेमल	सुखसागर	प० सुमतिपद्म मुने. शिष्य, क्षेमशा०
प	मोती	मुक्तिसागर	प० हितभद्र गणे पौत्र, क्षेमशा०
प.	ऋद्धू[1]	ऋद्धिसागर	प० भेरुदान मुने पौत्र, जिनभद्रशा०
प	लक्ष्मीचन्द	लक्ष्मीसागर	
प	पन्नालाल	पुण्यसागर	क्षेमगा०
प	साकलचन्द	शान्तिसागर	श्रीजिताम्
प	सन्तराम	सुमतिसागर	प० नित्यभद्र शिष्य, जिनभद्रगा०
प	नेमचन्द	नीतिसागर	प० शान्तिसौभाग्य शिष्य, क्षेमगा०
प	पूनमचन्द[2]	प्रीतिसागर	प० लक्ष्मीअमृत शिष्य, कीर्त्तिरत्नगा०
प	ज्ञानचन्द[3]	ज्ञानसागर	प० प्रीतिउदय शिष्य
प	माणको	माणिक्यसागर	प० चारुचारित्र शिष्य, जिनभद्रगा०
प	पुखराज	पूर्णसागर	प० महिमाउदय मुने. पौत्र, जिनभद्रशा०
प	माणक	मुनिसागर	प० वल्लभसुन्दर गणे· शिष्य, जिनभद्रगा०

॥ सं० १६९० कार्त्तिक सुदि ५ जं० यु० प्र० भ० श्रीजिनचारित्रसूरिभि 'पाल' ५ नन्दी कृता बीकानेरे ॥

प	रतनलाल[4]	राजपाल	प० चारित्रजय शिष्य, सागरचन्द्रशा०
प.	जोधो[5]	जयपाल	प० ऋद्धिकरण शिष्य
प	गण[6]	गुणपाल	प० ऋद्धिकरण शिष्य
प	[7]	ज्ञानपाल	प० विजयलाभ मुने. शिष्य, क्षेमशा०
प	विजयलाल	विनयपाल	प० सुमतिपद्म मुने. शिष्य, क्षेमशा० (श्रीजिनविजयेन्द्रसूरि हुए)
प	सदासुख[8]	सत्यपाल	प० जयकुशल शिष्य, सागरचन्द्रगा०
प	मोहन	मूर्त्तिपाल	प० प्रीतसागर मुने.
प	लालजी[9]	लावण्यपाल	प० पुण्यलाभ मुने· शिष्य, जिनकीर्त्तिशा०
प	प्यारचन्द	पुण्यपाल	श्रीजिताम्, जिनभद्रशा०
प	लक्ष्मीचन्द	लक्ष्मीपाल	श्रीजिताम्, जिनभद्रशा०

---

१ फतैपुर २ गिरनार ३ रतनगढ ४. लाडणू ५ चूरू
६ चूरू ७ राजगढ ८ देशनोक ९ जूनागढ

❀ श्रीजिनविजयेन्द्रसूरि ❀

॥ सं० १९९८ मिती माघ सुदि १० जं० यु० प्र० भ० श्रीजिनविजयेन्द्र-सूरिभिः 'निधि' १ नन्दी कृता बीकानेरे ॥

प देवीचन्द	दयानिधि	प० पुण्यपाल गणे	शिष्य, जिनभद्रशा०
प अम्बो	आनन्दनिधि	प० पन्नालाल गणे	शिष्य, जिनभद्रशा०
प मोहन	मोहननिधि	प० अमृतजय मुने	शिष्य, सागरचन्द्रशा०
पं पालचन्द	पुण्यनिधि	उ० जयोदय गणे.	शिष्य, जिनभद्रशा०
प गोरधन[1]	गुणनिधि	प० जयकुशल मुने	शिष्य, सागरचन्द्रशा०
प वालचन्द[2]	विवेकनिधि	उ० विष्णुदयाल गणेः	शिष्य, जिनभद्रशा०
प विजयचन्द[3]	विनयनिधि	उ० विष्णुदयाल गणे	शिष्य, जिनभद्रशा०
प जयचन्द	जयनिधि	श्रीजिताम् (हटा दिया)	

॥ स० २००१ मिती माघ सुदि ६ तिथौ ज० यु० प्र० भ० श्रीजिन-विजयेन्द्रसूरिभि' 'निधान' २ नन्दी कृता बीकानेर मध्ये ॥

प सकतमल	सत्यनिधान	श्रीजिताम्	
प बुद्धिप्रकाश	बुद्धिनिधान	महो० ऋद्धिसार गणे	पौत्र, क्षेमशा०
प रूपचन्द	रूपनिधान	महो० ऋद्धिसार गणे	पौत्र, क्षेमशा०
प हनुमान	हर्पनिधान	श्रीजिताम	

॥ स० २००७ मार्गशीर्ष सुदि १ तिथौ भ० श्रीजिनविजयेन्द्रसूरिभिः 'सुन्दर' ३ नन्दी कृता ॥

प रवीन्द्र	रवीन्द्रसुन्दर	श्रीजिताम्	
प भैरु	भैरवसुन्दर	महो० ऋद्धिसार गणे' पौत्र, क्षेमशा० प० वालचन्द शिष्य	

---

१ नोखा २ ३. फतहपुर

॥ श्रीजिनविजयेन्द्रसूरिजी का स्वर्गवास काती सुदि १ सं०..........
प्रभु निर्वाण समय मे हुआ ॥

प	मृगेन्द्र[1]	मृगेन्द्रजयसुन्दर	श्रीजिताम्
प	केशरीचन्द[2]	कुशलोदयसुन्दर	श्रीजिताम्
प	देवेन्द्र[3]	चन्द्रोदयसुन्दर	श्रीजिताम्

॥ स० २०२७ ज्ये० सु० ६ बुधवार सुबोध कालेज जौहरी बाजार जयपुर मे प्रात ७ ३० मे देवेन्द्र की दीक्षा हुई ॥

॥ सं० २०२८ वै सु. २ मध्यान्ह ११ बजे रविवार ॥

प नमिसागर रूपसुन्दर प० तिलकभद्र मुने. शिष्य, कीर्त्तिरत्नशा०

❀ ❀

१, २ ३ स्वर्गवास के बाद शिष्य बनाये गये ।

आचार्य शाखा

श्री खरतर गच्छे आचार्य शाखा की यथा-प्राप्त दीक्षा नन्दी सूची

'विलास' नन्दी कृता ।।

प माना पं० सुमतिविलास
पं श्रीकम प० महिमाविलास
प भीमा प० भक्तिविलास
प शाति प० सिद्धिविलास
प गोकल प० गुणविलास
प रतना प० रगविलास

।। सं० १७५६ रा मिती कार्त्तिक बदि ५ दिने श्रीअहम्मदाबादे 'विमल' नन्दी कृता ।।

प रतना पं० ज्ञानविमल
प करणा प० कीर्त्तिविमल
प आसा प० सौभाग्यविमल
प. नेता प० हर्षविमल
प जसा प० सुमतिविमल
प गगाराम पं० कनकविमल
प. देवचन्द प० राजविमल
प आसा प० अमरविमल
प दुरगा प० विनयविमल
प राजाराम प० जयविमल
प मयाचन्द प० मतिविमल

।। सं० १७६१ रा मिती वैशाख सुदि १३ वार शनौ श्रीपत्तनमध्ये 'सिन्धुर' नन्दी कृता ।।

प. अमरा प० दयासिन्धुर
पं हीरा प० समयसिन्धुर
प कुम्भा प० आणदसिन्धुर

प लाला प० लक्ष्मीसिन्धुर
प. सारंग प० महिमासिन्धुर

॥ संवत् १७६२ रा मिती माह सुद १ श्री पत्तने ॥

प गुल्ला प० धर्मसोम

॥ मिती आषाढ सुदि १ पुष्यार्के श्री बीकानेरे ॥

प रामा प० ज्ञानसोम
प गौडीदास प० गुणसोम

॥ सं० १७६६ रा मिती माघ वदि १ पुष्यार्के 'सुन्दर' नन्दी कृता श्रीमरोट्टकोट्टे ॥

प खेमा प० रंगसुन्दर
प अमीपाल प० कनकसुन्दर
प रामा प० राजसुन्दर

॥ सं० १७६९ रा मिती जेठ वदि ५ दिने 'मन्दिर' नन्दी कृता श्रीबीकानेरे ॥

प अमीचन्द प० विनयमन्दिर

॥ सं० १७७१ रा मिती मिगसर वदि १२ दिने जेसलमेरौ 'हर्ष' नन्दी कृता ॥

प रूपा प० राजहर्ष
प खीमा प० समयहर्ष

॥ सं० १७७३ रा मिती वैशाख वदि ४ दिने श्री फलवर्द्धिकायां 'रत्न' नन्दी कृता ॥

प हीरा प० आनन्दरत्न
प जोगा प० योगरत्न, श्री वेनातटे
प ठाकुरसी प० रूपरत्न
प मनजी प० मतिरत्न

॥ सं० १७७४ रा पोह सुदि १३ दिने श्री जालोरे 'शील' नन्दी कृता ॥

प जग्गा प० विनयशील

प हरषा प० कीर्त्तिशील, श्रीपत्तने
प माना प० पुण्यशील
प धन्ना प० रगशील
प तेजा प० तेजशील

॥ स० १७७६ रा ज्येष्ठ सुदि ५ दिने श्री राजनगरे 'सिंह' नन्दी कृता ॥

प पीथा प० धर्मसिंह
प अमरा प० हर्षसिंह
प देवा प० दयासिंह
प सभा प० विजैसिंह

॥ स० १७९७ वर्षे शाके १६६२ प्र० आषाढ सुदि ५ रात्री लघु वृद्ध दीक्षा श्री जेसलमेर नगरे भ० श्री जिनकीर्त्तिसूरिभि. 'कीर्त्ति' नन्दी कृता ॥ साध्वी 'माला' नन्दी कृता ॥

प किशोरचन्द प० रगकीर्त्ति
प माणकचन्द प० सिद्धकीर्त्ति
....सा० कनकमाला
.. ..सा० किसनमाला
.. ..सा० रूपमाला

॥ सं० १८०५ फागुन बदि ५ गुरौ भ० श्रीजिनकीर्त्तिसूरिभि. 'राज' नन्दी कृता श्री विक्रमपुरे ॥

प सरूपा प० पुण्यराज

॥ स० १८०६ मिती फागुन बदि ५ श्री विक्रमपुरे श्रीजिनकीर्त्तिसूरिभिः 'वल्लभ' नन्दी कृता ॥

प वीरा प० उदयवल्लभ
प रामकृष्ण प० आणन्दवल्लभ
प भीमराज प० रगवल्लभ

॥ स० १८०८ चैत्र बदि ३ श्रीविक्रमपुरे श्रीजिनकीर्त्तिसूरिभिः 'भक्ति' नन्दी कृता ॥

प. मलूका प० मूर्त्तिभक्ति
प फत्ता प० कुशलभक्ति

प मूला प० मतिभक्ति
प खुश्याला प० क्षमाभक्ति
प केसरचन्द प० कनकभक्ति
प वाला प० लक्ष्मीभक्ति
प नाथा प० कीर्त्तिभक्ति
प आलम प० विमलभक्ति

।। सं० १८०९ वैशाख सुदि १३ श्रीजिनकीर्त्तिसूरिभि 'सुन्दर' नन्दी कृता श्री बीलाड़ा मध्ये ।।

प ईसर प० कीर्त्तिसुन्दर
प भगवान प० प्रतापसुन्दर
प. गणेश प० भवनसुन्दर
प दुलीचन्द प० विनयसुन्दर
प कपूरा प० तिलकसुन्दर
प सामन्त प० प्रमोदसुन्दर
प आणन्द प० कल्याणसुन्दर

।। स० १८११ ज्येष्ठ सुदि १० श्री बीलाडा मध्ये श्रीजिनकीर्त्तिसूरिभिः 'समुद्र' नन्दी कृता ।।

प लाधा प० मतिसमुद्र
प नाराण प० हर्षसमुद्र
प रूपा प० रूपसमुद्र
पं पूजा प० राजसमुद्र

।। सं० १८१२ माह वदि ३ 'निधान' नन्दी कृता श्रीजिनकीर्त्तिसूरिभि ।।

प फत्ता प० रगनिधान
प बोधा प० भक्तिनिधान

।। स० १८१६ फागुण सुदि ३ श्रीजिनकीर्त्तिसूरिभि 'सार' नन्दी कृता श्रीमकसुदाबाद मध्ये ।।

प हजारी प० भक्तिसार
प अमरा प० अखेसार

प पेमा प० क्षमासार
प डाहा प० उदैसार
प पीथा प० धर्मसार
प रूपा प० आनन्दसार
प हेमा प० हर्षसार

॥ सं० १८१८ मिगसर सुदि ११ दिने 'नन्दन' नन्दी कृता भ० श्रीजिनकीर्त्तिसूरिभि. श्रीमकसुदावाद मध्ये ॥

प खुस्याल प० भक्तिनन्दन
प लाला प० लब्धिनन्दन

❀ जिनयुक्तिसूरि ❀

॥ सं० १८२२ मिती वैशाख सुदि ३ श्री जेसलमेरुमध्ये भ० श्रीजिनयुक्तिसूरिभि 'माणिक्य' नन्दी कृता ॥

प लच्छीराम प० लक्ष्मीमाणिक्य
प अणदा प० आनन्दमाणिक्य
प साहिबा प० सौभाग्यमाणिक्य
प नाथा प० नयमाणिक्य
प दौला प० दौलतमाणिक्य

❀ जिनचन्द्रसूरि ❀

॥ सं० १८२४ माघ सुदि ३ भ० श्रीजिनचन्द्रसूरिभि 'चन्द्र' १ नन्दी कृता श्री जेसलमेर मध्ये ॥

प वेणा (वेणीराम) प० विनयचन्द्र
प मलूकचन्द प० मित्रचन्द्र (मतिचन्द)
प ठाकुरसी प० आनन्दचन्द्र

॥ सं० १८२५ चैत्र वदि २ दिने 'मूर्त्ति' २ नन्दी कृता श्रीजिनचन्द्रसूरिभि श्रीजेसलमेर मध्ये ॥

प डूगरसी प० रत्नमूर्त्ति
पं रामचन्द्र प० सुमतिमूर्त्ति

॥ स० १८२७ वैशाख सुदि २ 'सागर' ३ नन्दी कृता ॥

प रुघौ प० रत्नसागर
प कनीराम प० कान्तिसागर

॥ सं० १८३० चैत्र सुदि ७ भ० श्रीजिनचन्द्रसूरिभि 'सौभाग्य' ४ नन्दी कृता ॥

प धन्नौ प० भुवनसौभाग्य
प लछौ प० लक्ष्मीसौभाग्य

॥ स० १८३१ वैशाख सुदि ३ दिने 'वर्द्धन' ५ नन्दी कृता ॥

प ऊदा प० उदैवर्द्धन

॥ सं० १८३२ माघ सुदि ५ श्री बीकानेर मध्ये भ० श्रीजिनचन्द्रसूरिभि' 'नन्दी' ६ नन्दी कृता ॥

प चतुरा प० चातुर्यनन्दी
प. पदमा प० पद्मनन्दी

॥ सं० १८३५ मिगसर सुदि १० बीलाडा मध्ये 'सोम' ७ नन्दी कृता श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः ॥

प अनोपचन्द प० अभयसोम
प रायचन्द प० राजसोम
प हेमा प० हर्षसोम (पत्र १ श्रीभद्रमुनिजी से प्राप्त)

॥ स० १८३७ मिगसर वदि ५ जेसलमेर मध्ये 'विलास' ८ नन्दी कृता श्रीजिनचन्द्रसूरिभि ॥

प ऋषभौ प० ऋद्धिविलास
प अजबो प० अमरविलास
प रतनचन्द प० राजविलास

प भवानीराम पं० भक्तिविलास
प भगौतीदास पं० भाग्यविलास

।। स० १८३८ मिगसर बदि ५ 'कुशल' ६ नन्दी कृता श्री जेसलमेर मध्ये भ० श्रीजिनचन्द्रसूरिभि ।।

प अमरा पं० अमृतकुशल
प रामा पं० रामकुशल
प सिरीचन्द पं० शिवकुशल
प लालो पं० लाभकुशल

।। स० १८४० वैशाख सुदि ३ दिने भ० श्रीजिनचन्द्रसूरिभि. 'कुमार' १० नन्दी कृता ।।

प भाईचन्द पं० भक्तिकुमार
प जयचन्द पं० जयकुमार
प मयाचन्द पं० महेन्द्रकुमार
प वृद्धो पं० विद्याकुमार
.... साध्वी मतिमाला
....साध्वी चन्द्रमाला

।। सं० १८४२ जेठ सुदि ८ 'धीर' ११ नन्दी कृता श्री साहापर (?) मध्ये ।।

प शिवचन्द पं० शिवधीर
प प्रेमा पं० प्रीतिधीर
प अजबो पं० अमृतधीर
प चन्दो पं० चन्द्रधीर
प दुलीचन्द पं० द्युतिधीर
प लक्ष्मीचन्द पं० लक्ष्मीधीर
प सूरतो पं० शुभधीर
प लालचन्द पं० लाभधीर
प मयाचन्द पं० मतिधीर
प उदो पं० उदयधीर
प हीरो पं० हर्षधीर

(संग्रहस्थ पत्र से)

॥ सं० १८४३ मि० आषाढ सुदि ९ 'हंस' १२ नन्दी कृता श्री इन्दौर मध्ये ॥

प मनिराम प० मतिहस
प मेघो प० महिमाहस
प अजवो प० अचलहस, (फत्तेजी रो)

॥ स० १८४५ फागुण सुदि ७ दिने 'हीर' १३ नन्दी कृता नौलाई मध्ये श्रीजिनचन्द्रसूरिभि ॥

प सन्तोषौ प० सुखहीर
प माणकचन्द प० माणिक्यहीर
प अर्जुन प० अभयहीर
प गिरधारी प० गगहीर
प गिरधर प० ज्ञानहीर
प रामो प० रत्नहीर
प अमरदत्त प० अचलहीर

॥ सं० १८५१ माघ सुदि १३ खम्भायत मध्ये 'विमल' १४ नन्दी कृता श्रीजिनचन्द्रसूरिभि, साध्वी 'माला' नन्दी ॥

प माणचन्द प० मतिविमल
प श्रीचन्द प० श्रीविमल
पं गौडीदत्त प० गुणविमल
प केसरीचन्द प० कातिविमल
प प्रश्नचन्द प० प्रज्ञाविमल
प मेघो प० मतिविमल
.... सा० फूदमाला
. सा० चेनमाला
. .. . . सा० वेनमाला
... सा० अखेमाला
. .. सा० राजमाला

॥ सं० १८५४ रा आषाढ सुदि ५ श्री बीकानेर मध्ये श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः 'तिलक' १५ नन्दी कृता ॥

प गुमान प० गुमानतिलक
प खुश्याल प० क्षमातिलक
प मनरूप प० मतितिलक
प चेनो प० चैत्यतिलक
प अमरो प० अमृततिलक
प खुश्यालचन्द प० क्षातितिलक, चतरेजी रो
प वालचन्द प० वल्लभतिलक
प चिमनलाल प० चैतन्यतिलक
प पेमो प० प्रेमतिलक, मेघराज रो
प सोभाचन्द प० सुखतिलक

॥ स० १८६२ मि० माघ सुदि ५ श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः 'रत्न' १६ नन्दी कृता बीकानेर मध्ये, साध्वो 'श्री' नन्दी ॥

प गम्भीरचन्द प० गुणरत्न
प जीवराज प० जयरत्न
प वस्तपाल लाभरत्न
प मनसुख मतिरत्न
प हद्धू हर्षरत्न
सा० फूदा सा० पुण्यश्री
'.... .. 'सा० गुमानश्री
.... सा० रतनश्री
'..." " 'सा० जयश्री

॥ स० १८६५ रा जेठ वदि १० 'शील' १७ नन्दी कृता श्री बीकानेर मध्ये ॥

प परमसुख प्रेमशील
प श्रीचन्द सुमतिशील

॥ स० १८६६ माघ वदि ३ 'राज' १८ नन्दी कृता श्री बीकानेर मध्ये श्रीजिनचन्द्रसूरिभि' ॥

प देवचन्द देवराज
प हीरा हर्षराज

॥ सं० १८६८ रा जेठ सुदि १३ 'कलश' १९ नन्दी कृता श्री बीकानेर मध्ये ॥

प ज्ञानचन्द ज्ञानकलश
प वीरचन्द विनयकलश
प मनसुख महिमाकलश
प मोती मतिकलश
प दुलीचन्द देवकलश

॥ सं० १८६९ रे माघ सुदि १५ सोमे 'मन्दिर' २० नन्दी कृता बीकानेर मध्ये ॥

प रूपचन्द रत्नमन्दिर
प. मेहरचन्द मतिमन्दिर
प करमचन्द कनकमन्दिर
प चेनो चतुरमन्दिर
" " " सा० जयतश्री
" " " सा० ज्ञानश्री
" " " सा० रूपश्री

॥ स० १८७२ मिगसर सुदि ४ सोमे 'रग' २१ नन्दी कृता बीकानेर मध्ये श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः ॥

प हर्षचन्द हर्षरग प० लालचन्द रो
प मोतीचन्द मतिरग प० अनोपचन्द रो
प हीरचन्द हिरण्यरग प० मयाचन्द रो
प गुलाबचन्द गुणरग प० चतुरभुज रो
प दीपचन्द द्युतिरग प० केसरीचन्द रो
प भेरचन्द भाग्यरग प० केसरीचन्द रो
प गौडीदास ज्ञानरग प० पदमचन्द रो
प रतनचन्द राजरग प० रायचन्द रो

प सरूपचन्द सौभाग्यरग प० सोभाचन्द रो
प कस्तूरचन्द कातिरग प० भवानीराम रो
प वखतो वल्लभरग प० उदचन्द रो

❀ जिनोदयसूरि ❀

॥ सं० १८७७ मि० वैसाख सुदि ३ दिने श्रीजिनउदयसूरिभि 'उदय' १ नन्दी कृता श्री जेसलमेर मध्ये ॥

प गुलावचन्द गुणउदय प० पदमचन्द रो
प जीवराज जीवउदय प० वालचन्द रो
प जीतमल जीतउदय प० अजवचन्द रो
प लक्ष्मीचन्द लक्ष्मीउदय प० रतनचन्द रो

॥ सं० १८८३ मिती वैशाख सुदि ३ श्रीजिनउदयसूरिभि 'शील' २ नन्दी कृता श्री बीकानेर मध्ये ॥

प हिमतराम हिरण्यशील
प गोडीचन्द ज्ञानशील
प मदनचन्द महिमाशील
प उमेदचन्द उदयशील

॥ सं० १८८८ बैशाख सुदि १५ दिने श्रीजिनउदयसूरिभि· 'समुद्र' ३ नन्दी कृता श्री बीकानेर मध्ये ॥

प विजैचन्द विजैसमुद्र
प रूपचन्द राजसमुद्र प० सोभाचन्द रो

॥ सं० १८९१ मिती वैशाख सुदि ३ दिने श्रीजिनउदयसूरिभि 'रुचि' ४ नन्दी कृता श्री बीकानेर मध्ये ॥

प भगवानदास भाग्यरुचि
प. वखतो वल्लभरुचि
प ताराचन्दताररुचि
प धर्मचन्द धर्मरुचि
प सदासुख सदारुचि

❀ जिनहेमसूरि ❀

॥ सं० १८९७ मिती जेठ सुदि ७ दिने भ० श्रीजिनहेमसूरिभिः 'हेम' १ नन्दी कृता श्री बीकानेर मध्ये ॥

प हुकमो हर्षहेम
प हसीयौ हसहेम
प वालु वल्लभहेम
पं अमरो अमृतहेम
पं परमानन्द प्रीतहेम
प खेतो क्षातहेम (सागर) प० रूपचन्द रो

॥ सं० १८९७ वैशाख सुदि ३ दिने श्रीजिनहेमसूरिभि 'सागर' २ नन्दी कृता श्री कामठी मध्ये ॥

प मगनीराम मतिसागर
प. हर्षचन्द हर्षसागर

॥ सं० १९९० (१, १९००) मि० जेठ सुदि ५ दिने श्रीजिनहेमसूरिभि ३ 'धीर' नन्दी कृता श्री कामठी मध्ये ॥

प रायचन्द राजधीर
प खूबचन्द क्षमाधीर
प रामदयाल रत्नधीर

॥ सं० १९०२ मि० मिगसर वदि १३ बीकानेर मध्ये भ० श्रीजिनहेम-सूरिभि· 'तिलक' ४ नन्दी कृता ॥

प रुघौ रत्नतिलक

॥ स० १९०३ मि० वैशाख सुदि ३ धूलेवा मध्ये श्रीजिनहेमसूरिभि 'रत्न' नन्दी ५ कृता ॥

प हीरचन्द हर्षरत्न
प भगवानो भाग्यरत्न

॥ स० १९०३ मिती फागुण वदि ५ 'रत्न' ५ नन्दी कृता जेपर मध्ये ॥

प पन्नालाल प्रेमरत्न
प तनसुख तारत्न

॥ सं० १९०६ जेठ सुदि १२ श्री पोहकर्ण मध्ये भ० श्री जिनहेमसूरिभिः 'सुन्दर' ६ नन्दि कृता ॥

प आसो आणन्दसुन्दर

॥ फागण बदि ५ ॥

सा सारा सा० स्थिरश्री

॥ सं० १९०७ मिती मिगसर बदि १३ श्री जेसलमेर मध्ये भ० श्री जिनहेमसूरिभि ७ 'धर्म्म' नन्दी कृता ॥

प चुनीलाल चारित्रधर्म्म
प. मेघो मतिधर्म्म

॥ सं० १९०८ मिती वैशाख सुदि ३ दिने श्री जिनहेमसूरिभिः 'हर्ष' ८ नन्दी कृता श्री बीकानेर मध्ये ॥

प माणकचन्द माणक्यहर्ष
प वच्छराज वल्लभहर्ष
प सदासुख सदाहर्ष
प कपूरचन्द्र क्रातिहर्ष
सा गुणमाला ने वडी दीक्षा दीनी नही नै नाव लिख्यो छै ।

॥ सं० १९१३ मिती मिगसर बदि १० भ० श्री जिनहेमसूरिभि. 'सार' ९ नन्दी कृता श्री बीकानेर मध्ये ॥

प जगतचन्द जयसार
प फरसराम फतैसार
प सुखलाल सुमतसार
सा नवली सा० न्यानश्री (चनणा री चेली)

॥ स० १९१७ मिती माघ सुदि ५ दिने भ० श्री जिनहेमसूरिभिः 'सागर' १० नन्दी कृता बीकानेर मध्ये ॥

प जीवण जयसागर गुलाबचन्द रो

प विरधो वृद्धिसागर मेहरचन्द रो
प वच्छराज विनेसागर ताराचन्द रो

॥ सं० १६२० मिती वैशाख सुदि २ सोमवासरे श्री विक्रमपुर मध्ये 'तिलक' ११ नन्दी कृता भ० श्री जिनहेमसरिभि. ॥

प रामानन्द राजतिलक प० रामदयाल रो
प धर्मचन्द धर्मतिलक प० रायचन्द रो
पं हर्षचन्द्र हर्षतिलक प० रायचन्द रो
प जेठीयो जयतिलक
सा सिणगारी सिणगारमाला (नवली री चेली)
सा सुगनी सत्यमाला

॥ सं० १६२० रा मिती मिगसर सुदि २ दिने 'तिलक' १२ नन्दी कृता श्री जिनहेमसूरिभि बीकानेर मध्ये ॥

गगाराम[1] ज्ञानतिलक प० रामदयाल रो

॥ सं० १९२१ मिती माघ सुदि ५ भट्टारक श्रीजिनहेमसूरिभि. बीकानेर मध्ये 'शेखर' १३ नन्दी कृता ॥

प फरसराम फतेशेखर प० गौडीचन्द रो

॥ सं० १९२४ रा मिती आषाढ सुदि ३ दिने श्रीजिनहेमसूरिभि. बीकानेर मध्ये साध्वी दीक्षा दीनी ॥

प गुणेशी ज्ञानशेखर
सा कस्तूरी सा० कनकमालाचनणा री

॥ सं० १६२४ मि० माघ सुदि १० श्रीजिनहेमसूरिभि. 'वर्द्धन' १४ नन्दी कृता बीकानेर मध्ये। नागपुर ने पुड़ी भेजी ॥

प रामचन्द राजवर्द्धन वा० रायचन्द रो

---

1 स्याही फेरी

॥ स० १९२५ मि० वैशाख सुदि ७ श्रीजिनहेमसूरिभि 'विमल' १५ नन्दी कृता श्री बीकानेर मध्ये ॥

प सोभाग   सौभाग्यविमल   प० जगतचन्द रो

॥ स० १६२५ रा मिती माघ सुदि ५ भ० श्रीजिनहेमसूरिभि 'सौभाग्य' १६ नन्दी कृता श्री बीकानेर मध्ये ॥

प अखेचन्द   अमृतसौभाग्य   हसराज रो
प सुगनो   सुमतसौभाग्य   वच्छराज रो
प. तनसुख   तिलकसौभाग्य   माणक रो
प हीरो   हर्षसौभाग्य   वच्छराज रो
प हजारी   हीरसौभाग्य   खेतसी रो

॥ सं० १६२६ रा मिती फागुण सुदी ७ वड़ी दीक्षा ॥

सा रूपा   रत्नमाला

॥ सं० १६३० रा मिती वैशाख वदि २ भ० श्रीजिनहेमसूरिभि 'कुमार' १७ नन्दी कृता बीकानेर सु पुडी दीनी ॥

प हसराज   हर्षकुमार   प० हर्षचन्द रो

॥ सं० १६३० रा मिती आसोज सुदि ५ भ० श्री जिनहेमसूरिभि श्री बीकानेर मध्ये 'कुमार' नन्दी कृता ॥

प सुखलाल   सुखकुमार   पं० वखते रो
प. जालमचन्द   जयकुमार गणे   प० गोडीचन्द रा आउ वाले रो

॥ स० १६३१ रा मिती जेठ वदि ५ बुधे श्री बीकानेर मध्ये भ० श्रीजिनहेमसूरिभिः 'सुन्दर' १८ नन्दी कृता ॥

प. गगाराम   ज्ञानसुन्दर
प अमरचन्द   आनन्दसुन्दर   प० जगतचन्द रो
प वखतावर   विनयसुन्दर   प० जगतचन्द रो
प. प्रेमचन्द   प्रेमसुन्दर   प० खूबे रो, पुड़ी दीना
प दौलतराम   दानसागर (१सुन्दर)   प० रामदयाल रो

॥ सं० १९४१ मिती वैशाख सुदि ३ 'रंग' १९ नन्दी कृता ॥

प ज्ञानचन्द ज्ञानरंग (स्याही फेरी)
सा. सिरदारी सुमतश्री कस्तूरी री

॥ सं० १९४२ रा मिती फागुण बदि ९ भ० श्री जिनहेमसूरिभिः 'सागर' २० नन्दी कृता बीकानेर मध्ये ॥

प रुघनाथ रतनसागर प० चुनीलाल रो
प. दौलतराम दानसागर प० तनसुख रो
प चुनीलाल चतुरसागर प० तनसुख रो
प पान्नुलाल पुण्यसागर
प सिरदारो सुमतसागर
प सहसकरण सघसागर
प दोलतराम दानसागर प० रामदयाल रो

❀ जिनसिद्धिसूरि ❀

॥ सं० १९४३ वर्षे शाके १८०८ मिती जेठ वदी १२ जं० यु० प्र० भ० श्रीजिनसिद्धिसूरिभिः 'कमल' १ नन्दी कृता बीकानेर मध्ये ॥

प नवलचन्द नन्दिकमल प० सुखलाल रो

॥ स० १९४८ वर्षे शाके १८१३ मिती चैत सुदि १० जं० यु० भ० श्रीजिनसिद्धिसूरिभि 'विशाल' २ नन्दि कृता श्रीफलवद्धिनयर मध्ये ॥

प चुनीलाल चेनविशाल प० मूलचन्द रो

॥ स० १९४८ मि० काती वदि ८ भ० श्रीजिनसिद्धिसूरिभि 'कल्लोल' ३ नन्दी कृता बाहडमेर मध्ये ॥

प शिवलाल शिवकल्लोल प० विजयचन्द रो

॥ स० १९४८ कार्तिक कृष्ण पक्ष ८ रवि० भ० श्रीजिनसिद्धिसूरिभिः 'दत्त' ४ नन्दि कृता वाहडमेर मध्ये ॥

प बखतावरचन्द वल्लभदत्त उ० शिवलाल रो

॥ स० १९५० का मि० वैशाख बदि २ सोमे भ० श्रीजिनसिद्धिसूरिभिः 'हंस' नन्दि ५ कृता सवाई जंपर मध्ये ॥

प ज्ञानचन्द ज्ञानहंस प० हीरालाल रो

॥ सं० १९५३ फागुण बदि ६ सोमे भ० श्रीजिनसिद्धिसूरिभि 'राज' ६ नन्दि कृता नागपुर मध्ये ॥

प देवचन्द देवराज प० गोडीचन्द रो

॥ स० १९५१ मिती माघ सुदि ५ श्रीजिनसिद्धिसूरिभि 'सिंह' ७ नन्दि कृता बीकानेर मध्ये ॥

प लालचन्द लक्ष्मीसिंह उ० बखतावरचन्द रो
प पेमराज पद्मसिंह श्रीजी रो
प केशरीचन्द कनकसिंह श्रीजी रो
प राजमल राजसिंह हंसराज रो
सा रतनी रतनमाला सा० नवला री

॥ सं० १९६८ वैशाख सुदि १ भ० श्रीजिनसिद्धिसूरिभि 'सार' ८ नन्दी कृता विक्रमपुर मध्ये ॥

प रामचन्द रामरिद्धिसार विरधीचन्द रो

॥ स० १९६९ मिती ज्येष्ठ सुदि १३ भ० श्रीजिनसिद्धिसूरिभि 'भण्डार' ९ नन्दी कृता विक्रमपुर मध्ये ॥

प दुलीचन्द दौलतभण्डार
प चुन्नीलाल चनभण्डार प० शोभाचन्द रो
प तेजु तेजश्री नवलश्री री

॥ स० १९८४ मि० वैशाख कृष्ण १२ गुरौ श्रीजिनसिद्धिसूरिभिः १० 'निधान' नन्दी कृता विक्रमपुर मध्ये ॥

प. आसकरण अक्षयनिधान श्रीजी रो

❀ जिनचन्द्रसूरि ❀

।। स० १९८६ आसोज सुदि १० गुरुवारे श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः 'सकल' १ नन्दी कृता हैदराबाद नगर मध्ये ।।

(सु)भागचन्द सौभाग्यसकल श्रीजी रो

।। सं० २००८ मिती माघ सुदि ६ शुक्रवार भ० श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः विक्रमपुर मध्ये ।।

प सौभाग्यसकल सोमप्रभसूरि

❀ जिनसोमप्रभसूरि ❀

।। सं० २०१० मिती जेठ सुदि १० बुधवारे भ० श्रीजिनसोमप्रभसूरिभिः 'धर' १ नन्दी कृता बम्बई नगर मध्ये ।।

प प्रतापचन्द प्रतापधर श्रीजी रो
प रतनचन्द रतनधर श्रीजी रो

❀ ❀

जिनरंगसूरी शाखा

कतिपय दीक्षा नन्दी सूची के उल्लेख

जगम युगप्रधान सकल भट्टारक शिरोमणि श्री जिनदत्तसूरि श्रीजिनकुशलसूरि चरण कमलेभ्यो नमः ।।

सवत् १७८६ वर्षे शाके १५६४ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मार्गशिर मास शुक्ल पक्षे दशम्या १० तिथौ गुरुवासरे उत्तरा भाद्रपद नाम नक्षत्रे सिद्धियोगे भ० श्री जिनविमलसूरिभि. प्रथम नन्दी विमल इति स्थापिता शुभभूयात् श्रीरस्तु ।।

।। वा० अक्षयकल्याण शिष्य प० कीर्तिसागर तच्छिष्य देवेन्द्र तच्छिय प० तुलाराम बृहदीक्षा नाम तत्त्वविमल इति । द्वितीय शिष्य प० जीवन तन्नाम जयविमल उ० श्री भुवननन्दन गणि— प० अभयकीर्त्ति तच्छिष्य प० पद्मतिलक तच्छिष्य रामजी तन्नाम रत्न-विमल इति ।

उ० श्री पुण्यचन्द्र गणि सत्क शिष्य देवदत्त तन्नाम देवविमल इति प्रतिष्ठित एते दत्ता नाम दयाविमल ।

प० भुवनचन्द्र तच्छिष्य भवानी तन्नाम भानुविमल., द्वितीय शिष्य रूपचन्द तन्नाम रूपविमल ।

प० नयकुशल शिष्य प० दयाराम तच्छिष्य गरीबदास तन्नाम गुणविमल ।

वा० महिमतिलक शिष्य सन्तोषी तन्नाम सत्त्वविमल इति ।

वा० जयनन्दन शिष्य लब्धिसागर तत्शिष्य अ.......समुद्र तत्शिष्य लीलापति '..... 'ललितविमलेति प्रतिष्ठितम् ।।

वा० भुवनचन्द्र तच्छिष्य प्रेमचन्द बृहद्दीक्षा नाम प्रेमविमल, द्वितीय शिष्य पूर्णमल तन्नाम पर्णविमल............

वा० हर्षकुशल गणि शिष्य पुरुसोत्तम तन्नाम पुण्यविमल ।

प० हर्षचद्र शिष्य उदोसिंघ तन्नाम" ·······विमल।

प० रत्नधीर तच्शिष्य कुबेरचद तन्नाम कीर्तिविमल ।

सवत् १८१७ वर्षे वैसाख सुदि ३ दिने श्रीपूज्यजी श्रीजिन अक्षय-सूरिजी वृहद्दीक्षा रजपुरा मध्ये अर्प्पिता ।

श्रीपूज्य जी शिष्य सावत वृहद्दीक्षा तन्नाम सर्वकुमार ।

उ० महिमतिलक[1] जी शिष्य चेता तन्नाम चित्रकुमार, द्वितीय शिष्य लच्छो तन्नाम लब्धिकुमार ।।

संवत् १८१७ वर्षे माघ शुक्ल दशम्यां शनौ हरिदुर्ग मध्ये—

प० सुगुणतिलक शिष्य अमृतधीर तत् शिष्य सीहमल्ल तन्नाम सुमतिकुमार, द्वितीय सदानद तन्नाम सम्पत्ति··· ···(कुमार) ।

प० प्रेमधीर शिष्य सगता तन्नाम सिद्धिकुमार ।

प० प्रेमधीर शिष्य जयकुमार तत् हरिचद्र तन्नाम हर्षकुमार ।

प० अमृतधीर शिष्य सुमतिकुमार तच्छिष्य सतीदास तन्नाम सतकुमार ।

सवत् १८१८ वर्षे वैशाख सुदि तृतीया दिने ।

प० प्रीतिसमुद्र शिष्य प्रभुकुमार तच्छिष्य पद्मा तन्नाम वृहद्दीक्षा पद्मकुमार ।।

❀ ❀

१. ये चिदानन्दजी के पूर्वज थे, चित्रकुमार और लब्धिकुमार दोनों गुरु भाई थे, एक नही ।

खरतर-गच्छ दीक्षा नन्दी सूची

[संविग्न साधु-साध्वी वर्ग]

तृतीय खण्ड

१ महो० क्षमाकल्याण परम्परा
सुखसागर जी म० का समुदाय
साधु दीक्षा नन्दी सूची

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुनाम	दीक्षा सवत्
खुशालचन्द	क्षमाकल्याण[1]	अमृतधर्म	१८१५ आ. व. २
धरमो	धर्मानन्द	क्षमाकल्याण	
•	राजसागर	धर्मानन्द	
•	ऋद्धिसागर	धर्मानन्द	स्व० १९५२
•	गुणवन्तसागर	राजसागर	स्व० १९४२
• • •	पद्मसागर	राजसागर	
•	स्थानसागर	राजसागर	
सुखलाल	सुखसागर[2]	ऋद्धिसागर	१९०६ भा सु ५

इन्हीं से सुखसागरजी म० का समुदाय कहलाया

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुनाम	दीक्षा सवत्
भगवानदास	भगवानसागर[3]	सुखसागर	१९२५
• • •	चिदानन्द	सुखसागर	
•	कल्याणसागर	सुखसागर	
•	रत्नसागर	सुखसागर	

१· स्व० १८७२ पौ० व० १४

२ स्व० १९४२ मा० व० ४ फलौदी

३ स्व० १९५७ ज्जेष्ठ व० १४ फलौदी

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुनाम	दीक्षा संवत्
	क्षमासागर	सुखसागर	
छोगमल	छगनसागर[4]	स्थानसागर	१९४२ वै सु.१०
·	चैतन्यसागर	भगवानसागर	
सुजाणमल	म० सुमतिसागर[5]	,,	१९४४ वै शु ८
....	गुमानसागर	,,	
....	धनसागर	,,	
...	पूर्णसागर	छगनसागर	
.	तेजसागर	भगवानसागर	
चुन्नीलाल	ग० त्रैलोक्यसागर[6]	भगवानसागर	१९५२ प्र० ज्ये० सु० ७
हरिसिंह	हरिसागर[7] (जिनहरिसागरसूरि)	भगवानसागर	१९५७ आ० व० ५
.. .	कीर्तिसागर	सुमतिसागर	
. .	लब्धिसागर	कीर्तिसागर	
. .. .	भावसागर	कीर्तिसागर	
मनजी	मणिसागर[8] (जिनमणिसागरसूरि)	सुमतिसागर	१९६०

४ स्व० १९६६ द्वि० श्रा० ६ लोहावट

५ महोपाध्याय पद १९७९ इन्दोर, स्व० १९८४ पो० सु० ६ कोटा

६ गणनायक १९६६, स्व० १९७४ श्रा० सु० १५ लोहावट

७. आचार्य पद १९९२, स्व० २००६ पो० व० ६ मेडता रोड

८ पन्यास पद १९७९ इन्दोर, आचार्यपद २००० पो० व० १ बीकानेर, स्व० २००७ मा० व० १५ मालवाडा

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुनाम	दीक्षा सवत्
•	नवनिधिसागर	पूर्णसागर	
• •	क्षेमसागर	पूर्णसागर	
•• ••	रत्नसागर	त्रैलोक्यसागर	
•	रूपसागर	त्रैलोक्यसागर	
••	मणिसागर	रूपसागर	
• • •	वी आनदसागर[9] (जिनानन्दसागरसूरि)	त्रैलोक्यसागर	१९६८ वै शु १२
•	कल्याणसागर	त्रैलोक्यसागर	
• •	वल्लभसागर	क्षेमसागर	
••• ••	भक्तिसागर	त्रैलोक्यसागर	
• • •	कवीन्द्रसागर[10] (जिनकवीन्द्रसागरसूरि)	जिनहरिसागरसूरि	१९७६ फा व ५
••• •	महेन्द्रसागर	जिनानदसागरसूरि	
•	हेमेन्द्रसागर	जिनहरिसागरसूरि	
• ••••••••	मगलसागर	जिनानन्दसागरसूरि	
देवराज	उदयसागर[11] (जिनोदयसागरसूरि)*	,,	१९८८ मा सु ५
तोलाराम	कान्तिसागर[12] (जिनकान्तिसागरसूरि)	जिनहरिसागरसूरि	१९८९ ज्ये शु १३

९ आचार्य पद २००६, स्व० २०१७ पो० सु० १०

१० आचार्य पद २०१७, स्व० २०१७ फा० सु० ५,

११ आचार्य पद १३ जून १९८२

१२. आचार्य पद १३ जून १९८२, स्व० २०४२ मि० व० ७

*चिन्हांकित विद्यमान हैं।

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुनाम	दीक्षा सवत्
....	चन्द्रसागर	जिनानन्दसागरसूरि	
.. . .	विजयसागर	जिनानन्दसागरसूरि	
. .	हससागर	,,	
रामजीवन	करुणासागर	जिनहरिसागरसूरि	१९९६ मा. सु. ३
वस्तीचद	महो विनयसागर	जिनमणिसागरसूरि	,,
रामपाल	कुसुमसागर (प्रभाकरसागर)	जिनकवीन्द्रसागरसूरि	,,
.. ..	प्रेमसागर	नवनिधिसागर	
... ..	दर्शनसागर	जिनहरिसागरसूरि	२००२
रामपाल	प्रभाकरसागर	जिनउदयसागरसूरि	
..	भक्तिचन्द	जिनमणिसागरसूरि	२००४
अमरचन्द	गौतमचन्द (गौतमसागर)	,,	२००४
मदनलाल	गुणचन्द	,,	२००४
चतुरभुज	तीर्थसागर	जिनहरिसागरसूरि	२००३
	नेमिचन्द	गुणचन्द	२००६
	अस्थिरमुनि	गौतमसागर	
चौथमल	कल्याणसागर*	जिनकवीन्द्रसूरि	२००९ मि व ५
	विमलसागर		. .
नवीनचन्द	उ महोदयसागर	जिनउदयसागरसूरि	२०१५ ज्ये.शु. १०
	सूर्यसागर	,,	

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुनाम	दीक्षा सवत्
सम्पतराज	कैलाशसागर	जिनकवीन्द्रसूरि	२०१५ आ शु १०
	कीर्तिसागर*	कल्याणसागर	
मीठालाल	ग मणिप्रभासागर*	कान्तिसागरसूरि	२०३० आ व ७
सिंघमल	धर्मसागर*	विमलसागर	२०३० वै शु ११
प्रतापमल	प्रतापसागर*	कान्तिसूरि	२०३० मि व २
मिश्रीमल	मनोजसागर*	,,	२०३० मि व २
चम्पालाल	पूर्णानन्दसागर*	उदयसागरसूरि	२०३० मा सु ५
. .	प्रकाशसागर	कान्तिसागरसूरि	२०३२ आ सु ६
मुकेशकुमार	मुक्तिप्रभासागर*		२०३२ फा सु ३
सूर्यकान्त	सुयशप्रभासागर*	,,	२०३५ मि सु. ५
मिलापचन्द	ग महिमाप्रभसागर*	,,	२०३५ ज्ये सु ११
ललितकुमार	ललितप्रभसागर*	,,	२०३५ ज्ये सु ११
पुखराज	चन्द्रप्रभसागर*	,,	२०३७ वै. सु १०
चन्द्रभान	शशिप्रभसागर	,,	२०३८ २६.६.८१
वसन्तकुमार	विमलप्रभसागर*	,,	२०४१ का. व २
प्रदीपकुमार	पीयूषसागर*	उदयसागरसूरि	२०४१ फा सु २
मोतीलाल	मनीषप्रभसागर*	मणिप्रभसागर	२०४५ ज्ये शु १०

— ० ० ० —

अन्य प्राप्त कतिचित् प्राचीन नाम

	शिवजीराम	स्व०
मेघराज	मुक्तिसागर	
	मोतीलालजी	स्व० २००२ का. व. १२
भैरूलाल	चारित्रमुनि	
प्रेमसुख	प्रेमसागर	

श्रीसुखसागरजी म० के साध्वी समुदाय की दीक्षा सूची

उद्योत श्री—जन्म नाम-नानीबाई, श्री राजसागरजी की शिष्या रूपश्रीजी के पास स० १९१८ माघ सुदि ५ को दीक्षा। स० १९३२ मे सुखसागरजी के सानिध्य मे क्रियोद्धार। प्रमुख शिष्याये—१ धनश्री, २ लक्ष्मीश्री।

लक्ष्मी श्री—जन्म नाम-लक्ष्मीबाई। दीक्षा १९२४ मिगसर वदि १०। प्रमुख शिष्याये—१ पुण्यश्री[1] २ शिवश्री (सिंहश्री) ३ मगनश्री

इन्ही प्रवर्तिनी पुण्यश्री और प्रवर्तिनी शिवश्री का शिष्या समुदाय विशाल होने से साध्वी समुदाय भी पुण्य-मडल अथवा प्र० पुण्यश्री परम्परा एव शिव-मण्डल अथवा प्र० शिवश्री परम्परा समुदाय के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

प्र०पुण्यश्री—जन्म नाम पन्नीबाई, जन्म स० १९१५ वै० सु० ६। दीक्षा १९३१ वैशाख सुदि ११। स्वर्गवास १९७६ फागुन सुदि १० जयपुर।

प्र०शिवश्री—जन्म १९१२, जन्म नाम-शेरू। दीक्षा १९३२ वैशाख सुदि ३। स्वर्गवास १९६५ पौष सुदि १२ अजमेर।

× × ×

प्रवर्तिनी पुण्यश्री समुदाय/पुण्य-मण्डल के साध्वी-समुदाय की दीक्षा सूची व्यवस्थित रूप से "पुण्य जीवन ज्योति[2]" एव "परिचय पुस्तिका[3]" में प्राप्त होती है। इन्ही को आधार मानकर सूची प्रस्तुत की जा रही है।

---

१ सुख चरित्र पृ० २०७ के अनुसार पुण्यश्रीजी लक्ष्मीश्रीजी की प्रशिष्या थी।

२ प्र० सज्जनश्री लिखित

३ साध्वी विद्युत्प्रभाश्री लिखित

१ (क) प्र० पुण्यश्री साध्वी-समुदाय की दीक्षा सूची (स्वर्गस्थ)

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा सवत्
नानीवाई	उद्योतश्री	रूपश्री	१९१८ मा० सु० ५
लक्ष्मीवाई	लक्ष्मीश्री	उद्योतश्री	१९२४ मि० व० १०
पन्नाकुमारी	प्र० पुण्यश्री	लक्ष्मीश्रीजी	१९३१ वै० सु० ११
	मगनश्री	"	१९३० मि० व० २
उमरावकुवर	अमरश्री	पुण्यश्री	१९३६ आषाढ
सारीवाई	शृगारश्री	"	१९३६ मि० व० २
सिरियावाई	सिरदारश्री	"	" " १३
कसूवीवाई	केशरश्री	शृगारश्री	१९४१ ज्ये० व० १२
	भीमश्री	"	" " १३
	घेवरश्री	"	१९४१ माघ सु०
	चम्पाश्री	"	" "
चुनीवाई	चाँदश्री	"	१९४३ वै० सु० १०
	तेजश्री	"	
वाधुवाई	विवेकश्री	"	१९४३ वै० सु० ११
गुलाववाई	गुलावश्री	"	१९४५ मि० व०
सुन्दरवाई	प्र० सुवर्णश्री	केसरश्री	१९४६ मि० व० ५

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा सवत्
रतनवाई	रत्नश्री	विवेकश्री	१९४७ चैत्र सु० ५
लाभूवाई	लाभश्री	शृगारश्री	१९४८ चैत्र सु० ५
भाणीवाई	कनकश्री	पुण्यश्री	१९४८ आ० सु० ३
फूलीवाई	धनश्री	,,	१९४८ मि० सु० २
फते कवर	फतेश्री	,,	१९५० जेठ व० १३
महतावबाई	मेतावश्री	,,	१९५१ आ० सु० ७
धूलीवाई	उज्ज्वलश्री	,,	१९५१ मि० सु० १५
सोभागवाई	प्रेमश्रीजी	शृगारश्री	१९५२ जेठ सु० ७
हरीवाई	हर्षश्रीजी टीकमश्रीजी	पुण्यश्री	१९५३ जेठ सु० २
फूंलीवाई	विद्याश्रीजी	शृगारश्री	१९५५ जेठ सुदि २
सोनीवाई	सोभाग्यश्रीजी	पुण्यश्री	,, पो० सु० ६
गियावाई	प्र ज्ञानश्रीजी*	,,	,, ,,
गोरजावाई	गौतमश्रीजी	,,	,, ,,
वीरावाई	विजयश्रीजी	,,	,, ,,
वाधुवाई	हुलासश्रीजी	,,	१९५६ वै० सुदि ६
माड़ूवाई	माणकश्रीजी	,,	,, ,,
माड़ूवाई	हीर श्रीजी	,,	,, ,,
माड़ूवाई	पद्मश्रीजी	,,	,, ,,
मृगावाई	मोहनश्रीजी	,,	१९५६ चैत्र सुदि १३
जीवी वाई	दयाश्रीजी	विवेकश्री	१९५६ माघ सु० ५
गलकीवाई	जीवणश्रीजी	पुण्यश्री	,, ,,

*प्रवर्तिनी पद वि०स ० १९९९, स्व० २०२३ चैत्र व० १० जयपुर

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा संवत्
धन्नीवाई	कमलश्री	पुण्यश्री	१९५६ मा० सु० ५
राजीवाई	रेवन्तश्री	,,	,, ,,
दीपीवाई	दीप श्री	,,	१९५७ ,,
नानीवाई	नवलश्री	सुवर्णश्री	१९५८ मि० वदि १२
मृगीवाई	प्रेमश्री	शृगारश्री	१९५८ मि० वदि ११
जडावबाई	ज्योतिश्री	पुण्यश्री	१९५८ फागण वदि ३
चन्दनबाई	देवश्री	रत्नश्री	१९५८ फा० व० २
सौभाग्य कुवर	चन्दनश्री	स्वर्णश्री	,, ,,
भाऊ वाई	भक्तिश्री	,,	,, ,,
मगनीवाई	मेघश्री	,,	,, ,,
ठमलीवाई	चेतनश्री	लाभ श्री	१९५९ माघ वदि ७
छगनवाई	हितश्री	,,	१९६० वै० सुदि० ७
गोरजावाई	गुणश्री	,,	,, ,,
माणकवाई	माणकश्री	कनकश्री	१९६० ज्ये० सुदि ५
उमरावकुवर	उमगश्री	कनकश्री	१९६० आ० सुदि १०
जीवावाई	जयश्री	सुवर्णश्री	१९६० माघ सुदि ७
सुगनवाई	मुक्तिश्री	पुण्यश्री	१९६१ वै० सुदि १०
चादावाई	म० चम्पाश्री[1]	,,	१९६१ मि० सुदि ५
वीरावाई	विनयश्री	,,	१९६१ पोष सुदि १२
चम्पावाई	वल्लभश्री	,,	१९६१ पोष सुदि १५
लाधुवाई	लब्धिश्री	विवेकश्री	१९६१ चैत्र सुदि १३
मूलीवाई	मोतीश्री	पुण्यश्री	१९६२ आ० सुदि ७

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा सवत्
अचरजवाई	अमृतश्री	सुवर्णश्री	१९६२ मि० सुदि ६
केसरवाई	कल्याणश्री	,,	,, ,,
जीवावाई	जीतश्री	लाभश्री	,, ,,
•	हृगामश्री	स्वर्णश्री	,, ,, ११
सोनीवाई	सत्यश्री	पुण्यश्री	१९६३ वै० सुदि ७
	चतुरश्री	,,	,, ,,
ककुवाई	कुकुमश्री	सुवर्णश्री	१९६३ वै० सुदि ६
	चिमनश्री	लाभश्री	,, ,,
रमकूवाई	रेवतश्री	पुण्यश्री	१९६३ वै० सुदि १०
नन्दकुवर	मणिश्री	,,	१९६३ पोष वदि ७
मोहनवाई	मोहनश्री	लाभश्री	,, ,,
गगावाई	गगाश्री	पुण्यश्री	,, ,,
चम्पावाई	कञ्चनश्री	विवेकश्री	१९६४ वै० सुदि ११
माडूवाई	यमुनाश्री	पुण्यश्री	१९६४ ज्ये० सुदी ५
जतनवाई	जतनश्री	सुवर्णश्री	१९६४ मि० वदि० ५
सूरतवाई	सूरजश्री	गुणश्री	,, ,,
	फूलश्री	पुण्यश्री	,, ,,
धन्नीवाई	धनश्री	,,	,, मि सु ५
सोभागवाई	शुभश्री	,,	,, ,,
इचरजवाई	शातिश्री	कनकश्री	१९६४ माघ सुदि ५
ज्ञानीवाई	गभीरश्री	रतनश्री	१९६५ आ० वदि ३

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा सवत्
लाडवाई	लालश्री	पुण्यश्री	१९६५ आ० व० १२
पानवाई	प्रधानश्री	"	१९६६ माघ सुदि ९
चीडीवाई	चन्द्रश्री	"	" "
माडूवाई	ताराश्री	शृगारश्री	" "
प्राणकवर	प्रसन्नश्री	पुण्यश्री	१९६७ वै० सुदि ११
ववुवाई	विजयश्री	"	" "
	आरामश्री	लाभश्री	१९६८
	अमोलकश्री	"	१९६८
	कस्तूरश्री	"	१९६९ माघ वदि १३
	प्रमोदश्री	पुण्यश्री	१९६८ ज्ये० सुदि ५
केसरकुमारी	सिद्धिश्री	शृगारश्री	१९६९ ज्ये० सुदि ६
	अजीतश्री	सुवर्णश्री	१९६९
	सन्तोषश्री	"	१९६९
	कीर्तिश्री	"	१९६९
जडाववाई	सुमतिश्री	पुण्यश्री	१९७१ अक्षय तृतीया
गोमीवाई	गुमानश्री	"	" "
	चरित्रश्री	"	१९७१ माघ सुदि ५
इन्द्रवाई	इन्द्रश्री	पद्मश्री	१९७२ द्वि०वै० सु० १०
चन्द्रवाई	चरणश्री	सौभाग्यश्रीजी	" "
मनोहरवाई	मनोहरश्री	"	" "
नोजीवाई	नीतिश्री	"	" "

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा संवत्
	मैनाश्री	सौभाग्यश्री	१९७२ वै० सुदि १०
अनोपकवर	वसन्तश्री	सुवर्णश्री	१९७२ ज्ये० वदि ५
पार्वतीवाई	दत्तश्री	चन्दनश्री	१९७३
वालावाई	भुवनश्री	दीपश्री	१९७३
पार्वतीवाई	प्रीतिश्री	रत्नश्री	१९७२ मि० सुदि ५
	जोरावरश्री	"	" "
सूरजवाई	समरथश्री	पुण्यश्री	१९७३
केसरवाई	उपयोगश्री	"	१९७४ माघ सुदि १३
राय कवर	पवित्रश्री	"	१९७५ वै० सुदि १०
तेजवाई	रविश्री	कनकश्री	१९७४ मा० सुदि १३
	सुजानश्री	"	" "
हुर कवर	दर्शनश्री	पुण्यश्री	१९७४
	सिद्धार्थश्री	रत्नश्री	१९७५
गजीवाई	गीतार्थश्री	"	१९७५
इचरजवाई	अनुपमश्री	सुवर्णश्री	१९७६ आ० शु० २
धापूवाई	धर्मश्री	हीरश्री	१९७६ फा० सु० ७
राजवाई	रतिश्री	हीरश्री	१९७९ फा० सुदि ७
सिरहकवरवाई	उत्तमश्री	"	" "
पानवाई	प्रकाशश्री	"	, "
जसकवर	यशवतश्री	रत्नश्री	१९८० माघ सुदि ३
छगनवाई	सुव्रतश्री	"	" "
इचरजवाई	देवेन्द्रश्री	"	" "

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा सवत्
	सुगनश्री	कनकश्री	
	जैनश्री	चेतनश्री	१९७९ मि० सुदि ५
	जिनेन्द्रश्री	"	" "
रूपकवर	प्र. विज्ञानश्री	सुवर्णश्री	१९८० ज्येष्ठ सुदि ५
द्राक्षाकुमारी	विचक्षणश्री*	"	" "
सुगनवाई	समताश्री	कनगश्री	
उमराववाई	वृद्धिश्री	दयाश्री	१९८०
सरदारवाई	सुमनश्री	उल्लासश्री	"
सारीवाई	सुव्रतश्री	"	"
अमरकुवर	अभयश्री	ज्ञानश्री	"
हुल्लासकुवर	यशश्री	चन्दनश्री	१९८१ मेरु तेरस
सुन्दरवाई	सम्पतश्री	चेतनश्री	१९८१ माघ सुदि १५
मकुवाई	विनोदश्री	विद्याश्री	१९८१ वै० सुदि ११
सिनगारीवाई	शीतलश्री	सुवर्णश्री	१९८२ माघ सुदि ५
धापूवाई	ध्यानश्री	कनकश्री	१९८६ फा० सुदि १
नाथीवाई	नीतिश्री	धनश्री	१९८६ ज्ये० वदि १२
	सुनन्दाश्री	मोतीश्री	
रतनवाई	राजश्री	लालश्री	१९८८ माघ सुदि ५
सोनीवाई	जीवनश्री	ज्ञानश्री	" "
देवकावाई	कुशलश्री	कल्याणश्री	" "

*स्व० २०३७ वै० शु० जयपुर

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा संवत्
कोयलबाई	कुमुदश्री	प्रेमश्री	१९८८ फा० सुदि ३
तीजाबाई	वर्द्धनश्री	चेतनश्री	१९८८ ज्ये० सुदि ३
रतनबाई	हीराश्री	रत्नश्री	१९८८
इचरजबाई	विचित्रश्री	विनयश्री	१९९१ वै० सुदि ५
सोहनबाई	विशालश्री	"	" "
इचरजबाई	वीरश्री	"	" "
सूरजबाई	अशोकश्री	जतनश्री	१९९१ वै० सुदि १०
तेजबाई	त्रिभुवनश्री	उमंगश्री	१९९३ मि० वदि ७
रतनबाई	रणजीतश्री	प्रसन्नश्री	१९९६ वै० सुदि ७
माडूबाई	रभाश्री	रतिश्री	१९९७ ज्ये० सुदि ११
सज्जनबाई[२]	प्र सज्जनश्री	ज्ञानश्री	१९९९ आ० सुदि २
चोथीबाई	विबुधश्री	वसन्तश्री	" "
शान्ताकुमारी	पुष्पाश्री	अनुपमश्री	१९९९ माघ वदि ६
धापूबाई	चितरजनश्री	जैनश्री	१९९९ फा० सुदि २
अधिकारबाई	प्रभाश्री	विज्ञानश्री	१९९९ माघ वदि ६
प्यारीबाई	प्रकाशश्री	प्रीतिश्री	१९९९
इन्दिराकुमारी	राजेन्द्रश्री	उपयोगश्री	२००१ वै० सुदि ६
बाधूबाई	जिनेन्द्रश्री	ज्ञानश्री	२००३ मि० सुदि ५
चम्पादेवी	प्रवीणश्री	जतनश्री	२००१ वै० सुदि १२
छोटीबाई	विजयेन्द्रश्री	विचक्षणश्री	२००२ ज्ये० सुदि १५
सपतबाई	देवेन्द्रश्री	दत्तश्री	२००२ आ० सुदि २
पतासीबाई	हीराश्री	यशश्री	२००१ आ० सुदि २

२ प्रवर्तिनी पद २०३९ मिगसर वदि ३, स्वर्गवास २०४६ मि० सुदी ११

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा सवत्
मूलीवाई	विकासश्री	उमगश्री	२००३ मि० सुदि ६
इचरावाई	रूपश्री	लालश्री	२००२
गोरावाई	गुणवानश्री	उमगश्री	२००८ मि० सुदि ५
फूलवाई	माणकश्री	हीराश्री	२००९ ज्ये० वदि ७
सुमित्रा	सूर्यप्रभाश्री	विचक्षणश्री	२०११ मि० सुदि ११
सतोष	सन्तोषश्री	वर्धनश्री	२०११ फा० सुदि २
हसुकुमारी	हसप्रभाश्री	विचक्षणश्री	२०१७ वै० सुदि १३
..	ज्योतिप्रभाश्री		२०२० वै० सुदि १३

१ (ख) पुण्य-मण्डल की विद्यमान साध्वी दीक्षा सूची

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा संवत्
धापू कुमारी	धर्मश्री	हीरश्री	१९७६ फा० व० ६
चम्पाकुमारी	चंचलश्री	कनकश्री	१९८० फा० शु० ५
वेदप्रभाकुमारी	मुक्तिश्री	सत्यश्री	१९८३ मा० शु० ५
• •	देवेन्द्रश्री	प्रसन्नश्री	१९८०
गंगाकुमारी	सुरेन्द्रश्री	कंचनश्री	१९८२ आ० व० ८
आशांकुमारी	अविचलश्री (प्रधानजी)	प्र० विचणक्षश्री	१९९१ प्र ज्ये व ५
कल्याणीकुमारी	कमलाश्री	कनकश्री	१९९४ मा० सु० ५
जडावकुमारी	हेमश्री	पवित्रश्री	१९९६ आ० सु० ३
लीलावती कु०	निपुणाश्री	प्र० विचक्षणश्री	१९९६ मि० सु० ५
ताराकुमारी	तिलकश्री	,,	१९९६ फा० व० २
विद्याकुमारी	विनीताश्री	,,	,, ,,
हुकमाकुमारी	जितेन्द्रश्री	प्र० चम्पाश्री	२००३ मि० सु० ५
दाखाकुमारी	विनयश्री	मुक्तिश्री	२००५ मा० सु० २
चन्द्राकुमारी	दिव्यप्रभाश्री	पवित्रश्री	२००९ मि० सु० ११
लाजवन्तीकु०	चन्द्रकलाश्री	प्र० विचक्षणश्री	२००९ फा० सु० ५
मोहिनीकुमारी	चन्द्रप्रभाश्री	,,	२००९ फा० सु० १२
कमलाकुमारी	कमलप्रभाश्री	लालश्री	२०१० जे० सु० ११

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा संवत्
मधुकान्ताकु०	मनोहरश्री	प्र० विचक्षणश्री	२०११ मि० सु० ११
सरलाकुमारी	सुलोचनाश्री	,,	२०१२ वै० सु० ७
सत्यवन्तीकु०	सुदर्शनाश्री	,,	,, ,,
रमाकुमारी	सुरजनाश्री	,,	२०१२ आ० सु० १०
मधुकुमारी	मजुलाश्री	,,	,, ,,
मुन्नाकुमारी	मणिप्रभाश्री	,,	२०१३ फा० सु० १०
किरणकुमारी	शशिप्रभाश्री	प्र० सज्जनश्री	२०१४ मि० व० ६
लूणीकुमारी	मदनश्री	प्र० चम्पाश्री	२०१५ आ० सु० ६
मूलीकुमारी	वीरप्रभाश्री	पवित्रश्री	२०१५ पो० सु० १२
हनुमतिकु०	मुक्तिप्रभाश्री	प्र० विचक्षणश्री	२०१६ वै० सु० १३
चादकुमारी	जयप्रभाश्री	चेतनश्री	२०१८ मि० व० ५
भवरीकुमारी	निर्मलाश्री	प्र० विचक्षणश्री	,, मि. सु ७
पतासीकुमारी	पुष्पाश्री	रतिश्री	२०१६ फा० सु० २
पिस्ताकुमारी	पद्माश्री	धर्मश्री	२०१६ मि० सु० ५
जतनकुमारी	विजयप्रभाश्री	रंभाश्री	२०१६ मा० सु० ५
रतनकुमारी	विशालप्रभाश्री	पवित्रश्री	२०२० वै० सु० ११
जयाकुमारी	मजुलाश्री	प्र०विचक्षणश्री	२०२० वै० सु० १३
मिश्रीकुमारी	विनोदश्री	विकासश्री	२०२०
रुक्मिणीकुमारी	दक्षगुणाश्री	दिव्यप्रभाश्री	२०२२ वै० सु० ७
किरणकुमारी	प्रियदर्शनाश्री	प्र० सज्जनश्री	२०२४ आ० सु० ६
सुशीलाकुमारी	सूर्यप्रभाश्री	चम्पाश्री	२०२२ मि० सु० १०

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा सवत्
भारतीकुमारी	भाग्ययशाश्री	प्र० विचक्षणश्री	२०२४ मा० सु० २
चन्द्रकलाकुमारी	विजयप्रभाश्री	,,	२०२६ ज्ये० सु० ५
निर्मलाकुमारी	निरजनाश्री	,,	,, ,,
तेजकुमारी	जयश्री	प्र० सज्जनश्री	२०२५ वै० व० १०
धापूकुमारी	वर्धमानश्री	प्र० विचक्षणश्री	२०२८ ज्ये० सु० ५
मृदुलाकुमारी	मयणरेखाश्री	दिव्यप्रभाश्री	२०२९ वै० शु० ५
कलावतीकुमारी	काव्यप्रभाश्री	प्र० विचक्षणश्री	२०२९ द्वि वै सु १३
दक्षाकुमारी	दिव्यगुणाश्री	,,	,, ,,
नीलाकुमारी	नयप्रभाश्री	,,	,, ,,
निर्मलाकुमारी	दिव्यदर्शनाश्री	प्र० सज्जनश्री	२०३० मा० सु० ५
हीरामणिकुमारी	तत्वदर्शनाश्री	,,	,, ,,
कमलेशकुमारी	सम्यग्दर्शनाश्री	,,	,, ,,
विजयलक्ष्मी	विश्वप्रज्ञाश्री	प्र० विचक्षणश्री	२०३२ मा० सु० ५
सुशीलाकुमारी	सयमपूर्णाश्री	,,	,, ,,
उदयकुमारी	चन्दनवालाश्री	,,	,, ,,
हसुमतीकुमारी	हर्षयशाश्री	,,	२०३३ ,,
कोकिलाकुमारी	विनीतयशाश्री	,,	,, ,,
भाग्यवतीकुमारी	पूर्णप्रभाश्री	चम्पाश्री	२०३२ ज्ये० सु० १०
नारगीकुमारी	विमलप्रभाश्री	,,	२०३३ मा० सु० ११
सुधाकुमारी	सुरेखाश्री	प्र० विचक्षणश्री	२०३२ वै० सु० ३
प्रेमलता	पद्मयशाश्री	,,	२०३२ मा० सु० १२

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा सवण्
पुष्पाकुमारी	पूर्णयशाश्री	प्र० विचक्षणश्री	२०३२ मा० सु० १२
वीणाकुमारी	विद्युत्प्रभाश्री	,,	२०३३ फा० सु० ३
विमलाकुमारी	विमलयशाश्री	,,	२०३२ वै० सु० १३
हेमलता(हीरा)	हेमप्रज्ञाश्री	,,	२०३६ मि० सु० १३
लीलाकुमारी	शुभदर्शनाश्री	प्र० सज्जनश्री	२०३७ पो० सु० १०
जेठीकुमारी	जीतयशाश्री	प्र०विचक्षणश्री	२०३७ मा० सु० ५
सरलाकुमारी	सुयशाश्री	,,	२०३६ मि० सु० १३
किरणकुमारी	कुशलप्रज्ञाश्री	चन्द्रप्रभाश्री	२०३७ ज्ये० सु० ५
चन्द्रकान्ताकु०	प्रभजनाश्री	,,	२०३६ मा०व० ६
मजुकुमारी	मुदितप्रज्ञाश्री	प्र० सज्जनश्री	२०३८ वै० व० ६
मधुमालती कु०	मधुस्मिताश्री	मनोहरश्री	२०३८ ज्ये० व० ६
सरलाकुमारी	सम्यग्रेखाश्री	तिलकश्री	२०३८ वै० सु० ६
मृगेशकुमारी	मृदुलाश्री	अविचलश्री	२०३८ चै० व० २
सुमित्राकुमारी	हेमरत्नश्री	चम्पाश्री	२०४० वै० सु० ६
मजुकुमारी	हर्षप्रज्ञाश्री	,,	,, ,,
विमलाकुमारी	हर्षपूर्णाश्री	,,	,, ,,
नारगी (निशा)	सौम्यगुणाश्री	,,	,, ,,
नारगी (नीता)	शीलगुणाश्री	प्र० सज्जनश्री	,, ,,
प्रेमलता	प्रगुणश्री	अविचलश्री	,, ,,
शकुन्तला	स्मितप्रज्ञाश्री	अविचलश्री	२०४१ वै० व० ५
सरस्वती	सिद्धाजनाश्री	,,	२०४१ मा० सु० १३
ललिताकुमारी	जयरत्नाश्री	चम्पाश्री	,, ,,
बिजयलक्ष्मी	विश्वमित्राश्री	,,	२०४१ फा० सु० ३

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा सवत्
विमलाकुमारी	विश्वरत्नाश्री	चम्पाश्री	२०४२ वै० सु० ३
लक्ष्मीकुमारी	चारित्रनिधिश्री	दिव्यप्रभाश्री	२०४० मा० सु० १३
अलकाकुमारी	अनन्तयशाश्री	तिलकश्री	२०४० मा० सु० ३
प्रवीणकुमारी	विरागज्योतिश्री	दिव्यप्रभाश्री	२०४२ वै० सु० ३
मीनाकुमारी	विश्वज्योतिश्री	"	" "
हुलासकुमारी	हर्षप्रभाश्री	धर्मश्री	२०४२ वै० सु० ७
भवरीकुमारी	कनकप्रभाश्री	सज्जनश्री	२०४२ मि० व ३
सुमनकुमारी	श्रुतदर्शनाश्री	प्र० सज्जनश्री	२०४२ आ० व० २
कान्ताकुमारी	कैवल्यप्रभाश्री	चन्द्रप्रभाश्री	१३-२-८६
सन्तोषकुमारी	सुज्येष्ठाश्री	"	२०४२ जे० व० २
कृष्णाकुमारी	सुव्रताश्री	"	" "
अनिताकुमारी	अरुणप्रभाश्री	"	" "
सुनीताकुमारी	शासनप्रभाश्री	"	" "
वेलाकुमारी	संयमज्योतिश्री	जयश्री	२०४६ मा० सु० २
अनिताकुमारी	संयमगुणाश्री	"	" "
संगीताकुमारी	स्वर्णयशाश्री	तिलकश्री	२०४६ मा० सु० ५
चन्दनवाला	सयमप्रज्ञाश्री	शशिप्रभाश्री	२०४७ वै० शु० १३
×		✠	✠
अकलकुमारी	अकलश्री	विचक्षणश्री	२००० वै० सु० १०
" "	सूर्यप्रभाश्री	"	२०२१ फा० सु० ११
कचनकुमारी	कमलश्री	चन्दनश्री	२००२ वै० व० ३
विमलाकुमारी	विमलप्रभाश्री	कमलश्री	२०२६ वै० व० १३

१ (ग) प्र० शिवश्रीजी का साध्वो-मण्डल

प्र० शिवश्री जी (सिंहश्री जी) की अनेक शिष्याये थी, जिनमे से केवल ६ के ही नाम प्राप्त होते हैं—१ प्रतापश्री, २ देवश्री, ३ प्रेम श्री, ४ ज्ञानश्री, ५ वल्लभश्री, ६ विमलश्री, ७ जयवन्तश्री, ८ प्रमोदश्री ६ घेवरश्री। इनमे से क्रमाक १, २, ३, ५ एवं ८ क्रमश प्रवर्तिनी पद से विभूषित भी हुई। इस मडल/समुदाय की वर्तमान समय मे विद्यमान साध्वीगण की दीक्षा-सूची तो 'परिचय पुस्तिका' मे व्यवस्थित रूप मे प्राप्त है, किन्तु इससे भी अधिक प्राचीन स्वर्गस्थ साध्वियो की सूची प्राप्त नही है। फिर भी प्राप्त उल्लेखो एव स्मृति के अनुसार उनका यत्किंचित् उल्लेख किया जा रहा है। इस सूची मे छोटे-वडे का उल्लेख गलत भी हो सकता है। और, अकित नाम उनकी शिष्याओ के हैं या प्रशिष्याओ के हैं ? इसमे असावधानी भी हो सकती है। साधन और सहयोग के अभाव मे ऐसी त्रुटिया होना सरल हैं और विद्वज्जनो द्वारा क्षन्तव्य भी।

अव शिवश्री जी की ६ शिष्याओ और प्रशिष्याओ आदि के क्रमश नामोल्लेख प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

१. प्र० प्रताप श्री—जन्म स० १६२५ पौष सुदि १० फलोदी, जन्म नाम—आसीवाई। दीक्षा स० १६४७ मिगसर वदि १०, स्वर्गवास १६६७ फलौदी। १२ शिष्यायें थी, जिनके नाम निम्न हैं—

१. सोभागश्री,
३ पद्मश्री,
३ विनयश्री,
४. चैतन्यश्री (नाथीवाई, जन्म १६५६, दीक्षा १६६७, स० १६८३)
५ दर्शनश्री,
६. ऋद्धिश्री,
७. लब्धिश्री,
८ निर्मलश्री,
६ ललितश्री,

१० चन्द्र श्री (पानवाई, जन्म १९५९, दीक्षा २९८५)
११. धरणेन्द्रश्री,
१२ दिव्य श्री (पतासीवाई, दी० १९९६, विद्यमान),
१३ भानुश्री, एवं १४ शान्तिश्री भी इनकी शिष्यायें हो ?

२. प्र० देवश्री—प्रवर्तिनी पद १९९७ माघ वदि १३, स्वर्ग० शायद २०१०। १०-११ शिष्याये थी, जिनमे से कुछ के नाम प्राप्त हैं—

१ दानश्री, २ हस्तिश्री, ३ सज्जनश्री, ४ कचनश्री, ५ हीराश्री (स्व० २०१०) ६ मिलापश्री (वि०), ७ यशवन्तश्री, ८ चन्द्रकाताश्री, (वि०), ९ मनमोहनश्री (?)

३. प्र० प्रेमश्री—जन्म १९३८ शरद्पूर्णिमा, नाम—धूलीवाई, दीक्षा १९५४ मि० व० १०, प्रवर्तिनी पद २०१० भा० सु० १५, स्व० २०१० आसोज वदि १३ फलौदी। १७ शिष्याये थी, जिन के नाम हैं—

१ शान्ति श्री, २ क्षमाश्री, ३ उमेदश्री, ४ यश श्री, ५ महिमाश्री, ६ चारित्रश्री, ७ तेज श्री, ८ अभय श्री, ९ जैन श्री, १० अनुभव श्री, (गुलावकुमारी, दी० १९७९,), ११ शुभ श्री, १२ वसन्त श्री, १३ पवित्र श्री, १४ सज्जन श्री, १५ विशाल श्री, १६ विकास श्री,

४. ज्ञानश्री—जन्म १९२८, जन्म नाम जडाववाई, दीक्षा १९६१ मि० सु० ५, स्वर्ग० १९९६ वै० सु० १३।

१३ शिष्यायें थी, जिनमें शायद गुप्तिश्री, विद्वान् श्री आपकी ही शिष्यायें हो। शेष के नाम प्राप्त नही हैं।

५. प्र० वल्लभश्री—जन्म १९५१ पोप वदि ७, जन्म नाम वरजूवाई, दीक्षा १९६१ मि० सु० ५, प्र० प० २०१० शरद पूर्णिमा, स्व० २०१८ फा० सु० १४ अमलनेर।

अनेक शिष्याये थी। स्वर्गस्थ शिष्याओ के नाम प्राप्त नही है। विद्यमान शिष्यायें हैं—प्र० जिनश्री, हेमश्री, कुसुमश्री, कमलप्रभाश्री, रजनाश्री कीर्तिश्री, तरुणप्रभाकी, निपुणाश्री, राजेशश्री आदि।

६. विमल श्री—

७. जयवन्त श्री—जेठीवाई, दीक्षा सं० १९६४ माघ सुदी ५ फलौदी।

८ प्र० प्रमोद श्री—जन्म १९५५ कार्तिक सुदि ५, नाम लक्ष्मी। दीक्षा स० १९६४ माघ सुदि ५, प्र० प० २०१९ (?), स्व० २०३९ पौष वदि १० वाड़मेर।

शिष्यायें १३-१४ थी, जिनमे से राजेन्द्रश्री, चन्द्रयशाश्री, चन्द्रोदयश्री, चम्पकश्री आदि एवं विद्यमान सूची मे कई शिष्या-प्रशिष्याओ के नाम प्राप्त हैं।

९. घेवर श्री—जन्म,—१९३६, रणेसर। दीक्षा-१९५५ पोस सुदि ७, स्वर्गवास २०१३ जेठ वदि ३ फलौदी। इनकी कतिपय शिष्य-प्रशिष्याओ के नाम विद्यमान सूची मे उपलब्व हैं।

१० प्र० जिन श्री—विद्यमान हैं।

---

१ (घ) प्र० शिव-मण्डल की विद्यमान साध्वी दीक्षा सूची

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा सवत्
जेठीकुमारी	प्र० जिनश्री[1]	प्र वल्लभश्री	१९७६ मा सु ५
कोलाकुमारी	हेमश्री	,,	१९८० जे सु ५
गुलाबकुमारी	अनुभवश्री	प्र प्रेमश्री	१९७९ चै सु. १०
चम्पाकुमारी	मोहनश्री	घेवरश्री	१९७८ आ सु ५
नाथीकुमारी	राजेन्द्रश्री	प्र प्रमोदश्री	१९८४ जे सु ११
मदनकुमारी	मिलापश्री	प्र देवश्री	१९९५ आ सु ३
विदामीकुमारी	विद्वानश्री	ज्ञानश्री	१९९२ आ सु ३
हंसाकुमारी	प्रकाशश्री	प्र प्रमोदश्री	१९९४ मि. सु १३
पार्वतीकुमारी	मनोहरश्री	गुप्तिश्री	१९९१ मा सु. १३
विमलाकुमारी	विकासश्री	प्र प्रेमश्री	२००० वै सु ३
·	विचारश्री	,,	
यशवन्तकुमारी	विनोदश्री	अनुभवश्री	२००० आ. व १३
शान्ताकुमारी	चन्द्रकान्ताश्री	प्र देवश्री	२००३ मा सु. ५
पदमावतीकु०	कुसुमश्री	प्र वल्लभश्री	१९९९ वै सु ६
कंचनकुमारी	कमलप्रभाश्री	,,	२००० वै सु ६
सविताकुमारी	रंजनाश्री	,,	२००० फा. व. ८

१ प्रवर्तिनी पद २०४० वै० सु० २ अमलमेर,

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा सवत्
पाची कुमारी	किरणश्री	मोहनश्री	२००४ वै० सु ५
चान्दकुमारी	प्रियदर्शनाश्री	अनुभवश्री	२००४ ज्ये सु १०
वरजकुमारी	चरणप्रभाश्री	गुप्तिश्री	२००६ मि सु. ११
कचरीकुमारी	कोमलश्री	प्र प्रमोदश्री	२००८ मा सु १३
कमलाकुमारी	विजयेन्द्रश्री	,,	२००९ मा सु ११
इन्दिराकुमारी	हेमप्रभाश्री	अनुभवश्री	२०१२ वै सु ७
जेठीकुमारी	पूर्णप्रभाश्री	,,	२०१३ मा व ५
भंवरीकुमारी	कमलाश्री	शुभश्री	,, फा व ७
कुसुमवहिन	कीर्तिश्री	प्र वल्लभश्री	,, ,,
जयावहिन	तरुणप्रभाश्री	,,	,, फा सु ६
रतनकुमारी	निर्मलाश्री	विकासश्री	२०१३ फा व ७
मगीकुमारी	हेमलताश्री	मोहनश्री	२०१५ वै सु ७
हसावहिन	निपुणाश्री	प्र वल्लभश्री	२०१२ आ सु १३
शारदाकुमारी	राजेशश्री	,,	२०१४
चन्दनकुमारी	सुलोननाश्री	तेजश्री	२०१८ आ व ६
जवरकुमारी	विनयप्रभाश्री	अनुभवश्री	२०१८ फा सु ७
मदनकुमारी	मनोरजनाश्री	मनोहरश्री	२०२० वै व ६
आशाकुमारी	सुलक्षणाश्री	,,	२०२० प्र चै सु १०
जयाकुमारी	जयरेखाश्री	प्र जिनश्री	२०२० वै सु १३
जतनकुमारी	विनयश्री	,,	२०२१ मा सु १३
सुलोचनाकुमारी	सद्गुणाश्री	मनोहरश्री	२०२३ मा सु ५
अर्चनाकुमारी	सुमगलाश्री	,,	,, ,,

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा संवत्
सायरकुमारी	हंसप्रभाश्री	राजेन्द्रश्री	२०२३ वै सु ३
मदनकुमारी	स्वयप्रभाश्री	चन्द्रोदयश्री	२०२१ मा सु ३
रजनाकुमारी	सुभद्राश्री	मनोहरश्री	२०२५ मा सु ११
शान्तिकुमारी	सुमित्राश्री	,,	,, ,,
अणचीकुमारी	सुनन्दाश्री	गुप्तिश्री	२०२७ वै व ५
शान्तिकुमारी	मनोज्ञाश्री	प्र जिनश्री	२०२७ चै सु १०
सुशीलाकुमारी	सुलक्षणाश्री	सुलोचनाश्री	२०२८ फा सु ३
रोहिणीकुमारी	रतनमालाश्री	प्र० प्रमोदश्री	२०३० आ० व० ७
विमलाकुमारी	विद्युत्प्रभाश्री	,,	२०३० आ सु १०
भारतीकुमारी	प्रियमित्राश्री	मनोहरश्री	२०३० पो व ३
शोभाकुमारी	प्रियकराश्री	,,	,, ,,
सुशीलाकुमारी	मजुलाश्री	प्र जिनश्री	२०२७ चै सु १०
रसीलाकुमारी	नयप्रज्ञाश्री	,,	२०३१ वै. सु २
प्रेमकुमारी	प्रज्ञाश्री	,,	२०२७ चै सु १०
सतोषकुमारी	शुभकराश्री	मनोहरश्री	२०३१ फा व ११
खमाकुमारी	खातिश्री	मोहनश्री	२०३३ मा सु १३
कुसुमलता	कल्पलताश्री	अनुभवश्री	२०३२ मा सु ११
कुजवाला	दक्षाश्री	प्र जिनश्री	२०३१ वै सु ३
सुरेखाकुमारी	सुप्रज्ञाश्री	,,	२०३४ फा सु ४
ताराकुमारी	शासनप्रभाश्री	प्र प्रमोदश्री	२०३६ वै. सु ३
लक्ष्मीकुमारी	लयस्मिताश्री	मनोहरश्री	२०३५ मा सु १०

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा संवत्
मालतीकुमारी	मधुस्मिताश्री	मनोहरश्री	२०३५ मा. सु. १०
चन्द्रिकाकुमारी	मृगावतीश्री	"	२०३६ मि सु ६
किरणकुमारी	प्रियवदाश्री	अनुभवश्री	२०३७ मा सु. ४
सुशीलाकुमारी	प्रीतिसुधाश्री	सुलोचनाश्री	" "
सुशीलाकुमारी	प्रीतियशाश्री	"	" "
ललिताकुमारी	अमितयशाश्री	अनुभवश्री	२०३८ जे. सु १०
गुणवतीकुमारी	गुणरजनाश्री	राजेन्द्रश्री	२०३९ आ सु ४
सरलाकुमारी	प्रियस्मिताश्री	सुलोचनाश्री	२०४० फा सु ४
चन्द्राकुमारी	प्रियलताश्री	"	" "
मजुकुमारी	प्रियवंदनाश्री	"	" "
सजूकुमारी	प्रियकल्पनाश्री	"	" "
सुचिताकुमारी	सौम्ययशाश्री	प्र जिनश्री	२०४० आ सु १
मंजुकुमारी	मृदुयशाश्री	"	" "
प्रेमलताकुमारी	विनीतयशाश्री	अनुभवश्री	२०४१ वै. सु २
मीनाकुमारी	विनीतप्रज्ञाश्री	"	" "
तनुजाकुमारी	प्रगुणाश्री	प्र जिनश्री	२०४० मा व १
राजूकुमारी	प्रियरजनाश्री	सुलोचनाश्री	२०४२ ज्ये, सु १३
शान्ताकुमारी	शुद्धाजनाश्री	अनुभवश्री	२०४३ मा व १
हेमलता	शुभ्राजनाश्री	"	" "
ललिताकुमारी	संघमित्राश्री	मनोहरश्री	२०४३ मा. सु १०
रेणुकुमारी	सुरप्रियाश्री	"	२०४४ फा व ३

जन्म नाम	दीक्षा नाम	गुरुवर्या नाम	दीक्षा सवत्
सरिताकुमारी	श्रुतप्रियाश्री	मनोहरश्री	२०४४ फा व ३
विन्दुकुमारी	योगांजनाश्री	हेमप्रभाश्री	२०४४ मा सु १०
निर्मलाकुमारी	नीलाजनाश्री	विद्युत्प्रभाश्री	,, ,,
शोभाकुमारी	शीलांजनाश्री	हेमप्रभाश्री	२०४५ मा व ७
रूपलता	वसुन्धराश्री	मनोहरश्री	२०४६ वै. सु १२
पुष्पाकुमारी	प्रज्ञाजयाश्री	विद्युत्प्रभाश्री	२०४७ वै शु ३
	काव्यश्री	निपुणाश्री	
	निरजनाश्री		

बोहरों की सेरी-उपाश्रय में

सत्यश्री	दि०
उदयश्री	दि०
तेजश्री	दि०
भक्तिश्री	
मुक्तिश्री	

□ □ □

२ श्री मोहनलालजी म० के समुदाय की साधु-सूची

श्री मोहनलालजी म०—

जन्म—१८८७ वैशाख सुदि ६ चादपुर, जन्म नाम मोहनकुमार। जिनसुखसूरि की शिष्य परम्परा—कर्मचन्द, ईश्वरदास, वृद्धिचन्द, लालचन्द, यति रूपचन्दजी के पास नागोर मे रहे। स० १९०३ मक्षी मे जिनमहेन्द्रसूरि से यति दीक्षा। १९३० अजमेर मे सघ समक्ष क्रियोद्धार कर सविग्नपक्षी वने और स्वय को जिनसुखसूरि के शिष्य के रूप मे घोषित किया। स्वर्गवास १९६३ चैत्र वदि १२ सूरत। महाप्रभाविक, ववई और सूरत पर असीम उपकार, विशाल शिष्य समुदाय। स्वय ग्यारह शिष्यो, चौवीस प्रशिष्यो तथा ३ साध्वियो को स्वहस्त से दीक्षा दी थी। परम समता भाव के धारक होने के कारण एव गच्छ-व्यामोह/कदाग्रह न होने के कारण इनकी शिष्य-परम्परा खरतरगच्छ और तपागच्छ मे समान रूप से विभाजित हुई।

स्वय के ग्यारह शिष्य और उनकी शिष्य-परम्परा की सूची निम्न है—

१. आनन्द मुनि—जन्म नाम आलमचन्द, दीक्षा १९३८ आषाढ सुदि १०। इनके दो शिष्य थे —दयाल मुनि, मेघ मुनि।

२. जिन यश सूरि—जन्म १९१२ जोधपुर, नाम—जेठमल। दीक्षा १९४१ जेठ सुदि ५ जोधपुर। पन्यास पद १९५३, आचार्य पद—१९६९ जेठ सुदि ६, स्वर्गवास १९७० मिगसर सुदि ३ पावापुरी। ५ शिष्य—गभीर मुनि, गुणमुनि, अमर मुनि, ऋद्धिमुनि, प्रताप मुनि। गभीर मुनि के शिष्य सौभाग्य मुनि, प्रशिष्य गजमुनि। अमरमुनि के २ शिष्य—केवल मुनि, भक्ति मुनि।

जिनऋद्धिसूरि—जन्म नाम रामकुमार। चूरू के यतिवर्य चिमनीराम के शिष्य थे। साधु दीक्षा १९४१ आषाढ सुदि ६, दीक्षा नाम ऋद्धिमुनि। पन्यास पद १९६९ मिगसर सुदि ३। आचार्य पद १९९५ ववई, स्वर्गवास २००८ ज्येष्ठ सुदि ३, ववई। इनके ७ शिष्य थे—हीरमुनि, राजेन्द्रमुनि,

महोदय मुनि, नीतिमुनि, गयवर मुनि, गुलाबमुनि, मनहर मुनि। गुलाब मुनि के शिष्य थे—रत्नाकर मुनि।

प्रताप मुनि—तपागच्छीय परम्परा मे चले गये थे, अत उनकी शिष्य-परम्परा यहा नही दी जा रही है।

३. **कान्तिमुनि**—जन्म नाम बादरमल, पालनपुर के। बडी दीक्षा १९४३ मिगसर वदि २ जोधपुर। इनके दो शिष्य थे—नयमुनि, जीवन मुनि। किस गच्छ की क्रिया करते थे ? अज्ञात है।

४. **पं० हर्ष मुनि**—दीक्षा—१९४४ चैत्र सुदि ८, पन्यास पद १९५८ जिनयशसूरि द्वारा। शिष्य-परम्परा विशाल। तपागच्छीय परम्परा मे चले गये थे।

५. **उद्योत मुनि**—जन्म नाम उजम भाई, महेसाणा के। दीक्षा १९४६ जेठ वदि ११ सूरत। शिष्य परम्परा विशाल। तपागच्छीय परम्परा मे चले गये थे।

६. **राजमुनि**—जन्म नाम राजमल, महीदपुर के। दीक्षा १९४६ जेठ वदि ११ सूरत। इनके तीन शिष्य थे—उपाध्याय लब्धिमुनि, छगनमुनि, जिनरत्नसूरि। उपाध्याय लब्धिमुनि (जन्म १९३५, जन्म नाम लधाभाई, दीक्षा १९५८ चैत्र वदि ३)के शिष्य थे—मेघ मुनि (जन्म नाम—वेलजीभाई, मोटी खाखर के, दीक्षा १९९—मा० सु० १०) है। एक महेन्द्रमुनि जी भी थे जो उ० लब्धिमुनिजी के भ्राता थे। इनका नाम भानजी भाई था। दीक्षा १९८८ पो० सु० १० और स्वर्गवास १९९२ चैत्र सु० २। किनके शिष्य थे ? अन्वेषणीय है।

जिनरत्नसूरि—जन्म नाम देवजी भाई, लायजा के। दीक्षा १९५८ चैत्र वदि ३। आचार्य पद १९९७ बबई, स्वर्गवास २०११ माघ सुदि १ अंजार। इनके ३ शिष्य थे—गणि प्रेममुनि, दर्शनमुनि, भद्रमुनि। गणि प्रेम-मुनि की दीक्षा १९६९ बबई मे हुई थी। इनका शिष्य था—मुक्तिमुनि (बडी दीक्षा १९८९ वै० शुक्ल ११)। भद्रमुनि (दीक्षा १९९२ वै० सु० ८) ही स्वतन्त्र साधक बनकर योगीराज सहजानन्दजी के नाम से प्रसिद्ध हुए।

७. **देवमुनि**—जन्म नाम छगनलाल मातर के। दीक्षा १९४६ सूरत। इनके ५ शिष्य थे—गणि भावमुनि (स्व० २००५ कोटा), भानुमुनि, कर्पूर मुनि, सुमति मुनि, लक्ष्मीमुनि। सुमति मुनि के शिष्य थे—तारा मुनि।

८. गुमान मुनि—डभोई निवासी, दीक्षा १९४७ ववई। वडी दीक्षा १९४८ मि० सु० ५ सूरत। इनके शिष्य क्षमामुनि और प्रशिष्य विनयमुनि थे।

९. सुमति मुनि—साकलचद भाई अहमदावाद के। दीक्षा १९४७ ववई, वडी दीक्षा १९४८ मि सु ५ सूरत। इनका शिष्य था सौभाग्यमुनि।

क्रमाक ८-९ गुमानमुनि एव सुमति मुनि किस गच्छ की क्रिया करते थे ? अन्वेषणीय है।

१०. हेममनि—जन्म नाम हरगोविन्द, वडनगर के। लघु दीक्षा १९४७ ववई, वडी दीक्षा १९४८ मि० सु० ५ सूरत। इनके दो शिष्य थे—केशर मुनि, तारख मुनि।

पं०केशर मुनि—जन्म नाम केशवजी, चूडा के। दीक्षा १९५२ या १९५३, इनके चार शिष्य थे—गजमुनि, पूर्णानन्द मुनि, देवेन्द्र मुनि, वुद्धिमुनि।

गणि वुद्धिमुनि—जन्म नाम-नवल, जन्म स० १९५४, विलारे के।
दीक्षा स०, गणिपद स० १९९५, स्व० २०१८ श्रा० सु० ८।
इनके ३ शिष्य—साम्यानन्द मुनि, रैवतमुनि, जयानन्द मुनि।

जयानन्द मुनि—जन्म १९९०, मुद्रा के, जन्म नाम जयसुख, दीक्षा २११६, विद्यमान हैं। इनके शिष्य कुशल मुनि (दीक्षा १९ मई १९७९) है।

११. कमल मुनि—दीक्षा १९५६-५८ के वीच। इनका शिष्य चिमन मुनि था।

× × ×

१ प० हर्षमुनि, उद्योतमुनि आदि की विशाल शिष्य परम्परा आज भी विद्यमान है, किंतु उनकी तपागच्छ की मान्यता होने के कारण यहा उल्लेख नही किया गया है।

२ श्री मोहनलालजी म० के समुदाय मे खरतरगच्छीय परम्परा मे आज केवल ३ साधु विद्यमान है, वे है—

१ राजेन्द्र मुनिजी, २ जयानन्द मुनिजी (गणि वुद्धिमुनिजी के शिष्य) और ३ इनके शिष्य कुशलमुनि।

३ इस समुदाय की १-२ साध्विया ही आज विद्यमान है किंतु सहयोग और साधनाभाव के कारण उनकी सूची यहा देने मे हम असमर्थ हैं।

———

३ श्री जिनकृपाचन्द्रसूरि परम्परा की साधु-सूची

१. **श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि**—जन्म १९१३ चातु गाव (जोधपुर)। जन्म नाम-किरपाचन्द, [यति दीक्षा १९२५ चैत्र वदि ३ जिनहससूरि से। गुरु नाम-कीर्तिरत्नसूरि सतानीय युक्ति अमृत गणि, वीकानेर। क्रियोद्धार १९३६। आचार्य पद १९७२ बवई। स्वर्गवास १९९४ माघ सुदि ११ पालीताणा। आपकी उपस्थिति मे ३४ साधुओ का समुदाय था और आपके स्वर्गवास के समय आपका साधु-साध्वी समुदाय ७० के लगभग था। साधनाभाव से सभी के नाम प्राप्त नही है। जो नाम प्राप्त है, वे निम्न हैं—

१ तिलकभद्र (दीक्षा १९४७), २ जिनजयसागरसूरि, ३ आनन्द-मुनि, ४ उपाध्याय सुखसागर, ५ राजसागर (वाचक पद १९७३), ६ विवेकसागर, ७ मगलसागर (दीक्षा १९७४ माघ सुदि १० सूरत), ८ वर्धनसागर, ९ मतिसागर, १० कीर्तिसागर, ११ मगनसागर, १२ चतुरसागर, १३ रामसागर, १४ तिलकसागर, १५ हर्षसागर, १६ माणकसागर।—त्रिलोक मुनि, पन्नालाल, पालीराम आदि यति हो गए।

२. **जिनजयसागरसूरि**—जन्म १९४३, दीक्षा १९५६, उपाध्याय पद १९७३, आचार्य पद १९९० पालीताणा, स्वर्गवास २००२ बीकानेर। राजसागर आप के भाई थे और हेतश्री आपकी बहिन थी।

३. **उपाध्याय सुखसागर**—इन्दोर के मराठा थे। प्रवर्तक पद १९७३, उपाध्याय पद १९९२ पालीताणा, स्वर्गवास २०२४ वैशाख सुदि ९ पालीताणा। इनके शिष्य थे इतिहासवेत्ता मुनि कान्तिसागर।

४. **मुनि कान्तिसागर**—जामनगर के थे। दीक्षा १९९२ पालीताणा। स्वर्गवास २८ सितबर सन् १९६९ जयपुर।

× × ×

१ आज इस परम्परा मे एक भी साधु विद्यमान नही है।

२ प्रमोद श्री, महेन्द्रश्री कमलश्री, विमलप्रभाश्री, मगलश्री, महेन्द्र-प्रभाश्री, लक्ष्यपूर्णाश्री, विनोदश्री, जसवन्तश्री, मदनश्री, पुष्पाश्री, मेघश्री आदि १५-२० साध्विया आज भी विद्यमान हैं। साधनाभाव से इनकी परिचय सूची नही दी जा रही है। ये साध्विया वर्तमान समय मे श्री मोहनलालजी म० की परम्परा के श्री जयानन्दमुनि जी की निश्रा मे विचरण कर रही हैं।

प्राकृत भारती, अकादमी जयपुर,

प्रकाशन सूची

क्र०	कृति नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य
१	कल्पसूत्र सचित्र	म० विनयसागर	२०० ००
२	राजस्थान का जैन साहित्य	स० म० विनय सागर आदि	५० ००
३	प्राकृत स्वय शिक्षक	डा० प्रेम सुमन जैन	१५ ००
४	आगम तीर्थ	डा० हरिराम आचार्य	१० ००
५	स्मरण कला	अ० मोहन मुनि	१५ ००
६	जैनागम दिग्दर्शन	डा० मुनि नगराज	२० ००
७	जैन कहानियाँ	उ० महेन्द्र मुनि	४ ००
८	जाति स्मरण ज्ञान	" "	३ ००
९	हाफ ए टैल (अर्धकथानक)	डा० मुकुन्द लाठ	१५० ००
१०	गणधरवाद	स० म० विनयसागर	५० ००
११	जैन इन्सक्रिप्सन्स आफ राजस्थान	रामवल्लभ सोमानी	७०.००
१२	वेसिक मेथेमेटिक्स	प्रो० लक्ष्मीचन्द्र जैन	१५ ००
१३	प्राकृत काव्य मञ्जरी	डा० प्रेम सुमन जैन	१६ ००
१४	महावीर का जीवन सन्देश	काका कालेलकर	२० ००
१५	जैन पोलिटिकल थोट	डा० जी० सी० पाडे	४० ००
१६.	स्टडीज् आफ जैनिज्म	डा० टी० जी० कलघटगी	१००.००
१७.	जैन, वौद्ध और गीता का साधना मार्ग	डा० सागरमल जैन	२०.००

क्र०	कृति नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य
१८	जैन, बौद्ध और गीता का समाज दर्शन	डॉ० सागरमल जैन	१६ ००
१९—२०	जैन, बौद्ध और गीता के आचार दर्शनो का तुलनात्मक अध्ययन भाग १, २	,, ,,	१४० ००
२१	जैन कर्म सिद्धान्त का तुलनात्मक अध्ययन	डा० सागरमल जैन	१४ ००
२२	हेम-प्राकृत व्याकरण शिक्षक	डा० उदयचन्द जैन	१६.००
२३	आचाराग-चयनिका	डा० के० सी० सोगानी	२५ ००
२४	वाक्पतिराज की लोकानुभूति	,, ,,	१२ ००
२५	प्राकृत गद्य सोपान	डा० प्रेम सुमन जैन	१६ ००
२६	अपभ्रंश और हिन्दी	डा० देवेन्द्र कुमार जैन	३० ००
२७	नीलाञ्जना	गणेश ललवानी	१२.००
२८	चन्दनमूर्ति	,, ,,	२० ००
२९	एस्ट्रोनोमी एण्ड कास्मोलोजी	प्रो० एल० सी० जैन	१५ ००
३०	नोट फार फ्राम द रीवर	डेविड रे	५० ००
३१-३२	उपमिति-भव-प्रपच कथा, भाग १, २	म० विनय सागर	१५० ००
३३	समणसुत्त चयनिका	डा० के० सी० सोगानी	१६ ००
३४	मिले मन भीतर भगवान	विजयकलापूर्णसूरि	३० ००
३५	जैन धर्म और दर्शन	गणेश ललवानी	९.००
३६	जैनिज्म	डी० डी० मालवणिया	३० ००
३७	दशवैकालिक चयनिका	डा० के० सी० सोगानी	१२ ००

क्र०	कृति नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य
३८	रसरत्न समुच्चय	डा० जे० सी० सिकदर	१५ ००
३९.	नीतिवाक्यामृत	डा० एस० के० गुप्ता	१०० ००
४०	सामायिक धर्म एक पूर्ण योग	विजयकलापूर्ण सूरि	१० ००
४१	गौतमरास एक परिशीलन	म० विनयसागर	१५ ००
४२	अष्ट पाहुड चयनिका	डा० के० सी० सोगानी	१० ००
४३	अहिंसा	सुरेन्द्र बोथरा	३० ००
४४	वज्जालग्ग मे जीवन मूल्य	डा० के० सी सोगानी	१० ००
४५	गीता चयनिका	,, ,,	१६ ००
४६	ऋषिभाषित सूत्र	म० विनयसागर	१०० ००
४७-४८	नाडी विज्ञान एव नाडी प्रकाश	डा० जे० सी० सिकदर	३०.००
४९	ऋषिभाषित एक अध्ययन	डा० सागरमल जैन	३० ००
५०	उववाइय सुत्तम्	स० गणेश ललवानी	१०० ००
५१	उत्तराध्ययन चयनिका	डा० के० सी० सोगानी	१२ ००
५२	समयसार चयनिका	डॉ० के० सी० सोगाणी	१६ ००
५३	परमात्मप्रकाश एव योगसार चयनिका	,, ,,	१० ००
५४	ऋषिभाषित ए स्टेडी	डा० सागरमल जैन	३० ००
५५	अर्हत् वन्दना	म० चद्रप्रभसागर	३ ००
५६	राजस्थान में स्वामी विवेकानद	प० झाबरमल शर्मा	७५ ००
५७	आनन्दघन चौवीसी	भवरलाल नाहटा	३० ००
५८	देवचन्द्र चौवीसी	प्र० सज्जन श्री	६० ००
५९	सर्वज्ञ कथित परम सामायिक धर्म	विजयकलापूर्णसूरि	४० ००

क्र०	कृति नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्ल
६०	दु ख मुक्ति सुख प्राप्ति	कन्हैयालाल लोढा	३० ००
६१	गाथा सप्तशती	डा० हरिराम आचार्य	१०० ००
६२	त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र प्रथम पर्व	गणेश ललवानी	१०० ००
६३	योग शास्त्र	स० सुरेन्द्र वोथरा	१०० ००
६४	जिन भक्ति	अ० भद्र करविजय गणि	३० ००
६५	सहजानन्दघनचरियम्	भवरलाल नाहटा	२०.००
६६	आगम युग का जैन दर्शन	डी० डी० मालवणिया	१००.००
६७	खरतर गच्छ दीक्षा नन्दी सूची	भवरलाल नाहटा ; म० विनयसागर	५०.००
६८.	आयार सुत्त	म० चन्द्रप्रभसागर	४० ००
६९	सूयगड सुत्त	मुनि ललितप्रभसागर	३०.००
७०	प्राकृत धम्मपद	डॉ० भागचन्द जैन	१०० ००
७१	नालाडियार	स० म० विनयसागर	१०० ००
७२	नन्दीश्वर द्वीप पूजा	म० विनयसागर	१० ००

पुस्तक प्राप्ति स्थान

१ प्राकृत भारती अकादमी, ३८२६, रास्ता एम० एस० वी०, जयपुर—३०२ ००३.

२ जैन श्वेताम्बर नाकोडा पार्श्वनाथ तीर्थ पोस्ट मेवा नगर, स्टेशन वालोतरा—३४४०२५, जिला वाडमेर

३ आगम अहिंसा समता और प्राकृत सस्थान, पद्मिनी मार्ग, उदयपुर—३१३००१

४ सरस्वती पुस्तक भडार, ११२ हाथीखाना, रत्नपोल, अहमदावाद—३८० ००१.